श्रीमद्बुद्धिसागरजी ग्रंथमाला, ग्रंथांक ६.

योगनिष्ठ मुनिराज श्री बुद्धिसागरजी कृत

भजनपदसंग्रह भाग बीजो.

गाम [illegible],

शेठ. रीखवदास कालीदासनी सहायताथी,

छपावी प्रसिद्ध करनार

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

वीर संवत २४३५. सने १९०९.

सत्यविजय प्रिन्टींग प्रेस. पांचकुवा दरवाजा-

अमदावाद.

किंमत रु. ०-८-०

॥ भजनपद द्वितीय भाग संग्रह ॥

॥ उद्देश भूमिका. ॥

काव्यमां अद्भूत शक्ति रहेली छे, आनंदनुं स्थान काव्य छे, सर्व काव्यमां श्रेष्ट काव्य आत्मज्ञाननुं छे. आत्मज्ञानथी आत्मानी उन्नति थाय छे, ज्ञान ध्यान वैराग्य नीति विगेरे सद्गुणोथी जगत्नी उन्नति भूतकाळमां थइ हती वर्तमानमां थाय छे अने भविष्यमां थशे, आत्मानी अनंतशक्तियोने खीलववा माटे आत्मज्ञाननो अपूर्व महिमा छे, उच्च विषयोनां काव्यो आत्माओने उच्च करे छे. आत्मानुं उच्च जीवन आत्मानंदथी थाय छे. आत्मानंदनी खुमारी आत्मप्रभुनी उपासनाथी थाय छे. कोइ कोइ समयमां आत्मामांथी कोइ कोइ विषयनी स्फुरणा प्रगटी नीकळे छे. भिन्न भिन्न विषयोनीभिन्न भिन्न स्फुरणाओ द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी काव्य छंदमां उत्पन्न थएली तेनो संग्रह आ भजन-संग्रह द्वितीय भागमां करवामां आव्यो छे, स्वाभाविक स्फुरणाओनुं जे उत्थान थाय छे, तेमां अपूर्व आनंदशक्ति रहेली छे के ते स्फुरणामय भजनोने वांचतां गातां श्रवण करतां भव्यजीवोने विद्युत्नी पेठे चमत्कारी असर थाय छे, तेनो अनुभवीओने अनुभव थाय छे, जेटला प्रमाणमां आत्मज्ञान ध्यानना उच्चाशयथी हृदय खेडायलुं होय छे, तेटला प्रमाणमां हृदयमांथी उच्चाशयनी आत्मज्ञान ध्यान वैराग्य नीति विगेरे गायनद्वारा स्फुरणाओ बहार प्रकाशे छे, अमारु चातुर्मास संवत् १९६३ नी सालनुं साणंदमां हतुं. त्यांथी विहार करी गोधावीमां मास कल्प कर्यो हतो ते समये, छंद विगेरेमां केटलाक आशरे ६० पानामां लखेला उद्गारो नीकळ्या हता, त्यार बाद गोधावीथी विहार करी कारतक वदी ७ ना रोज अमदावाद आववानुं थयुं हतुं ते प्रसंगे ६० थी १५० सुधीना भजन पद जोडायां हतां, त्यारबाद अमदावादथी पोशवदी १२ ना रोज विहार करी शाहीबागमां शेठ लल्लुभाइ रायजीना बंगलामां केटलांक पदो, गायनो विगेरे

रच्यां हतां त्यांथी अडाणज, उत्तारसंद, रांधवजा थइ माणसा गाममां अवायुं हतुं त्या १५० थी ते ३०० त्रणसें पाना सुधीनां पदो जे जे समये स्फुरणा आवी ते ते प्रसंगे जोडाया हतां, चैतन्य शक्ति प्रकाश-नामनो ग्रंथ श्री तारंगाजीमां रचायो हतो तेने अत्र दाखल कर्यो नथी. बाकीनां पदो, वरसोडा, लोदरा, रीद-रोल, खेरालु, कलोल, उंझा, भोयणी विगेरे ठेकाणे उनाळानी रुतु-मा विहारमां शात समये जोडायां हतां. जे जे विषयनी स्फुरणाओ नीकळी छे तेने वांची मनन करी भव्य जीवो उच्च पदने प्राप्त करो, सद्गुण ग्राहक दृष्टिथी जे भव्यजीव वांचशे सांभळशे तेनुं सारु थशे केटलाक गंभीर आत्मज्ञानना तथा योगना पदोमां समजण न पडे वा अपेक्षा न समजाय तो ज्ञानि सद्गुरुने पुछी निर्णय करवो, जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी मिथ्या दुष्कृत दउंछु, सद् गुणदृष्टिथी भव्यजीवो आत्मानद-मेळवो.

गाम रीदरोलवाळा सुश्रावक शा. रीखवदास कालीदासभाइए भजन संग्रह बीजो भाग छपावी प्रसिद्ध कर्यो छे. रीखवदासभाइ जैनधर्मना पूर्णरागी अने उत्साही छे, जैनधर्मनां दरेक कृत्यमा तन मन धनथी भाग ले छे. रीदरोल के जे पोतानुं गाम छे त्यां तीर्थ-कर भगवान्नी प्रतिष्टा १९६२ ना जेठ शुदी बीजे थइ हती. त्यारे आगेवानी भर्यो भाग लेइ आठ हजारना आशरे रुपैया खर्च्या हता, साधु साध्वीनी भक्तिमां यथाशक्ति शुभ उद्यम करे छे, ज्ञानना उ-द्योतमां अने केळवणीना फेलावामा आवी रीते धन खर्चे छे. माटे ते भाइने धन्यवाद पूर्वक धर्मलाभाशी दउ छुं वळी आ साथे आ भजन संग्रहना प्रुफशीट सुधारवामा सहाय करवामां सुश्रावक भाइश्री मणीलाल नथुभाइ दोशी बीए ए घणी मदद करी छे. माटे तेमने स स्नेह धर्मलाभाशिष आपवामा आवे छे ॐ शान्ति शान्ति शान्ति.

आ पुस्तक वेचवाथी जे कींमत उपजशे ते सघळी रकम ज्ञान खातानां बीजा पुस्तको छापवामां वपराशे.

भजनपदसंग्रह भाग बीजानी

अनुक्रमणिका.

भव्यजीवोए आ अशुद्ध वाक्योने नीचे प्रमाणे शुद्ध करेलां छे तेम पुस्तकमां सुधारवा प्रयत्न करवो, पुस्तकमां वांचीने अवश्य शुद्धिकरवी,

॥ श्री भजनपदसंग्रह द्वितीयभागनी शुद्धि पत्रिका ॥

पत्र	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
११	१९	समभाव	समभावे
२८	१	साधले	साधीले
३१	१३	साघो	साधो
३३	१	वकर्त्तौं	कर्त्तौं
३२	१९	आत्मा	आतमा
३३	७	दूक्कर	दुष्कर
३६	२०	देही	देहो
३६	२१	व्यापिया	व्यापियो
४१	२०	हारो	तारो
४७	१६	कबी बुहोत	कबु होत
४८	१	झळक	झळके
५६	१९	थतां	थातां
५८	१६	ग्रुगमधानो	युगप्रधानो
६२	१७	समज्याविण भूल्या	अणसमज्याथी
६४	१४	खडां	दुःखडां
६४	१६	ज्ञान	ज्ञान
६५	१८	रहे	रह्यो
७१	१३	भळशे	भळशे
९०	१	श्वासमहि	श्वासमांहि

९०	१८	पुंडरीकने	पुंडरीक
९०	२२	रागद्वेष तो दूर	रागद्वेष दूरे
९५	१४	आत्म	जीव
९६	२३	जे सिद्धाचल वंदता	ते सिद्धाचल वंदतां
१००	१३	पम्रिनी	पद्मीनी
१०१	१९	मर्या	मेर्या
१०२	११	बारिंग	बरिंग
१०७	२१	ममदा पतिमता धर्मा,	ममदा पतिमताना धर्मो
११०	१७	पट	गट
११३	११	वात वात	वात वातमां
१२८	१२	अपमानमे	अपमानमो
१२९	१९	व्रतने	व्रतने
१४४	९	सदभाव	सद्भाव
१४६	१	दवे	देव
१४९	९	मनिा	मानी
१५०	२२	विरा	वित्त
१५४	२२	आत्म	जीव
१५९	१४	वारी	वारो
१६०	९	अगत्मां	जगत्मां
१६१	१२	चावा	ध्यावा
१६२	१९	सरिका	सरीखा
१६३	७	जवि	जीव
१७७	३	धारवा	धारवाने
१७८	१७	दोर छे	दोर छे जग
१८७	८	दूर	दूरे

२०२	१३	गंभर	गंभीर
२०३	११	नामे	नासे
२०५	३	तव	तत्त्व
२१०	२०	निराभिमानी	निरभिमानी
२२५	११	वाजांथी	वाजींथी
२३०	२२	व्यापो	व्याप्यो
२३२	२४	समजायजी	समजायरे
२४४	१६	भेद आपो	भेद आप्यो
२५८	२३	जाशोरे	जोशोरे
२५९	१३	तारो	तारी
२६०	१७	वास कर्यो	वास कर्यो
२९१	४	प्रमुखरूप	प्रभु स्वरूप
२९७	२३	प्रणव मंत्र ॐकार दिलमां ध्याता	प्रणव मंत्र ॐकार दिलमां ध्यावता
२९७	२४	प्रणवमंत्रे	प्रणव मंत्रे
३०३	२०	कुतकार्थी	कुतर्कोथी
३०९	१२	स्वरथी	स्वरथी
३१२	६	एकीले	एकीलो
३१७	१८	शक्ति	व्यक्ति

वचनामृत.

नकामो समय गाळवाथी पाछळथी पश्चातापपात्र बनवुं पडे छे. समयनी किमत नथी समयनी अमूल्यता समज्या विना जीव चेती शकतो नथी फोगट गप्पां मारवाथी महत्ता प्राप्त थती नथी धर्मकार्यमांज स्वजीवननी साफल्यता उत्तम पुरुषो समजे छे. कोइनी आजीजी नहि करतां प्रमाणिकपणाथी आत्मोन्नति करवामां प्रयत्नशील थवुं. वक्ताना हृदयनो मर्म जाणवाथी सुज्ञपणुं प्राप्त थाय छे वक्तानुं हृदय अवगाहवामां परीक्षकनी हुशियारी छे वक्ता अने श्रोतानां हृदय भिन्न होय तो मर्मास्वाद चखातो नथी. श्रोतानां हृदय प्रकाशवामां वक्तानी हुशियारी छे सर्व ज्ञानमां अनुभवज्ञान उत्तम छे ज्ञानिनुं हृदय भव्य जीवोने उत्तम प्रकाश आपे छे. स्वयंभुरमणसमुद्रनुं अवगाहन थाय पण ज्ञानिना हृदयनुं अवगाहन थवुं दुर्लभ छे. मनुष्य क्षणे क्षणे नवुं शीखे छे पोतानी उत्तमता अन्यने देखाडवा करता पोताना आत्माने देखाडवी तेमांज कार्यदक्षता छे. वक्ताना वचनपर श्रद्धा थयाविना भक्तिभाव उत्पन्न थतो नथी योग्यता विण सद्गुणनी प्राप्ति थती नथी विचार, उच्चार अने आचार ए त्रण वस्तु एकस्थाने होय तो पूर्ण भाग्यनुं चिन्ह जाणवुं. नीतिधर्मनुं स्वरूप वीतरागप्रभुए यथार्थ कह्युं छे.विनयभक्ति विना आत्मशक्ति खीलती नथी. हे गौतम, समय मात्रपण मा प्रमाद कर, आ वाक्यनी उत्तमता पुनः पुनः विचारवा योग्य छे.

धर्मोन्नतिमां प्रभावना उत्तम अंग छे. आत्मिक ज्ञान वाळु जीवन सत्यसुख आपे छे. कवि अने ध्यानी चित्तनी एकाग्रताथी कार्यसिद्धि करे छे. श्री वीर प्रभुए आत्मशक्तिनुं अद्भुत स्वरूप

उपदेश्युं छे, पण समज्याविना अन्तरमां अन्धारुं छे. आत्मस्वरुप-रमणतामां चित्तवृत्ति विश्रांत यतां सहजानन्दनी खुमारी प्रगटे छे. उपादेयबुद्धि अने उपादेयनुं आचरण महा दुर्लभ छे. हेय, ज्ञेय अने उपादेयनुं यथार्थ स्वरुप समजवाथी सत्यविवेक प्रकटे छे. शब्द, ज्ञान अने वस्तु ए त्रण प्रकारना पदार्थ छे, ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्म बाळीने भस्म करे छे. खरेखर सत्यगुरु अन्तरमां छे.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भजन पद संग्रह.

भाग २ जो.

॥ ॐनमः नवपदस्तुतिः ॥

॥ १ अरिहंतपदस्तुति ॥

धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी छे आजे-ए राग.

(१)

अरिहंत नमो भगवंत सदा सुखकारी,
तीर्थंकर नामोदयथी जग जयकारी,
त्रिज्ञान सहित तीर्थंकर गर्भे आवे,
इन्द्रादिक सुरगिरि गर्भोत्सव विरचावे. ॥ १ ॥
प्रभु जन्मे त्यारे सर्वे इन्द्रो आवे,
प्रभु ग्रही करतलमां सुरगिरिपर लेइ जावे,
जन्मोत्सव करीने प्रभुने गृह पधरावे,
नदीश्वर दर्शन करी कृतारथ थावे ॥ २ ॥
भोगावली कर्मो क्षीण थाता जयकारी,
दीक्षोत्सवपूर्वक संयम ले हितकारी,
स्थिर ध्यान धरीने घातिक कर्म खपावे,
केवलज्ञाने जिन समवसरण सुहावे ॥ ३ ॥
भवि आगळ धर्म कथीने तीर्थज थापे,
रत्नत्रयी लक्ष्मी औदयिक वाणी आपे,
नवतत्त्वोने षड्द्रव्योने जिन भाखे,
जिनवचनामृतनो स्वाद भवि जीव चाखे ॥ ४ ॥

श्रुतज्ञाने धर्मनुं स्थापन जिनजी करता,
सिद्धोने जणावी उपकारी पद वरता,
ते माटे अर्हन् वन्दन पहेलुं भाख्युं,
जो जो नवकारे काल अनादि दाख्युं. ॥ ५ ॥
प्रभु क्षुधा पिपासा योगे अन्नने पाणी,
लेवे निरवद्य कहे जिनवरनी वाणी,
जव आयुष्य अवधि प्रभुनी पुरी थावे,
प्रभु एक समयमां सिद्ध स्थानमां जावे. ॥ ६ ॥
जगलोचन जिनवर महा उपकारी देवा,
कर भावे चेतन तीर्थंकरनी सेवा,
अरिहंत अनंत थया थाशे ने थावे,
लळी लळी प्रणमुं तीर्थंकर साचा भावे. ॥ ७ ॥

---

(२)

२ सिद्धपद स्तुतिः ॥

छप्पय छंद.

सिद्ध भजो भगवंत, प्रभु शिव सुखना भोगी,
निर्मल क्षायिक भाव, थकी निश्चयथी योगी,
धरी अचल अवगाह, मुक्तिना स्थान सुहाया,
सर्व कर्मथी मुक्त, सिद्ध शिव नगरी राया,
अज अमर परम जिनराजने, वन्दतां दुःख जाय छे.
स्वामी सेवकभाव नहि ज्यां, शर्म अनंतु थाय छे ॥ १ ॥
वन्दो पूजो सिद्ध बुद्धने निशदिन ध्यावो,
सिद्ध बुद्ध परमात्म विभुने निशदीन गावो,
सिद्ध सनातन परम महोदय शिवमां वसीया,

क्षायिक नव लब्धिना, भोगी शिवसुख रसीया,
सिद्ध बुद्धना ध्यानथी तो, आतम तेवो थाय छे,
श्वासोश्वासे समरवाथी, जन्म जरा भय जाय छे ॥ २ ॥

---

३ आचार्यपद स्तुतिः

छप्पयछंद

पाळे पञ्चाचार पळावे सूरिवर साचा,
ज्ञानी ध्यानी कथन करे छे जिननी वाचा,
वीर जिनेश्वर तीर्थ चलावे भाव दयाथी,
शासनना सुलतान सूरिवर वीर गयाथी.
गच्छ सूरीश्वर सेवीए आचारज सुखदाय छे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे, सूरिवरा परखाय छे. ?
सूरि विना नहि गच्छ, शास्त्रमा परगट भाख्युं,
वसे गच्छमां सुमुनि सूत्रकृतांगे दाख्यु,
रत्नत्रयिनी प्राप्ति गच्छे वास कर्याथी,
आराधक भवि होय सूरिनी आण धर्याथी,
सङ्घनायक सेविए भवि धन्य धन्य ते मुनिवरा,
सूत्रार्थ दाता जैनगच्छे–पति प्रकट सुख जयकरा. २
संप्रति शासन नायक सूरिवर वन्दन कीजे,
व्यवहारे वर्तिने निश्चय सत्य ग्रहीजे,
सूरिवरोनुं मान कर्याथी शासन वृद्धि,
व्रत धारक सूरिवर सेव्याथी शाश्वत सिद्धि,
जैन धर्मोद्धारमां शूर सूरिवरा सुलतान छे,
चतुर्विध सुसङ्घ प्रणेता सूरिवरा भगवान् छे. ३

---

४ उपाध्यायस्तुतिः

॥ छप्पय छंद ॥

उपाध्याय गुणखाण ज्ञानना दरिया भाख्या,
भणे भणावे सूत्र सत्य जे करता व्याख्या,
षड् द्रव्यादिक जाण सदा संयमने पाळे,
शिष्यादिक परिवार धर्मना पन्थे वाळे,
उपाध्याय भगवाननुं बहु, मान करो जय जयकरा,
गच्छमां युवराजसमा ते, भव्य वृन्द अति सुखकरा. १
जैन धर्ममां धीर वीर संयमने साधे,
पञ्चाचार धुरीण तत्त्वने जे आराधे,
भव्य चतुर्विधसंघ सर्वने शिक्षा आपे,
समजावीने बालसाधुने संयम थापे,
उपाध्याय पदने नमो भवि वन्दन वार हजार छे,
संप्रति वाचक मुनिने नमतां सेवतां भव पार छे २

---

५ साधुपदस्तुतिः

धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी छे आजे-ए राग.

संयम खप करता मुनिवर वन्दो भावे,
संयत सेवाथी निर्मल संयम पावे,
सरसवने मेरु अन्तर श्रावक साधु,
मङ्गलकारी मुनिवर पदने आराधुं, १
धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी ते लेखो,
जब मुनिवरदर्शन पुण्योदयथी पेखो,

संयत सद्गुरुजी पंच महाव्रत धारी,
कंचन कामिनी त्याग करे अनगारी, २
जाणे ते भव मुक्ति पण जिनवर दीक्षा,
व्यवहारे वर्त्या विण नाहि आतमशिक्षा,
घरबार तजीने मुनिवर संयम साधे
संयम सेवाथी आतम अनुभव वाधे ३
सद्गुरु मुनिवर छे वन्दनना अधिकारी
नहि गुरु गृहस्थी संयमना गुण धारी,
महातीर्थ मुनिवर जंगम जे आराधे
ते श्रावक साचो रत्नत्रयीने साधे. ४

---

६ दर्शनपदस्तुतिः

राग उपग्नो

नमो दर्शन चेतन स्पर्शन शिव सुखकारी
दर्शनथी सम्यग् ज्ञान लहो जयकारी,
व्यवहार अने निश्चयथी दर्शन कहीए
बेनी प्राप्तिथी शाश्वत सुखडा लहीए. १
दर्शनथी भवनी नियमा सूत्रे भाखी,
सहु आगम ग्रंथो दर्शनना छे साखी,
नमो दर्शन पद भक्तिथी दर्शन पावो,
दर्शन भक्तिथी दर्शन मोह हठावो २

---

७ ज्ञान पदस्तुतिः

राग उपग्नो.

प्रणमो प्रणमो नाणस्स सदा उपकारी,

मति श्रुत अवधि मनःपर्यव केवल भारी,
स्वपरप्रकाशक ज्ञाने शासन चाले,
ज्ञाने भवि प्राणी जीवदयाने पाले, १
णमो बंभीलीवीए आद्ये भगवइ भाख्युं,
ज्ञानीए ज्ञानतणुं फल घटमां चाख्युं,
भवि ज्ञान न निन्दो ज्ञानि निन्दा वारो,
गुरुगमथी ज्ञान ग्रहीने चेतन तारो. २

महिमा छे अपरंपार ज्ञाननो साचो,
निशदिन भवि प्राणी ज्ञानाभ्यासें राचो,
जिनवाणी श्रुत आधार हाल छे जाणो,
श्रुत ज्ञान ग्रहीने शाश्वतपद मन आणो. ३

जाणो नव तत्त्वादिक जिनवरनी वाणी
समजी सम्यग् भवजलधि तरशो प्राणी,
नमो ज्ञान सदा दिनमणि जेवुं उपकारी,
प्रणमुं भावे हुं ज्ञान सदा जयकारी. ४

---

८ चारित्र पदस्तुतिः

चल चेतन जिनमन्दिर जइए–ए राग ॥

चरण करण धारी मुनिवन्दु मोक्षे संचरवा
रंक जनो पण चरण ग्रहे छे मुक्तिवधु वरवा
जीनजी महा भाग्य, धन्य ते वीतराग,
त्रिज्ञानी पण दीक्षा लेवे भवजलधि तरवा. चरण० ॥ १ ॥
धन्य ते चारित्र, होय भव्य पवित्र,
इन्द्रादिक पण मुनिने वंदे कर्म कटक हरवा. चरण० ॥ २ ॥

महिमा मोटो सार, चरणतणो अवधार.
द्रव्यवेष वण केवलीने नहि वंदननो अधिकार. चरण०॥३॥
सर्व सुखकारी, धन्य अनगारी
बुद्धिसागर मुनिने वंदो, नहि कोनी परवा. चरण० ॥ ४ ॥

---

९ तपःपदस्तुतिः

राग आशाउरी

तपपद शिव सुखकार भवियां तपपद शिव सुखकार.
लब्धि अठ्ठाविश तपथी प्रगटे,
पहेलुं मङ्गल सार— भवियां० १
ते भव मुक्ति जाणे जिनवर
तो पण तप तपनार— भवियां० २
कर्म निकाचित पण क्षय करतुं,
तपथी सहु तरनार— भवियां० ३
तप तपीया मुनिरत्न मवत्सर
धन्य तेनो अवतार— भवियां० ४
अद्भुत ज्ञानने महिमा मोटो
कहेतां नावे पार— भवियां० ५
बुद्धिसागर तप तपीया मुनि
वंदु वार हजार— भवियां० ६

नवपद गीत.

राग वनजारो

नमुं नव पद जग जयकारी, अद्भुत महिमा छे भारी.

नवपद ऋद्धि घट दाखी, ज्यां सूत्रसिद्धान्तो साखी
लेजो उरमांहि उतारी नमुं. १
मयणासुंदरी श्रीपाल, पाम्या छे मंगलमाल,
आम्बील तपने दील धारी नमुं. २
निश्चयव्यवहारे दाख्यां, गुणगुणीविभागे भाख्यां,
चउ निक्षेपा अवतारी नमुं. ३
अन्तरनी शक्ति आपे, परमातम पदमां थापे,
नव पदनी छे बलीहारी नमुं. ४
पदपिंडस्थादिक भेदे, नव पद ध्याने सुख वेदे,
सहु कर्म कलंक विडारी, नमुं. ५
नव पदनुं ध्यान धरीजे, आतमनी लक्ष्मी वरीजे,
पामो भव जलधि पारी नमुं. ६
नव पदनो साचो यंत्र, नव पदनो ए महा मंत्र
ए नव पद मंगलकारी नमुं. ७
स्मरो नवपद श्वासोश्वासे, सिद्धि ऋद्धि-घटवासे
बुद्धिसागर अवधारी. नमुं. ८

मनहरछंद.

मन माने तेवुं खावो पीवो भाइ दुनीआमां,
जेवी जेवी क्रिया तेवो कर्मनो तो बन्ध छे,
मन मकलाइ अरे फुलण फजेती करी,
अन्तरना ज्ञानविन देखता तो अन्ध छे.
चेतननों बोध रोध करे घन घातीयांनो,
चेतनप्रकाशथकी सुगति पमाय छे.
धीनिधि कहेछे एम सत्य वात जाणवाथी,
अलख अलख सुख योगियो तो गाय छे. ॥ १ ॥

म्हारु अने त्हारु एम भेद पाडी भूल करे
चेतनना बोधविण जीवडा कूटाय छे,
चार गतिमांहि भमी भमीने तो दुःख लह्यां,
अन्तरनी भूलथकी भवमा भमाय छे.
चेतनना बोधविण चेतन तो जड जेवो,
चेतनना बोधविण चेतन चूकाय छे.
धीनिधि कहेछे एम चेतजे चतुरजन,
घडी सवालाखनीतो जोतामांहि जाय छे ॥ २ ॥

मनहरछन्द

करीने विचार भाइ दुनीआमां देखी लेजे,
गाडी वाडी लाडी सहु मायानी जञ्जाळ छे,
धनपति नरपति सुरपति सुख सहु
अज्ञानथी मानी लेइ मोह्या जीव वाल छे.
शोध कर बोध कर चित्तमां चतुर जन
प्रमदाना पाशमांहि शाने जकडाय छे.
जाग जाग जीव जरा ज्ञानथी विचारी जोने
नित्य एक चेतन छे सत्य समजाय छे ॥ १ ॥
जरूर जरूर जीव जोने जरा अन्तरमां
अन्तरना ज्ञानथकी दोष सहु जाय छे
शाताशातावेदनीने समभाव वेदी लेजे
अन्तरना ज्ञानथकी समभाव थाय छे
श्वास ने उच्छ्वासमांहि जीवन वहे छे जीव
लोक कहे मोटो तने न्हानो थइ जाय छे.
धीनिधि कहे छे एम चेतन तुं चेती लेजे
जिनवाणी गुणखाणी शरण सदाय छे. ॥ २ ॥

जीवने उपदेश.

मनहरछंदः-

अरे जीव जरा चित्तमांहि तो विचारी जोने
जनन मरण दुःख शाने तेह थाय छे.
कर्म छे कारण तेनुं कर्मनो विनाश कर
कर्मनां दलिक रागद्वेषथकी आय छे.
राग अने द्वेषभाव कर्मना विनाश थकी
नाश द्रव्यकर्मतणो पलकमां थाय छे.
जीवतां मरण जेनुं जीवता ते जगमांहि,
जाग जाग दीलमांहि चतुर चूकाय छे. १
अन्तरना ज्ञान माटे गुरुनुं शरण कर,
गुरुगमसेवनाथी सत्य तो जणाय छे.
ज्ञानी ध्यानी मुनि गुरु शरण शरण कर
चेतन स्वरूप मुनिकरुणाथी पाय छे.
जडमां जगत् सहु जकडाणुं जाणी लेइ,
सुखनी तो आश एक चेतनमां धारजे.
बुद्धिसागर कहे छे एम शिवसुख पामवाने,
राग अने द्वेष दोय चित्तमांथी वारजे. २

मनहरछंद.

चेतन चतुर चेत आयु वही जाय अरे,
मायाथी मस्तान थइ शाने भटकाय छे.
बालने युवानवय चाली जाय चेत चित्त,
बाह्यनी उन्नति स्थिर रही न रहाय छे.
संयोगथी मळ्यो सहु कुटुम्ब कबीलो देख,
म्हारु म्हारु मानी मूढ मन मकलाय छे.

जडना संबध थकी न्यारो छे चेतन तुंहि,
अज अविनाशी एकरूप तुं कहाय छे ॥ १ ॥
निरञ्जन निराकार निर्मल परम ब्रह्म,
सिद्ध बुद्ध हंस तुंहि आनन्दनु स्थान छे
योग लेश्या मन वाणी देह थकी न्यारो तुंहि,
देहव्यापि चेतननुं ज्ञान ते प्रमाण छे
असंख्यप्रदेशघन ज्ञानमय चेतन छे,
तुंहि तुहि रटनामां आनन्द अपार छे
अकल प्रभुनुं रूप ज्ञानथी कळाय अहो,
धीनिधि परम ब्रह्म नित्य निराकार छे ॥ २ ॥

मनहरछन्द.

जाणवानुं वहु एक आदेय चेतनरूप,
जीवमा अनन्तगुण ज्ञानथी समाय छे;
जिनवाणी गुणखाणी विवेकथी दीलआणी,
शुद्ध एक चेतनने योगियो हि ध्याय छे,
सत्ताथी समानसिद्ध चेतनने ध्याइएज,
व्यक्तिरूप थावे गुण सत्ताना तो ध्यानथी,
शुद्धध्यानउपयोगे शुद्ध तो चेतन थाय,
स्थिरचित्त ध्यान कर गुरुगम ज्ञानथी. ॥ १ ॥
लटपट खटपट झटपट तजी जीव,
शुद्ध बुद्ध रूप त्हारुं स्थिरचित्त ध्यावजे;
फरी फरी नहि मळे समय सुजाण अरे,
सत्ताए रहेली शुद्ध बुद्धताने पावजे,
अशुद्ध चेतन तुहि चार गति रूप छेज,

चेतननी शुद्धताथी भेद भाव जाय छे;
सिद्धांतनो सार सत्य समज चेतन एज,
धीनिधि चेतन प्रभु कोइ जन पाय छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

जननी समान सहु ललनाने मानी लेजे,
परधन पत्थर समान चित्त धारजे;
पोताना चेतन सम सहु जीव गणी लेइ,
मन वच कायाथकी कोइने न मारजे;
वंदन निन्दक पर चित्तनी समानताज,
अशुभ विचार थकी चेतनने वारजे;
खेली निजरूपमांहि शूरवीर थइ जीव,
भवोदधिथकी झट पोताने तुं तारजे. ॥ १ ॥
लप छप गप छप तजीने चेतन हवे,
स्थिर योग थकी एक आतमने ध्यावजे;
परमां प्रवेश थकी चित्तडुं चंचल थाय,
माटे हितशिख हवे ध्यानमांहि लावजे;
भूली सहु दुनीयानुं भान एक ध्यान थकी,
साध्यमांहि सुरतानी लीनता लगाडजे;
धीनिधि कहे छे शूरवीर थइ जीव हवे,
विजय विजय वाद्य वेगथी वगाडजे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

दिनमणि ज्ञानमणि स्पर्शमणि जगधणी,
दुःखहर सुखकर आनंद निधान छे;
अलख खलक मांहि साच अन्यकाच सहु,
चेतनानुभव सत्य अमृतनुं पान छे;

अन्तरना ज्ञानथकी जाण्या अहो ज्ञेय सहु,
अन्तरना ध्यानमांहि योगियो मस्तान छे;
सत्य जिनवाणी जाणी धीनिधि तुं चेती लेजे,
चेतन विनानुं अन्य जाणजे तोफान छे. ॥ १ ॥
ज्ञान अने क्रिया थकी मोक्षनो तो पन्थवदे,
जरुर समयवेण दीलमां विचारजे;
जिनवाणी सत्यजाणी सद्दहणा कर भवी,
रत्नत्रयी ग्रही जीव पोताने तुं तारजे,
अष्टसिद्धि नवनिधि रूद्धिनो भण्डार तुंहि,
अनंत अनंत ज्ञेय ज्ञानथी जणाय छे,
धीनिधि चेतन झट चित्तमांहि चेती लेजे,
अनत अनंत सुख तुजमां समाय छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

पामीने मनुष्यभव पाप कर्या लाखो गमे,
तेनी यादी करी जीव पश्चाताप कीजीए;
हवेथी न पाप थाय एवुं तो वर्तन राख,
निजमां रमणताथी शिवसुख लीजीए,
भूल्यो त्यांथी फेर गण हवेथी न भुल थाय,
स्मृति एवी खातां पीतां चालतां तुं राखजे,
विचारीने वेण बोल विवेकथी सत्य तोल,
ध्यानामृतस्वाद भवि प्रेमधरी चाखजे. ॥ १ ॥
चेत अरे जीव जरा चित्तमा विचारी जोने,
जडमां रमणताथी जड जेवो थाय छे,
मोतिचारो हंस चरे विष्टाथी न प्रेम धरे,
अरे हंस जीव केम विष्टामां मुंझाय छे.

जाति जीव त्हारी तेवी रीति तो अन्तर राख,
चेतन स्वरूपमांहि चेतना समावजे;
धीनिधि चेतनरूप पड नही भवकूप,
परम स्वरुपमांहि चेतना रमावजे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

जड अने जीव दोय परिणम्यां पिंडमांहि,
भेदज्ञानदृष्टिथकी भिन्न भिन्न धारजे.
पय जल मिल्यां हंस चंचुथकी भिन्न करे,
विवेकथी जीवहंस कर्मने विदारजे.
कर्मनो संयोग तेनो अंति जे वियोग थाय,
सत्य मोक्ष दीलमांहि चेतन विचारजे.
चेतननुं रूप जपे कर्म तो अनंत खपे,
दर्शननी शुद्धताथी स्वरूप निहारजे. ॥ १ ॥
दुनीयाना प्रेमभाव विषना भरेला सहु,
जाणी जीव शुद्ध प्रेम अन्तरमां धारीए.
आधि व्याधि उपाधिथी भरेल भवाब्धि आतो,
चरणना यानथकी चेतनने तारीए.
पोते तो पोताने कहुं चेत झटपट अरे,
वीती वेळा फरी कदी लेश नहि आय छे.
धीनिधि चेतन हवे वार न लगाड कांइ,
खरा तो बपोरे चौटामांहि शुं लुंटाय छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

दुर्लभ मनुष्य भव लही जीव चेत अरे,
सुगुरुसंगतिथकी विवेक पमाय छे;
भणीने भणतर भाइ विनयने धारवो,

विनयथी वियानाति जगमां सोहाय छे.
भलीवाते, स्वार्थना संगथी भरमावुं नहि,
देवगुरु मातपिता प्रेमे पाय लागवुं;
लप छप गप छप वात मद्ह तजी शिष्य,
वियानी वृद्धिने माटे व्हेला नीश जागवुं. १

दोहरा.

जन्मीने जगमा करो, धर्म कर्मना काज;
कूळदीपक पुत्रो थतां, रहेति कूळनी लाज. ॥ १ ॥
नवरा काळ न गाळिए, उद्यम सुखनुं मूळ;
हितशिक्षा मनमां धरी, पुनः पुन नहि भूल. ॥ २ ॥

सुख दुःखमां समभाव स्थिति.

मनहरछंद.

शाता ने अशाता होय वेदनीना, बंध छेज,
बधमांहि अन्ध बने मोहिनी संबंध छे
धननी मोटाट एतो मोह मूळ जाण अहो,
जिनवाणी जाण्याविना देखतातो अन्ध छे.
सुख दु ख समभावे ज्यारे तो वेदाय छेज,
त्यारे सत्य सुखनुं तो भान हील थाय छे.
धीनिधि चेतन प्रभु सेवना पमाय ज्यारे,
त्यारे जन्म जरा भय आधि व्याधि जाय छे १
हेय ज्ञेय उपादेय ज्ञान थकी अरे जीव,
नव तत्त्व विचारीने चरणने पाळजे.
पचाचार धरी शुद्ध व्यवहार निश्चयत ,
आवश्यक क्रिया थकी दोषो सहु टाळजे

ध्येय ध्यान ध्याता एकतानमांहि चेतन छे,
प्रमेय अनंत ज्ञान प्रमाणथी पेखजे.
भिन्नाभिन्न प्रमेयथी प्रमाण जाणीने जीव,
धीनिधि स्वरूप सत्य ध्यानमांहि देखजे. २

मनहरछंद.

संसारमां सुख नहि धनके मोटाइ मांहि,
संसारमां सुख नहि भोजनथी धारजे;
संसारमां सुख नहि बाल्युवा वयविषे,
संसारमां सुख नहि पुत्रथी विचारजे;
गयां दुःख आवे दुःख भोगवातां दीन दुःख,
चारगतिमांहि दुःखततितो अपार छे;
संसारनी झाळमांहि सुखनी आशाए जीव,
फस्यो दुःख लहे सुख नही तलभार छे. ॥ १ ॥
संसारमां सुख नहि गाडी वाडी लाडी थकी,
संसार असारमांहि सुख न जराय छे;
भ्रांतिथी भूलेल झांझवाना जल मृग पेठे,
सुखनी आशाए जीव ज्यां त्यां खूब धाय छे;
जडमां न सुख अरे कहुं जीव सत्य खरे,
चेतनमां सुख सत्य चित्तमांहि धारजे;
सत्य सुखमणिधाम नहि जेनुं रूप नाम,
धीनिधि चेतन सुख सत्य तुं विचारजे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

उपशम क्षय उपशम अने औदयिक,
क्षायिकने परिणामी पंच ए विचारजो;

उपशम दोयभेद चरणने समकित,
अष्टादश भेद क्षयोपशमना धारजो,
ज्ञान चार त्रण छे अज्ञान त्रण दर्शनने,
दानादिक लब्धि पंच तेमांहि मेळावजो
समकित चारित्रने संयमासंयम एम,
भेद क्षयोपशमना चित्तमा रमावजो. ॥ १ ॥
चार चार गतिने कषाय तीन लिंग वळी,
षड लेश्या अज्ञान मिथ्यात्वने निवारजो,
असिद्धता असयम एक विश भेद गणो,
औदयिक भावनाए दिलमांहि धारजो;
रत्नत्रयी दानादिक पंच अने समकित,
नवभेद क्षायिकना तेरमे पमाय छे;
जीवत्वने भव्यत्व अभव्यत्व ए त्रण भेद,
परिणामि भावनाए स्वभावे सुहाय छे. ॥ २ ॥

दोहरा

पचभावना भेद ए त्रेपन थया रसाल;
छठो सन्निपात छेज कहेता दीन दयाळ ॥ १ ॥
उपादेयने हेय छे ज्ञेयभाव छे पंच,
आत्म स्वभावे लीनता रहे न आश्रव रंच. ॥ २ ॥
मनन स्मरण विवेचना करतां सत्य विवेक;
बुद्धिसागर आत्ममा शोभो धरीने टेक. ॥ ३ ॥

वचनामृत.

मनहरछंद.

घरीनो विश्वास तज-सरल सुजन भज,

गुरुजन हितशिख जूठ नहि जाणजे;
धननो कुव्यय कदी करजे न प्राण पडे,
परनारी वेश्यासंग दीलमां न आणजे;
कुपन्थ कुग्रन्थ त्यजी वीरनां वचन भजी,
समकित सद्दहणा दिलमां ठसावजे;
जिनवाणी सत्य जाणी आदरजे हितआणी,
सत्यसार पामी जीव शिवपुर जावजे. ॥ १ ॥
गुरु गम ज्ञानाविना भणवामां तो भूल थाय,
गुरुगम ज्ञानाविना निर्णय न थाय छे;
गुरुगम ज्ञानविना पड्या छे भणेल जीव,
गुरुगम ज्ञान थकी शंका सहु जाय छे;
गुरुगम ज्ञानाविना पन्थनी न सुज पडे,
गुरुगम ज्ञानविना गमार गणाय छे;
गुरुगम ज्ञानविना पन्थ मही प्रगटे छे,
धीनिधि कहे छे गुरुगम सुखदाय छे. ॥ २ ॥

नीतिवचनामृत.

॥ मनहरछंद. ॥

सुजन सङ्गति कर गुण सहु चित्त धर,
मूढजन सङ्ग तजो सुगुरुनी सेवना;
व्यसनिनो सङ्ग त्यज वित्तसम वेष सज,
सत्य वात समजीने असत्य उवेखना;
बोले तेवो बोल पाळ कोइने न देजे आळ,
कजिया कुसम्प त्यजी सम्पने वधारजे;
इर्ष्या अभिमान क्रोध वेर झेर वारी सहु,

कोण हु ने कोण मारु तत्त्व ए विचारजे. ॥ १ ॥
बाल ख्याल तजी भाइ धर्मनी गणी सगाइ,
वीरजिन टेकनेक हृदयमां राखजे;
चोरी जारी चुगलीने निन्दा दोष परिहरी,
सत्यटेक धारी कदी जूठु नहि भाखजे,
विनय विवेक धरी वृद्धजन अनुसरी,
नीति रीति दुनीआमां टेकथी जमावजे;
वीर जिन वचननी सत्यता धरीने दील,
धीनिधि चेतन प्रभु उपयी जगावजे. ॥ २ ॥

मनहरछन्द.

चेत जीव चित्तमांहि संसार असारमांहि,
म्हारु त्हारु वारी सहु धर्मचित्त धारजे,
विषयने विषसम गणी भाइ ज्ञानथकी,
महा दुःखदायी काम चित्तथकी वारजे,
जैन धर्म धारवाने भवदुःख वारवाने,
ज्ञानि मुनि सङ्ग करी तत्त्वने विचारजे;
महा पुण्य योगे मळ्यो मनुष्यनो भव अरे,
वारंवार जीव कहु पोताने तुं तारजे ॥ १ ॥
भीतिमांहि भीति जाणी राख नीति धर्मनी तु,
संयोग छे जेनो तेनो वियोग विचारजे;
अलख अरूपी तुहि अन्तरमा जाणी लेइ,
मोह शत्रु सेनाने तु ज्ञान खड्गे मारजे;
समय विचार सहु समजीने चेतन तु,
उपादेय एक त्हारु रूप अवधारजे;
धीनिधि चतुर चित्त समजीले सानमांहि,
पामीने मनुष्यभव हवे नहि हारजे. ॥ २ ॥

॥ विनयामृत ॥

मनहरछंद.

विनयथी मान जाय विनयथी सुख थाय,
विनयथी विद्या सहु भणवाथी आवे छे;
विनयथी वेर जाय विनयथी झेर जाय,
विनेय सुशिष्य मनमांहि बहु भावे छे;
मन्त्रमांहि नवकार खगमांहि हंस सार,
सहु गुणमांहि तेम विनय विख्यात छे;
विनयथी यश थावे सहुलोक गुण गावे,
विनय विहीन जन रासभनो भ्रात छे. ॥ १ ॥
विनय विवेक तात विनयथी उच्चजात,
विनयथी नात जातमांहि सुख पावे छे;
विनयथी क्रोध जाय मननुं इच्छित थाय,
विनयथी शिवपुर झट जन जावे छे;
आवळनां फूल जेवो विनय विनानो जन,
मोरपूठ जेवो जन विनय विनानो छे;
धीनिधि कहे छे सहुगुण आववानुं द्वार,
विनय विनय एक गुणतो मजानो छे. ॥ २ ॥

गुरु विनय.

मनहरछंद.

गुरुनो विनय सुखकारी दुःखहारी अहो,
गुरुनो विनय गुण घणा दील लावे छे;
गुरुना विनयविना शिवपुर दूर बहु,
गुरुना विनय थकी दोष सहु जावे छे;

गुरुना हुकमने तो मान बहु आपवाथी,
गुरु आण प्रतिपाल सुशिष्य गणाय छे;
गुरुना विनय विना शिष्य छे सूकर सम,
काढ्या कान कूतरीनी अवस्था पमाय छे. ॥ १ ॥
शाणो के सरदार होय नृपतिके रंक होय,
गुरुना विनय विना गमार गणाय छे,
गुरुना विनय थकी सहु ज्ञान सांपडे छे,
गुरुना विनय विना दुःख बहु पाय छे;
गुरुनो विनय शिवपुर पन्थ प्रकट छे,
सद्गुरु प्रेमभाव विनय शृंगार छे,
धीनिधि कहे छे दील विनयने धारवाथी,
विमल सफल जगजन अवतार छे. ॥ २ ॥

मित्रलक्षण.

मनहरछन्द.

संकटमा स्हाय करे स्वार्थ नहि दील धरे,
दोष सहु ढांके अने मुखे गुण गाय छे,
मित्रनो उदय देखी दीलमा आनन्द धरे,
हित शिख आपवाथी कदु न रीसाय छे,
समय सुजाण होय मित्रना न दोष जोय,
गुह्यवात मित्रनी ते क्यांय न प्रकाशतो,
दीर्घदृष्टि गुणवन्त नीतिमान लज्जावन्त,
मित्र महा अवतार सुमित्र प्रभासतो. ॥ १ ॥
समचित्त कुलवय धर्म जाति नीति वित्त,
मित्रनी मित्राइ जगमाहि सुखदायी छे,

धर्मनी मित्राइ गुणदायी सर्व मित्रतामां,
अभयकुमार आद्र पेठे वखणाइ छे;
मूर्खनी मित्राइ कोइ काळमां न कर भाइ,
मूर्खनी मित्राइ दील दुःखतति क्यारी छे;
घरडानी लाकडीने आंधळानी आंख जेवो,
धीनिधि सुधर्मी मित्र पुण्ययोगे यारी छे. ॥ २ ॥

आत्माने स्वरूप रमणतानी प्रेरणा.

छप्पयछंद.

चेतन चतुर सुजाण चित्तमां चेती लेजे,
ब्रह्मानुभव रंगे सङ्ग निशदिन रहेजे;
पर निजमां समभाव चेतना ध्याने वाळो,
चिन्मय चेतन रटन करीने जीवन गाळो;
अनुभवयोगे पामीए ते चिदानन्द शाश्वत खरो,
बुद्धिसागर ध्यानयाने भवसागरने झट तरो. ॥ १ ॥
अखण्ड स्थिर उपयोग आतममां प्रकटे ज्यारे,
झळके ज्योति शुद्ध ब्रह्मनी घटमां त्यारे;
पडे न परमां चेन घेन विषयादिक नासे,
फरतां हरतां ध्यान योगथी स्थिरता भासे;
शब्द विषयथी दूर छे ते चेतनता समजो खरी,
बुद्धिसागर सत्य ज्योति चेतननी दिलमां धरी. ॥२॥

व्यवहार धर्मनी महत्ता.

छप्पयछंद.

मूकीने व्यवहार धर्मने केइक भूल्या,

शुष्कज्ञानथी केटक भव जंजाळे झूल्या,
परम्परागम त्यजीने भवदरिये कै डूल्या,
शाब्दिक तार्किक पण्डितमाने केटक फूल्या;
रही मायाना पाशमां जीव सोऽहं मुखथी उचरे,
बुद्धिसागर ज्ञान विण ते भवसागरने क्युं तरे. ॥ १ ॥
कहेणि सम रहेणी नहि जेनी ते नहीं मोटा,
बोली बणगा फूके तेना नहीं छे तोटा;
ज्ञान रही विरतिने वीरला सज्जन पामे,
इन्द्रादिक ज्ञानी विरतिने शीर्षज नामे,
धन्य धन्य जगमा अहोते बोले तेने पाळता,
बुद्धिसागर ज्ञानथी ते पाप पङ्क पखालता ॥ २ ॥

व्यवहारधर्ममहत्ता.

छप्पयछन्द.

धरि धर्म व्यवहार टेकथी केटक तरिया,
धरि धर्म व्यवहार मुक्तिने केटक वरिया;
धरि धर्म व्यवहार थया केइ गुणना दरिया,
धरि धर्म व्यवहार सिद्धमा केइक ठरिया,
जल विना जेम वृक्ष देखो उभु त्वरित सूकाय छे,
व्यवहार धर्म जलाभावे तीर्थ वृक्ष छेदाय छे. ॥ १ ॥
मूळविना नहि वृक्ष वृक्ष विण क्यांथी डाळा,
जलविना नहीं भरिया जाणो नद ने नाळां,
मात विना नहि पुत्र पुत्र विण कोनो बापा,
वदन विना नहीं वेण होय शुं वचन विलापा,
कारण विना न कार्य छे, जग समज समज भवि सानमा,
व्यवहार धर्म विना नहि छे भाव धर्म गुतानमा. ॥ २ ॥

धरि धर्म व्यवहार जगत्‌मां जय वर्तावे,
धरि धर्म व्यवहार जगत्‌मां कीर्ति पावे;
धरि धर्म व्यवहार स्वर्गने शिवमां जावे;
धरि धर्म व्यवहार तत्त्वने बहु फेलावे,
व्यवहार धर्म लह्या विना मयुर पृष्ठवत् मानवी,
बुद्धिसागर ज्ञानथी भवि हितशिक्षा दिल जाणवी. ॥३॥

ब्रह्मस्वरूपोपदेश.

झूलणा.

ध्यान कर ब्रह्मनुं ध्यान कर ब्रह्मनुं,
ब्रह्म चेतन प्रभु तुं कहायो;
शुद्ध उपयोगथी शक्ति व्यक्ति जगे,
शुद्ध रूपे प्रभु तुं सुहायो. ध्यान. ॥ १ ॥
कर्मनी वर्गणा खेरवे ध्यानथी,
ध्यानथी सत्य संतोष आवे;
ध्यानथी अनुभवे जागती ज्योत त्यां,
आतमा मुक्तिनुं शर्म पावे. ध्यान. ॥ २ ॥
ब्रह्म ते आतमा आतमा ब्रह्म छे,
वीर वचनो यथा सत्य सेवे;
वचन सापेक्षथी ब्रह्मने जाणतां,
दान निजनुं सदा नीज देवे. ध्यान. ॥ ३ ॥
सप्त नयथी कह्यो भाव साचो लह्यो
वचन एकान्तनी वात जूठी;
वचन निरपेक्षथी भाव मिथ्या लहे,
ब्रह्मनी वात निरपेक्ष बूठी. ध्यान. ॥ ४ ॥

ब्रह्म निरपेक्ष संग्रह नये मानतां,
ब्रह्ममां भ्रान्तिथी भूल थावे,
वचन सापेक्ष संग्रह नये मानतां,
व्यक्तिनी भिन्नता सत्य पावे. ध्यान. ॥ ५ ॥
सूक्ष्म ज्ञानि प्रभु गुरुगमे धारिने,
समजजो सप्त नयथी प्रमाता;
तत्त्ववादे ग्रहे आतमा ब्रह्मने,
बुद्धिसागर मुनि ब्रह्म माता ध्यान ॥ ६ ॥

आत्माने जागृतिभावनो उपदेश.

झलणा.

जागरे आतमा जागरे आतमा, मोहनी उंघमां चोर लूटे;
वित्त दारा अने विषयनी वासना, पाशथी शत्रुओ खूब कूटे. जाग. १
वृत्ति बाह्यिवेहे कर्म आठे ग्रहे, आतमा भ्रान्तिथी भान भूल्यो;
क्रोधने मानथी लोभ मायाथकी, लक्ष चोराशिमां खूब झूल्यो जाग. २
पामी मानवपणुं पुण्य उत्कर्षथी, मुक्ति साधन अरे तें विसार्युं,
खूब अपकृत्यथी पाप गाडुं भर्युं, जावबुं नरकमा केम धार्युं जाग.३
श्वास उच्छवासथी जीव आयु घटे, खबर नहि कालनी केम थाशे;
कालनुं कृत्य ते आ क्षणे कीजिए,धर्मथी आ भवाब्धि तराशे .जाग.४
कोटि धन आवशे नहि कदी साथमा, पाप ने पुण्य साथेज आवे;
दान करजे सदा धर्म वाटे मुदा, दानथी आतमा मोक्ष पावे. जाग.५
स्मरण कर देवनु शरण जे दीननुं, साधुना दर्शने पुण्य थावे,
साधु दर्शनथकी साधु वन्दनथकी, कोटिभवना कर्या पाप जावे. जाग.६
साधुना सङ्गथी आतमा जागतो, तीर्थ जङ्गम मुनि भव्य सेवो,
तीर्थ जंगम मुनि कल्पवेली अहो, पुष्करावर्तना मेघ जेवो. जाग.७

साध ले सिद्धिने धर्मव्यवहारथी, भक्ति उत्साहथी यत्न धारो;
धर्म करणी करी फोक थावे नहीं; धर्मथी आवशे दुःखआरो. जाग. ८
उंघ त्यागी अहो देह देवळ विषे, शुद्ध चेतन प्रभुने जगाडो;
बुद्धिसागर सदा भावना मोगरी, स्मरणनो घण्ट हेते वगाडो. जाग. ९

दयामां सर्वधर्मावतार.

झूलणाछन्द.

दीलमां रहेम आणी अरे मानवी, दुःखिया प्राणियोने उगारो;
धर्म मोटो दया राखवी जीवनी, प्राणिने प्राण जातां न मारो. दील. १
धर्मनुं मूळ प्राणी दया मोटकी, मूळना विण नही होय डाळां;
रहेम दृष्टि विना होय नहि धर्मको, स्वर्गना वारणे बन्ध ताळां. दील. २
वारि अग्निथकी प्रगटतो नही कदी, रेत पीले नही तेल आशा;
रहेम दृष्टि विना धर्म नहि मानवी, चासणी वीन क्यांथी पतासा. दील. ३
आपणो आतमा अन्यनो तेहवो, सर्वने मृत्युनुं दुःख मोटुं;
प्राणिने मारतां पाप लागे घणुं, रहेम दृष्टि विना कृत्य खोटुं. दील. ४
पापना पोटले पेट पापी भरे, खड्ग बंदूकथी जीव मारी;
पापथी पातकी दुःख पामे घणुं, जाय अन्ते मनुज जन्म हारी. दील. ५
यत्र हिंसा तिहां धर्म नहि लेश छे, दुःखिया प्राणियोने उगारो;
प्रेमथी मानवी दील लावी दया, धर्म साचो दयाथी विचारो. दील. ६
पशु अने पक्षिओ छाणना जीवडा, तेह मानव थशे कोइ काळे;
नीच पण प्राणिया उच्च अवतार ले, शास्त्रनी दृष्टिथी कोइ भाळे. दील. ६
धर्म नहि को दया सारिखो जगतमां, दीलमां मानवी ले विचारी;
वीर भगवाननी सांभळीने दया, धर्म ते जाणजो सत्य धारी. दील. ७
सर्वनो आतमा एक सरखो गणी, आत्मवत् राखजो सर्व दृष्टि;
बुद्धिसागर अहो मानवी देव छे, जेह करतो दया मेघवृष्टि. दील. ९

धर्मप्रभाव.

झूलणाछन्द

धर्म कर आतमा धर्म कर आतमा, धर्मथी होय संसार पारो,
धर्म करता कदी धाड आवी पडे, पूर्वना कर्मथी ते विचारो. धर्म १
धर्मथी देवता धर्मथी मानवी, धर्मथी नरपति श्रेष्ठ थावे;
धर्मथी इष्ट संयोग आवी मळे, धर्मथी दु खदौर्भाग्य जावे धर्म २
अग्नि पण जल हुवे सर्प माला हुवे, धर्मथी कीर्ति जगमा गवाती;
धर्मथी सिद्धिने पामतो मानवी, धर्मथी रूद्धियो सहु पमाती धर्म ३
धर्मना तेजथी मेघ वर्षा करे, धर्मना तेजथी वाय वायु;
धर्मना तेजथी रात्रि दीवस थता, धर्मना तेजथी दीर्घ आयु. धर्म ४
मानवी उंघतो धर्मपण जागतो, धर्मनुं चाविए सत्य भातुं;
चोर चोरे नहीं अग्नि बाळे नहीं, समज जो धर्मनुं सत्य खातुं धर्म ५
धर्मथी परभवे उच्च अवतार ले, धर्मथी पाप सर्वे प्रणाशे,
धर्मथी लब्धियो जीवने संपजे, धर्मथी सर्व बुद्धि प्रकाशे. धर्म ६
पग पगे रूद्धियो प्रगटती धर्मथी, धर्मथी दुनीआ हाथ जोडे,
धर्म हीरो तजी मूढ मानव अरे, पापना पत्थरे शीर फोडे धर्म ७
सत्य आनन्दने मोज छे धर्मथी, पूर्वभवना कर्या आज पावे,
हालना धर्मने भोगवे परभवे, पामतो फल यथा बीज वावे. धर्म ८
आम बावळ अने लींबडो आमली, मानवी जे रूचे तेहि वावो,
वाविए जेहवुं पामिए तेहवु, नास्ति तेमां जरा कोइ दावो धर्म ९.
धर्मना बीज वावो सदा प्रेमथी, चालजो धर्मथी मुक्तिवाटे,
बुद्धिसागर अरे चेतजे आतमा, माल छे मुक्तिनो शीरसाटे धर्म १०

भक्तिमाहात्म्य.

झुलणाछन्द

भक्तिकर भक्तिकर भक्तिकर देवनी, सारमां सार जिन नाम साचुं,

देवना गानथी दील निर्मल बने,देवनी भक्ति विण सर्व काचुं.भक्ति.१
लुण विण भोजने रस जरा नहि पडे, भक्ति विण सेवना सर्व लुखी;
देवनी भक्तिथी सत्यसुख सम्पजे,भक्तिविण प्राणिया थाय दुःखी.
भक्ति. ॥ २ ॥

श्वास उश्वासमां स्मरण कर देवनुं, ध्येयरूपे सदाजिनधारी;
प्रेमनी भक्तिमां आंतरू नहि कशुं,देवनी स्थापना मूर्ति प्यारी. भक्ति.३
भक्तिनां अंग सर्वे ग्रही भावथी, सेविये ते सदा सुखकारी;
भक्तिविण पार नहि होय संसारनो,भक्तिथी टेव टळशे नठारी.भक्ति.४
भक्ति आधीन विभु आतमा भवतरे, भाक्तिथी स्वर्ग सिद्धि सुहावे;
देवनी भकित पण जीवना सन्मुखी, भकितकर्त्ता सदा सिद्ध थावे.
भक्ति. ॥ ५ ॥

देवनी भाकितथी शाकित शुभ जागती,चित्त लय भक्तिथी भव्य भाळो;
भक्तिमां मिष्टता संपजे स्हेजमां, भक्तिना मार्गमां आयु गाळो.
भक्ति. ॥ ६ ॥

भक्तिमां चित्तवृत्ति तणो रोध छे, भक्तिथी ज्ञाननी ज्योति जागे;
भक्तिथी आन्तरू नहीं प्रभुनुं कदी, भक्तिथी भक्तनी भ्रान्ति भागे.
भक्ति. ॥ ७ ॥
भक्तिना तोरमां जोर छे कंइ नवुं, भक्तिनो योग कलिकाल मोटो;
भगातिया तेल जेवी लहो भक्तिने, भक्तिनो योग नहि भाइ छोटो.
भक्ति. ॥ ८ ॥

भक्ति साकारनी साधिए सत्यथी, भक्ति साकारमां चित्तलागे;
पगथियुं मुक्तिनुं भक्ति छे आद्यमां, चित्त चेतन प्रभु भक्ति जागे.
भक्ति. ॥ ९ ॥
भक्ति भळती रहे योगना रङ्गमां, भक्ति पण योग छे योग भक्ति;
वेढ भेळां रहे नाम जूदां लहे,भक्तिना योगथी सत्य शक्ति.भक्ति.१०

भक्ति गङ्गा समी तीर्थ साचुं गणु, भक्तिना योगमां भूल नावे;
भक्तिथी शुन्य वृत्ति वहे वाह्यमां, भक्तिथी सत्य आनन्द थावे.
भक्ति. ॥ ११ ॥

भक्तिनी मूलमां देव छे आतमा, भक्ति रसथी रसिक कहावे,
भक्तिना पगथिये पाद मूकया थकी, जन्म मृत्यु तणां दुःख जावे.
भक्ति. ॥ १२ ॥

भक्तिथी सहुमळे मोह माया गळे, भक्तिना भोजने भूख भागे;
भक्ति अमृत तणुं पान कीधा थकी, प्राणि रगाय नहि अन्य रागे.
भक्ति ॥ १३ ॥

भक्तिनी औषधी रोग सहु टाळती, भक्तिना भावथी नित्य राचुं;
भक्ति भगवन्तनी भेद सहु भागती, देव भक्ति सहीत ज्ञान साचुं.
भक्ति. ॥ १४ ॥

शुद्ध भावेरमी भक्ति साची लेह, आत्मनी भक्तिना केड भोगी;
बुद्धिसागर निराकारनी भक्तिने, ज्ञानथी साधता केट योगी.
भक्ति. ॥ १५ ॥

आत्मप्रभुनी स्तुतिः

झूलणाछन्द

सर्व शक्ति धणी योग चिंतामणि, योगना पगथिये पाद मूको,
अष्ट छे पगथिया योगनां आतमा, पामी अवसर कदि ते न चूको
सर्व. ॥ १ ॥

यम अने नियम आसन तणा भेद बहु, चित्त उत्साहथी भय भागे,
प्राणने साधिए प्रत्याहि थकी, पानमा भेदथी स्थिर थाशो. सर्व २
धारणा धारिए ध्यानमां लीनता, एम अभ्यासथी शक्ति प्रगटे,

आठमा पगथिये पाद मूक्या थकी, चित्तना दोषनो भार विघटे.
सर्व. ॥ ३ ॥

सत्य आनंदथी पूर्णता पामतां, कार्य सिद्धे मटे सहु उदासी;
हेतु पंचे मळे कार्यनी सिद्धता, जैनस्याद्वाद तत्त्वे विलासी. सर्व. ४
सर्व सत्ता गुणो व्यक्ति भावे हुवे, कर्मोपाधि तदा दूर जावे;
हंस निर्मल हुवे खेल खेले नवा, समयमां सिद्धि स्थाने सुहावे. सर्व. ५
रत्ननी मंजुषा ताळुं दीधुं खरूं, कुंचिथी उघडतुं तेह ताळुं;
ताळु उद्घाटतां रत्न पामे यथा, आत्म रूद्धि तथा दील भाळुं. सर्व. ६
मृत्तिका निर्मळी कुंभनो हेतु छे, मृत्तिका कुम्भनुं रूप पावे;
दण्ड सामग्रिथी कीजिए कुंभने, मृत्तिका व्यक्तिता रूप थावे. सर्व. ७
तेम सत्तापणे रूद्धियो सर्व छे, आत्ममां मृत्तिका पेठ जाणो;
साधने साधिए व्यक्तिता आत्मनी, उद्यमे कार्य सिद्धि प्रमाणो. सर्व. ८
आत्म भावे रही रीजिए गहगही, पारका दोष देखो न प्राणी;
पारका दोषने देखतो ज्यां लगी, त्यां लगी नहि हुवे तेह नाणी. सर्व. ९
दोष दृष्टि टळे मोह माया गळे, साधने साधतो मुक्ति सारी;
बुद्धिसागर लहे शुद्धता बुद्धता, जन्मने मृत्युनां दुःखवारी. सर्व. १०

निद्रा त्याग.

झूलणाछन्दः

उंघ नहि आतमा उंघ नहि आतमा, उंघतां काल वीत्यो अनादि;
उंघतां आतमा दुःख पाम्यो बहु, भूलियो शुद्ध चैतन्य यादी. उंघ. १
उंघथी आळसु सत्य जोयुं नहीं, उंघथी कार्य करवुं विसार्युं;
उंघमां शत्रु छे आपणो आत्मा, सत्य जीवन अहो जाय हार्युं. उंघ. २
खड्ग चौधार निद्रा वडी वैरिणी, उंघमां कर्म बंधाय जाणो;
उंघथी ज्ञानने ध्यान भूले सहु, उंघथी दुःखडां दील आणो. उंघ. ३

सर्वनो घात वकर्त्री अहो उंघ छे, उंघमा टेकनी भूल थावे,
उंघने टाळतां उंघने खाळतां, भान चेतनतणुं ढील आवे. उंघ. ४
द्रव्यने भाव भेदे अहो उंघ छे, जगत्मां भावथी उंघ मोटी;
रागने द्वेषथी रमणता वाह्यमां, भाव निद्रा अहो केम छोटी. उंघ. ५
भावथी उघता मोहना जोरथी, अटकता प्राणिया दुःख पावे;
विविध काया ग्रही घोर संसारमां, भटकतां पाररे केम आवे.उंघ.६
त्याग दूकर अहो त्याग दुष्कर अहो, भाव निद्रा तणो भव्य माळो,
बोलतां चालता उंघतां प्राणिया, भाव निद्रा तणो एह चाळो उंघ.७
उंघनी लहेरमां झेर छे मोटकुं, उंघमा दु खनो पार नावें;
जागरे आतमा पामि सम्यक्त्वने,भोर वेळा अहो बोधि भावे. उंघ.८
उंघनी घेनमां घोर रात्री अहो, उंघ मिथ्या महा दुःखदायी;
जागने आतमा पामी सम्यक्त्वने—भक्ति उत्साहने चित्त लायी उंघ.९
उंघने त्यागरे उंघने त्यागरे—चित्तमां चेतना शुद्ध धारी,
बुद्धिसागर सदामुक्तिना पंथमां—जागिने चालजे शीख सारी.उंघ.१०

शुद्ध चेतवणी उपदेश.

झूलणाछद

चेतरे मानवी चेतरे मानवी, चित्त चकडोळमा केम झूले,
मोहना फदमां फोक फासियो अरे,तत्त्व विद्या लही केम भूले चेतरे. १
मोहना तोरमां भान भूल्यो अरे, कामने क्रोधथी जन्म हार्यो,
ज्ञान वैराग्यने शुद्ध चारित्रथी, आतमा शुद्ध रूपे न धार्यो. चेतरे २
विषयना वृक्षने वावतो प्रेमथी, प्राप्त थाशे फलो तो नठारां,
तत्त्व बुद्धि धरी मोह माया हरी, वावजे धर्मनां वृक्ष सारां चेतरे ३
पाणिमां माछलुं जेम तरस्यु रहे, तेम अज्ञानथी चित्त धारो,
ज्ञानना पाणिमां आतमा माछलुं, प्रेमथी आतमा भव्य तारो. चेतरे ४
चेतजे आतमा सारमां सार छे, शुद्धरूपे प्रभु तुं प्रकाशी,

बाह्य व्यवहारमां उंघजे योगथी, ध्यानमां जागजे रे विलासी. चेतरे. ५
रात्रिमां दिवसने दीवसमां रात्रि छे, समजता ज्ञानथी ज्ञान योगी;
बुद्धिसागर सदा चेतजे ज्ञानथी,योगि पण तुं सदा छे अयोगी. चेतरे.६

हार नहि.

झुलणाछंद.

हार नहि आतमा हार नहि आतमा, पुण्य योगे मनुषजन्म धार्यो;
विषयनी वासना पासना बंधथी,हाथ हीरो चढयो फोक हार्यो.हार.१
मारुं मारुं करी नाचियो भव विषे, मारुं मारुं करी फोक फुले;
जन्म त्यां मृत्यु छे चेतजे आतमा, सद्गुरु संगथी नेत्र खुले. हार.२
काळनी पांख छे जगत्मां कारमी, झडपी ले जीवने एक फाळे;
केइ चाल्या अने चालशे प्राणिया, मूढ शुं मोहमां दीन गाळे. हार. ३
लक्ष्मीना लोभमां थोभ छे नहि जरा, ज्ञानथी देखतां सर्व खोटुं;
स्वप्ननी सुखलडी भूख भागे नहि,सत्य छे ज्ञानिनुं वाक्य मोटुं.हार.४
मणि अने रत्ननी खाण पामी अरे, शीदने पत्थरोने उपाडे;
पुण्य योगे लही भव्य तेजंतुरी, रमतमां मूढरे शुं उडाडे. हार. ५
रत्न चिन्तामणि हाथमां आवीयुं, फेंकिदे धूळमां हीन भागी;
पामि रससिद्धिने पापना योगथी,त्यागि दे मानवी मोह रागी.हार.६
चेत चेतन जरा ज्ञानथी जागिने, साधि ले सत्य तुं कृत्य सारुं;
बुद्धिसागर सदा चेतजे चित्तमां, शुद्ध चैतन्यनुं रूप तारूं. हार. ७

आत्माने स्वस्वरूपोपदेश.

झूलणाछन्द.

अलखना पन्थमां चालजे आतमा, नात ने जात सर्वे विसारी;
ज्ञानना योगथी तत्त्वने पामिने, शुद्ध चारित्रता दील धारी.अलख.१

दुग्धमां जळ मळ्यु हंस जूदु करे, तादृशी दृष्टिने धार प्यारा;
तत्त्वदृष्टि धरी तत्त्वने पारखो, योगविद्या लही सत्य धारा.अलख २
दृष्टि स्याद्वादनी वाद सहु टाळती, खाळती कर्मनो वेग ज्ञाने,
शुद्ध उपयोगथी अनुभवे आतमा सत्य आनन्दने तत्त्वभाने.अलख.३
ज्ञेयने ध्येय आदेय छे आतमा, ज्ञानथी ज्ञेयवस्तु प्रकाशी,
ज्ञेय ने ज्ञानरूपे सदा जे रहे, वस्तुधर्मे सदा छे विलासी अलख ४
सेविए आतमा सेविए आतमा, देह देवळ रहीने प्रकाशे,
तारिये आतमा तारिए आतमा, जागता कर्मनो फन्द नासे अलख.५
वन्ध सद्भावथी मुक्ति छे जीवनी, वन्ध नहि त्यां लहो केम मुक्ति,
मुक्तिनी शुक्तिमा मुंझता मानवी,मोह अज्ञानथी करी कुयुक्ति.अलख ६
अलखनो देश निर्भय सदा शोभतो, अलखना देशमा सत्य शान्ति;
अलखना देशमा सत्य आनन्द छे, अलखना ज्ञानथी जाय भ्रान्ति
अलख ७.
वीर वचनोथकी,जाणिए अलखने, सात नयथी खरो अर्थ धारी;
त्यागि एकान्तने अर्थने धारिये,पामिए सत्यथी मुक्ति नारी.अलख ८
अलखना खेलमा भेळ नहि कर्मनो, खेलिए अलखनो खेल रागी,
बुद्धिसागर सदा अलखनी धूनमा, सत्यचैतन्यनी ज्योति जागी.
अलख ॥ ९ ॥

संसारनी असारता.

झूलणाछन्द

सर्व संसारना भाव छे कारमा. सार तेमा नथी सत्य भाखुं,
रूप जूदां धरे प्यार त्यां शुं करे,समजजे आतमा सत्य दाखु. सर्व १
क्षणिक आनन्दमां मोहथी मुंझीने, भव्य मानवपणु केम हारे,
आजने काल करता थका मानवी,काळ आयुः हरे को विचारे. सर्व. २

बाह्य आनन्दनो रङ्ग छे अभिनवो, नष्ट तेतो थशे चित्त धारो;
आधिने व्याधिथी मुक्त कर आतमा,समजिने सत्यने केम हारो. सर्व. ३
लक्ष चोराशिमां विविध देहो धर्या, मोह अज्ञानथी पार नाव्यो;
आतमा सत्य जाण्यो लही ज्ञानने,दीलमां ते सदा खूब भाव्यो. सर्व. ४
जूठ संसारमां सार छे नाहि कशुं, तत्त्वदृष्टिथकी ले विचारी;
वर्णने वेष लिङ्गादिके धर्म नहि, भ्रान्तिमां भूलतां छे खुवारी. सर्व. ५
सद्गुरु सङ्गथी समजरे धर्मने, धर्मथी पाप सघळां प्रणाशे;
साधनन्ति स्थीति पामतो आतमा, धर्मथी शुद्ध रूप प्रकाशे. सर्व. ६
वित्तना फन्दमां दुःखना कन्द छे, सत्य वैराग्यथी ते विचारो;
सत्यआनन्दमां रमणता राखवी, ज़ाप अजपाथकी जीव तारो. सर्व. ७
फोक झघडा करी धर्मना फन्दमां, केम आयुः अरे भव्य गाळो;
तत्त्व नाहि अन्यथा कोइ काळे थतुं,सत्यसारांशथी धर्म पाळो. सर्व. ८
वीर वचनो सदा सर्व सापेक्ष छे, समजिए ज्ञानने दील धारी;
बुद्धिसागर सदा मुक्तिना पन्थमां, वीरवचनो महा उपकारी. सर्व. ९

स्वार्थस्वरूप.

झूलणाछन्द.

स्वार्थना फन्दमां सर्व दुनिया फसी, तत्त्वनी वात दीलमां न धारी;
खेलता नाचता बोलता दोडता,पामता प्राणिया दुःख भारी.स्वार्थ. १
स्वार्थना छंदमां सत्य स्वप्ने नहीं, स्वार्थना जलधिमां मीन प्यासी;
स्वार्थनी छांयडी केरडा जेहवी,स्वार्थनी जगत्मां और फांसी.स्वार्थ. २
स्वार्थथी सत्य छानुं रहे छे सदा, स्वार्थथी दुःखनो पार नावे;
स्वार्थना पाशमां प्राणिया जे पडया, विविध देही ग्रही दुःख पावे.
स्वार्थ. ३
जगत्मां व्यापिया स्वार्थ छे महाबळी, सर्व जगजंतुने ते नचावे;

स्वार्थनी भ्रान्तिमा ब्रह्मनी भूल छे, स्वार्थथी मोटकां पाप थावे
स्वार्थ. ॥ ४ ॥

स्वार्थमां सहु फँस्या कोइ विरला वच्या, स्वार्थथी पापनी वात थावे,
स्वार्थथी धर्मनी चक्षुए अन्ध छे,स्वार्थथी पापनुं अन्न खावे.स्वार्थ. ५
दोषनुं मूळ छे स्वार्थ अवनी विषे, स्वार्थथी मानवी सत्य हारे,
मात पुत्रो हणे बाप पुत्री हणे,स्वार्थना दोषथी जीव मारे. स्वार्थ. ६
जगत्ना स्वार्थमा न्याय छे नहि कशो,जगत्ना स्वार्थमा दुःख मोटुं,
मोह अज्ञानथी स्वार्थनी आशमां,बोलता प्राणिया वेण खोटुं.स्वार्थ.७
स्वार्थनी धूनमां देव भासे नहीं, स्वार्थनी धूनमां भजन भूले,
स्वार्थना त्यागथी सत्य तो सांपडे, सत्य आनन्दता दील खूले
स्वार्थ. ॥ ८ ॥

सद्गति गुरुतणी सर्व सुखमूळ छे, स्वार्थना पाशने तेहि कापे,
बुद्धिसागर सदा स्वार्थने त्यागिए, ध्यान कीजे मुदा ब्रह्म जापे.
स्वार्थ ॥ ९ ॥

परमार्थ स्वरूप.

झूलणाछन्द

वात परमार्थनी सत्य छे जगत्मा, वात परमार्थनी दील धारो,
सत्य परमार्थमा प्रकट परमातमा,सत्य परमार्थथी दुःख आरो. वात १
सत्य परमार्थमा धर्म सहु सम्पजे, सत्य परमार्थथी पाप जावेः
देवनी कोटि पण हस्त जोडी रहे, अप्सरावृन्द बहु गुण गावे वात २
सत्य परमार्थथी सत्य उपकार छे, सत्य परमार्थथी मुक्ति पामे,
आत्मथी भिन्न नहि सत्य परमार्थ छे,देवता वृन्द पण शीर्ष नामे. वात. ३
सत्य परमार्थमा दुःख आवी पडे, डगो नहि तेहथी धैर्य हारी,
जय सदा सत्य परमार्थनो जगत्मा,स्वार्थ त्यागी करो तत्र यारी. वात ४

धर्मनुं मूळ छे सत्य परमार्थमां, सत्य परमार्थनुं मूळ साचुं;
सत्य परमार्थनी आगळे जाणिए, प्राण दारा अने राज्य काचुं. वात. ५
प्राणियोनी दया सत्य परमार्थमां, सत्य परमार्थमां सत्य बुद्धि;
सत्य परमार्थथी आतमा देव छे, सत्य परमार्थथी आत्मशुद्धि. वात. ६
वैरने झेर इर्ष्या टळे सहजमां, मुक्तिनुं बारणुं त्वरित खूले;
प्रेम सहु जीवपर सत्य परमार्थथी, सत्य परमार्थथी पाप भूले. वात. ७
कल्पचिन्तामणि सूर्यने चन्द्रथी, सत्य परमार्थनुं काम मोटुं;
सत्य परमार्थनी साधना दुर्लभा, भव्य नहि जाणिये दील छोटुं. वात. ८
शूर सज्जन जनो सत्य परमार्थना, कार्यमां शीरने दूर मूके;
प्राण पण जो पडे धैर्य हारे नहीं, सत्य धारी कदी ते न चूके. वात. ९
सत्य परमार्थमां धर्मनो स्वार्थ छे, सत्य परमार्थनी टेक साची;
बुद्धिसागर सदा सत्य परमार्थमां, भव्य प्राणी रहो नित्य राची. वात १०

ब्रह्मचर्य.

झूलणाछन्द.

सत्यनी टेकथी धारजो शियलने, शियलना मन्त्रथी सर्व सिद्धि;
शियल धार्या थकी देव पाणी भरे, शियलना मन्त्रथी सर्व रूद्धि.
सत्य. ॥ १ ॥
शियलथी मानवी कार्य धार्यां करे, शियलना तेजथी भूत नासे;
शियलना तेजथी प्राप्ति छे ब्रह्मनी, शियलना तेजथी सत्य भासे.
सत्य. ॥ २ ॥
मन वचः कायथी शियलने धारतां, देवनी कोटि पण शीर्ष नामे;
शियल सन्नाहथी शस्त्र वागे नहीं, शियलना तेजथी दुःख वामे.
सत्य. ॥ ३ ॥

डाकिणी शाकिणी भूत सहु नासतां, शियलना तेजथी भव्य जाणो;
मन्त्रनी सिद्धियो शियलना तेजथी, शीलथी होय नहि भय कशानो.
सत्य ॥ ४ ॥

वचननी सिद्धि पण शियलना तेजथी, शियलना तेजथी सत्य शान्ति;
शियलनुं तेज छे सूर्यथी मोटकुं,शियलना तेजथी देहकान्ति. सत्य.५
शियलनी सिद्धिमां सर्व सुखडां वसे, सर्व वृतमा सदा शील मोटुं;
शियलने जलधिनी उपमा शास्त्रमां, वेण जाणीश नहि भव्य छोटुं.
सर्व ॥ ६ ॥

शियलना तेजथी योगनी सिद्धियो, शियलना तेजथी होय मुक्ति,
द्रव्यने भावथी शियलने धारवु, सर्व सिद्धान्तनी एह युक्ति सर्व. ७
पामिए बल घणु शियलना तेजथी, शियलना तेजथी दीर्घ आयु,
शियलना तेजथी सर्व रोगो टळे, वीर तीर्थकरे एम गायुं. सर्व. ८
द्रौपदी कुन्ती ने मदनरेखा सती, शियलना तेजथी शान्ति पाम्यां;
सर्व सङ्कट टळे च्हाय तेतो मळे, शियलना तेजथी दुःख वाम्यां. ९
ब्रह्मचर्य सदा भव्य राची रहो, शियलने टेकथी दील धारो,
बुद्धिसागर सदा शियलना तेजथी, पामिए दुःखनो भव्य आरो
सर्व ॥ १० ॥

सत्यमहिमा.

झूलणाछन्द

सत्य वाणी वदो सत्य वाणी वदो, सत्यवादी सदा भव्य मोटा,
जूठ वचने अरे सत्यने हारिए, जाणजो जूठथी दुःख गोटा. सत्य. १
सत्य बोली भवी कीर्ति कमला लहो, सत्यमा सर्व धर्मो समाया,
सत्य छे दिनमणि सारिखुं चळकतु, सत्यथी शोभती जाण काया.
सत्य. ॥ २ ॥

सत्यमां धर्मनुं मूळ छे जाणजो, धर्मना म्हेलनो सत्य पायो;
सत्यने बोलतां धर्मने तोलिये, सत्य महिमा जगत्मां गवायो. सत्य. ३
सत्यथी अन्य को धर्म भासे नहीं, सत्यथी धर्मनो पन्थ चाले;
सत्यथी देव दानव करे चाकरी, सत्यथी मुक्तिना म्हेल म्हाले. सत्य. ४
नामने स्थापना द्रव्यने भावथी, भेद चारे लहो सत्य साचुं;
सर्व उपदेशनुं मूळ छें सत्यमां, सत्यनी प्राप्ति विण सर्व काचुं. सत्य. ५
रूद्धिने सिद्धि सहु सत्यना हाथमां, जगत्मां मानवी कीर्ति पामे;
वचननी सिद्धि पण सत्यनी पांखडी, भव्य जीवो ठरे एक ठामे. सत्य. ६
सत्य बोल्या थकी कर्मनी नष्टता, सत्य बोल्या थकी ब्रह्म प्राप्ति;
आधिने व्याधि उपाधियो नासती, सत्यना वेणथी ज्ञान व्याप्ति. सत्य. ७
राम हरिचन्द्रनी सत्य वाणी थकी, जगत्मां पूज्यता तेहि पाम्या;
सत्य वाणी वदे टेकथी तेहने, इन्द्र चन्द्रादिके शीर्ष नाम्या. सत्य. ८
सत्य बोलो सदा सत्य बोलो सदा, सत्यमां विजय छे मान साचुं;
सत्यनी टेकथी जन्मनी सफलता, जूठनुं वेण छे सर्व काचुं. सत्य. ९
सत्यमां विजय छे सत्यमां विजय छे, सत्यथी सर्व दुःखो प्रणाशे;
बुद्धिसागर सदा सत्य बोल्या थकी, रुद्धिने सिद्धियो सर्व पासे. सत्य. १०

दानमहिमा.

झूलणाछन्द.

दानने देइए दानने देइए, दान दीधा थकी पुण्य वृद्धि;
दानथी स्वर्गनी प्राप्ति छे सहजमां, दानथी होय सर्वत्र सिद्धि. दान. १
थाय वशमां सहु वैरियो दानथी, स्वर्ग पाताळमां कीर्ति गाजे;
दानथी देवता सेवता चरणने, दानथी मुक्तिनां शर्म छाजे. दान. २
दान दीधां थकी सर्व दोषो टळे, दानथी धर्मनुं बीज वावे;
साधुने प्रेमथी दान दीधा थकी, प्राणिया मुक्तिमां शिघ्र जावे. दान. ३

दान छे पंचधा सूत्रमां भाखियुं, अभयसत्पात्रथी स्वर्ग सिद्धि,
शालिभद्रे लही क्षीरना दानथी,वसन भोजन अने दिव्य ऋद्धि.दान.४
दानथी मानिनां मानतो जाय छे, दानथी शत्रुओ मित्र थावे;
दुःख अग्नि प्रशम दानना मेघथी, दानथी लक्ष्मीनी लील पावे दान.५
अमर ते जगत्मां सत्य दातार छे, दान संवत्सरी वीर आपे;
सर्व तीर्थेश पण दानने आपता,दानथी दुःख दौर्भाग्य कापे. दान ६
दानथी दुःखिनां दुःख दूरे टळे, दानथी कर्ण जगमां गवायो;
दानथी पामिए मान अवनी विषे,मेघरथ दानथी शान्ति पायो. दान.७
दान दीधा थकी तीर्थकृत् थाइए, दानने देइए भव्य हाथे,
बुद्धिसागर सदा दान देतां थकां, हस्तथी धर्मतो होय साथे. दान. ८

कपट स्वरुप.

झूलणाछन्द

कपटना फन्दथी चपट छे सत्यरे, दीलमां धारजे भव्य प्राणी;
कपटमां काळ विकराळ वासो करे,कपटथी कार्यमा धूळधाणी. कपट.१
कपटथी मल्लिजिन वेद स्त्री बांधियो, कपटथी मानवीवदन काळुं,
कपटथी खोदतां तो पडे पापियो, कपटथी मुक्तिना द्वार ताळुं. कपट २
कपटथी केइ पॅड्या नरकमा रडवॅड्या, कपटमां कर्म बधाय भारे,
कपटविषवृक्षनी छायमां दुःख छे, कपटथी मानवी जन्म हारे कपट.३
पाप त्यां कपट छे कपट ते कर्म छे, कर्मथी जीव उंचो न आवे,
कपटनी खाटमां प्राणिया जे पॅड्या, दुर्गति दुःखने तेह पावे कपट ४
कपट दावाग्निमां जीवडा जे पॅड्या, जीववानो नथी एक आरो,
कपट किम्पाकना वृक्षने छेदिने, आतमाने अहो भव्य तारो. कपट. ५
कपट कजियातणुं मूळ छे जगतमां, कपटथी देशनो ध्वंश थावे;
कपटथी राज्यलक्ष्मी तणो नाश छे,नरकमा जीवडा दुःख पावे. कपट.६

आतमा तारजो आतमा तारजो, कपटनी कापिने सर्व फांसी;
कपट फांसी पड्या धर्म जे साधता, देखतां आवती दील हांसी. कपट.७
विजयसिंहे रच्युं कपट बहु कारमुं, तेहथीं हिन्दुओ सर्व हार्या;
कपट करनार ते दुःख पाम्या बहु, सर्व अन्ते गया तेह मार्या. कपट.८
कपटथी कोइ काळे भलुं नहीं अरे, कपट छे पापमां पाप मोटुं;
कपट आवेशमां कार्य अवळुं हुवे, कपटथी कर्म नहि थाय छोटुं. कपट.९
कपटने त्यागवुं वचन मन कायथी, कपटना त्यागथी सद्य मुक्ति;
बुद्धिसागर सदा सरलता राखिए, तेहथी पामिए सत्य युक्ति. कपट.१०

उपकारमहिमा.

झूलणाछन्द.

कार्य उपकारनां कीजिए मानवी, लक्ष्मीथी लीजिए सत्य ल्हावो;
ज्ञानिने स्हायथी सत्य उपदेशथी, सत्य आनन्दने भव्य पावो. कार्य.१
धर्म उपदेशथी सत्य उपकार छे. जीवने दुःखमांथी बचावो;
जीवननी सफलता सत्यउपकारमां, कार्य परमार्थनां दील ध्यावो.
कार्य. ॥ २ ॥
भव्य उपकारिना दीलमां छे दया, दील उपकारिनुं स्वच्छ रहेवे;
धन्य छे जगत्मां जन्म उपकारिनो, स्वर्गने सिद्धिपण तेह लेवे. कार्य.३
बाह्यमां क्यां रमो मोहवनमां भमो, कार्य उपकारनां दील धारो;
जगत्मां मान पामो अहो प्राणिया, सत्य उपकारथी जीव तारो. कार्य.४
पूज्य तीर्थेश्वरा देशना देइने, प्राणिना स्तोकने शिघ्र तारे;
परम उपकारमां कर्मनो नाश छे, जन्मनी सफलता सत्य सारे. कार्य.५
राचशो स्वपर उपकारमां मानवी, परम उपकारथी कार्य सिद्धि;
बुद्धिसागर सदा सत्य उपकारथी, पामिए सत्य चैतन्य रूद्धि. कार्य.६

प्रभातियुं
झूलणाछन्द

चेत चेतन प्रभु रटन कर आपनु, अलख निर्भय विभु तुं सुहायो;
कर्म कर्त्ता कँद्यो कर्म भोक्ता कँह्यो,लक्ष चोराशिमां खुब जायो.चेत १
ऊंघ नहि आतमा पामि मानवपणुं, ज्ञान वैराग्यथी ध्यान धर तुं;
राम रहेमान तुं शिव धाता हरि,आप बंधाय अव आप तर तुं. चेत.२
आत्मज्ञाने विभु व्यक्तिथी नहि कदा, शुद्धरूपे प्रभु तुहि समायो,
भक्ति भगवन्तनी चित्तमां जागता, ज्योति झगमग भट स्थान पायो.
चेत. ॥ ३ ॥

शक्ति सिद्धि सकल जागती ध्यानथी,ध्यानथी कर्म सघळां विडारे;
शुद्ध निर्मल बनी मुक्तिसुख भोगवे, ज्ञानवैराग्यथी मोह मारे
चेत ॥ ४ ॥

जाग अव आतमा शूर थइ साहिवा, मोह माया थकी रही उदासी;
बुद्धिसागर हवे टेक धारी प्रभु, अलखनी धुनमा सिद्धवासी.चेत ५

प्रभातियुं.
झुलणाछन्द

जाग अव आतमा जाग अव आतमा,ढील नवकारनु स्मरण कीजे;
कोण हुं शाथकी आवियो क्या थकी, कृय शुं आतमा केम छीजे.
जाग ॥ १ ॥

हेय आदेयने ज्ञेय शु जग विषे, आज लगी आत्महित शु विचार्युं,
चेत चेतन प्रभु ऊंघ नहि आळसु, मोह मायाथकी जीवन हार्युं.
जाग. ॥ २ ॥

श्वास उश्वासमा आयुरे जाय छे, वीतियु जीवन नहि फेर आवे,
राज राणा गया देव दानव गया, अमर नहि कोइ जगमा रहावे.
जाग. ॥ ३ ॥

धर्म झट कीजिए साथ ते आवशे, देख मनमां सदा ते विचारी;
बुद्धिसागर सदा ज्ञानथी जागजे, त्याग वैराग्यथी ध्यान धारी.
जागः ॥ ४ ॥

योगमहिमा.

झूलणाछन्दः

योग विद्यातणुं धाम चेतन प्रभु, शक्ति सिद्धो समी रहि प्रकाशी;
योगविन् मानवी चित्तमां ध्यानथी, पिण्ड ब्रह्माण्ड भावो विलासी.
योग. ॥ १ ॥

भूतमय वृत्तिथी भ्रान्तिमां भूलतां, वृत्तिथी परप्रभु न प्रकाश्या;
वृत्तिथी परप्रभु पामे नहि वैखरि, शुकल ध्याने पराभाव वास्या.
योग. ॥ २ ॥

दीप ज्योतिः परे ज्योत ज्यां जागती, सहज उपयोगमां लीन वृत्ति;
श्वास उश्वासनी मन्दता स्थीरता, बाह्यमां जाणिए शून्यवृत्ति. योग. ३

चक्र षड् भेदवां वायुनां पिण्डमां, गगन गढ चालवुं वंकनाले;
ज्योति झळहळ जगे शोक चिन्ता भगे, हंसलो शान्तिसुखमांहि
म्हाले. योग. ॥ ४ ॥

त्वरित शिवत्वनी प्राप्ति छे सहजमां, ग्रन्थी भेदी लहे मुक्ति साची;
जीवतां मुक्तिनां सुख जे पामता, सिद्धि ते पामतो सत्य राची. योग. ५

सत्य उत्तम अहो योगविद्या ग्रहो, योगना भोगमां भव्य राचो;
चित्तलय चेतना शुद्धता ज्यां हुवे, योग महिमा लहो पिण्ड साचो.
योग. ॥ ६ ॥

पिण्ड ब्रह्माण्डनी ऐक्यता आत्ममां, शुद्ध उपयोगथी जेह जागे;
अष्ट सिद्धि सदा हस्त जोडी रहे, चित्त रंगाय नहि बाह्यरागे. योग. ७

लब्धि सिद्धि तणुं स्थान तुं आतमा, जाग चेतन प्रभु शुद्ध भावे,
उघ नहि आतमा अलखना पन्थमां, अनुक्रमे योग सिद्धि सुहावे.
योग. ॥ ८ ॥

अलखनी धूनमां भासता दिनमणि, भक्ति उत्साहथी यत्न धारो;
बुद्धिसागर सदा ज्योतमां जागजे, शुद्ध चेतन प्रभु चित्त प्यारो.
योग. ॥ ९ ॥

आत्माने सत्यशिक्षा.

झुलणाछन्द

सत्यशिक्षा सदा आतमा मानजे, नित्य आनन्दना भोग माटे,
ज्ञानि सङ्गे रहो ज्ञान साचुं लहो, चालजे मोक्षनी सत्य वाटे सत्य १
मूर्ख सङ्गत तजो देव अर्हन् भजो, शरण गुरुनु करो भव्य प्राणी,
देह ममता तजो मोक्ष साधन सजो, सत्य सिद्धान्तनो सार ताणी.
सत्य. ॥ २ ॥

मोह माया हरो ध्यान उत्तम धरो, जाप अजपा जपो तत्त्वरागी,
वास एकान्त ध्याने सदा राचिए, शुद्ध रूपे सदा चित्त जागी.
सत्य ॥ ३ ॥

कटुकता लींबनी भोगनी तेहवी, दुःखदायी तजोने विकारो,
भोग प्रारब्धना वेदिए बाह्यथी,भिन्न अन्तरथकी टील धारो. सत्य ४
भोग रोगो करी लेखवो मन विषे, मोहना हेतुने दूर वारो;
श्वास उश्वासमां आयु जावे अरे, त्वरित चेतन अरे भव्य तारो.
सत्य. ॥ ५ ॥

जाय परभावमा श्वास उश्वासरे, भव्य भूले अरे शु विचारी,
पामि मानवपणुं चेतजे चित्तमा, भूलता दुःख पामीश भारी. सत्य.६

ज्ञान श्रद्धा ग्रही भक्ति शक्ति लही, यत्न करजे प्रभु प्रेम धारी;
बुद्धिसागर हवे चेतजे चित्तमां, विषयतृष्णा तणा वेग वारी. सत्य. ७

आत्मध्यानमहिमा.

झूलणाछन्दः

अलख निर्भय प्रभु देहमां व्यापियो, ज्ञान व्यापक विभु तुं सुहायो;
ज्ञाननी ज्योतमां ज्ञेय भासे सकल, अकल अक्षर अरूपी कहायो.
अलख. ॥ १ ॥

ज्ञेय भासक स्वतः चिद्घनानन्द तुं, भान भूली वस्यो तुं शरीरे;
लाख चोराशिमां जन्म मृत्यु कर्यां, कर्मथी चउगतिमां फरीरे.
अलख. ॥ २ ॥

कर्म कर्त्ता अने कर्म भोक्ता प्रभु, कर्म हर्त्ता प्रभु तुं कहावे;
आप भावे रमे कर्म कोटी खपे,कर्मना नाशथी सिद्ध थावे.अलख. ३

कर्मने खेंचतो कर्मने छंडतो, अन्य भावे अने स्वस्वभावे;
कर्मनी वर्गणा आवती जावती,दोयपरिणामथी ते सुहावे.अकलख. ४

दोय परिणाम ते भिन्न काले कह्या, वचन तीर्थेशनां सत्य जाण्यां;
चारगति जाववा छेदवा तुं प्रभु, वचन सापेक्ष मनमांहि आण्यां.
अलख. ॥ ५ ॥

बन्ध परिणामथी धर्म उपयोगथी, सकल सिद्धान्तनो सार भाख्यो;
व्यक्तिथी व्यापियो देहमांहि प्रभु, व्याप्य व्यापक नये सत्यदाख्यो.
अलख. ॥ ६ ॥

सिंह तुं साहिबा कर्मपिंजर पड्यो, जोइ ले चित्तमांहि विमासी;
कर्मनो भार शो आप भावे रमे,कर्म छेदी हुवे सिद्धवासी.अलख. ७

चुंथतो शुं प्रभु कर्मनां चुंथणां, विषय मिष्टान्नने चित्त राची;
सर्व पुद्गलतणुं कारमुं रूप ए, भूंड पेठे रह्यो केम माची. अलख.८

जिनतुं साहिबा दीन परभावथी, जागतां सर्व शक्ति प्रकाशे,
बुद्धिसागर प्रभु आतमाराम तुं, ध्यानथी ध्येय रूपे प्रभासे. अलख. ९

आत्माने हितशिक्षा.

इन्द्रविजय छन्द

चेतन चित्त विचार अहो सहु
जीवन व्यर्थ सदाय वहे छे;
आतम तत्त्व लहे सफलो भव
वीर जिनेश्वर सत्य कहे छे.
आदररे जीव सादरथी दील
धर्म सदा सुख शाश्वतकारी
धीनिधि आतम मान अरे शिख
वीर जिनेश्वर तत्त्व विचारी ॥ १ ॥
मान अने अपमान समा गण
मित्र तथा अरिभाव समाना
आतम ते परमातम साहेब
ध्यान थकी कवी बुद्दोत न छाना
अन्तर धर्म धर्यो विन निष्फल
कष्ट क्रिया सौ चित्त सुजाणो
श्वास उश्वास विषे मुनि नाणथी
मुक्ति लहे मनमां इम आणो ॥ २ ॥
ध्यान धरो भली भात सदा घट
बाह्य उपाधि सदा दुर वारी
विश्व विषे सुखकारक ध्यानज
चेतन तत्त्व विचारज धारी

ज्योति तदा हृदय झलके भवी
कर्म कलंक वधा हरनारी
धीनिधि चेतन सेवनथी यति
धर्म लही सुख शाश्वत भारी

ज्ञानस्तुति.

भुजंगी छंद.

सदा ज्ञानने वन्दिए भव्यभावे मनुष्यो लही ज्ञानने मुक्ति पावे,
विना ज्ञान भव्यो गणो अन्ध जेवा, सदा ज्ञाननी कीजिए भव्य सेवा १
जिनेन्द्र प्रभु ज्ञानने मुख्य भाखे, लही ज्ञानने तीर्थने सुरि राखे
सदा सुर्यवत् जेह तत्त्व प्रकाशी, भवी प्राणियो ज्ञानना नित्य प्यासी २
उपादेयने हेयने ज्ञेय भावा सदा ज्ञानमां भासता ते स्वभावा
जुओ श्वास प्रश्वासमां भव्य नाणी करे कर्मनी नष्टता सत्य जाणी ३
सदा ज्ञाननी ज्योतमां सर्व भासे सहु ज्ञाननी ज्योतिथी कर्म नासे
विना ज्ञान भव्यो न होवे विवेकी;विना ज्ञानथी धर्मना को न टेकी ४
नमो ज्ञानने सत्यनुं जे प्रकाशी, कहो ज्ञानने उपमा गङ्ग काशी;
दिले शोभतुं ज्ञान उद्योतकारी, श्रुत ज्ञानने वन्दना नित्य म्हारी. ५
जुओ सूत्रमां ज्ञान छे तीर्थ साचुं, श्रुत ज्ञानना तीर्थमां नित्य राचुं;
भणावो गणावो भणो भव्य भावे, श्रुत ज्ञानथी दोषना वृन्द जावे. ६
ग्रहो ज्ञान साचुं विनेय प्रकाशी, जगत्मां घणुं दीपतुं जे विलासी;
नमुंछुं मुदा ज्ञानने पाय लागी, अहो बुद्धिथी चेतना शुद्ध जागी. ७

उज्ज्वल ध्यान.

दोहरा.

एकरूप हुं द्रव्यथी, एकरूप हुं सत्त्व;
हुं तुं शम्या विकल्प सहु, शुद्ध बुद्ध सुखतत्त्व. १

शुद्ध तत्त्व उपयोगथी, प्रगटे सत्यानन्द;
अनुभवता ज्ञानी अहो, समजे शुं मतिमन्द. २
उपादान निमित्त दोय, भेदे धर्म कथाय;
जिनवरनी वाणी ग्रहे, भेद भाव सहु जाय. ३

श्री महावीर प्रभुस्तुतिः

चोपाइछन्द.

वीर जिनेश्वर लागुं पाय, शरण शरण तु छे सुखदाय,
अडवडियानो तुं आधार, तार तार सेवकने तार ॥ १ ॥
जगमा साचो तुं छे देव, सुखकर साची त्हारी सेव;
हु छुं पापीनो शिरदार, थाशे केवा मुज अवतार ॥ २ ॥
भणी भणीने भूल्यो भान, निशादिन परभावे गुलतान,
उतार्युं नहीं अन्तर्ज्ञान, ए सौ जाणो छो भगवान् ॥ ३ ॥
मननी चंचलता नहि मटी, लेश न परनी ममता घटी,
मन मर्कटना अवळा फेर, वर्ते छे अन्तर अन्धेर. ॥ ४ ॥
अमूल्य जीवन चाल्युं जाय, पण पस्तावो लेश न थाय;
मोहे मुंझ्यो पामर जीव, पर स्वभावे रमे सदीव ॥ ५ ॥
केवल ज्ञानि जाणो सहु, जाणंताने शुं बहु कहु;
मनडुं मुंझे मायाझाळ, अन्तरनो आवे नहि ख्याल. ॥ ६ ॥
अहो गति शी मारी थशे, माळियुं जीवन चाल्यु जशे,
हार्यो हाथे जीवन सर्व, फोगट फुली कीधा गर्व. ॥ ७ ॥
खरे दीवस मारे अन्धार, शीरीते पामिश भवपार;
खरो एक त्हारो आधार, करजे पापीनो उद्धार ॥ ८ ॥
समजीने नहि करु प्रयत्न, ग्रह्यां न ज्ञानादिक त्रिरत्न;
ठाठ माठमां हार्यो सार, जिनजी त्हारो छे आधार. ॥ ९ ॥

शिक्षा अन्तर्मां नहि वशी, विषयेच्छा मनथी नहि खशी;
अभिमाननो प्रगटे तोर, व्याप्युं मोह नृपतिनुं जोर. ॥ १० ॥
सिंह समो पण थयो शियाल, खुंच्यो माया खटपट झाळ;
कर्मविपाकी आवी पडे, मुंझीने मोही लडथडे. ॥ ११ ॥
धीर वीरता हार्यो सहु, समतामृतनो लेश न लहुं;
बूडे कांठे आव्युं झाझ, जिनजी राखो सेवकलाज. ॥ १२ ॥
ठरवानुं तुजविण नहि ठाण, वीरनामनुं साचुं व्हाण;
वीरनामथी सहेजे तरू, वीरनामथी फेर न फरू. ॥ १३ ॥
तव खोळामां बालक शीर्ष, तारो जिनवरजी जगदीश;
तारो पूरो पापी बाल, करूणाथी करजे संभाल. ॥ १४ ॥
अनेक व्हारा नामे तर्या, क्षेमे मुक्ति ललना वर्या;
कनक अग्निथी निर्मल थाय, तुज नामे मुज आतमराय.॥१५॥
प्रभुने मळतां नासे भेद, ध्याने हळशुं थशुं अभेद;
प्रभु स्वरूपे एकाकार, ध्याता ध्येय स्वरूपे धार. ॥ १६ ॥
वीर स्वरूपे श्वासोश्वास, जावे तो छे कर्म विनाश;
ध्याने चेतन वर्ते खास, निजमां निजनो पामे वास. ॥१७॥
जिनने भजतां सुख निर्वाण, वीरभक्तिथी छे कल्याण;
वीर प्रभु वाणी विश्वास, वीर प्रभुनो छुं हुं दास. ॥ १८ ॥
अजरिज वीर प्रभुनो दास, भेद न दास प्रभुमां खास;
अनन्तभवनां नासे पाप, वीर प्रभुनो जपतां जाप. ॥ १९ ॥
वीरभक्तिमां जीवन जशे, जन्म सफलता त्यारे थशे;
जिनवर रटना श्वासोश्वास, राग दोषना तोडे पास. ॥ २० ॥
होजो वन्दन वारंवार, भूलुं नहि तारो उपकार;
बुद्धिसागर बालक तार, सेवकनो करशो उद्धार. ॥ २१ ॥

श्री वर्धमान जिनस्तुतिः

मालिनीछन्दः

भवजल निधि पोतः, वीर विश्वेश देवा,
सुगति सुखद नेता, सारता देव सेवा;
समय समय नाणी, आण त्हारी प्रमाणी,
सरस वचन जाणी, आदरे भव्य वाणी. ॥ १ ॥
स्तवन नमन कीजे, तत्त्वनुं सार लीजे,
प्रभु वचन लहीने, भव्य प्राणी तरीजे,
यतिपति नतदेवा, दीलमां नित्य गावुं,
समय सरस पामी, मुक्तिमा शिघ्र जावुं ॥ २ ॥
शरण शरण म्हारे, नाथ तु छे दयाळु,
चरण कमल सेवा, नाथ देजो कृपाळु;
स्तवन नमन कीजे, कर्मनां दुःख कापे,
नव गुण गण भावे, ध्येयनुं रूप मापे. ॥ ३ ॥
गत मलिन विरागी, वन्दुछुं पाय लागी,
तुज विण नहि राचुं, वाल त्हारोज रागी,
जनन मरण फेरा, भागशे वीर नामे,
धीनिधि मुनि नमे छे, प्रेमथी अष्ट यामे

सद्गुरु स्तुति.

मालिनी छन्द

सरस सुखद सेवा, सेव्यनी तो कहावे,
गुरु वचन लहीने, मोक्षमा भव्य जावे,
शरण शरण साचुं, शिष्यनुं दुःख कापे,

अज अमर साचुं, मोक्षनुं स्थान आपे. ॥ १ ॥
गहन समय वाणी, बोध तेनो प्रकाशे,
गुरुगम विण काचुं, ज्ञान चित्ते न भासे;
चरणकमल सेवा, पूर्वपुण्ये लहीजे,
गुरुवदन निहाळी, सत्य शान्ति ग्रहीजे. ॥ २ ॥
जिवन सफल थावे, सद्‌गुरु प्रेम भावे,
गुरु नयनकृपाथी, दुःख दौर्भाग्य जावे;
प्रतिदिन गुरु वन्दुं, धर्मनुं दान दाता,
सरस वचन बोधे, सर्व वस्तु प्रमाता. ॥ ३ ॥
सुगुण गण खजानो, सद्‌गुरु प्राणदाता,
सुरतति पति वन्दे, सत्य छे भव्य भ्राता;
जनक शरण त्हारु, आशरो एक म्हारे,
बॉधिनिधि मुनि नमे छे, तुं तरे शिष्य तारे. ॥ ४ ॥

आत्माने अलखदेशोपदेश.

ललित.

अलख देशमां हंस चालवुं, अलख देशमां हंस म्हालवुं,
अलख देशनी धून धारवी, अशुभ जीवनी टेव वारवी. ॥ १ ॥
खलकमां खरे ब्रह्म सत्य छे, अलखना विना अन्य काच छे,
अलख धूनमां लक्ष्य छे खरु, अलख देशने प्रेमथी वरु. ॥ २ ॥
अलख रङ्गमां राग छे खरो, अलख गङ्गमां स्नानने करो;
अलख यानथी अब्धिने तरो, अलख धूनथी कर्मने हरो. ॥ ३ ॥
अलख देशमां क्लेश ना कदा, अलख देशने पामिए यदा,
अलख ज्योतथी सर्व भासतुं, अलख ज्योतथी कर्म नासतुं. ॥ ४ ॥
अलख सत्य छे पिण्ड जागतो, अलख धूनमां भव्य रागतो,

अलख आत्मना ध्यानमा रहुं, अलख शान्तिने प्रेमथी लहुं. ॥५॥
अलख ज्योतमां जागवु सदा, अलख ज्योतमा दुःख ना कदा,
अलख देशनी धूनमा रहे, अलख तत्त्वने योगियो लहे ॥ ६ ॥

जीवने चेतवानो उपदेश.

मुखडा क्या जोवे दर्पणमा—ए राग

जीवडा चेतीले चटपटमा, खुंच्यो शुं खटपटमा जीवडा.
सगपण काचां छे दुनीआनां, मायाना तरकटमां,
काच कुंभ सम काया काची, मोह वने जीव अटमा. जीवडा १
तन धन योवन जुठुं जगमां, समज समज तुं घटमा;
काळ कोळीओ त्हारो करशे, झडपीले झटपटमां जीवडा २
लक्ष्मी ललनानी लालचथी, लाग्यो शुं लटपटमा;
अणाधार्यो उठीश अंते तुं, काळ पकडशे चटमा जीवडा. ३
शाब्दिक तार्किक पण्डित बनीने, भूल्यो शुं घटपटमा,
आत्मज्ञान विण सत्य न लहियु,पडियो भव अरहट्टमा जीवडा. ४
अप्पा सो परमप्पा समजी, अवर कशुं दील रटमा;
बुद्धिसागर अन्तर ध्याने, मुक्ति लहे जीव झटमा. जीवडा ५

समाधि.

सवैया एकतीसा.

आत्मसमाधि जगमा मोटी, तारे भवोदधिनी पार,
चिन्मय चेतन आपस्वभावे, शाश्वतसुख वेदे निर्धार;
सद्गुरु ज्ञानी मुनि अवलंबी, आत्म समाधि पामो सार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ १ ॥
बाह्य वस्तुमा इष्टानिष्ट, मुंझ्यो आतम भूली भान,

राग दोषथी कर्मग्रहीने, भ्रमण करे भवमां नादान;
रत्नत्रयीनी प्राप्ति विण आ, जाणो फोगट मनु अवतार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनंत सुख पामो नरनार. ॥ २ ॥

दर्शन नाण अने वळी चरणे, पामो साचो मोक्ष सुपन्थ,
तत्त्वार्थमांहि साचुं भाख्युं, साख पूरे छे बहुला ग्रन्थ;
रत्नत्रयी मळतां छे मुक्ति–एक एकथी कदी न धार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ३ ॥

पिण्डस्थादिक चार भेदथी, ध्यावो चेतन सुख भरपुर,
अप्पा सो परमप्पा परगट, चेतनथी मुक्ति नहीं दूर;
तिरोभाव चेतन गुण सत्ता, आविर्भावे कृत्य विचार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ४ ॥

अशुद्ध भावे पुद्गल कर्त्ता, हर्ता शुद्ध स्वभावे भव्य,
अन्तरना उपयोगे रहेवुं, भाव धर्मनुं ए कर्तव्य;
शुद्ध स्वभावे शक्ति प्रगटे, कर्म मर्मनो नासे भार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्तसुख पामो नरनार. ॥ ५ ॥

भासे ज्ञेयस्वरुपे सुख पण, ज्ञाने ज्ञाता चेतनराय;
उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक, सत्यधर्म चेतन कहेवाय;
सुखनी धारा जग जयकारा, प्रगटे चेतनमां जयकार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ६ ॥

धर्म ध्यानना पाया चारे, भावो भक्तिथी सुखकार;
चार भावना मैत्री आदिक, ध्यातां नासे मिथ्याभार,
स्थित्युत्पत्ति व्ययनो योगी, अशुद्ध परिणतिने हरनार;
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ७ ॥

स्मरजो श्वासोश्वासे चेतन, केवलनाणी सुखनी खाण;
तप जप संयम चेतन हेते, करशो पामी जिनवर आण,

बुद्धिसागर सद्गुरु सङ्गति, करजो धरीने सद्व्यवहार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ८ ॥

आत्मानुभव स्वरूप.

सवैया एकत्रीसा.

अनुभवना प्यासि तुं हंसा, अलखस्वरूपी छे निर्धार,
सोहं सोऽहं चिन्मय चेतन, ब्रह्म स्वरुपी ज्ञानाधार;
जकडाणो शुं माया झाळे, भूलीने पोतानुं भान,
स्वयं प्रकाशी परमप्रकाशी, चेतन धर पोतानुं ध्यान ॥ १ ॥
आंखे सारुं खोटुं देखे, आंख मिंचाये ते सहु फोक,
हुं ने मारुं सहु छे मिथ्या, ममता करता फोगट लोक,
म्हारुं त्हारुं भूली हंसा, करतु शाश्वत गुणनो प्यार,
निर्भय देशी सिद्ध समोवड अनंत गुणनो छे दातार. ॥ २ ॥
इष्टानिष्टपणु सहु मिथ्या, पुद्गलमां भासे नहि सार,
स्थिरोपयोगे वीर्य शक्तिनी, प्राप्ति चेतनमां छे धार,
शक्ति अनंति चेतन प्रकटे, करता पिंडस्थादिक ध्यान,
नमुं नमुं हुं चेतनराया, शुद्ध बुद्ध त्राता भगवान् ॥ ३ ॥
शकल कला जगजीवन म्हारी, महिमा त्हारो अपरंपार,
श्वासोश्वासे अजपाजापे, अनुभव ज्योति प्रकटे सार;
अहो धन्य तु आतमराया, निराकार वर्ते साकार,
बुद्धिसागर अवसर पामी, आतम तुं पोताने तार. ॥ ४ ॥

॥ सम्प प्रेरणा ॥

सवैया एकत्रीसा.

जागो झटपट जैनबन्धुओ, द्वेष क्लेशने त्यजशो खार;
वैर झेरने दूर करीने, एकमेकथी कीजे प्यार;

मत मतान्तर झघडा त्यागी, धर्मिजनोनी कीजे व्हार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ १ ॥
सम्यग् ज्ञान विना गोटाळो, वात वातमां पडिया भेद;
सङ्घ चतुर्विध सम्प न वर्ते, ते देखतां प्रगटे खेद,
सम्प करीने खेद नीवारो, सफल करो मानव अवतार;
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ २ ॥
त्रिशलानन्दन वीर जिनेश्वर, विरहे जिनशासन छेदाय;
धार्मिक केळवणी नहि मळतां, मिथ्यात्वी जैनो थइ जाय,
जागो वीरना भक्तो जैनो, करशो जिनशासन उद्धार;
जैन बान्धवो हळी मळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ३ ॥
धर्म धुरंधर पूर्वाचार्यो, थई गया शासन सुलतान,
कमर कसीने जैन पताका, वर्तावी पामीने ज्ञान,
जैन धर्मनी वृद्धि कीधी, हेमचन्द्र जेवा जयकार,
जैन बान्धवो हळी मळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ४ ॥
तन मन धनथी ज्ञान भणावो, सङ्घ चतुर्विध करशो स्हाय,
जूनां पुस्तक फेर लखावो, जैनाभ्युदय सरल उपाय;
स्हाय करीने श्रमण भणावो, उपदेशे करवा तैयार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ५ ॥
पण्डित थतां मुनिवर मण्डल, जैनोन्नतिनां करशे काम,
व्याख्यानोने कथी रचीने, पूर्व सूरिवर राखे नाम;
ते माटे मुनिमण्डल स्हाये, धन खर्चो श्रावक नरनार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ६ ॥
जागो भव्यो आळस त्यागी, शिक्षा सारी सुणशो कान,
धर्मप्रेमने दीलमां धारी, त्याग करोने मिथ्या मान;
ज्ञापानीझनी पेठे जैनो, जागो श्रावकने अणगार,

जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ७ ॥
मिथ्यावादो दूर करीने, धार्मिक सारां कीजे काज,
धर्म फेलावो करशो जैनो, तेथी रहेशे जाति लाज;
बुद्धिसागर जैनोदयना, कार्यां करवां थइ हुंशियार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ८ ॥

मुनि सद्गुरु स्तुति.

सवैया एकतीसा.

नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वैरागी त्यागी शुरवीर,
पञ्च व्रतोने प्रेमे पाळे, धर्म ध्यानमा वर्ते धीर;
देशो देश विहार करीने, उपदेशे छे नर ने नार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारवार. ॥ १ ॥
सङ्घ चतुर्विधमा जे म्होटा, जिनशासनमां जे सुलतान,
जैनोन्नतिमां जीवन गाळे, धर्मरत्ननुं देता दान,
साचुं जंगम तीर्थ मुनीश्वर, भवोदधि तारे नरनार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार ॥ २ ॥
श्रावकने मुनिवरनु अन्तर, छिल्लरने सागर उपमान,
परम प्रभुमा मुनिवर भाख्या, करता पिण्डस्थादिक ध्यान,
त्रिज्ञानी पण वीर जिनेश्वर, दीक्षा लेवे मुनिनी सार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारवार. ॥ ३ ॥
मुनिवर वैयावृत्ये राचो, करशो मुनिवरनुं बहु मान,
मुनि विना नहीं सङ्घ कहावे, आवश्यकमां मुनि भगवान,
सूरि वाचक पण मुनिवर वेषे, सङ्घ चतुर्विधना आधार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ४ ॥
मत उचरवां मुनिनी पासे, आगममां भाख्युं छे स्पष्ट,

समकित उच्चरवुं मुनि पासे, नहि माने ते भूले भ्रष्ट;
द्रव्य क्षेत्र ने कालज भावे, मुनि मण्डल वर्ते जयकार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ५ ॥
सप्त क्षेत्रमां मुनिवर श्रमणी, आव्यां छे समजो ते वात,
तुच्छ बुद्धि ने वैर झेरथी, करवो नहि मुनिपदनो घात;
मुनिमण्डलना अभ्युदयथी, थाशे जिनशासनउद्धार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ६ ॥
समकितदाता मुनिवर गुरुजी, जगमां तारो बहु उपकार,
विजयपताका जिनशासननी, मुनिवरथी मानो निर्धार;
वीरनी पाटे मुनिवर वेषे, सूरिवर वेसे छे जयकार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ७ ॥
चरण करण सेवनमां शूरा, ज्ञान ध्यानमां काढे काळ,
कनक कामिनी त्याग करीने, त्यागी जूठी मायाझाळ;
हरिभद्र श्रीहेमचन्द्रने, वाचक यशोविजयजी सार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ८ ॥
युगप्रधानो मुनिवर वेषे, शासन शोभाना करनार,
पुण्यवन्तने मुनिवर दर्शन, अमृतसम लागे सुखकार;
बुद्धिसागर पञ्चमकाळे, मुनिवर गुरुनो छे आधार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ९ ॥

श्री वीरस्तुतिः

सवैया एकतीसा.

जय जय वीरजिनेश्वर तारक, सत्य सेव्य त्हारो आधार;
नवतत्त्वादिकना उपदेशे, कीधो छे तें बहु उपकार,
क्षायिकभावे निर्मल दर्शन, ज्ञाने शोभो श्री जिनराय;

परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय ॥१॥
नय सप्त ने चार प्रमाणे, षड् द्रव्यो भाख्यां निर्धार;
सप्त भङ्गीमा रचना कीधी, अनेकान्तमतनी सुखकार,
देशोदेश विहार करीने, समजाव्या ते सत्योपाय;
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥ २ ॥
दर्शन ज्ञान चारित्रे मुक्ति, विस्तारे समजाव्युं तेह;
श्रावक साधु धर्म बताव्या, समजाव्या छे पञ्च देह,
औदयिक आदि पञ्चभावने, कथिया मुखथी तें जिनराय,
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय ॥ ३ ॥
दया धर्मना धोरी स्वामी, तीर्थंकर भव तारणहार,
सङ्घ चतुर्विध महा तीर्थने, स्थापी कीधो छे उपकार,
द्रव्य क्षेत्र ने काल भावथी, तत्त्व कथ्यां छे ते जिनराय,
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागु पाय. ॥ ४ ॥
बहु उपकारी शिव सुखकारी, गुण त्हारा छे अपरंपार;
तवगुण ध्याता ध्येय स्वरूपे, ध्याता थावे छे निर्धार,
बुद्धिसागर करुणा करशो, शरण शरण तु छे सुखदाय;
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागु पाय. ॥ ५ ॥

नवतत्त्वस्वरूप.

सवैया एकतीसा.

जड चेतन आस्रव ने सवर, निर्जर बन्ध अने छे मोक्ष,
सप्त तत्त्व ए चित्त विचारी, समजीने प्रत्यक्ष परोक्ष;
अजीव आस्रव बन्ध त्रण ए, हेय विजाति हृदये धार,
समजी चेतन सम्यग् ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार. ॥ १ ॥
जीव सवर निर्जर ने मुक्ति, उपादेय तत्त्वो छे चार,

सम्वर निर्जर मोक्ष तत्त्वनो, साचो छे चेतन आधार;
ज्ञेय सदा छे तत्त्वो साचां, चउ निक्षेपे छे अवतार,
समजी चेतन सम्यग् ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार.॥ २ ॥
जड चेतन बे तत्त्वो कहिए, बे तत्त्वोमां सर्व समाय,
विवेक दृष्टि प्रकटन अर्थे, सप्त तत्त्व पण छे सुखदाय;
सात नयोथी सप्ततत्त्वनो, समजो गुरुगमथी विस्तार,
समजी चेतन सम्यग् ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार. ॥ ३ ॥
आश्रवना बे भेदो पाडे, पुण्य पाप बे तत्त्वो थाय;
नवतत्त्वो सिद्धान्ते गायां, ज्ञानीने सर्वे समजाय;
सापेक्षे तत्त्वोनी व्हेंचण, करशे आगमनो भणनार,
समजी चेतन सम्यग् ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार ॥ ४ ॥
नव तत्त्वोना भेद घणा छे, जिन आगममां भाख्या सार,
षड्द्रव्योमां तत्त्व समातां, भाखे श्री गौतम गणधार;
बुद्धिसागर तत्त्वोनुं नव, वर्णन करतां नावे पार,
समजी चेतन सम्यग् ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार. ॥ ५ ॥

राग कान्हरो.

पद.

आतम अनुभव रटना लागी, सुरता अन्तरमां स्थिर जागी
आतम. ॥ १ ॥
चिद्घन चेतन मनमां ध्यावो, सोऽहंसोऽहं पदथी गावो
आतम. ॥ २ ॥
जळपङ्कजवत् अन्तरन्यारो, स्थिर उपयोग होय उजियारो.
आतम. ॥ ३ ॥
समतासरोवर हंसा खेले, संवरथी आस्रव हडसेले.
आतम. ॥ ४ ॥

अनुभवामृत क्षण क्षण पीवो, शुद्धस्वरूपे निशदिन जीवो.
आतम. ॥ ५ ॥
क्षायिकभावे निजपद मळवु, बुद्धिसागर निजपद भळवुं
आतम. ॥ ६ ॥

असल फकीरीनी खुमारी.

गजल

फकीरी त्या न दीलगीरी, फकीरी अर्पती सिरि;
फकीरी दुःख हरनारी, फकीरी सुख करनारी फकीरी. १
फीकरनी फाकीओ भरवी, फकीरी दीलमां धरवी,
फोगट नहि फदमा फूलुं, भणीने भाव नहि भूलुं. फकीरी. २
जगतमा जागवुं ज्योतिः, खरुं शोधु जीवनमोति;
अमारे शोधवुं साचु, हमारे छोडवुं काचुं. फकीरी. ३
हमारे चालवुं देशे, हमारे आत्मना वेषे,
हमारे सर्वनुं महेतु, भलामा नित्य चित्त देवुं फकीरी. ४
अलखना प्रेममा तरवुं, अलखना प्रेममां फरवुं,
बुद्ध्यब्धि प्रेमना प्यारा, फकीरी वेष छे न्यारा फकीरी. ५

ओधवजी सदेशो कहेशो श्यामने-पराग

रामपद.

राम राम रटना लागी छे ज्ञानथी,
पिंडे परगट वसियो आतमराम जो रामराम ॥ १ ॥
निजगुण रमतो राम कहायो आतमा,
जीव चेतन आतम सहु एना नामजो. रामराम.

उपशम क्षयोपशमने क्षायिक भावथी;
रंगाया जीवो ते माटे राम जो,
समता सीता सतीना स्वामी रामजी;
नामी पण निश्चयथी जे निर्नाम जो. रामराम. ॥२॥
अभिमान रावणने मारी लावीया,
समता सीता सतीने जे निज घेरजो;
अनंत सुखडां पाम्या ते श्री रामजी,
भोगवता ते मुक्ति सुखनी ल्हेर जो. रामराम. ॥ ३ ॥
पिण्ड सृष्टि कर्त्ता हर्त्ता श्री रामजी;
नहि ब्रह्मांडतणा कर्त्ता कहेवाय जो,
पिण्डे वसीने अपिण्ड आतम ओळख्यो;
सत्यराम आतम पिण्डे परखाय जो. रामराम. ॥ ४ ॥
पिण्ड तजीने केइक रामो सिद्धिया;
केइक रामो सिद्ध थशे निर्धारजो,
रामराम रटनाथी आतम राम थै;
पामे भवसागरनो जल्दी पार जो. रामराम ॥ ५ ॥
समज्याविण भूल्या रामनामथी मानवी;
शब्दभेदथी करता ताणंताण जो,
रामनाम लक्ष्यार्थे राम जगावीने;
पामो अनुभव रङ्ग सुखनी खाण जो. रामराम. ॥६॥
"अप्पा सो परमप्पा" पिण्डे राम छे;
अनेकान्त दर्शनथी तेनुं ध्यानजो,
बुद्धिसागर रामराम रटना थकी;
शुद्ध बुद्ध चेतनजी श्री भगवान्जो. रामराम. ॥७॥

कृष्णस्तवन.

ओधवजी सदेशो कहेजो श्यामने—ए राग

औदयिक जलधिमां शुं उघो कृष्णजी,
रत्नत्रयी लक्ष्मीना स्वामी धीर जो,
अनन्त निजगुण सृष्टिपालक विष्णुजी,
गिर्वाणी धारक गिर्धारी वीर जो, औदयिक. ॥ १ ॥
समकित चक्र सुदर्शन हृदये धारता,
मोहारि जागो अलवेला नाथजो,
जागतां दुष्टो सहु दूरे भागशे,
कोइ न शत्रु भरशे तुजथी बाथजो. औदयिक. ॥ २ ॥
प्राणपति परकर्त्ता भोक्ता तुं थयो,
परस्वभावे रमता श्रीभगवानजो,
आप स्वभावे रमता सुखडां सहु लहे,
जाग जाग चेतनजी लावी भानजो. औदयिक ॥ ३ ॥
परकर्त्ता परभोक्ता स्वामी नहि हुवे,
आप स्वभावे रमतां आतमरामजो,
निजगुण कर्त्ता परगुण हर्ता ध्यानथी,
कृष्ण विष्णु ए छे सहु आतम नामजो. औदयिक ॥ ४ ॥
अनेकान्त दर्शनथी चेतन कृष्ण छे,
शुद्ध चेतना गोपी विनवे व्हालजो
बुद्धिसागर सप्त नयोथी आतमा,
ध्यावो गावो प्रगटे मङ्गल माल जो. औदयिक ॥ ५ ॥

॥ आत्मविज्ञप्ति ॥

॥ वॅहचगु भक्तिनां भाइ नाणां ए राग. ॥

आतमा अरजी आ उरमां स्वीकारो, ध्याने पोताने तो तारोरे.
आतमा

पुद्गलनां चुंथणां चुंथ्यां अज्ञानथी, आव्यो न चुंथतां ते आरो;
भ्रान्तिथी भूली न जोयुं स्वरूप में, आशरो एक छे तमारोरे.
आतमा. ॥ १ ॥

हरिहर देवता ब्रह्मा ने शक्ति, केइक तीर्थ विचारो,
तुजमांहि सर्व समायां छे तीर्थो, वीनति आ दीलमांहि धारोरे.
आतमा. ॥ २ ॥

देवनो देव अने राणानो राय तुं, प्रभु तुं प्राणथीरे प्यारो,
श्रद्धा कहे मुज स्वामिजी व्हाला, झालोने हाथ तमे मारोरे.
आतमा. ॥ ३ ॥

अन्तरमां शोध तुं साचा साहिबने, दुःखनो आवशेरे आरो,
बुद्धिसागर चेत चेतन चतुर तुं, अन्तरमां होय उजियारोरे.
आतमा. ॥ ४ ॥

नेमनाथभक्तिः

वहेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां—ए राग.

नेमजी अरजी आ उरमां स्वीकारो, मने साचो छे आशरो
तमारोरे. नेमजी.

अन्तरमां ताप ने बाहिर ताप छे, ज्यां त्यां छे दुःखनो तपारो
स्वप्नामां दुःखनां वरसे छे वादळां, मोटा आ दुःखथी
उगारोरे. नेमजी ॥ १ ॥

पाछळ दुःख ने आगळ दुःखडां, दुःखी लागे छे जन्मारो
तरछोडो नहि मने दीनदयाळु, हस्त ग्रही हवे तारोरे. नेमजी २
भक्ति के भाव नहि अन्तरमां ज्ञान नहि, मुखथी करुंछुं लवारो.
दोषनी पोठ आ बाळ तमारो, तार्या तो वीण नथी आरोरे
नेमजी ॥ ३ ॥

साद्य करोने प्रभु शरणुं तमारु, तारोने सांभळी पोकारो,
बुद्धिसागर व्हारे आवोने बापजी, करजो सेवकनो उद्धारोरे.
नेमजी ॥ ४ ॥

आवश्यकस्मृतिः

अर्ह अर्ह समरतां, लहिए भवनो पार;
सत्यदेव अरिहन्त छे, तेनो मुज आधार. ॥ १ ॥
सूतां खातां बेसतां, चालंता अरिहन्त,
जे भवि प्राणी समरशे, थाशे शर्म्म अनन्त ॥ २ ॥
अरिहन्त महामन्त्र छे, स्मरजो नर ने नार;
मङ्गल मोटुं जाणिए, होवे जग जयकार ॥ ३ ॥
मनुष्य भव पामी भवी, दो करवानां काम,
देनेका टुकडा भला, जपना आतमराम. ॥ ४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, बे वातो दिल धार,
दयाधर्म हृदये धरि, जपवो श्री नवकार ॥ ५ ॥
बुद्धिसागर वात दोय, समजी घटमा धार,
दया धर्मनी सेवना, करवो परउपकार ॥ ६ ॥
मुसाफर जीव जगतमा, दान धर्म कर भाइ,
आंख मिचाए कल्पना, जूठी एह सगाइ. ॥ ७ ॥
आतम ते परमातमा, घट घट रहे समाइ,
बुद्धिसागर प्रेमथी, कुंचि गुरुए बताइ ॥ ८ ॥
करवानुं बहु काम छे, पामी मनु अवतार,
मोहे मुंझी शुं मरे, चेती आतम तार ॥ ९ ॥
ज्ञान विण जीव अंध छे, सान विना ते ढोर;

दान विना ते ठुंट छे, विण उपकारे घोर. ॥ १० ॥
देव गुरु नहि सेवीआ, कीधो नहि उपकार;
जिनवर जाप कर्यो नहि, फोगट तस अवतार. ॥११॥
भक्त सन्त संतापिया, दीधां दीनने दुःख;
सत्य धर्म समज्यो नहि, लजवी जननीकूख. ॥१२॥
गुरुनिन्दा बहु पातकी, गुरुनिन्दा बहु पाप;
गुरुनिन्दक मुख देखतां, अशुभ दिन सन्ताप. ॥१३॥
दया धर्म जगमां वडो, दया धर्म सुखकार;
दया नहि त्यां धर्म नहि, समजो नर ने नार. ॥१४॥
बुद्धिसागर तत्त्वने, समजी घटमां धार;
आतम सरखा जीव सहु, समजी कोइ न मार. ॥१५॥
हिंसा जूठ चोरी अने, व्यभिचार महा दोष;
दया क्षमा उपकार शिल, सत्य धर्म सन्तोष. ॥१६॥
जो तुं समजे धर्मने, यथाशक्तिथी आप;
बुद्धिसागर प्रेमथी, खरा भक्तनी छाप. ॥ १७ ॥
गुरुकृपाथी पामिए, सत्य शान्ति आराम;
गुरुकृपा विण बापडा, लहे न आतमराम. ॥ १८ ॥
गुरुनी आज्ञा लोपिने, चाले निजमति छन्द;
ज्यां त्यां भटकी दुःख ले, जाण्या विण मतिमन्द. ॥१९॥
बोले ते पाळे नहीं, करे प्रतिज्ञा भङ्ग;
रौरव दुःखो नरकमां, पामे जीव कुरङ्ग. ॥ २० ॥
चित्त स्थिर जेनुं नहीं, करतो उंधां काम;
लोक हसे दुःखो लहे, मूर्ख दुःखनुं ठाम. ॥ २१ ॥
मनमां आवे ते करे, पञ्च कहे ते फोक;
अवळा प्राणी बापडा, लहे न सुखडां लोक. ॥२२॥

सद्गुरु शिक्षा लोपिने, मूर्ख शिष्य पस्ताय;
कोह्या काननी कुतरी, पेठे ठाम न पाय. ॥ २३ ॥

श्रावकहितशिक्षा.

व्हाला वीर जिनेश्वर-ए राग

श्रावक हितशिक्षा तु हृदये सारी धारजे रे,
हिंसा चोरी चुगली निंदा दोषो वारजे रे;
साची श्रद्धा जिननी राखी, आतम अनुभव,
अमृत चाखी, पोताने तुं भवजलधिथी तारजे रे श्रावक १
श्रावकनां व्रत उच्चरी टेके, करजे कृत्यो धर्म विवेके;
कर्माष्टक क्रोधादिक शत्रु विडारजे रे. श्रावक २
जिन शासनने बहु अजवाळी, द्वेष क्लेश इत्यादिक टाळी,
चित्तवृत्तिने आत्मस्वरूपे ठारजे रे श्रावक ३
सद्गुरुशरण ग्रहीने मारु, त्यज तु लागे जेह नठारु,
बुद्धिसागर सद्गुरु शिक्षा धारजे रे श्रावक ४

अनुभवद्वासप्ततिः

छपायाछन्द.

परम महोदय श्री परमेश, वन्दु भावे श्री जिनेश,
भजन स्मरण कीर्तन तव सेव, शाश्वत अनुभव अमृतमेव,
अन्तर तव सरखो मुज देश, परम महोदय श्री परमेश. ॥१॥
सत्ताथी जोता नहि भेद, सिद्धसमो वर्ते छे वेद
स्वरूप भूली हायो रत्न, कर्यो न किंचित् चेतन यत्न,
परस्वभावे पामुं खेद, सत्ताथी जोता नहि भेद. ॥ २ ॥

अन्तर ह्हारी शक्ति घणी, जाग जाग चेतन दिनमणि;
रत्नत्रयीनो भोक्ता सार, ह्हारा गुणनो नांवे पार;
चिदानन्द सोहे जगधणी, अन्तर ह्हारी शक्ति घणी. ॥ ३ ॥

शरीर पिण्डे वासियो साच, कर्म ग्रह्याथी भवनां काज;
परमां शक्ति ह्हारी मळे, तेथी तुं पुद्गलमां भळे;
तुजविण पुद्गल जाणुं काच, शरीर पिण्डे वासियो साच.॥४॥

ह्हारी शक्ति अपरंपार, अधुना कर्माच्छादित धार,
चेतन ध्याने प्रगटे सर्व, अहंभावनो नासे गर्व;
स्याद्वाद सत्ता सुखकार, ह्हारी शक्ति अपरंपार. ॥ ५ ॥

अज्ञाने जडमां सुख दुःख, मानी वेठी मोटी भूख;
सुख दुःखना हेतु नहि सत्य, जडमां जाणो भव्य असत्य,
रागद्वेष ने भ्रान्ति सुख, अज्ञाने जडमां सुख दुःख. ॥ ६ ॥

मन फेरे सुख दुःखनो फेर, नाहि समज्याथी ए अन्धेर,
मनथी आतम न्यारो भव्य, आत्मिक धर्मे तुज कर्तव्य;
आत्मस्वभावे रमतां ल्हेर, मन फेरे सुख दुःखनो फेर. ॥ ७ ॥
सुख दुःख बाह्यविषयमां थाय, तवतक मोहतणो महिमाय;
सुख दुःख हेतु विषयो कह्या, वीरे ते मनमां सद्दह्या,
पण पुद्गल संगे कहेवाय, सुख दुःख बाह्य विषयमां थाय.॥८॥
बाह्य विषयमां सुखनी आश, तवतक तुं पुद्गलना दास;
बाहिर्मुखनी भ्रान्ति टळे, त्यारे शाश्वत सुखडां मळे,
मोहमदिरानी दुर्वास, बाह्यविषयमां सुखनी आश. ॥ ९ ॥
सुख दुःख बाह्यविषयमां शून्य, एवी घटमां लागे धून,
अन्तर्यामी तव परखाय, बाह्यविषयमां समता थाय;
चेतन ज्ञाने कांइ न न्यून, सुख दुःख बाह्य विषयमां शून्य.१०
बहिरा आगळ जेवुं गान, विषधरने अमृतनुं पान,

अंधा आगळ दर्पण फोक, समजे नहि त्युं मोही लोक;
मोहीने प्रगटे नहि ज्ञान, बहिरा आगळ जेम्रु गान ॥ ११ ॥
दृष्टिरागी मोही मूढ, समजे नहि अन्तरनुं गूढ,
सद्गुरुवाणी सुणे न कान, तेने प्रगटे नहि निज भान,
अशुभ व्यवहारे छे रूढ, दृष्टिरागी मोही मूढ. ॥ १२ ॥
जिनवाणीनो मनमा वास, श्रद्धा साची समजे खास,
वर्ते निश्चयने व्यवहार, सद्गुरु आणा ग्रहीने सार,
उत्तम तेनो छे संन्यास, जिनवाणीनो मनमां वास. ॥ १३ ॥
भिन्न भिन्न जड चेतन ग्रहे, उपादेय चेतन सद्दहे,
भिन्न भिन्न लक्षणथी बोध, गुणनो अन्तर करतो शोध,
औदयिकथी न्यारो मन रहे, भिन्न भिन्न जड चेतन ग्रहे ॥१४॥
रागद्वेष छे बाहिर योग, ए नहि साचो भव्यो जोग,
क्षायिक भावे केवल योग, सत्य योगने जाणो लोक,
सुख दुःख बाह्य विषयमा रोग, रागद्वेष छे बाहिर योग.॥१५॥
रागद्वेषादिक दुःख मूळ, अज्ञाने वर्ते ए भूल,
अनंत भवना कीधां पाप, चतुर्गति पाम्या सताप,
अज्ञाने मोटुं ए शूळ, रागद्वेषादिक दु खमूळ. ॥ १६ ॥
राग दोषने त्यागे त्याग, धरजो चेतन तत्त्वे राग,
चेतन वस्तु साची खरी, ते म हृदये भावे धरी,
भाखे छे जिनवर वीतराग, राग दोषने त्यागे त्याग ॥ १७ ॥
समजो पद्द्रव्योनुं ज्ञान, तेथी जाशे ममता मान;
अन्तरनु अजवाळुं ओर, मिथ्यातम व्यापे नहि घोर,
आत्मानुभव अमृतपान, समजो पद्द्रव्योनुं ज्ञान. ॥ १८ ॥
चेतन भावे चेतन रहे, शुद्ध चेतना चेतन लहे,
अन्तर दृष्टि स्थिरोपयोग, आतम भोगवतो सुख भोग,

समभावे दुःखडां सहु सहे, चेतन भावे चेतन रहे. ॥ १९ ॥

जाति भाति तुं नहि वेद, दीन कल्पी क्युं करतो खेद:
बाहिरभावे तुं नहि चेत, शाने फोगट थाय फजेत,
धरजे अन्तरमां निर्वेद, जाति भाति तुं नहिं वेद. ॥ २० ॥

यश अपयशथी चेतन भिन्न, तेमां थावे छे क्युं लीन,
सारो खोटो दुनिया गाय, तेथी त्हारुं कांइ न जाय;
धन सत्ताथी फोगट दीन, यश अपयशथी चेतन भिन्न. ।२१।

मन वैरीने मन छे मित्र, मननी बाजी छे विचित्र,
मन पारो सद्ध्याने मरे, परम ब्रह्म त्यारे तुं खरे;
मन जीत्याथी सत्य पवित्र, मन वैरी ने मन छे मित्र. ॥२२॥

मन जीत्याथी झघडो जाय, चरण करणनो ए महिमाय,
हळवे हळवे मन जीताय, सर्वोत्तम उद्यम उपाय;
वीर जिनेश्वर वाणी गाय, मन जीत्याथी झघडो जाय ॥२३॥

बाह्यसंयमथी मन जीताय, जिनवरनी एवी आज्ञाय,
अनेकान्त मारग सुखकार, भेद भाव त्यां नहीं लगार;
अन्तरसंयम पण प्रगटाय, बाह्यसंयमथी मन जीताय ॥२४॥

अन्तर संयम दोषो हरे, भवसागरने प्राणी तरे,
अन्तर संयममां उपयोग, योगी साधे तेथी योग;
भाव लक्ष्मीने सहेजे वरे, अन्तर संयम दोषो हरे. ॥ २५ ॥

बाह्यांतर संयमथी मुक्ति, अनेकान्तनी एवी युक्ति;
कर्माष्टकनो होवे नाश, मुक्तिपुरीमां सहेजे वास;
अन्तरगुण भोगोनी भुक्ति, बाह्यान्तरसंयमथी मुक्ति. ॥२६॥

बाहिर्हेतु बाहिर्योग, अन्तर हेतु छे उपयोग;
बहिर संयम साध्योपाय, उपादान अन्तर परखाय,
चिदानन्दनो वर्ते भोग, बाहिर्हेतु बाहिर्योग. ॥ २७ ॥

चेतनना उपयोगे धर्म, बाहिर भावे बांधे कर्म,
बाहिर्हेतु संयम वेश, व्यवहारे छे मुनिनो वेष,
बाहिर सयमथी छे शर्म, चेतनना उपयोगे धर्म ॥ २८ ॥
चेतनव्यक्ति माटे सहु, जाणंताने शुं बहु कहु,
शुद्ध भावमां चेतन वसे, तेथी कर्मावरणो खसे;
शुद्ध विचारे संयम ग्रहु, चेतन व्यक्ति माटे सहु. ॥ २९ ॥
साची चेतननी छे भक्ति, भक्तिथी प्रगटे छे शक्ति;
साचो साहिब सेवो भाइ, चेतन भावे सत्य सगाइ,
प्रकटे परमातमनी व्यक्ति, साची चेतननी छे भक्ति. ॥ ३० ॥
भक्ति महिमा अपरपार, चेतन भक्ति सहुमा सार,
भक्तिथी थाशो भगवान, भक्ति सर्व गुणोनी खाण,
तार तार आतमने तार, भक्ति महिमा अपरंपार. ॥ ३१ ॥
भक्तिमा मळशे जो जीव, भक्तिथी थाशे ते शीव,
चेतन भक्तिमा जो प्रेम, हरतां फरतां वर्ते क्षेम;
आत्मानुभव लहे सदीव, भक्तिमा भळशे जो जीव. ॥ ३२ ॥
पर आलम्बन जिनवर देव, साची केवल ज्ञानी सेव,
जिन पूजनथी पूजक थाय, जिन ध्याने तेवो थइ जाय,
मिथ्या मतनी त्यागो टेव, पर आलम्बन जिनवर देव ॥३३॥
बाहिर विपये हर्ष न शोक, फोगट माने मोही लोक,
समभावे करवु सहु काम, लेवु श्री जिनवरनुं नाम;
समजे वीरला सज्जन लोक, बाहिर्विपये हर्ष न शोक. ॥३४॥
पुष्टालम्बन गुरुने भजी, गुणगण माला अन्तर सजी,
ध्यावो साचो आतमराम, अनेक नामो पण नहि नाम,
पुद्गल ममता ज्ञाने त्यजी, पुष्टालम्बन गुरुने भजी ॥ ३५ ॥
आत्मप्रभु भजनामां भाव, भवजलधिमां साचुं नाव,

आत्मस्वभावे रमवुं साच, ते विण बाकी समजो काच;
श्वासोश्वासे बनो बनाव, आत्मप्रभु भजवामां भाव. ॥ ३६ ॥
प्रभु भजन सापेक्षा घणी, व्यवहारे श्री वीरे भणी,
सापेक्षे साचुं छे सहु, श्रुत ज्ञाने मनमां सद्दहुं;
सत्य सेव्य चेतन दिनमणि, प्रभु भजने सापेक्षा घणी. ॥३७॥
जिनवरनी वाणी गंभीर, समजे हरिभद्रादिक वीर,
यशोविजयजी वाचकराय, श्रुत वाणी समज्या सुखदाय;
आनन्द घनजी समजे धीर, जिनवरनी वाणी गंभीर. ॥३८॥
निश्चयने शोभे व्यवहार, जिनवरनी वाणी जयकार;
सद्गुरु गमथी जो समजाय, तो दो भेद समकित थाय,
केवलज्ञानिवाणी सार, निश्चयने शोभे व्यवहार. ॥ ३९ ॥
धरो ध्यान सूत्रानुसार, सफल थशे मानव अवतार;
अशुद्ध पर्यायोनो नाश, आत्मिक पर्याये सुखवास,
शुद्ध स्वभावे मुक्ति धार, धरो ध्यान सूत्रानुसार. ॥ ४० ॥
यथा यथा ध्याने लयलीन, तथा तथा चेतनता पीन;
ज्ञान ध्यान शक्ति अनुसार, चेतनने समजो सुखकार,
चेतन जैन अने छे जिन, यथा यथा ध्याने लयलीन. ॥४१॥
अचिन्त्य चेतननुं छे रूप, चेतन सेवक चेतन भूप,
चेतन ध्याता चेतन ध्येय, चेतन ज्ञानी चेतन ज्ञेय.
चेतन बोले चेतन चूप, अचिन्त्य चेतननुं छे रूप ॥ ४२ ॥
कर्त्ता हर्त्ता चेतन खरे, चतुर्गति चेतन अवतरे,
पञ्चम गति चेतन सञ्चरे, परमातमपद चेतन धरे.
कर्म करे कर्माष्टक हरे, कर्त्ता हर्त्ता चेतन खरे. ॥ ४३ ॥
सापेक्षाए सहु समजाय, त्यारे चेतन ज्ञानी थाय,
निरपेक्षाए मिथ्या झेर, अन्तरमां वर्ते अन्धेर,
समकित अन्तरमां प्रगटाय, सापेक्षाए सहु समजाय. ॥ ४४ ॥

उपाधिने अळगी करी, समता स्थिरता दीलमां धरी,
सत्ता ध्यावो चेतनतणी, प्रगटे व्यक्ति चेतनमणि,
मान मान शिक्षा छे खरी, उपाधिने अळगी करी. ॥ ४५ ॥
सेवो सुखकर चेतनराम, तेथी सरशे सघळां काम,
राम राम चेतन छे साच, ते विण जाणो सघळुं काच,
ठरशो तेथी निर्भय ठाम, सेवो सुखकर चेतनराम ॥ ४६ ॥
तुज सेवनथी सेव्युं सर्व, तुज सेवनथी नासे गर्व,
तुजमां सर्व समायुं अहो, चेतनभावे चेतन रहो,
तुज रमणता रुडुं पर्व, तुज सेवनथी सेव्युं सर्व. ॥ ४७ ॥
तुज दर्शनथी भ्रान्ति जाय, तुज दर्शनथी शान्ति थाय,
तव दर्शनथी सत्यानन्द, तव दर्शनथी विघटे फन्द,
चेतन दर्शन सन्तो गाय, तव दर्शनथी भ्रान्ति जाय ॥ ४८ ॥
तव दर्शनथी शाश्वत सुख, तव दर्शनथी जावे दुःख,
तव दर्शनथी जग जयकार, तव दर्शनथी स्थिरता सार;
तव दर्शनथी भागे भूख, तव दर्शनथी शाश्वत सुख ॥ ४९ ॥
सत्य सत्य दर्शन तव सार, तव दर्शनथी नासे मार,
तव दर्शनने योगी चहे, तव दर्शनने वीरला लहे,
तव दर्शननो सहुने प्यार, सत्य सत्य दर्शन तव सार ॥५०॥
श्वासोश्वासे चेतन ध्यान, हरतां फरतां चेतन भान,
रटना हृदये लागे खरी, जन्म मरण तव नावे फरी,
अन्तर अनुभव भासे ज्ञान, श्वासोश्वासे चेतन ध्यान. ॥५१॥
प्रवृत्तिमां पडे न चेन, आतम अनुभव प्रगटे ग्रेन,
द्वेष क्लेश इर्ष्यादिक टळे, चेतनता चेतनमां मळे,
दीवस सरखी भासे रेन, प्रवृत्तिमां पडे न चेन ॥ ५२ ॥
अनुभवी चेतनमां रमे, चेतन स्मरण मनन मन गमे,

रत्नत्रयीमां रमतो राम, साधे क्षायिकभावे धाम;
परस्वभावे ते नहि भमे, अनुभवी चेतनमां रमे. ॥ ५३ ॥
विकथामांहि पडे न व्हाल, मोहभावनी नासे चाल,
अनुभव अमृत होवे पान, शोभे अन्तरमां सुलतान;
नासे दुःखदायक महाकाल, विकथामांहि पडे न व्हाल. ॥ ५४ ॥
झळहळती जागे घट ज्योत, होवे अन्तरमांहि उद्योत,
परस्वभावे रमवुं झेर, आत्मस्वभावे अमृतलहेर;
क्यां दिनमणिने क्यां खद्योत, झळहळती जागे घट ज्योत. ५५
झरमर झरमर वरसे धार, उपशम भावादिक सुखसार,
भवदावानल होवे शान्त, नासे मिथ्यात्वादिक भ्रान्त;
धन्य धन्य होवे अवतार, झरमर झरमर वरसे धार. ॥ ५६ ॥
भाव वीर्यथी होवे वीर, भाव धैर्यथी होवे धीर,
प्रगटे आतम अनुभव नाद, चेतन करतो अमृत स्वाद;
उतरे भवसागरनी तीर, भाव वीर्यथी होवे वीर. ॥ ५७ ॥
रमवुं आतम भावे भव्य, तत्त्व थकी ए छे कर्तव्य,
अनन्त शक्तिनुं तुं धाम, असंख्य प्रदेशी चेतनराम;
परस्वभावो परिहर्तव्य, रमवुं आतमभावे भव्य. ॥ ५८ ॥
आत्मस्वभावे रमवुं श्रेष्ठ, परस्वभावे रमवुं वेठ,
आत्मस्वभावे रमतां ईश, भाखे छे जिनवर जगदीश;
केम चाहे छे पुद्गल एंठ, आत्मस्वभावे रमवुं श्रेष्ठ. ॥ ५९ ॥
चेतन ज्ञाने प्रगटे धर्म, चेतन ध्याने नासे कर्म,
चेतन ईश्वर ध्याने थाय, अनन्त भवनां आस्रव जाय,
घटमां शाश्वत प्रगटे शर्म, चेतन ध्याने प्रगटे धर्म. ॥ ६० ॥
चेतननुं चिन्तन सुखकार, चेतन नामे जयजयकार,
चेतन सेवो सुख भरपूर, वाजे जेथी मङ्गल तूर;
मङ्गलमाला भावे धार, [illegible] ॥ ६१ ॥

मङ्गलमां मङ्गल छे एह, रत्नत्रयीनु चेतन गेह,
चेतन पूजे नें पूजाय, अद्भुत आतमनो महिमाय,
शोधो चेतन वसियो देह, मङ्गलमां मङ्गल छे एह. ॥६२॥
चेतन जाण्याविण सहु धूळ, अमूर्त चेतननु नहि मूळ,
अनाद्यनन्ति स्थिति धरे, चेतन भवसागरने तरे,
चतुर चेतन सत्य अमूल्य, चेतन जाण्याविण सहु धूळ. ॥६३॥
सहज स्वरूपी चेतनराम, क्षायिकभावे ठरतो ठाम;
पुरुषोत्तम जे पुरुष पुराण, षड्द्रव्योनो सम्यग् जाण,
असंख्यप्रदेशी रुडुं गाम, सहज स्वरूपी चेतन राम ॥६४॥
हेय ज्ञेय छे सहु बाह्यार्थ, सुखकर अन्तर गुणनो सार्थ;
चेतन सेवाथी सुख मळे, मोहमायादिक दोषो टळे;
चेतन आदरवो परमार्थ, हेय ज्ञेय छे सहु बाह्यार्थ ॥६५॥
जाग जाग अब चेतन जाग, कर तुं शाश्वत सुखनो राग,
धार धार चेतन अब टेक, कर तु शाश्वत ज्ञान विवेक,
सदुपयोगे धर वैराग्य, जाग जाग अब चेतन जाग ॥६६॥
आतम धर्मे निशदिन राच, चेतनना धर्मोने याच,
सदुपयोगे निर्मलहंस, चेतन धर्मो सत्य प्रशस्य,
अनुभव योगे हर्षे माच, आतम धर्मे निशदिन राच ॥६७॥
अष्ट सिद्धि ऋद्धि भण्डार, याचक चेतन छे दातार,
परमातम पोते तुं खास, धर तुं निज शक्ति विश्वास,
पामे भवजलधिनो पार, अष्ट सिद्धिऋद्धि भण्डार. ॥६८॥
वळजे चेतन शिवपुर वाट, चरण करणनु रचजे हाट;
अन्तर गुणना घडजे घाट, वेजे कर्म मेलनो काट,
वेसीश नहि कुमतिनी खाट, वळजे चेतन शिवपुर वाट ॥६९॥
चाल चाल चेतन शिव पन्थ, वांची सूत्रो ने सद्ग्रन्थ,

विषय विकारो सर्वे टळे, तात्त्विकसुख चेतननुं मळे,
सुमतिपति आतम छे कंथ,चाल चाल चेतन शिवपन्थ. ॥७०॥
अनित्यपर्यायार्थिक सार, द्रव्यार्थिकथी नित्याधार;
शुभाशुभ पुद्गलथी भिन्न, वर्ते दीन सत्ताथी जिन,
माळियुं टाणुं हवे न हार, अनित्य पर्यायार्थिक सार. ॥ ७१ ॥
पुनः पुनः मनमन्दिर ध्याउ, आतमध्याने शिवपुर पाउ;
ध्याने सिद्धया सघळा जीव, पाम्या सिद्ध सनातन शिव,
हरतां फरतां तवगुण गाउ,पुनः पुनः मनमन्दिर ध्याउ.॥७२॥
हुं तुंनो सहु नासे भेद, परस्वभावे नासे खेद;
शाश्वत सिद्धि ध्याने धरे, जय जय मङ्गलमाला वरे,
कर्माष्टकनो होवे छेद, हुं तुंनो सहु नासे भेद. ॥ ७३ ॥
द्वासप्तति एम प्रेमे गाइ, साबरमतीना कांठे आइ;
प्रेमाभाइ हेमाभाइ वास, बेश बंगलो शोभे खास,
दिन एक ध्याने चेतन ध्याइ, द्वासप्तति एम प्रेम गाइ. ॥७४॥
चित्तनी स्थिरता सुखने हेत, अनुभव बहोंतेरी संकेत;
संवत ओगणिस चोसठ साल, कार्तिक वदी सातम सुविशाल;
देह बंगलो चेतन चेत, चितनी स्थिरता सुखनो हेत. ॥ ७५ ॥
चेतननुं साचुं छे ज्ञान, मान मान शिक्षा दील मान;
अनुभव मङ्गलवाजे तूर, शाश्वत लक्ष्मी पामे शूर,
बुद्धिसागर सिद्धि स्थान, चेतननुं साचुं छे ज्ञान. ॥ ७६ ॥

ब्रह्मचर्यमहिमा.

मनहरछन्द.

शीयलथी सुख थाय शीयलथी दुःख जाय,
शीयलथी देह दृढ, सुमन सुहाय छे;

मन्त्रतन्त्र फले सहु, शीयलना तेजथकी.
शीयलथी मान सहु, दुनीआमा थाय छे,
शीयलने धारवाथी, स्मरटोप मारवाथी;
भवजलनिधि क्षेम, सहज तराय छे.
देववृन्द गुणगाय, शरीर निरोगी थाय;
ब्रह्मव्रत धारवाथी, सुयश पमाय छे ॥ १ ॥
विघ्नवृन्द नाश थाय भूत प्रेत वश थाय;
शीयल सुगुण गृह, मङ्गलनुं द्वार छे,
जेवुं बोले तेवुं थाय, सहु दोष दूर जाय.
शीयल धारकजन धन्य अवतार छे;
शीयल सुगन्धि वेश, शियलथी शुभ वेष,
शियलने सागरनी उपमा प्रमाण छे
नरनारी धरो सहु शियल सन्नाह अंग,
धीनिधि शीयल सत्य जीवननो प्राण छे. ॥ २ ॥

दयामहिमा.

मनहरछन्द.

दया दुःख हरनारी, दया सुख करनारी,
दया गुणगृह वेश, दयाथकी धर्म छे;
दयाविना तप यम ध्यान सहु फोक अहो,
दयाथकी देवगति सिद्धिसौधशर्म छे,
दयाविना व्रत कोइ सफल न थाय भव्य,
दया कल्पवृक्ष अने शेष व्रत वाड छे.
दया कामकुंभ अने दया स्पर्शमणि सत्य;
दयाविना मुक्ति म्हेल बंध तो कमाड छे. ॥ १ ॥

सहु तीर्थ शिरदार दया तीर्थ दिल धार;
दयाविना ડहापणना दरियामां धूळ छे,
सुरगति मनुगति दया कल्पवृक्ष पुष्प.
शिवफल पामवामां दया सानुकूळ छे;
दयामय दील थाय भवभय रोग जाय,
दयाधर्म पाळवाथी शिव सुख हस्त छे.
शाता अने शिव सुख दयानो प्रभाव जाण;
धीनिधि मुनिनुं मन दयामांहि मस्त छे. ॥ २ ॥

अलखदेशगान.

अलख हमारा देश खरा हे, अलख हमारा नामा हे;
सिद्धस्थान हे सत्य हमारा, आश्रय आतमरामा हे. अलख. १
अलख फकीरी अलख वेषमां, सदाचित्त मस्ताना हे;
अलख धूनथी हम रंगाया, ज्ञाने हम गुलताना हे. अलख. २
अलख दशामां दर्द गया सहु, आना नहि अब जाना हे;
नामरूपसें न्यारा हम है, सत्य अलख फरमाना हे. अलख. ३
नरनारीके नहीं नपुंसक, चिदानन्द सुख प्यारा हे;
रत्नत्रयीमां हम हे राता, पुद्गल हमसे न्यारा हे. अलख. ४
ज्ञान ज्ञेय ने ज्ञाता हम हे, चेतनता सुखकारी हे;
बुद्धिसागर सोऽहंसोऽहं, ध्याने स्थिरता धारी हे. अलख. ५

मायाथी दूर रहेवानो उपदेश.

राग थाळ.

मायामां शीदने मुंझेरे, जीवलडा जो तुं;
मोहे सत्य न बुजेरे, जीवलडा जो तुं,
जूठी माया जगनी, आवे न साथे भाइ;

भीदने रह्यो मुंझाइरे. जीवलडा. ॥ १ ॥
मन माने मकलायो, पण स्पर्शमणि नहि पायो;
लाख चोराशी जायोरे जीवलडा. ॥ २ ॥
मनमां लाग्युं प्यारुं, तेवुं तें दील धार्यु,
पण जीवन जावे हार्युरे. जीवलडा ॥ ३ ॥
प्रभुभजनने भूल्यो, मायाना दरिये डुल्यो,
फुलणजी फोगट फुल्योरे. जीवलडा. ॥ ४ ॥
धारीने जोजे धीरा, अन्तरना म्हारा वीरा,
बुद्धिसागर शूरारे. जीवलडा. ॥ ५ ॥

चेतनने उपदेश.

राग थाळ

चेतनजी चेतो प्यारा रे, जंगमना जोगी,
अलखरूप आधारा रे, जंगमना जोगी,
अवधूत स्वरुपे रमवुं, दुनीआमा ज्यां त्यां भमवुं,
आडुं अवळुं खमवुं रे जंगम. १
औदयिक भावो वारी, अन्तरमां सुरता धारी,
करवी शिव तैयारी रे जंगम. २
ज्ञानिनी संगे रहेवुं, समभावे सर्वे सहेवुं,
कोइने कांय न कहेवुं रे. जगम ३
चेतननी वलिहारी, तेनी छे साची यारी,
बुद्धिसागर धारी रे जंगम. ४

जीवने जागवानो उपदेशः

थाळ राग.

जीवलडा जोने जागी रे, वेळा बहु वीती,

प्रभु रटनथी पाप नासे, होवत कर्मनो अन्तरे. रटन. ॥ १ ॥
मायानी जंझाळमांहि, होय न सुख लगाररे;
राग दोषे जीवन जातां, आवे न भवनो पाररे. रटन. ॥ २॥
धन सत्ताना तोरमांहि, फुल्यो दिनने रातरे;
आयु अवधि पुरी थातां, दुर्गति भटकातरे. रटन. ॥ ३ ॥
चक्रवर्ति वासुदेवो, नृपति महा झुंझाररे;
मरी गया ते मानवीओ, जोतां केइ जनाररे. रटन. ॥ ४ ॥
जोतां जोतां चालवुं जीव, मूकी तन धन सर्वरे;
मायामां मस्तान थइ अरे, करे शुं फोगट गर्वरे. रटन. ॥५॥
उपाधि संसारनी अहो, दावानल सम देखरे;
चित्त चंचलता करे घणी, प्रकट प्राणी पेखरे. रटन. ॥ ६ ॥
प्रभुभजनमां चित्त राखी, दूर करो जंझाळरे;
श्वासोश्वासे प्रभुभजनथी, होवे मंगलमालरे. रटन. ॥ ७ ॥
आतम सो परमातमा छे, साचो साहिब देवरे;
ज्ञान दर्शन चरण स्वामी, साची सुखकर सेवरे.रटन. ॥ ८ ॥
आत्मध्याने लीन थइने, तत्त्वामृत रस चाखरे;
बुद्धिसागर ज्ञान योगे, चेतन रीत ने राखरे. रटन. ॥ ९ ॥

सत्य विद्यामहिमा.

भजन करले भजन करले—ए राग.

साच विद्या साच विद्या, चेतननी सुखकाररे;
आत्मविद्या दुःख हरती, ब्रह्म सुख करनाररे. साच. ॥ १ ॥
बाह्यविद्याभ्यासथी भाइ, चित्त होय न शान्तरे;
जगतनी जंझाळमांहि, मनडुं होवे भ्रान्तरे. साच. ॥ २ ॥
आदेय वस्तु ज्ञान ग्रहीने, त्वरित आतमताररे;
शुद्ध संवर प्राप्त करतां, आवे भवनो पाररे. साच. ॥ ३ ॥

द्रव्यने वळी भाव भेदे, आश्रवनो परिहाररे;
एक चेतन शुद्धरूपे, चेतना सुखकाररे. साच ॥ ४ ॥
लक्ष्य लक्षण आतमानुं, धरजे प्रेमे ध्यानरे;
द्रव्य गुण पर्याय जाणी, शुद्ध पामो स्थानरे साच ॥ ५ ॥
शुद्ध चेतन ध्यावता भाइ, सत्य सुख निर्धारिहे,
बुद्धिसागर ज्ञान योगे, सफल मनु अवताररे. साच ॥ ६ ॥

सत्य जागृति प्रेरणा.

भजन करले भजन करले—एराग

जागरे जीव जागरे जीव, आयुष्य चाल्युं जायरे;
अज्ञभावे उंघवाथी, चेतन धन लुंटायरे जागरे. ॥ १ ॥
अनन्त लक्ष्मी आत्मनी छे, धर तेनो उपयोगरे,
बाह्य लक्ष्मी दुःखदायी, विषयो विषना रोगरे जागरे. ॥ २ ॥
अनन्त गुणनुं धाम आतम, तुं नहि बाह्य पदार्थ रे,
अरूपी शाश्वत शुद्ध रूपी, चेतन तु परमार्थ रे. जागरे. ॥३॥
पञ्चधा जे ज्ञान भाख्युं, ते पण तुजमा समायरे,
बुद्धिसागर आत्मध्याने, जोतां सर्व जणाय रे जागरे. ॥४॥

दिव्यशिक्षा.

भजन करले भजन करले—एराग.

समज दीलमां समज दीलमा, धर्म कर्म एक साचरे;
आत्महीरो मूकीने भाइ, ग्रहो न पुद्गल काचरे समज. ॥१॥
सत्य धन निज आत्मनुं छे, अवर म झंखो आलरे,
चेतन विण सहु मोहबाजी, जुठी आल पपालरे. समज ॥२॥
देह काचा कुभ जेवी, यौवन पीपळ पानरे,
अथिर आयु जाणीने जीव, लावजे दील भानरे. समज ॥३॥
म्हारुं म्हारी पास जाणी, माया ममता वाररे,

तव पूठे तृष्णा लागी रे, वेळा बहु वीती;
करवानुं काम कीजे, नरभवनो लाहो लीजे,
पळ पळ आयु छीजे रे. वेळा. १
फुल्यो शुं ठाठ ठाली, जाशे तुं हाथ खाली;
चेतन रूद्धि नहि भाळी रे. वेळा. २
जोयुं सर्वे जाशे, पाछळथी पस्ताशे;
लक्ष्मी बीजा खाशे रे. वेळा. ३
बुद्धिसागर चेतो, काळ झपाटा देतो;
मारग जल्दी वहेतो रे. वेळा. ४

पामर जीवनी स्थिति.

सिद्ध जगत शिर शोभता. ए राग.

पामर प्राणी न पारखे, रूडो आतमराम;
पाप कर्म नित्य आचरे, खर्चे धर्मे न दाम. पामर. १
माया ममतामां माचियो, वनितापर बहु व्हाल;
पुत्रादिकनी छे काळजी, चेतन धर्मे न ख्याल. पामर. २
देव गुरु नहीं पारख्या, जिननो पाम्यो न धर्म;
राग द्वेषमां माचीने, बांध्यां बहुलां रे कर्म. पामर. ३
नहि वैराग्यनी वासना, विषयेच्छामां छे चित्त;
सत् संगत रूडी नहि करे, थाय ते शाने पवित्र. पामर. ४
चोथा चण्डाल उपमा, निन्दाकारक जाण;
साधु निन्दाथी पामतो, नरकगति दुःखखाण. पामर. ५
वेश्या व्यसननी संगतें, पाप कर्यां केइ लाख;
चेती लेने रे प्राणिया, थाशे देहनी राख. पामर. ६
झटपट चेती ले मानवी, वळजे शिवपुर वाट;
बुद्धिसागर बोधथी, मांडो धर्मनुं हाट. पामर. ७

भजन करले भजन करले.–ए राग.

चेती ले झट चेती ले जीव, धार जिनवर धर्म रे;
मायामां मस्तान थातां, लहे न शाश्वत शर्म रे चेती. ॥ १ ॥
अस्तिनास्ति धर्म चेतन, भेदाभेद विचार रे;
अनेकान्त छे आत्मतुंरूप, समजी आतम तार रे. चेती ॥ २ ॥
शुद्धरूपी साहिबो छे, अनन्तगुण आधार रे;
शुद्ध ध्याने ध्याववाथी, आवे भवनो पार रे चेती. ॥ ३ ॥
आनन्दालय आतमा तुं, जाग झटपट जाग रे,
बुद्धिसागर आत्मध्याने, धरजे दीलमां राग रे चेती ॥ ४ ॥

भजन करले भजन करले–ए राग

जाग जीवडा जाग जीवडा, जाणी लेजे धर्म रे,
भ्रान्तिथी जञ्जाळ राची, शीदने बांधे कर्म रे जाग. ॥ १ ॥
भाइ भगिनी पुत्र दारा, जूठो सहु परिवार रे,
जुटां सगपण दुनिआना, साच चेतन धाररे. जाग ॥ २ ॥
स्वारथिया संसारमाहिं, मोहे बनीने अन्ध रे,
कर्म बांधे अभिनवा तु, पररमणता बन्ध रे. जाग ॥ ३ ॥
अनन्तशक्ति साहिबा तुं, चेत चेतनराम रे;
शुद्धभावे सुख अनन्तु, भोगवे गुण धाम रे जाग ॥ ४ ॥
ज्ञान दर्शन चरण भोक्ता, चेतन शुद्ध स्वरूप रे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, विघटे भवभय धूपरे. जाग ॥ ५ ॥

प्रभुरटन उपदेश.

भजन करले भजन करले ए राग.

रटन कर मन रटन कर मन, रटन कर अरिहन्तरे,

फरी फरीने नहि मळे जीव, मानवनो अवताररे. समज. ॥४॥
धर्म करतां धाड आवे, तोपण धर्म न छोडरे;
बुद्धिसागर धर्म मित्र सम, कोइ न जगमां जोडरे. समज. ५

स्वार्थमहिमा.

भजन करले:भजन करले—एराग.

जूठां सगपण दुनियामां, स्वारथना सहु दासरे;
अथिर आ संसारमांहि, करवो शुं विश्वासरे. जूठां. ॥ १ ॥
माया ममता मोहना बहु, वायु सघळे वायरे;
दुःखी थाता प्राणियो अरे, भवमांहि भटकायरे. जूठां. ॥२॥
जाणंता पण भूलिया वळी, देखंता पण अन्धरे;
सत्त के वळी अष्ट कर्मनो, समये बांधे बन्धरे. जूठां. ॥ ३ ॥
व्हालां वैरी वैरी व्हालां, मित्र दुश्मन थायरे;
सहोदर पण शत्रु थावे, मोहतणो महिमायरे. जूठां. ॥ ४ ॥
क्रोधतापे पीडिया जीव, पामे बहु सन्तापरे;
हिंसा चोरी जूठथी वळी, बांधे बहुलां पापरे. जूठां. ॥ ५ ॥
श्वासोश्वासे दुःख वादळ, वर्षे दुःखना मेघरे;
स्वप्नमां पण दुःखवादळ, वरसतुं बहु वेगरे. जूठां. ॥ ६ ॥
शेठ शाणा रङ्क राजा, महाजनने सुलतानरे;
दुःख दावानल लहे सहु, लहे न अमृत पानरे. जूठां. ॥७॥
हाजीहा सहु स्वार्थनी छे, स्वार्थे मारामाररे;
स्वारथमां सपडायला जीव, पामे नहि भवपाररे. जूठां. ॥८॥
मायाना बांधेल प्राणी, भूली भमे संसाररे;
बुद्धिसागर चलत पन्थे, गुरु तणो आधाररे. जूठां. ॥ ९ ॥

वीती वेळा पाछी नहि आवे.

भजन करले भजन करले—ए राग

वीती वेळा आवशे नहि, जीवलडा झट चेतरे,
उगे उगण आळसु शु, काळ झपाटो देतरे. वीती. ॥ १ ॥
रात्री जावे दीवस जावे, व्यतीत वर्षो थायरे
जाणे मोटो थाय न्हानो, चित्तथी नहि चेतायरे. वीती. ॥२॥
जेवा गगने वादळां छे, तेवा तन धन रूपरे,
जाणी चित्तमा जागता जीव, होत न भवभय ग्रुपरे. वीती. ॥३॥
बाप चाले मात चाले, वृद्ध युवा ने बाळ रे,
जन्म्या तेने मरण माथे, कदु न मूके काळरे. वीती. ॥ ४ ॥
काल करवुं आज कीजे, कीजे न धर्म वार रे,
प्रभु भजील्यो भावथी भाइ, होवे सफल अवताररे वीती ५
खूंची खटपटमा अरे तें, कीधो न धर्म लगाररे,
हजी समय छे धर्म माटे, चेतन मनमा धाररे. वीती ॥ ६ ॥
समज चेतन सानमा अब, जीवन धर्म गाळरे,
बुद्धिसागर धर्मथी जग, होवे मगल मालरे. वीती ॥ ७ ॥

शब्दसृष्टि विद्वत्ता.

भजन करल भजन करले—ए राग

शब्द सृष्टि बहु बनी जग, भाषानो नहीं पाररे,
चेतन हीरो चूकीने भाइ, आयु न एळे हाररे शब्द. ॥ १ ॥
बाह्य विद्या वासनाथी, होवत तत्त्व भूलरे,
मायानी जञ्जाळथी सहु, होवत अन्ते धूळरे शब्द. ॥ २ ॥
चतुर चेतन चेतीले चित्त, अनेकान्त मत धाररे;
उपादेयज आतमा एक, जाणीने नहीं हाररे. शब्द. ॥ ३ ॥
शुद्ध चेतन रूप म्हारु, असंख्यप्रदेशी भूपरे,
भूली वाल्हम भान म्हारु, शु पडे भवकूपरे. शब्द ॥ ४ ॥

जगतनी जंझाळनो जीव, कदी न आवे पाररे;
ज्ञानरूप एक आतमा छे, त्वरित तने ताररे. शब्द. ॥ ५ ॥
भणतरमांहि भूल थावे, भूले आतम भानरे;
उपाधिने दूर त्यागी, जीवलडा कर ज्ञानरे. शब्द. ॥ ६ ॥
बाहिर अध्यासो त्यजीने, चेतनमां चित्त वाळरे;
स्थिरोपयोगे आत्मध्याने, होवे मंगल माळरे. शब्द. ॥ ७ ॥
ज्ञेय ने वळी ज्ञानरूपे, चेतनसुख भरपूररे;
बुद्धिसागर आतमध्याने, वाजे मङ्गल तूररे. शब्द. ॥ ८ ॥

चेत चेतन.

भजन करले भजन करले—ए राग.

चेत चेतन चेत चेतन, आयु चाल्युं जायरे;
भूलीने भगवान् प्राणी, मोहे शुं मकलायरे. चेत. ॥ १ ॥
लक्ष्मी सत्ता कुळ मदथी, फुले फोगट भव्यरे;
स्वप्न सरखा भाव जगना, जाणो परिहर्तव्यरे. चेत. ॥ २ ॥
श्वासोश्वासे जाय आयु, हजी जरा तो चेतरे;
ज्ञानदर्शन ऋद्धि त्हारी, धारिले शिव हेतरे. चेत. ॥ ३ ॥
जाति के नहि ज्ञाति त्हारी, देही पण नहि देहरे;
अनन्तशक्ति साहिबा तुं, अनन्त गुणगण गेहरे. चेत. ॥४॥
नर नारी के नहि नपुंसक, शरीरव्यापी तत्त्वरे;
असंख्यप्रदेशी आतमा तुं, अरूपि शाश्वत सत्त्वरे. चेत. ॥५॥
सत्य तुं छे सत्य तुं छे, आनन्दनो आधाररे;
जड स्वभावे नहि कदा तुं, जागी आतम ताररे. चेत. ॥ ६ ॥
शुरो थइने मुक्तिवाटे, चेतन चटपट चालरे;
बुद्धिसागर चलत पन्थे, तजजे मायाझाळरे. चेत. ॥ ७ ॥

समयनो उपयोग.

भजन करले भजन करले-ए राग.

समय पामी समय पामी, चेतन चित्तमां जागरे;
शुद्धभावे रूद्धि त्हारी, कर तुं तेनो रागरे समय. ॥ १ ॥
बाह्यवृत्ति त्यागीने झट, चंचल योग निवाररे;
असंख्यप्रदेशी तीर्थ त्हारुं, करजे शिघ्रोद्धाररे समय ॥ २ ॥
नित्यानित्य स्वभावथी तुं, अनेकान्त मत रूपरे;
निश्चयथी तु शुद्ध चेतन, शाश्वत ज्ञान स्वरूपरे समय. ॥३॥
ध्यान ध्याता ध्येय रूपे, चेतन सुखकर एकरे;
हेयोपादेय ज्ञेय ज्ञाने, करजे सत्य विवेकरे समय ॥ ४ ॥
बाहिर अन्तर परमरूपे, आतम तुं निर्धाररे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, होवे भवनो पाररे. समय. ॥ ५ ॥

बाह्यममतानो त्याग.

भजन करले भजन करले-ए राग

चेत झटपट चेत झटपट, जीवलडा झट चेतरे;
भान भुले शुं अरे जीवें, काल झपाटा देतरे. चेत ॥ १ ॥
जेनी हाके धरणी ध्रुजे, तेवा चाल्या जायरे;
अमर नहि कोइ दुनियामां, मोहे शुं मकलायरे. चेत ॥ २ ॥
पुण्य योगे पामियो तें, मानवभव सुखकाररे;
हस्त चढियो हीरो आतम, हारिश नहि निर्धाररे चेत ॥ ३ ॥
चूकिश नहिरे चतुर चेतन. अन्तर करजे शोधरे,
बुद्धिसागर आत्मध्याने, प्रगटे अनुभवबोधरे. चेत ॥ ४ ॥

सत्यधर्मः

भजन करले भजन करले–ए राग.

साच जगमां साच जगमां, धर्म जिनवर साचरे;
उपशमादि धर्महेतु, ते विण आश्रव काचरे. साच. ॥ १ ॥
धर्म रुत्यज आतमनो छे, चिदानन्द भरपूररे;
ज्ञानदर्शन चरणयोगे, साधे शिवपद शूररे. साच. ॥ २ ॥
चेतन जडनी भिन्नताथी, प्रगटे सम्यग् ज्ञानरे;
साध्यतत्त्वे रमणताथी, आवे निजपद भानरे. साच. ॥ ३ ॥
वीर्यस्फुरणा फोरवीने, साधे शिवपद योगरे;
निज रमणता योगथी त्यां, भोगवे सुख भोगरे. साच. ॥४॥
साध्यनी सापेक्षताए, अनेकान्त नयवादरे;
जाणी आतम अनुभवीने, चाख शिवसुखस्वादरे. साच. ५
अनुभवीए अनुभव्युं ए, चेतनपद सुखकाररे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, होवे जयजयकाररे. साच. ॥ ६ ॥

गुरुभक्तस्थितिः

भजन करले भजन करले–ए राग.

सद्गुरुना चरणसेवक, तत्त्ववेत्ता थाय रे;
आत्मसुखनी वानगीथी, अन्तरमां हरखायरे. सद्गुरु. ॥ १ ॥
शाताशाता वेदनीथी, शाश्वत सुख छे भिन्नरे;
स्थिरोपयोगे भक्त भावे, अनुभवे सुखलीनरे. सद्गुरु. ॥२॥
ज्ञानगङ्गा स्नान करीने, दूरकरं भवतापरे;
असंख्यप्रदेशी तीर्थ पोते, पूजक पण छे आपरे. सद्गुरु. ॥३॥
स्वामी सेवक सेव्य चेतन, शुद्धरूपाधाररे;
बुद्धिसागर आतमा एक, सारमां जग साररे. सद्गुरु. ॥४॥

वीरस्तवन.

मान मायाना करनारारे-ए राग.

प्रभु वीर जिनेश्वर प्यारारे,
मुज प्राणतणाछो आधारा;
सिद्ध सनातन निर्मलज्योति, शाश्वत सुख निर्धारा;
क्षायिकभावे गुणवर्या सहु, जिनवर जगजयकारारे. प्रभु. ॥१॥
सुखकर दुःखहर चरम जिनेश्वर,
वसियाछो दिलमाहि म्हारा;
बुद्धिसागर विभु वीरना नामथी,
होवे सफल अवतारारे. प्रभु. ॥२॥

अथ श्री सिद्धाचल दुहा.

रत्नत्रयी धारक प्रभु, ऋषभदेव अरिहत,
नमित सुरासुर इंदचंद, भव भंजन भगवंत ॥ १ ॥
जयजय आदि जिणंद श्री, केवल कमलानाथ,
सिद्धाचल गिरिमडणो, सेवक करो सनाथ. ॥ २ ॥
पूर्व नवाणु वार ज्या, आव्या ऋषभ जिणंद,
ते सिद्धाचल वदीए, कापे भवभयफंद ॥ ३ ॥
प्रायः ए गिरि शाश्वतो, महिमा अपरंपार,
सम्यग् दृष्टि जीवने, निमित्त कारण धार. ॥ ४ ॥
चार हत्यारा पातकी. ते पण ए गीरि जाय,
भावे जिनवर भेटतां, मुक्तिवधुसुख पाय ॥ ५ ॥
द्रव्यभाव दु भेदथी, सेत्रो तिरथ एह,
उपादान निमित्त योग, समर्थार्थी निवगेह ॥ ६ ॥
कर्मरोगने टालवा, उत्तम छे आधार;

श्री सिद्धाचल समरीए, श्वासमहिं सोवार. ॥ ७ ॥
अजरामर पद पामवा, लही मनुष्य अवतार;
श्री सिद्धाचल समरीए, श्वासमांहि सोवार. ॥ ८ ॥
एसम तीरथ को नहि, भवजल तारणहार;
श्री सिद्धाचल समरीए, श्वासमांहि सोवार. ॥ ९ ॥
दर्शन स्पर्शन योगथी, निर्मल पद निरधार;
श्री सिद्धाचल समरीए श्वासमांहि सोवार. ॥ १० ॥
प्रेमभक्ति बहु मानथी, हठ कदाग्रह त्याग;
श्री सिद्धाचल समरीए जो होवे महाभाग्य. ॥ ११ ॥
तीर्थनायक ए गिरी, अवर न जगमां कोय;
सेवे शाश्वत संपदा, अजरामर पद होय. ॥ १२ ॥
भवजंतुने तारवा, यानपात्र सम जाण;
ते शत्रुञ्जय वंदिए, पामी जिनवर आण. ॥ १३ ॥
अकलंक शक्ति अनेक ए, विश्वानंद कथाय;
श्री शत्रुञ्जय प्रणमीए, भवभय पातिक जाय. ॥ १४ ॥
मेरु महीधर नामथी, समरो चित्त सदाय;
परमातमपद पामवा, उत्तम एह उपाय. ॥ १५ ॥
पुंडरीकने गणधर जीहां, पाम्या शाश्वत सिद्ध;
श्री पुंडरगिरि प्रणमीए, प्रगटे आतम रिद्ध. ॥ १६ ॥
वीतराग पद पामवा, करीए भावे सेव;
परित मंडण नामथी, टळे अनादि कुटेव. ॥ १७ ॥
राग द्वेष तो दूर टळे, करतां गिरि गुण गान;
कर्म छंडण जगजयो, ध्यातां शाश्वत स्थान. ॥ १८ ॥
सुरकंत गिरिध्यानथी, सकळ फळे मन आश;
श्री शत्रुंजय वंदीए, प्रगटे धर्मप्रकाश. ॥ १९ ॥

इंद्र चंद्र गुण गावता, ए गिरितणा विशाल,
आनंदकंद सुनामथी, स्मरीए समय त्रिकाल. ॥ २० ॥
पशुपखी पण भावथी, पाम्या शुभगति ठाम,
ते सिद्धाचल वंदीए, जेनुं निर्मल नाम ॥ २१ ॥
प्रगटे शुद्ध स्वभावता, भविजनने तत्काल,
ते सिद्धाचळ वंदीए, पूर्णानंद दयाल ॥ २२ ॥
सुरतरु सुरमणि कामगौ, तेथी अधिक प्रभाव,
ते सिद्धाचळ वंदीए, भवजलमा जेम नाव. ॥ २३ ॥
योगिश्वर दर्शन करी, हुवा समाधि लीन,
ते सिद्धाचळ वंदीए, मन सुखमा गमगीन. ॥ २४ ॥
दर्शन स्पर्शन योगथी, लब्धी घणी प्रगटाय,
ते सिद्धाचल वंदीए, पुरव पुण्यपसाय. ॥ २५ ॥
शत्रुञ्जयी नदी न्हाईने, निर्मल कीजे गात्र,
श्री तीर्थेश्वर पूजीए, कर्म न रहे तल मात्र ॥ २६ ॥
वैरी व्याधि विरोध सहु, दर्शनथी उपशान्त,
श्री तिर्थेश्वर पूजीए, होवे भवभय अंत ॥ २७ ॥
सिद्धशिला ज्या शोभती, मुनिवर अनशन क्षेत्र,
ते तीर्थेश्वर वंदीए, लहीए निर्मल नेत्र ॥ २८ ॥
संयम धारी साधुथी, ए तीरथ स्पर्शाय;
ते तिर्थेश्वर वंदीए, निर्मल मनडु थाय ॥ २९ ॥
कुमति कौशिक जे जना, आवे नही जम पास,
भविजन देखी तेहने, पामे मन उल्लास ॥ ३० ॥
भगिनी भोक्ता नृपति, चंद्रशेखर राजान,
ते तीर्थेश्वर सेवतो, पाम्यो अविचल ठाण. ॥ ३१ ॥
उत्तम जन ज्यां संचरे, नामे जे वीतराग,

ते तीर्थेश्वर वंदीए, आवे नहि ज्यां काग. ॥ ३२ ॥

धर्मकंद ए नामथी, जगमांहि विख्यात;
ते तीर्थेश्वर वंदीए, रूडा जस अवदात. ॥ ३३ ॥

अनंत गिरिगुण गावतां, गुणगण घट प्रगटाय;
तेह यशोधर वंदीए, रूडो अवसर पाय. ॥ ३४ ॥

मुक्तिराज शाश्वत गिरि, वर्ते काळ अनादि;
विनय विवेके वंदतां, टळशे सर्व उपाधि. ॥ ३५ ॥

विजयभद्र नामे भलो, सार्थक नाम सुहाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, महिमा नित्य सुहाय. ॥ ३६ ॥

गातां सुभद्र गिरीशने, गिरीश पद घट आय;
तेह सिद्धाचल वंदीए, मनुष्यजन्म भवि पाय. ॥ ३७ ॥

मळरहित जस ध्यानथी, प्राणी पोते थाय;
अमल गिरिगुण गावतां, उपादान पद पाय. ॥ ३८ ॥

जयंत गिरि जयने करे, सेवंतां निशदीन;
भविजन मन सुखकर सदा, आत्मस्वभावे पीन. ॥३९॥

कंचन गिरिने निहाळीए, लही गुरुगमथी ज्ञान;
वंदो सेवो भावथी, आवे निजपद भान. ॥ ४० ॥

भावे भक्ति भरे करी, चित्त एक स्थिर ठाम;
सिद्ध क्षेत्र संभाळीने, भावे करुं प्रणाम. ॥ ४१ ॥

आतम परमातम लही, कर्मनाशने काज;
महागिरिने वंदीए, भवांभोधिमां झाझ. ॥ ४२ ॥

अमरकंदने ओळखे, आतम अमर लहाय;
भावे भवियण भेटीए, जन्म जन्म दुःख जाय. ॥ ४३ ॥

वेर झेर विकथा त्यजी, शमभावे भवि जेह;
श्री सिद्धाचल वंदशे, ते थाशे शिवगेह. ॥ ४४ ॥

त्यजी प्रभुता राज्यनी, आदीश्वर जिनआण;
धारी गिरि ए वंदीए, वंदन होय प्रमाण. ॥ ४५ ॥
माया तृष्णा परिहरी, शरण ग्रही जिन आण,
श्री सिद्धाचल वंदीए, प्राप्ति पद निर्वाण ॥ ४६ ॥
तन मन धन ममता त्यजी, भज समता घटमांय,
भाव गिरिने वंदता, लहीए नहि दुःख क्यांय ॥ ४७ ॥
पुण्यराशि शुभ भावथी, मणि कंचन गिरिराय;
शुद्ध भावथी सेवीए, अनेकांत मत पाय. ॥ ४८ ॥
तारक वारक चउगति, अचल महोदय नाम;
ते सिद्धाचल वंदीए, ठरीए निजपद ठाम. ॥ ४९ ॥
जग जयवंतु तीर्थ ए, सहु तीर्थ शिरदार,
भव्यो माळे भावथी, पामे भवजल पार ॥ ५० ॥
शांत स्वभावे निर्मला, मुनिवर ए गिरि पाय,
अलख अमरपद पामीया, शुद्ध परिणति व्याय. ॥५१॥
प्रदेश शत्रुजयतणा, नयनानंद करंत,
विश्वपूज्य गिरि वंदीए, लहीए भवजल अंत ॥ ५२॥
राम भरत ज्यां आवीया, महिमा मुणी अपार,
गिरिसेवन गिरूआ थइ, लह्या सद्गति निरधार. ५३
पांडव प्रमुखा ए गिरि, आव्या मन उल्लास;
भावे गिरिवर सेवता, मुक्तिपुरीमां वास ॥ ५४ ॥
सर्वज्ञ पद साधीयुं, सत्य प्रद्युम्नकुमार;
ते सिद्धाचल वंदीए, नाशे कर्मविकार. ॥ ५५ ॥
संप्रति काळे आवीया, त्रेविशे जिनराय,
तेवीश विषय शमाववा, भजीए गिरिवर राय. ॥ ५६ ॥
जिनाज्ञा जिनतत्त्वनी, करणी कहे निष्काम,

भव्यो एवा सेवीने, पामे अविचल धाम. ॥ ५७ ॥
दृढ शक्ति एह नामथी, भजता भवियण कोय;
तेह सिद्धाचल वंदीए, समकित निर्मल होय. ॥ ५८ ॥
अचल ज्योतिना नामथी, शेवो शुद्ध सद्राय;
तेह सिद्धाचल वंदीए, भवभय भ्रांति जाय. ॥ ५९ ॥
सार्थक सहेजानंद ए, नामे गिरिवर होय;
सेवो ध्यावो भविजना, भवपातिकतति खोय ॥ ६० ॥
काल अनादि भटकियो, तोय न आव्यो अंत;
शत्रुंजय रुषभ प्रभु, तार तार भगवंत. ॥ ६१ ॥
एकेंद्रिय बेरेंद्रिमां, दर्शन कबहु न थाय;
तेरेंद्रि चौरेंद्रिमां, नजरे नहीं जणाय. ॥ ६२ ॥
प्रबल पुण्योदय थकी, लही मानव भवसार;
श्री आदीश्वर भेटीया, तार तार मुज तार. ॥ ६३ ॥
शिवशंकर गिरि देखीने, पामो मन आनंद;
शुद्ध स्वरूपानंदता, जस ध्याने उल्लसंत. ॥ ६४ ॥
जग तारे एह हेतुथी, जगतारण कहेवाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, निर्मल आत्म सुहाय ॥ ६५ ॥
गुणानंत प्रगटे मुदा, जस ध्याने निजमांय;
गुणकंद गिरिवर तणी, सेवा शितळ छांय. ॥ ६६ ॥
आर्त्त ध्याननी नष्टता, गिरिवर ध्याने थाय;
रौद्रध्यानी पण सिद्धता, शत्रुंजय महिमाय. ॥ ६७ ॥
पुंडरीक गणधरमुखा, आव्या विमल गिरिंद;
ते विमलाचल वंदीए, प्रणमतसज्जनवृन्द. ॥ ६८ ॥
सेवे शिव सुख संपदा, ध्यावे ध्येय पमाय;
नमुं नमुं हुं तीर्थने, मुक्तानंद कथाय. ॥ ६९ ॥

निरुपाधिपद एहथी, पामे कहे जिणंद,
मतिमत महिमा स्तवे, शु जाणे मतिमंद. ॥ ७० ॥
अनेकार्थ पदार्थ तो, सात नये ग्रहवाय,
व्यवहारे निमित्तता, निश्चयथी निजमांय. ॥ ७१ ॥
परस्पर सापेक्षथी, वर्ते नयो सदाय;
नयोथकी शब्दार्थने, कहेता श्री जिनराय. ॥ ७२ ॥
अनेकांत श्रद्धा ग्रही, विमलेश्वर गिरिराय,
वंदो भावे भविजना, कर्म मर्म दूर जाय ॥ ७३ ॥
निश्चल आत्मस्वरूपनी, सिद्धि जेथी थाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, संवर गुण प्रगटाय. ॥ ७४ ॥
द्रव्य भावथी वंदतां, आत्म समाधि पाय,
द्रव्यभाव समज्या विना, गिरिगुण नहि गवाय.॥ ७५ ॥
गिरिवर प्रति पगलुं भरे, ज्ञानपणे जे कोइ,
निर्मल आत्म करे तदा, पापपंक सव धोइ. ॥ ७६ ॥
बाह्यांतरथी शुद्ध थइ, राखे स्थिरोपयोग,
गिरि चढता समता वरे, पामे निजगुण भोग. ॥ ७७ ॥
आलोयण ले पापनु, सुणी गुरुमुख उपदेश;
सिद्धाचल गिरि सेवीने, पामे अविचल देश. ॥ ७८ ॥
आलोचे नहि पापने, मूके न माया झाळ;
सिद्धाचल तस शुं करे, जो परपरिणति चाल. ॥ ७९ ॥
कर्या कर्म आलोचना, श्रद्धाथी करनार,
पामे ते परमार्थने, जिन आज्ञा शिर धार. ॥ ८० ॥
क्रोध न करीए कोइ शु, धरी मनमां विश्वास,
श्री सिद्धाचल वंदीए, त्यागी पुद्गल आश ॥ ८१ ॥
विषयोन्मादि चित्तने, वश करवाने हेत,

तप जप यम पूजा कही, मुक्ति वधू संकेत. ॥ ८२ ॥
यात्रा नवाणुं जे करे, समजी तत्त्वस्वरूप;
आश्रव मार्गोच्छेदतां, लहे न भवभय धूप. ॥ ८३ ॥
विधिपूर्वक पूजन करे, नासे कर्म कलंक;
सहेजानंदे विचरतां, को राजा कोण रंक. ॥ ८४ ॥
अजरामर पद झट लहे, करता निर्मळ सेव;
क्षायिक भावे चेतना, चिदानंद गुणमेव. ॥ ८५ ॥
आज सफल दिन माहरो, सफल मनुष्य अवतार;
श्री सिद्धाचल देखतां, आनंद हर्ष अपार. ॥ ८६ ॥
अमृत फळने आपवा, कल्पवृक्ष सम एह;
वंदो पूजो भविजना, थावे निर्मल देह. ॥ ८७ ॥
कामधेनु सम ए गिरि, वंछित फल दातार;
वंदो पूजो भविजना, अक्षय पद करनार. ॥ ८८ ॥
कामकुंभ सम एह गिरि, पंचम गतिने देत;
वंदो पूजो भविजना, श्री शत्रुंजय क्षेत्र. ॥ ८९ ॥
फरी फरीने नहीं मळे, मानव भवनो देह;
वंदो पूजो भविजना, सिद्धाचल गिरि एह. ॥ ९० ॥
मनुष्य जन्म पामी भवि, भेटे नाहि गिरि एह;
मानुं मात उदर विषे, रहीयो प्राणी तेह. ॥ ९१ ॥
शशी सूर्यवत् एह गिरि, करतुं भावोद्योत;
वंदो पूजो भविजना, प्रगटे निर्मल ज्योत. ॥ ९२ ॥
गुरुता मेरु तणी परे, तेनी जगमां थाय;
जे सिद्धाचल वंदता, निर्मल श्रद्धा थाय. ॥ ९३ ॥
ए सम जग कोनो नहि, जोतां महा उपकार;
ते सिद्धाचल वंदीए होवे जय जयकार. ॥ ९४ ॥

मोहमायागिरि भेदवा, पविसम तस अवदात,
ते सिद्धाचल वंदीए, करीए निर्मल यात्र ॥ ९५ ॥
वर्णन वाणीथी कर्युं, कदीय न पूरुं थाय,
ते सिद्धाचल वदीए, महिमानंत कथाय. ॥ ९६ ॥
अधुना पचमकाळमा, वर्ते तस महिमाय,
ते सिद्धाचल वदीए, भव भव भावट जाय. ॥ ९७ ॥
भावे यात्रा जे करे, पामे मुक्ति तेह,
ते सिद्धाचल वदीए, कर्म रहे नहि रेह ॥ ९८ ॥
भवजलधितट पामवा, उत्तम एहज झाझ,
ते सिद्धाचल वदीए, सिद्धे सघळां काज. ॥ ९९ ॥
विमलेश्वर सेवन थकी, उपजे सिद्धि उदार,
ते सिद्धाचल वदीए, पचमगति सुखकार. ॥ १०० ॥
श्री सिद्धाचल स्पर्शना, करीने चरम जिनेश,
योजनगामिनी वाणीथी, दीधो छे उपदेश. ॥ १०१ ॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, दिन करशे जे यात्र,
अल्पकाळमा ते भवि, थाशे सद्गतिपात्र. ॥ १०२ ॥
तीर्थेश्वर दर्शन थकी, निर्मल दृष्टि होय,
ते सिद्धाचल वंदीए, अवर नहीं जग कोय. ॥ १०३ ॥
अंतर शुद्धि बाह्यथी, निमित्त कारण भाळ,
अंतर तत्त्व विवर्णना, करशे समजु न्याल. ॥ १०४ ॥
द्रव्य दुभेदे भावथी, सम्यग ग्रही अवबोध,
ते सिद्धाचल वदीए, करी चंचलता रोध. ॥ १०५ ॥
मतिमदनी वर्णना, तेनो बाळक चाल,
बुद्धिसागर वदता, पामे मगल माल ॥ १०६ ॥
संवत ओगणीश उपरे, बासठनी शुभ साल,

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, स्तवना पूर्ण रसाळ. ॥ १०७ ॥
करी चोमासुं शांतिथी, विजापुरमां खास;
सिद्धाचल गिरि वंदना, करतां तत्त्व प्रकाश. ॥ १०८ ॥

आत्मस्तुति.

अंतर्दृष्टि साध्यता, साधक शुद्ध कथाय;
अंत र्मुखोपयोगता, साधन सत्य सधाय. ॥ १ ॥
उपशम भावे साधना, क्षयोपशमवा जोय;
क्षायिक भावे साधना, सत्य चरण अवलोय. ॥ २ ॥
गुणस्थानक आरोहवा, समजो सत्य उपाय;
अंतर्वृत्ति आतममां, सत्य चरण सुखदाय. ॥ ३ ॥
क्षयोपशम ज्ञाने सदा, ध्यावो अंतर्देव;
सेवा अंतर्देवनी, आपे शिवसुखमेव; ॥ ४ ॥
मन चंचलता वारीने, ध्यावो अंतर्धर्म;
शुद्ध स्वरुपाकारमां, रहेतां नासे कर्म. ॥ ५ ॥
अंतर्मुख वृत्ति कही, ध्यावो चिन्मय राय;
अडग स्थिरोपयोगथी, आनंदाब्धि सुहाय. ॥ ६ ॥
सत्य शांतता त्यां जगे, अचल स्वभावी जेह;
शिवसुखानुभव लहे, वर्ते जोपण देह. ॥ ७ ॥
नैगमनय दृष्टि करी, शुद्ध कर एवंभूत;
एवंभूत दृष्टि करी, विशुद्ध नैगम युक्त. ॥ ८ ॥
संग्रहनय दृष्टि करी, समभिरुढता शुद्ध;
समभिरूढ दृष्टि करी, शुद्ध रूजुनय बुद्ध. ॥ ९ ॥
रूजुसूत्र दृष्टि करी, शब्दनये आरोह;
शब्दनये आरोहीने, आश्रवनो कर रोह. ॥ १० ॥

शब्दनये दृष्टि करी, विशुद्ध कर व्यवहार,
व्यवहारे शुद्धि करी, समरुढता धार || ११ ||
समभिरुढ प्राप्ति करी, एवंभूतता पाय,
शुद्ध पर्याये आत्मनी, सिद्ध बुद्धता थाय || १२ ||
अशुद्ध पर्याय करी, आत्माऽशुद्ध कहाय,
रागी द्वेषी आतमा, काल अनादि न्याय || १३ ||
वर्ते युं भवचक्रमा, भूली निजपद भान,
सद्गुरु सगे सहजमा, प्रगट्यु शुद्धु ज्ञान || १४ ||
भेद ज्ञाननी दृष्टिथी, कीधो निजपर भेद,
निजपर्याय विशुद्धिमा, कदा न वर्ते खेद. || १५ ||
निजपद अभय विलोकता, नाठो भय तो दूर,
आत्मिक अनुभव जागता, वर्ते आनंदपूर. || १६||
क्षायिक नवलब्धि जगे, करता निजपद ध्यान,
कर्यु अनता ज्ञानीए, पाम्या निर्मल स्थान. || १७||
सार्थकता छे ज्ञाननी, ध्यान सदा सुखकार,
सत्य सत्य जिनवाणीनु, सार सारमा सार ||१८||
आत्मिक ज्ञान विना कदी, ध्यान कहो क्यु थाय,
ध्यान विना मुक्ति नही, कथन करे जिनराय.||१९||
जाण्यो आतम एक तो, जाण्या भाव अनेक,
सद्ग्रंथे भाख्यु इस्यु, धरजो आतम टेक || २० ||
भूले सहु संसार तो, खुले अंतर्धर्म,
उत्कट ध्यानदशा थकी, होवे शाश्वत शर्म || २१ ||
सोऽहं सोऽहं समरता, सोऽहंमय हो जाय,
परम महोदय पद ग्रही, परम ब्रह्मता पाय || २२ ||
निजोपयोगे धर्म छे, सत्य कथे सौ ग्रंथ,
कष्ट क्रिया करता कदी, लहो न मुक्तिपथ. ||२३||

वर्ते निजपद शून्यता, चाले छे व्यवहार;
कोटि प्रयत्ने पामरो, पामे नहि भवपार. ॥ २४ ॥
धाम धूममां धर्मने, माने मूढ सदीव;
धर्म मर्म समज्या विना, क्लेश लहे छे जीव. ॥ २५ ॥
मुंड मुंडावे शुं थयुं, थयुं न मनडुं मुंड;
मलीन मन वर्ते तदा, जाणो जेवुं भूंड. ॥ २६ ॥
केश लोचथी शुं थयुं, कर्यो न अंतर्लोच;
बाह्य शौचथी शुं थयुं, ग्रह्यो न अंतर्शौच. ॥ २७ ॥
वस्त्र त्यागथी शुं थयुं, नग्न फरे छे ढोर;
अंतर्मूर्च्छा त्यागतो, त्याग औरको ओर. ॥ २८ ॥
प्रतिदेहमां देव छे, तिरोभावथी जाण;
आविर्भाव जगाववा, कर तुं तेनुं ध्यान. ॥ २९ ॥
अनुभव पच्चिशी रची, इंद्रोडा दिन एक;
विचरी द्विविध भावथी, समजी सत्य विवेक. ॥३०॥
संवत ओगणीश बासठे, कृष्णपक्ष वैशाख;
सातम दीन शुभ भावथी, करतां गुण गण राश. ॥३१॥
पार्श्वनाथ संखेश्वरा, करजो शासन स्हाय;
बुद्धिसागर प्रेमथी, ज्ञाने आतम गाय. ॥ ३२ ॥

कलिकालमहिमा अने कृत्योपदेश.

रुचिराछंद.

आजकालनी केळवणीमां, कुश्रद्धानी भेळवणी,
परदेशी लोकोना चाळा, नास्तिक बुद्धि मेळवणी;
धर्म धुरंधर धर्म गुरुना, वचनोनी ज्यां फेरवणी,
स्वच्छंद मतथी छोकरवादी, उद्धत्ताई फेळवणी. ॥ १ ॥

मनमां आवे तेवु माने, उत्शृंखलता टील घणी;
पापपुंजमा खुंच्या पामर, सद्गुरु शिर्षे को न धणी,
मनमां म्हाले मूरख माणी, उद्भट वेषे बणी ठणी;
समजण देता नाक चढावे, छछेडया जिम होय फणी. ॥ २ ॥
गाडी वाडीमा मस्ताना, पाप कर्ममा चित्त धरे;
हरतां फरतां बोले जूटुं, पैसा माटे धर्म करे,
पापकर्म व्यापारो वधिया, पाखडी पूजाय अरे;
नवीन मत जुनाने निन्दे, भवभयथी विरला तो डरे. ॥३॥
कलिकालमां कौतुक कोटि, जोता जोतां नजर पडे;
धर्मी थोडा पापी पुष्कळ, वात वातमा वहु लडे,
राजन साजन महाजन मोटा, वाळे गोटा व्यवहारे;
वकवादी कै वहु वके छे, अन्यजनोने किम तारे. ॥ ४ ॥
पाखंडी जागे छे पुष्कळ, समजावीने जुट अरे;
साधुजननी निन्दा करता, भवभ्रमणामा वहु फेरे,
सद्गुरु साधु आण न माने, पाखंडीना दास बने;
पाखंडीनी पूजा देखी, दूर करे साचा हकने. ॥ ५ ॥
असल रीतमा कोइक रहेवे, भोळा तो भरमाय खरे;
नित्यनेमनो त्याग करीने, भूंडा कामो केइ करे,
स्वारथना भया केइ कपटी, नीचा कृत्ये पेट भरे;
पापी वधा प्रगटया पापे, धर्मवृत्तिने अल्प वरे ॥ ६ ॥
श्रद्धा भक्ति दिन दिन घटती, भावी टाळ्युं नहि टळे,
मिथ्या मत वाटे घेर्या जन, दुर्गतिमां जइ भळे,
न्यायी धर्मी नृपति वीरला, स्वारथमा तो घणा गळे,
नामो मोटा दर्शन खोटा, जन एवा तो बहू मळे. ॥ ७ ॥
आजकालनी केळवणीमा, धार्मिक श्रद्धा भेळवणी,

नव तत्त्वादिक श्रद्धा ज्ञाने, कुश्रद्धानी फेरवणी;
सद्गुरु संगत करतां सहेजे, समकित श्रद्धा होय घणी,
ते माटे श्रद्धालु लोको, आदरजो गुरु स्पर्शमणि. ॥ ८ ॥

असद्गुरुनी संगत थातां, सुश्रद्धाथी नहीं फरो,
सर्वोत्तम सद्गुरु छे नौका, पामी प्राणी सहज तरो;
जल्दी खटपट लटपट त्यागी, चेतन हीरो हाथ धरो,
ज्ञान क्रिया वेथी छे मुक्ति, जिन वाक्यामृत पान करो.॥९॥

कलिकालमां भक्ति मोटी, देव गुरुनी साचवजो,
षड् द्रव्योनुं ज्ञान करीने, मुक्तिपुरी सन्मुख थजो;
कलिकालनां कौतुक देखी, धर्म क्रियाने नहीं त्यजो,
जगमां सर्वोत्तम जिन दर्शन, अन्तरंग वाहिरंग भजो. ॥१०॥

परोपकारे मनडुं धरवुं, जूठ वेण नहि उच्चरवां,
धर्म करंतां धाड पडे तो, पाछां पगलां नहि भरवां;
धनवंता पापि जन देखी, पाप कर्म नहि आचरवुं,
पापे जय धर्मे क्षय रभसा, वेण कदा नहि उच्चरवुं. ॥ ११ ॥

वात वातमां लडी न पडवुं, कपट कळाने परिहरवी,
धर्मी जनने स्हाय करीने, सद्भक्ति दीलमां वरवी;
परनी निन्दा कदी न करवी, वृद्ध वाक्यने अनुसरवुं,
मोटा जननुं मानज करवुं, विना प्रयोजन नहि फरवुं. ॥१२॥

शत्रु मित्रमां समान दृष्टि, धर्म कार्यमां यत्न करो,
ज्ञान ध्यानमां दिवस गाळो, मुक्तिपुरीनो मार्ग खरो;
आतम ते परमातम साचो, अनन्त शक्ति प्रगट करो,
बुद्धिसागर अवसर पामी, सिद्ध सनातन सत्य वरो. ॥१३॥

वचनामृत दुहा.

अर्ह अर्ह समरता, लहीए भवनो पार;
सत्य देव अरिहंत छे, तेनो मुज आधार. ॥ १ ॥
सूतां खाता बेसता, चालंता अरिहंत;
जे भावि प्राणी समरशे, थाशे शर्म अनन्त. ॥ २ ॥
अरिहन्त महामन्त्र छे, समजो नर ने नार;
मङ्गल मोटुं जाणिए, होवे जय जयकार ॥ ३ ॥
मनुष्यभव पामी भवी, बे करवानां काम;
देवानो टुकडो भलो, जपवु आतमराम. ॥ ४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, बे वातो दिल धार;
दया धर्म हृदये धरि, जपवो श्री नवकार ॥ ५ ॥
बुद्धिसागर वात दोय, समजी घटमा धार;
दया धर्मनी सेवना, करवो पर उपकार ॥ ६ ॥
मुसाफर तुंहि जगतमा, दान धर्म कर भाइ;
आख मिचाए कल्पना, जूठी बाह्य सगाई ॥ ७ ॥
आतम ते परमातमा, घट घट रॅह्यो समाइ;
बुद्धिसागर प्रेमथी कुंची गुरुए बताइ ॥ ८ ॥
करवानुं बहु काम छे, पामी मनु अवतार,
मोहे मुंझी शुं मरे, चेती आतम तार ॥ ९ ॥
ज्ञान विण जीव अन्ध छे, सान विना ते ढोर,
दान विना ते ठुंठ छे, विण उपकारे घोर. ॥ १० ॥
देव गुरु नहि सेवीआ, कर्यो नाहि उपकार,
जिनवर जाप कर्यो नहि, फोगट तस अवतार ॥ ११ ॥
भक्त सन्त सन्तापिया, दीधा दीनने दुःख,
दान धर्म समज्यो नहि, लजवी जननीकुख. ॥ १२ ॥

गुरु निन्दा बहु पातकी, गुरु निन्दा बहु पाप;
गुरु निन्दक मुख देखतां, अशुभ दिन सन्ताप. ॥ १३ ॥
दया धर्म जगमां वडो, दया धर्म सुखकार;
दया नहि त्यां धर्म नहि, समजो नर ने नार. ॥ १४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, तत्त्व हृदयमां धार;
आतम सरखा जीव सहु, समजी कोइ न मार. ॥ १५ ॥
हिंसा जूठ चोरी अने, व्यभिचार महादोष;
दया क्षमा उपकार धर, सत्य धर्म सन्तोष. ॥ १६ ॥
जो तुं समजे धर्मने, यथा शक्तिथी आप;
बुद्धिसागर प्रेमथी, खरा भक्तनो जाप. ॥ १७ ॥
गुरुकृपाथी पामिए, सुखशान्ति आराम;
गुरुकृपा विण बापडा, लहे न आतमराम. ॥ १८ ॥
गुरुनी आज्ञा लोपिने, चाले निजमति छन्द;
ज्यां त्यां भटकी दुःख ले, जाण्याविण मतिमन्द. ॥ १९ ॥
बोले ते पाळे नहीं, करे प्रतिज्ञा भङ्ग;
रौरव दुःखो नरकमां, पामे जीव कुरङ्ग. ॥ २० ॥
चित्त स्थिर जेनुं नहीं, करतो उंधां काम;
लोक हसे दुःखो लहे, मूर्ख दुःखनुं ठाम. ॥ २१ ॥
मनमां आवे ते करे, पश्च कहे ते फोक;
अवळा प्राणी बापडा, लहे न सुखडां लोक. ॥ २२ ॥
सद्गुरु शिक्षा लोपिने, मूर्ख शिष्य पस्ताय;
कोह्या काननी कूतरी, पेठे ठाम न पाय. ॥ २३ ॥
परमप्रभुनी प्राप्तिमां, सद्भक्ति हितकार;
ज्ञान ध्यान सद्वर्तना, अनन्त सुख करनार. ॥ २४ ॥
जिन वचनामृत पानथी, नासे भव सन्ताप;
बुद्धिसागर ज्ञानथी, कर जिनवरनो जाप. ॥ २५ ॥

जैनबोर्डींगविवेचन.

मराठी साखी

श्री संखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, जग जय मङ्गलकारी,
जैन वालक विद्योन्नतिमा, स्हाय करो सुखकारी,
जैन वोर्डींगनी उन्नति सहु चाहो, विघ्नवृन्द दूर जाओ जैन. १
अन्न वस्त्र ने विद्यादाने, श्रावकनु शुभ खातुं,
विद्यार्थिने स्हाय करीने, वाधो परभवभातुं. जैन. ॥ २ ॥
व्यवहारिक धार्मिक केळवणी, दिन प्रतिदिन अपाती;
वोर्डींग वाळक केळववामां, चीवट खूब रखाती. जैन. ॥ ३ ॥
निराधारने आश्रय आपे, सगपण श्रावक साचुं,
जैन वालकनी भक्ति मोटी, ते विण सर्व काचुं. जैन ॥ ४ ॥
वीर जिनेश्वर पुत्रो सर्वे, सधन निर्धन निरखो;
समान धर्मि वन्धु देखी, हेते मनमां हरखो. जैन. ॥ ५ ॥
लक्ष्मीनो ल्हावो लेवाने, मळियुं उत्तम टाणुं,
नाणुं मळे पण टाणुं मळे नहि, शुभ छे पात्र मजानु जैन ॥६॥
जन्मीने जैनोना हितमा, खर्ची न लक्ष्मी सारी,
पत्थरथी पण तेह नकामो, जननी भारे मारी जैन. ॥ ७ ॥
भेदभाव सहु दूर करीने, पोताना सुत जाणी,
साह्य करो साधर्मी वन्धु, उलट मनमा आणी जैन ॥ ८ ॥
श्रावक क्षेत्र सुपात्र सदा छे, साह्य करो नरनारी,
बुद्धिसागर वोर्डींगस्कुलनी, शुभोन्नति सुखकारी जैन. ॥ ९ ॥

अलख देशमां हंसने प्रेरणा.

पद.

हंसा चलोरे अलख निज देशमाजी,
ज्या छे झळहळ ज्योति अपार, हंसा टेक.

हंसा विनारे वादळ चमके वीजळीजी,
नहीं ज्यां अवरनणो आधार. हंसा. ॥ १ ॥
हंसा विनारे आंख जिहां देखवुंजी,
नहि जिहां निद्रा आवे लगार;
हंसा पाम्या पछी नहीं ज्यां पामवुंजी,
एतो निश्चयपद निरधार. हंसा. ॥ २ ॥
हंसा गगनगढ जइ म्हालवुंजी,
दिशा पश्चिम खोली द्वार;
हंसा अजपाजापे जिहां पहोंचवुंजी,
निराकार न जे साकार. हंसा. ॥ ३ ॥
चरे चारो मोतीडांनो हंसलोजी,
देखे तेहीज हंस विचार;
हंसा बुद्धिसागर पद ध्यावतांजी,
तारो नावे फरी अवतार. हंसा. ॥ ४ ॥

इरियावहियाना भेद.

कवित.

पांचसो त्रेसठ जीवतणा भेद, शास्त्र थकी लहीजे,
अभिहिया आदि दश पद लइने, दश गुणातो कीजे;
तेहने राग अने वळी द्वेषे, द्विगुणातो करीए,
मन वचन अने कायाए, त्रिगुणा चित्त धरीए.
करवुं करावबुं अनुमोदवुं, भूत भविष्य वर्तमान,
अरिहंतआदि छपदगुणतां, पुरा थया शुभखाण;

शुद्ध भावे करी शुद्ध लेश्याए, इरिया वहिया लेवे,
बुद्धिसागर अडमत्ता इव, केवल ज्ञानी होवे ॥ १ ॥

हुंने मारु.

पद राग धोळ

हुं ने मारु मानी प्राणी, चार गतिमां भटक्योरे;
अज्ञाने अथडाणो ज्यां त्यां, अवळी मतिथी अटक्योरे. ॥ १ ॥
छायामिषे काळ भमे छे, क्षणमां पकडी जाशेरे;
कुंटुम्ब कबीलो साथ न आवे, आव्या तेवुं जवाशे रे ॥ २ ॥
जरुर जंझाळे जकडाता, दुःखना दरिया मोटारे,
गुरुगमथी समजीने प्राणी, वाळीश नहि तुं गोटारे ॥ ३ ॥
जन्म्या तेने जरुर मरवुं, फुलीने शुं फरवुं रे,
काळझपटमां सहु झपटाशे, काम न करवुं वरवुं रे ॥ ४ ॥
पाणीना परपोटा जेवी, काया रोगभरेली रे,
मारी माने मूरख जीवडा, विण शी जाशे पहेलीरे. ॥ ५ ॥
जूठी काया जूठी जाया, जूठी जगनी मायारे;
पुद्गल बाजी कबु न छाजी, मोहे शुं मकलायारे. ॥ ६ ॥
वीर जिनवर केवलनाणी, साची वाणी जाणीरे,
बुद्धिसागर अन्तरमाहि, आणा जिननी आणीरे. ॥ ७ ॥

पतिव्रतास्त्री.

ओधवजी सदेशो कहेजो श्यामने ए राग

प्रमदा पतिव्रता धर्मो साचवे, पति पहेलां उठे गणती नवकारजो,
पंजेळे नहि पतिने समता आदरे, वचाने हितशिक्षा देवे प्यारजो;
प्रमदा ॥ १ ॥

नवरी बेठी निन्दा लवरी नहि करे, कदी न करती प्राणपतिपर
क्रोधजो:
छेल छबीली वणी ठणीने नहि फरे, साहेलीने देवे रुडो बोधजो.
प्रमदा. ॥ २ ॥

देशी वस्त्रो देशी वेषे पहेरती, विधवालग्ने कदी न करती व्हालजो
सुधाराना वायुथी रहे वेगळी, कदी न देती क्रोध करीने गाळजो
प्रमदा. ॥ ३ ॥

दान दया आभूषण कंठे धारती, शरीर लज्जा राखे तेवां वस्त्रजो
नीति रीति राखे कुलवट नेकथी, वेण न बोले जेवां तीखां शस्त्रजो;
प्रमदा. ॥ ४ ॥

विचारीने वदती वाणी मीठडी, शीयलना शृंगारे शोभे देहजो
देव गुरुनी भक्ति करती प्रेमथी, सहुनी साथे वर्ते निर्मल नेहजो
प्रमदा. ॥ ५ ॥

सद्गुणमालाथी शोभे छे सुन्दरी, धर्माचारो पाळे निशदीन प्रेमजो
बुद्धिसागर शोभे सतीयो श्रावीका, जैन धर्मने पाळी पामे क्षेमजो
प्रमदा. ॥ २ ॥

सुधारा.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने–ए राग.

सुधारो जो करवा इच्छो मानवी,
सुधारामां समजी देशो चित्तजो;
शास्त्राधारे सुधारा तो सत्य छे,
आत्मोन्नतिने पामे मानव नित्यजो. सुधारा. ॥ १ ॥
निर्दोषी औषधने खावां टेकथी,

नित्यनियमथी करवां धार्मिक कृत्यजो,
ब्रह्मचर्य संरक्षा करवी हेतथी,
त्यागी जूटुं वदवी वाणी सत्यजो सुधारा ॥ २ ॥
विनये मातपिताने पाये लागवुं,
विनये गुरुने वन्दन करवुं प्रेमजो,
जैनधर्ममां श्रद्धा धरवी नेमथी,
स्वदेशवस्त्रो स्वदेशवेषे क्षेमजो. सुधारा ॥ ३ ॥
धर्मभ्रष्ट करनारा हेतु त्यागीए,
जिनवाणीनो कदी न करवो लोपजो,
मातपिता ने सुगुरु साधु सन्तपर,
कदी न करवो प्राण जता पण कोपजो सुधारा ॥४॥
व्यसन अने वेश्यानो संग न कीजीए,
धार्मिक तत्त्वो वाचो सुगुरु पासजो,
भापानी केळवणीथी नहि फुलीए,
धर्मभ्रष्ट कुधारा तजवा खासजो. सुधारा. ॥ ५ ॥
कुत्सितधारा जेवा सुधारा घणा,
एवा सुधारानो करवो नाशजो,
देखादेखी सुधाराना वेगमां,
पडता प्राणी कुधाराना पाशजो सुधारा. ॥ ६ ॥
चेतनने सुधार्याथी सुधर्या खरा,
करवी धर्मिजनने प्रेमे स्हायजो,
सद्वर्तनथी सुधरो जाणी धर्मने,
खर्च नकामा करवां नहि दुःखदाय जो सुधारा ॥ ७ ॥
नास्तिकता त्यागीने आस्तिकता भजो,
कदी न मूको जैनधर्मने धीरजो;

बुद्धिसागर सापेक्षे सहु सुधरे,
चेतनज्ञाने व्हालो सज्जन वीरजो. गुधारा. ॥ ८ ॥

भक्ति.

रुचिराछन्द.

श्री संखेश्वर पार्श्वजिनेश्वर, तव महिमा जगमां भारी,
विघ्न विदारण मंगल कारण, जय जय जगमां उपकारी;
ध्यान करीने प्रेमे त्हारुं, भक्ति महिमा गान करुं,
वीर प्रभुमां गौतम जेवी, भक्तिथी भवपार तरुं. ॥ १ ॥
ज्यां नहि भक्ति त्यां शुं श्रद्धा, भक्तिथी छे भाव खरो,
भक्ति विण मोळी छे सेवा, प्रेमे भक्ति चित्त धरो;
भक्ति विण साधन शुं साधे, भक्तिथी क्षणमां सुधरो,
भक्तिथी निर्मल छे मनडुं, भक्ति सहित भवपार तरो ॥ २ ॥
सुरस विना तो लाडुं शानो, मीठा वीण भोजन शानुं;
श्रद्धा विण धर्मज होय शानो, राग विना फोगट गाणुं,
ज्ञान विना गुरु होयज शानो; मान विना जेवुं खाणुं,
भक्ति विण जीवन छे तेवुं, समजो नहि सन्तो छानुं. ॥ ३ ॥
भक्ति विण निर्मलता शानी, भक्ति विण घट अन्धारुं,
भक्ति विण चेतन नहि तरशे, भक्तिथी जीवन सारुं;
सुदेव गुरुनी भक्ति करवी, भक्ति जीवन बहु प्यारुं,
भक्ति शक्ति देवी साची, भावे भक्ति दील धारुं. ॥ ४ ॥
भक्तिथी भणतर छे साचुं, भक्ति विण भणतर काचुं,
भक्ति विण लूखी आचरणा, भक्तिना रसमां राचुं;
वीर प्रभुनी भक्ति साची, भक्तिथी पापो सहु गळे,

भक्ति देवी महिमा भारे, वांछित सर्वे सहेज मळे. ॥ ५ ॥
आवश्यकमां भक्तिमहिमा, जिनवाणी विस्तरथी कहे,
वीरजिनेश्वर पूजामांहि, भक्ति भळतां शर्म लहे,
भक्ति करतां भावज प्रगटे, भावे भव्यो कर्म दहे,
भक्ति छे शूरानी सज्जन, भक्तिने विरला को चहे. ॥ ६ ॥
द्रव्य भाव दो भेदे भक्ति, भक्ति विरला भव्य करे,
भक्ति शक्ति निर्मल चेतन, शाश्वत सिद्धि शर्म वरे;
भक्तिथी जिनशासन देवो, स्हाय करे शाश्वतपन्थे,-
जिनवरभक्ति देवो करता, भाख्युं छे उत्तम ग्रन्थे. ॥ ७ ॥
चिदानन्दनी लहेरो प्रगटे, भक्ति करतां भव्य खरे,
बुद्धिसागर भक्तियोगे, भवपाथोधि भव्य तरे,
ओगणिश चोसठनी साले, पोष शुक्ल बारस सारी,
जयजय मङ्गलकारक भक्ति, भक्ति त्हारी बलिहारी ॥ ८ ॥

गुरुपद स्तुति.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने-ए राग

सद्गुरु मुनिवर परम कृपालु वंदीए,
परोपकारी परम पूज्य गुणवंतजो,
भावदयाना सागर ज्ञानी सेवता,
आवे दुःखदायि बहु भवनो अंतजो सद्गुरु ॥ १ ॥
पंच महाव्रत धारक वारक मोहने,
भवजलधिथी तारक नायक नाथजो;
सदुपदेशे शिष्यवर्ग झट तारता,
शिवनगरीना प्रापक सारा साथजो सद्गुरु. ॥ २ ॥

जड चेतननुं सूक्ष्म स्वरुप बतावीने,
उपादेय आतमने भाख्यो सत्यजो;
नय निक्षेपा नवतत्त्वादिक जाणता,
प्राणांते पण वदे न सूत्र असत्यजो. सद्गुरु. ॥ ३ ॥
व्यवहार अने निश्चयथी चरण सुसाधना,
दुःखकर कंचन कान्तानो परिहारजो,
रत्नत्रयी साधनथी साधे प्रेमथी;
सद्गुरु आणा पाळे जग जयकारजो. सद्गुरु ॥ ४ ॥
गृहावासने त्यागी संयम पाळता,
मळतां एवा सद्गुरुनो संयोगजो;
राग द्वेष मिथ्यादिक दोषो सहु टळे,
शिष्यो पामे शाश्वत रुद्धि भोगजो. सद्गुरु. ॥ ५ ॥
अहो अहो सद्गुरुजी शरण शरण मने,
त्हारा गुणगण गातां नासे दोषजो;
अन्तर रुद्धि पामे प्राणी धर्मथी,
सद्गुरुचरणे रहेतां गुणगण पोषजो. सद्गुरु. ॥ ६ ॥
भावधर्मना दाता त्राता तात छो,
तुज सेवाथी निर्मल आतम थाय जो;
तव आणाथी रत्नत्रयीनी साधना.
तव आणाथी जन्म मरण दुर जायजो. सद्गुरु. ॥ ७ ॥
जैन धर्मोद्धारक परम पवित्र छो,
दीनदयाळु तव सेवा सुखकारजो;
बुद्धिसागर समय सुधारस पानथी,
शिष्यो पामे भवजलधिनो पारजो. सद्गुरु. ॥ ८ ॥

आत्मोन्नतिना उपायो.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने—एराग.

आत्मोन्नतिना हेतु सज्जन साभळो,
विसवाद नहि जेमां किञ्चित् मात्रजो,
सद्गुरु उपदेशे मन वाळो व्हालथी,
सज्जन संगति करी बनो सुपात्रजो. आत्मोन्नति. १
नाना मोटा जीव वृन्दने पाळजो,
दया धर्मथी करशो आत्म कृतार्थजो,
सत्य शील सन्तोष क्षमादिक धर्मथी,
साधो भव्यो परमगति परमार्थजो आत्मोन्नति. २
चाडी चुगली चोरी झटपट वारीए,
निन्दा कदी न करवी प्राणी भव्यजो,
दोषीना पण दोषो टाळो प्रेमथी,
समता भावे करवुं सहु कर्तव्यजो. आत्मोन्नति. ३
राखो सहुनी साथे मैत्री भावना,
कदी न भूडुं चिन्तो परनुं लेशजो,
धर्मि देखी हरखो मनमा हेतथी;
कदी न करवो वात वात कलेशजो आत्मोन्नति. ४
नीति रीति राखो सज्जन नेमथी,
वदो विचारी वाणी सुन्दर सत्यजो,
धर्म अर्थने काम अने परमार्थमां;
कदी न वदवी वाणी लेश असत्यजो. आत्मोन्नति ५
परधनने पथरसम चित्ते धारवुं,
पर ललनाने मातसमाना लेखवजो,

सुख दुःख पोताना सम अन्यने जाणीने;
सर्व जीवोने पोताना सम देखजो. आत्मोन्नति. ६
सत्योद्धारक धर्मोद्धारक कार्यमां;
उद्यम करवो मनमां धरीने व्हालजो,
चेतनशक्ति जाणी चेतन सेववो;
सत्य जूठनो करशो मनमां ख्यालजो. आत्मोन्नति. ७
प्राणांते पण परनी निन्दा त्यागवी;
धर्मिजनने करवी प्रेमे स्हायजो,
क्रोध मान माया ने लोभ नीवारतां;
बुद्धिसागर वर्तनथी सुख थायजो. आत्मोन्नति. ८

नीतिपद.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—ए राग.

हळीमळीने चालो सहुनी साथमां,
व्हालां साथे कदी न करवुं वेरजो;
मातपितानी शिक्षा हृदये धारवी,
जीवोनी साथे करवुं नहि झेरजो. हळीमळीने. ॥ १ ॥
संकट पडतां हिंमत हृदये धारवी,
कदी न करवो दुर्जन साथे प्यारजो;
देश वेषथी विरुद्धवर्तन त्यागवुं,
वात चित्तमां कदी न करवो खारजो. हळी. ॥ २ ॥
साधुजननी सेवा साची साचवो,
सत्ता धनथी करो नहीं अहंकारजो;
परोपकारे प्रीति निशदिन राखवी,
दया धर्मने सेवो शिव सुखकारजो. हळी. ॥ ३ ॥

सहुनु सारु चिंतववाथी श्रेय छे,
सत् संगत करवानी राखो टेवजो,
नवतत्त्वादिक जाणी आतम तारवो,
देवगुरुनी करवी साची सेवजो. हळी. ॥ ४ ॥
गप्पां मारी जीवन व्यर्थ न गाळवु,
कदी न करवो कारण पामी क्रोधजो,
ज्यां त्यां गुण देखीने गुणने आदरो,
देवो सर्व जीवोने उत्तम बोधजो. हळी ॥ ५ ॥
क्रोध कपट निन्दादिक दोषो टाळवा,
हरतां फरता आतममां उपयोगजो,
बुद्धिसागर सद्वर्तन सेव्या थकी,
प्रगटे अन्तर शाश्वत लक्ष्मी भोगजो. हळी ॥ ६ ॥

कर्तव्यबोध.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—एराग

विनयमन्त्रथी वैरी वशमा थाय छे,
विवेक दृष्टे सत्यासत्य जणायजो,
विद्यावन्त मोटामा मोटु जाणवुं,
विचारीने कार्य करो सुखदायजो विनय ॥ १ ॥
विषसरखा विषयोने जाणी त्यागवा;
विषधर सरखी वेश्या महा दुःखदायजो,
वैरिनो विश्वास न करजो हाल्थी,
व्यसनो सर्व त्यजवा मन हित लायजो विनय. ॥२॥
वडेरानी सोबत करवी नहि कदी,

वाणी वदवी साची सुन्दर भव्यजो,
विरुद्ध वर्तन तजवुं सत्य विचारीने;
वर्तन साचुं मनुष्य जन्म कर्तव्यजो. विनय. ॥ ३ ॥
वात विचारी व्हाली व्हाला वेगथी;
विजय वाघने वगडावो वड वीरजो,
वैरागी थइ वळजो शिवपुर वाटमां;
वसवुं शिवपुर बुद्धिसागर धीरजो. विनय. ॥ ४ ॥

ॐ नमः

सर्वनुं भलुं इच्छवुं.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—ए राग.

सहुनुं सारुं इच्छो सज्जन मानवी,
परना उपकारे उत्तम अवतारजो;
परनुं सदुपदेशे सारुं कीजीए,
सहुने शांति सदा मळो निर्धारजो. सहु. ॥ १ ॥
सहुने सुखनी आशा दीलमां छे घणी,
सुख अर्पणथी सुखने पामो भव्यजो;
दुःख देवानी बुद्धि कदीय न धारीए,
रागादिक दोषो छे परिहर्तव्यजो. सहु. ॥ २ ॥
भलुं करे छे उत्तमजन सहु जीवनुं,
तीर्थंकर उपदेशे थइ कृतकृत्यजो;
त्रियोगे दुःखववा नहि परजीवने,
साचुं वदवुं जाणी तत्त्वो सत्यजो. सहु. ॥ ३ ॥
पापीनी पण खोटी बुद्धि टाळवी,
हिंसकपर पण करुणा करवी नेमजो;

सुतनी विष्टा धोवे माता प्रेमथी,
बुद्धि एवी वर्तेतो सुख क्षेमजो. सद्गु. ॥ ४ ॥
शत्रुपर पण शत्रु बुद्धि टाळवी,
शाश्वत शान्ति पामो जीवना वृन्दजो;
अनुभवो आतम सम सर्वे आतमा,
टळो विकारी मायाना महाफन्दजो. सद्गु. ॥ ५ ॥
भूंडानुं पण भूंडुं कदी न इच्छवुं,
वैरिपर पण कदी न करवु वेरजो,
समभावे वर्तीने आ संसारमा,
सर्व जीवो पर करेल टाळो झेरजो. सद्गु. ॥ ६ ॥
वादविवादो टाळी व्हाला बन्धुओ,
करशो जन्मी आतमनु कल्याणजो,
बुद्धिसागर वर्तो शान्ति सर्वने,
एवी बुद्धि आपे शिवनु स्थानजो. सद्गु. ॥ ७ ॥

दुर्जनलक्षण.

मनहरछन्द

गुणनो न राग होय अवगुण देखनार,
पयमांहि पुरा काढे दुर्जन गणाय छे,
सन्तने कुटिल कहे कुटिलने सन्त कहे;
मूकी सत्यपन्थ अने कुपन्थे ते जाय छे.
सज्जन मनुष्य दोष देखवामा शूर होय,
पारकानुं रूडुं देखी मनडुं दुःखाय छे,
घादा जेम फाफ देखे पारकाना दोष तेम;
देखवानी बुद्धि जेनी अवळी सदाय छे. ॥ १ ॥

आळने चढाववामां दोष न जराय गणे;
चाडी अने चुगलीमां निशदिन प्यार छे,
निन्दाथी मलिन मन मायानुं तो गृह होय;
कृतघ्न विश्वासघात कृत्यमां तैयार छे.
विनयथी क्रूर होय विवेकथी झेर होय;
इर्ष्या झूठ लोभ अने कपट भण्डार छे,
विचार उच्चार अने आचारमां वक्र होय;
धीनिधि कहे छे एवा दुर्जन अपार छे. ॥ २ ॥

सज्जनलक्षण.

मनहरछन्द.

सद्गुण देखनार विवेकथी पेखनार;
गुणिजन देखी जेनुं चित्त हरखाय छे,
विचार उच्चार अने आचारमां सत्य होय;
पारकानुं बुरु देखी मनडुं दुःखाय छे.
पर उपकारमांहि राग होय निशदिन;
देवगुरु सेवनमां चित्त हि सदाय छे,
दोषदृष्टि नाहि लेश मनमां जरा न कलेश;
सज्जन सुगुण नर जग वखणाय छे. ॥ १ ॥
सारु सहु जीवनुं सदा जे इच्छे चित्तमांहि;
प्राणांतेऽपि निन्दा करे नहि महा भाग्य छे,
दयाळु दातार शीलवंत सत्य कथनार;
हेय ज्ञेय उपादेय जाणवामां राग छे.
अदेखाइ आळ चाडी चुगलीथी दूर होय;
अहो अपकारिपर जेनो उपकार छे,

चन्दन अने जल जेवा गुण होय सज्जनमां,
धीनिधि सज्जन जग धन्य अवतार छे. ॥ २ ॥

विद्यार्थि लक्षण.

मनहरछन्द.

विनय विवेक होय सरल स्वभाव होय;
भणवानी चीवटमां मनडुं सदाय छे,
आळसने खाळवामां दोष वृन्द टाळवामां;
नीति रीतभात मनमाहि नित्य च्हाय छे
प्रभातना प्रहरमा उठीने अभ्यास करे,
स्थिर एक चित्तथकी भणे सहु पाठने,
ब्रह्मचर्य धारी वारी विषयनी पाप वात,
तजे सहु मोजशोख मारवाना ठाठने. ॥ १ ॥
शिक्षकनी हिताशिख हृदयमां धारे सहु,
वकध्यान पेठे चित्त विद्यामा सदाय छे,
विचारीने बोले बोल करे साच जुठ तोल,
देशी वेष औषधथी जीवन गळाय छे
मातपिता नमन करे छे दिन प्रतिदिन,
बीडी आदि व्यसननो जेने नित्य त्याग छे,
मृत्युनो न भयगणे पाठ प्रेमथकी भणे,
धीनिधि सुशिष्य जगमाहि महा भाग्य छे ॥ २ ॥

शिष्यलक्षण.

मनहरछंद

विनय सदाय धरे गुरु वैयावृत्य करे,
गुरुने वन्दन करे बहुमान प्रेमथी,

गुरु उठे उभो थाय गुरु बेठा बाद बेसे,
गुरुनुं श्रद्धान धरे दीलमांहि नेमथी.
सामुं कदी बोले नहि गुरुना विनयवंत,
गुरुगुण गाइ मनमांहि हरखाय छे;
महा उपकारी गुरु सदाय शरण सत्य,
गुरु गम ज्ञान लही शिष्य सुख पाय छे. १
गुरु वचनानुसार प्रवृत्ति करे छे नित्य,
गुरुनां दर्शन करे त्यारे हरखाय छे;
गुरु उपदेश लही चेतनने तारवाज,
संयम सुसाधवाने चित्त बहु च्हाय छे.
गुरुना सेवन थकी विनेय सुशिष्य होय,
गुरु आणा पालवाथी सुगति पमाय छे;
तन मन धन थकी गुरु बहुमान करे,
धीनिधि सुशिष्य शिव पुरमांहि जाय छे. २

संयत सद्गुरु लक्षण.

मनहरछंद.

पञ्चव्रत धारनार द्वेष राग वारनार,
सुविहित परम्पर संयम स्वीकार छे;
पञ्चाचार पाळनार दोष वृन्द टाळनार,
जिनवाणी उपदेशे दोष हरनार छे.
चेतननुं ज्ञान करे चेतननुं ध्यान धरे,
चिदानन्द चेतनमां स्थिरता सुहाय छे;
आचार विचार अने उच्चारमां उत्तमज,
मुनिवर सद्गुरु सन्त तो गणाय छे. १

मुनिवरना उपदेशे वीर विश्वास छे,
महीतलमांहि मुनिवर सत्य सनाथजो. संघ. ॥ ६ ॥

पंच विपना उदये पचम काळमां,
असंयतिनी पूजानुं आश्चर्य जो;
दीक्षा वण संयतनी पेठे पूजना,
लघुता पामे संयत सद्गुरुवर्यजो संघ ॥ ७ ॥

केटक श्रद्धा मुनिपरथी उठाडीने,
मनमा आवे तेवुं माने लोकजो,
पश्चिमनी केळवणी कुतर्के भर्यो,
नास्तिक थइने माने सघळुं फोकजो. संघ ॥ ८ ॥

मुनिवरनी श्रद्धाथी सत्यज सपजे,
मुनिवरनी भक्तिथी शाश्वत शर्मजो,
मुनिवरनी संगतथी नास्तिकता टळे
मुनिना वैयावृत्ये नासे कर्मजो. संघ. ॥ ९ ॥

मुनि करे ते व्रतने श्रावक शुं करे,
मुनिवर जंगम तीरथ गग समानजो,
मुनिनी सेवा शिवना मेवा जाणीए,
मुनि गुरुथी पामो शाश्वत स्थानजो सघ ॥ १० ॥

मुनिनिन्दा करवामा मोटु पाप छे,
करो नहि मुनिनिन्दा नरने नारजो,
दोषदृष्टिथी दोषज ज्या त्या भासशे,
गुणदृष्टिथी गुण भासे निर्धारजो सघ. ॥ ११ ॥

दोषे भरीओ जाणो आ संसार छे,
सर्व गुणी तो अरिहन्त छे देवजो,

कर्म संगथी जगमां को निर्दोष छे,
सत्य विचारी करशो मुनिवर सेवजो. संघ. ॥ १२ ॥
सन्त मुनिवर जगमां तरवा तीर्थ छे,
सन्त मुनिवर सेव्याथी सुख थायजो;
मुनिवर भक्ति साची शक्ति अर्पती,
मुनिवरना बहुमाने धर्म सहायजो. संघ. ॥ १३ ॥
सर्व गुणोमां श्रावकथी अधिका मुनि;
अधिक गुणिनुं करवुं जग बहु मानजो;
मुनिवर देखी वन्दन करतां भावथी,
सद्गुरु मुनिवर शासनना सुलतानजो. संघ. ॥ १४ ॥
पापोदयथी मुनि अरुचि संपजे,
पुण्योदयथी मुनिपर होवे प्रेमजो,
तरतमयोगे मुनिवर साधो साधना,
सद्गुरुमुनिनी श्रद्धाथी गुणक्षेमजो. संघ. ॥ १५ ॥
मुनि विना तो श्रावक होवे नहि कदी,
मुनि विना व्यवहार समकित भ्रंशजो;
प्रत्यक्ष मुनि वण समकिती नहि श्रावको,
व्यवहारोत्थापनथी शासनध्वंसजो. संघ. ॥ १६ ॥
मुनिनी पासे व्रत उच्चरवां भाखियां,
मुनिनी पासे करवुं प्रत्याख्यानजो;
सूत्रोमां भाख्युं छे सत्य विचारीने;
मुनि गुरुनुं करवुं बहु सन्मानजो. संघ. ॥ १७ ॥
कोइ कहे छे आज कालना साधुओ,
पाळे नहि साधुना पंचाचारजो;
जुठा सर्वे बोले ते अज्ञानथी,

अज्ञानिनो भूंडो छे अवतारजो. संघ ॥ १८ ॥
आज काल पण मुनिवर बहु विद्वान् छे,
यथाशक्तिथी पाळे पंचाचारजो,
जिनवाणीनो राग घणो छे दीलमां,
संयमना साधनमा साचो प्यारजो संघ ॥ १९ ॥
मुनि विना नहि श्रावक देखो सूत्रमा,
पुष्टालंबन सद्गुरु मुनि निर्धारजो;
गुरु विना नहि ज्ञान कदापि पामीए,
मुनि गुरुनो साचो जग आधारजो संघ ॥ २० ॥
जगमा मोटो मुनिवरनो उपकार छे,
मुनिदर्शनथी कर्म कलंक कटायजो,
प्रत्यक्ष उपकारी मुनिवरने वंदीए,
जन्म जरानां दु खडा दूरे जायजो संघ. ॥ २१ ॥
दुनियामां उपकारो सर्वे बहु कह्या,
सहुथी मोटो सदुपदेश उपकारजो,
सदुपदेशे सत्यासत्य जणावता,
धन्य धन्य मुनिवरनो जग अवतारजो संघ. ॥ २२ ॥
साधु वेषे एक समयमा सिद्धता,
अष्टोतर शत मुनिवर गुणना पात्रजो;
पन्नवणा ने भगवतीमाहि भाखियु,
करवी साची सुखकर संयम यात्रजो. संघ ॥ २३ ॥
ज्ञानी ध्यानी आत्मार्थी मुनिवर्ग छे,
मात पिता बंधुथी अधिका लेखजो,
दर्शन दुर्लभ मुनिवरना कलिकाळमा,
जैन धर्मना नायक मुनिवर देखजो संघ ॥ २४ ॥

सर्व कालमां मुनिवर धर्म धुरंधरा,
जैन धर्म पण मुनि गुरुना हाथजो;
सूरिवाचक रत्नादिक संयत श्रेष्ट छे,
वन्दु मुनिवर त्रण भुवनना नाथजो. संघ. ॥ २५ ॥

मुनिना उदये जैनधर्मनी उन्नति;
श्रावकथी मोटा छे मुनि कृपाळजो,
जीवदया प्रतिपालक मुनिवर वंद्य छे;
जेणे त्यागी दुःखदायि झंझाळजो. संघ. ॥ २६ ॥

मुनिपर आळ चढावे ते महा पातकी;
मुनिनिन्दाकर्त्ता चोथो चंडालजो,
श्रावक सेवक स्वामी साधु जाणीए;
सदुपदेशे छोडो बाळक चालजो. संघ. ॥ २७ ॥

धर्मोद्धारक धर्मगुरुने वन्दतां;
मान टळे ने लघुता गुण प्रगटायजो,
विधिपूर्वक मुनिवरने वन्दो भावथी;
जन्म जरा आधि व्याधि दूर जायजो. संघ. ॥ २८ ॥

वैरागी त्यागी सौभागी सद्गुणी;
मुनिवर दीठे होवे मंगल मालजो,
मुनिदर्शनथी धर्मलाभ झट संपजे;
भव्य जीवने मुनिवर दीठे व्हालजो. संघ. ॥ २९ ॥

धन्य देश कूळ गाम मुनि अवतार छे;
धन्य धन्य ज्यां मुनिवर करे विहारजो,
बुद्धिसागर सद्गुरु मुनिवर वन्दतां;
उतरे प्राणी भवसागरनी पारजो. संघ. ॥ ३० ॥

वचनामृत.

भुजगीछन्द

सदा संपथी चालवु शीख धारी,
तजोने कढंगी कुटेवो नठारी,
वदोने विचारी सदा बोल साचा,
सदा शोभती सत्यथी भव्य वाचा ॥ १ ॥
लडो ना कदा कोइनी साथ क्रोधे,
सदा विश्व शोभो रुडा दील बोधे,
दया दील लावी जनोने सुधारो,
भली हितशिक्षा थकी लोक तारो. ॥ २ ॥
सदा पारकी नारने मात देखो,
सदा पारका वित्तने धूळ लेखो;
तजो दुर्मति दुःख देनार भारी,
सजो सन्मति शर्म देनार सारी. ॥ ३ ॥
दया दान कृत्यो मुदा दील धारो,
तजी दोषदृष्टि लहो धर्म सारो
भला भावथी सेविये सत्यदेवा,
प्रभु भक्ति छे सत्य आनंदमेवा. ॥ ४ ॥
विचारी करो कृत्य जे होय सारा,
विचारी तजो कृत्य जे छे नठारा,
विचारी सुधारी धरो धर्मधारा;
सदा धर्मथी सर्व सारा थनारा ॥ ५ ॥
स्वधर्मि जनोने सदा सहाय आपो,
अदेखाइथी कीजिए ना वळापो;

सदा मानिए बाळनी हित वाणी,
भलानुं भलुं कीजिए सत्य जाणी. ॥ ६ ॥
कदी ना वदो पारका दोष प्राणी,
कदी ना वदो मर्मनी वात छानी;
पिता मातने पाय लागो सवारे,
विनेयो मुदा हितशिक्षा विचारे. ॥ ७ ॥
सदा आत्मनी उन्नति दील धारो;
थता रागने द्वेषने दूर वारो;
कहे धीनिधि धर्म छे दील प्यारो,
खरा धर्मथी आवशे दुःखआरो. ॥ ८ ॥

वचनामृत.

भुजंगी छन्दः

अहो भव्य लोको कहुं शीख सारी,
बहु मानथी धारजो दील प्यारी;
भजो सन्तने पापना वृन्द टाळे,
भजो ब्रह्मने ध्यानथी सर्व काळे. ॥ १ ॥
तजो ज्ञानथी जूठना जे विचारो,
सजो ज्ञानथी शुद्ध आचार सारो;
सदा वीरना वाक्यमां चित्त धारो,
मुदा दीलमां तत्त्व सारां उतारो. ॥ २ ॥
लघुता भजीने तजो मान खोटो,
मृदुता सजीने भजो धर्म मोटो;
असत्संगनी टेव त्यागो नठारी,
भजो सन्तने दुर्मतिने निवारी. ॥ ३ ॥

तजो ना कदी धर्मने टेक राखी,
ग्रहोने व्रतो सद्गुरु सत्य साखी;
भली राखिये मित्रता सर्व साथे,
मुनिने सदा दीजिए दान हाथे. ॥ ४ ॥
दया धर्मने सेविये रहेम राखी,
प्रभुए मुखेथी दया सत्य भाखी;
दयाथी महा पापना वृन्द नासे,
दयाथी खरी शांतता दील भासे. ॥ ५ ॥
दयाथी अहो देवता स्हाय आपे,
दयाथी सदा दीलमां सुख व्यापे;
दयाथी सदा देवता हस्त जोडे,
दया देवता मानिना मान मोडे. ॥ ६ ॥
वदो सत्यवाणी सदा हित आणी,
प्रभु सत्यवाणी महीमां प्रमाणी;
सदा सत्यथी पामिये सत्य शान्ति,
सदा सत्यथी टाळिये दुःख भ्रान्ति ॥ ७ ॥
सदा सत्यमां राचवुं टेक धारी,
सदा सत्यमां वर्तवु मोह वारी;
भजो सत्यने दुःखने शोक वारे,
भजो सत्यने जीवने शिघ्र तारे. ॥ ८ ॥
प्रभु भक्तिमां प्रेमथी नित्य राचो,
प्रभु भक्तिमा प्रेमथी भव्य माचो;
गुरु भक्तिमां शक्ति सर्व समाती,
गुरु भक्तिथी रुद्धि सर्व पमाती ॥ ९ ॥
गुरु भक्तिमा प्रेम छे भव्य भारी,

गुरु भक्तिथी टेव नासे नठारी;
कहे धीनिधि सद्गुरु सुखकारी,
करो सेवना प्रेमथी भव्य सारी. ॥ १० ॥

बालकोने हित शिक्षा.

॥ वचनामृत. ॥

भुजंगी छन्द.

पिता मातने बालको पाय लागो, प्रभाते प्रतिदीन व्हेलाज जागो;
भणोने गणो तत्त्व विद्या वधारो, कुटेवो पडे तेहने दूर वारो. ॥१॥
अदेखाइथी क्लेश कूडो निवारो, रडेने रुवे पुत्र तेतो नठारो;
कदी गाळ बोलो नहीं रे नठारी, सदा वाक्यने बोलीए सुखकारी. २
कदी ना रीसावुं थतो क्रोध वारी, पिता मात शिक्षा थकी सुख भारी;
सदा सत्य वाणी वदो धर्म धारी, वहु थाय छे चोरीथी तो खुवारी. ३
महा पाप चोरी करे तेह पावे, लहे बन्ध मृत्यु निगोदे सिधावे;
करे चोरीनुं काम तेतो नठारो, ठरे ना कदा एक ठामे विचारो. ४
दिले जाणजो चोरीनुं पाप मोटुं, करे चोरी तेनुं थशे भाइ खोटुं;
भणो भावथी शिक्षको पास विद्या, तजो ज्ञानथी जेह लागे अविद्या. ५
सदा साधुने वंदीए प्रेम लावी, गुरु सत्य देशे सुविद्यानी चावी;
गुरुना कह्या कार्यने भव्य कीजे, भलामां सदा अन्यना चित्त दीजे. ६
गुरु ज्ञानथी मोह माया टळे छे, गुरु ज्ञानथी मुक्ति स्हेजे मळे छे;
गुरु ज्ञानथी गर्व नावेज पासे, गुरु ज्ञानथी सत्य ज्यां त्यां प्रकाशे. ७
सदा उन्नति धर्मथी तो थनारी, सदा धर्मथी दोष श्रेणी जनारी;
दया धर्ममां बालको चित्त राखो, दया धर्मथी मुक्तिनां सुख चाखो. ८

सहु माथमां प्रेमथी नित्य रहेवुं, भलुं वेण वाचा थकी भव्य कहेवुं,
करो कार्य सारा नठारां तजीने, लहो सत्य शान्ति प्रभुने भजीने ९
धरी धैर्यने कीजीए धर्मसेवा, धरी भक्तिने पूजीए इष्टदेवा;
कहे धीनिधि सन्नीति धर्म सारो, भला बाळको वात ए तो विचारो. १०

सुधारा.

भुजंगी छन्द

अहो भव्य लोको विचारो सुधारा,
तजो दुःखदायी नठारा कुधारा
विदेशी दवाथी थयो भ्रष्टवेडो,
मुता सर्पने जाणिने जेम छेडयो ॥ १ ॥
विदेशी दवाथी भलुं ना थनारूं,
अवधौषधे धर्म सर्वे जनारुं,
तजोने विदेशी तणा कूट चाळा,
विदेशी वन्याथी कदी ना रुपाळा ॥ २ ॥
गरो वस्त्र देशी स्वदेशीय वेषे,
स्वदेशी वन्याथी रहे त्रित्त देशे,
बणी ने ठणी फोक फूलो न लोको,
विना धर्मथी वागशे दुःखगोको ॥ ३ ॥
करीने कुतर्को अरे जन्म हारो,
धरो धर्म वीरे कह्यो सत्य सारो,
कुसंगी कुढंगी तणां वेण काचां,
जिनेन्द्रे कह्या तत्त्व छे भव्य साचा ॥ ४ ॥
विदेशी जनोनी तजो टापटीपो,

रुपाने तजीने ग्रहे कोण छीपो;
स्वधर्मिजनोने वडी स्हाय आपो,
कुसंपो तणां मूळने शिघ्र कापो. ॥ ५ ॥
लडो ना कदी साधुनी साथ द्वेषे,
वहो ना कदा आयु ने वैर क्लेशे;
सुधारा मिषे ना करोरे कुधारा,
तजे धर्मने वेष ते ना सुधारा. ॥ ६ ॥
महा वीरनां वाक्य सूत्रानुसारे,
दीले सद्दहे आतमा तेज तारे;
कलिकालना दोषथी धर्मभ्रष्टो,
लहे दुर्गतिमां वहु दुःख कष्टो. ॥ ७ ॥
कुविद्या हवाथी सुविद्या टळे छे,
सुविद्या थकी मोह माया गळे छे;
सुश्रद्धाथकी कर्मनो अन्त आवे,
सुश्रद्धाथकी वीरनां वाक्य भावे. ॥ ८ ॥
कदी ना करो धर्ममां व्हेम खोटो,
जिनेन्द्रे कह्यो धर्म छे सत्य मोटो;
खरी टेकथी धर्मने दील धारो,
अदेखाइ निन्दा अने झेर वारो. ॥ ९ ॥
भणो भावथी धर्मग्रन्थो विचारी,
गुरुज्ञानथी सन्मति तो थनारी,
कहे धीनिधि सत्य ए छे सुधारा,
विवेके विचारो भलुं धारनारा. ॥ १० ॥

ॐ नमः

राग मराठी साखी.

श्री संखेश्वर पार्श्वजिनेश्वर, जिनशासन जयकारी,
धरणेन्द्र पद्मावती देवी, स्हाय करो निर्धारी;
जिनभक्तिमां प्रेम करो नरनारी, भक्ति दुःख हरनारी. जिन १
भक्तिथी जिनपद्वी मळे छे, भक्ति सुख करनारी;
प्रभुभक्ति सहु कर्म हरे छे, कुमति कलंक निवारी जिन २
अष्टापदपर रावण आव्यो, भक्ति करी बहु भारी,
नाटकथी तीर्थंकर पदने, पाम्यो जग उपकारी. जिन. ३
भगवतीसूत्रे जिनवरभक्ति, भाखी छे गुणकारी,
प्रेमावेशे भक्ति करे तस, जाउ हुं बलिहारी. जिन. ४
भक्ति करता केवल प्रगटे, भक्ति सद्गुण क्यारी,
भक्तिरसमा सुख अनंतुं, भक्ति शिवपुरबारी. जिन ५
दोष निवारी सद्गुण धारी, माया फंद निसारी,
जिनवर भक्तिमां जीव भळतां, शिवपुरनी तैयारी जिन ६
पञ्चमकाळे भक्ति मोटी, भक्ति मनमा प्यारी,
बुद्धिसागर भक्ति सारी, आनद मगलकारी जिन. ७

ॐ नमः

आत्मज्ञान.

मनहरछन्द.

चेतनना ज्ञानविना चेतनना ध्यान विना,
चेतनना भानविना चतुर चुकाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी निजनो प्रकाश थाय.

चेतनना ज्ञानथकी संयम सुहाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी माया मोह दूर जाय;
चेतनना ज्ञानथकी आनन्द लहाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी टळे मान मळे सान;
चेतनना ज्ञानविना भवमां भमाय छे. १
चेतनना ज्ञानथकी संयम सफल थाय;
चेतनना ज्ञानथकी प्रतीति पमाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी आनन्द अपार होय.
चेतनना ज्ञानथकी भ्रमणा भूलाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी उपाधि अलग जाय;
चेतनना ज्ञानथकी जिन तो जणाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी तप जप सफलता;
धीनिधि चेतनज्ञान उत्तम गणाय छे. २

श्री पार्श्वनाथस्तवन.

सवैया एकतीसा.

पार्श्व जिनेश्वर मंगलकारी, वन्दन होजो वारंवार;
तव सेवन पूजा भक्तिथी, पामे प्राणी भवनो पार.
अलख निरंजन निर्भयदेशी, मंगलमालाना करनार;
जिनपडिमा जिन सरखी भाखी, भक्तिथी आवे भवपार. ॥ १ ॥
भगवती रायपसेणी सूत्रे, जिनपडिमा वन्दनना पाठ;
जिनपडिमा पूजाथी संवर, समजी टाली मूको ठाठ.
समवसरणमां जिनवर जेवी; जिनपडिमा वर्ते जयकार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां प्राणी पामे भवनो पार. ॥ २ ॥
धनने माटे कागळ नोटो, काढे छे जेवी सरकार;

नोटोमा रुपैया साचा, जोशो आ जगनो व्यवहार.
जिनपडिमा पण तेवी रीते, जिन सरखी भाखी सुखकार,
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥
समवसरणमां जिनवर वन्दे, फळ पामे जे प्राणी सार,
तेवुं फळ पडिमा वन्दनथी, समजो मनमा नर ने नार.
कळिकाल्मां जिन पडिमानो, साचो मोटो छे आधार,
वन्दन पूजन भक्ति करता, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ४ ॥
सर्पबुद्धिथी दोरी हणतां, पंचेन्द्रिय हत्यानुं पाप;
मन परिणामे फल ए जाणो, एवी जिन वचनोनी छाप
द्रौपतीए जिनपडिमा पूजी, धन्य धन्य श्रावक अवतार;
वन्दन पूजन भक्ति करता, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ५ ॥
सूत्रोना अक्षर छे जेवा, तेवी मूर्ति छे निर्धार,
अक्षर पडिमा बे छे सरखां, स्थापन निक्षेपो जयकार
अरिहन्तना नामे मुक्ति, स्थापनथी पण तेवी धार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार ॥ ६ ॥
आगमने युक्तिथी साचो, जिनपडिमा वन्दन आचार,
शाश्वत जिनपडिमाना पाठो, सूत्रोमां वर्ते हितकार.
जिनपडिमानुं स्थापन करवु, उत्सव तेनो छे गुणकार;
वन्दन पूजन भक्ति करता, प्राणी पामे भवनो पार ॥ ७ ॥
जिनपडिमाथी जिननी यादी, जिननी यादी गुणनु मूळ;
जिननी सेवा मीठा मेवा, भक्तिथी भागे छे भूल.
बुद्धिसागर सापेक्षाथी समजी निश्चय ने व्यवहार;
वन्दन पूजन भक्ति करता, प्राणी पामे भवनो पार ॥ ८ ॥

श्री पार्श्वनाथस्तुतिः

रुचिरा छंदः

पार्श्व जिनेश्वर वामानंदन, शरण सत्य त्हारुं मन करुं,
प्राणपति तुं भवभय भंजन, अवलंबन त्हारुं छे खरुं;
तव नामे भय सघळां नासे, मंगलमाला थाय खरी,
रुद्धि सिद्धि घटमां प्रगटे, वंदु प्रेमे भाव धरी. ॥ १ ॥
जग उपकारी शिवसुखकारी, वंदे पूजे धन्यघडी,
दुःखना वारक तारक साचा, वंदन आव्यो एक हडी;
अज अविनाशी शिवपुरवासी, शर्म विलासी देव खरा,
यति तति पतिनुं पूजन साचुं, ध्याने नासे जन्म जरा. ॥ २ ॥
स्हाय करो सेवकने व्हाला, तुज सेवार्थी बाल तरे,
हृदयकमळमां समरू स्वामी, बाळक ताहरो कर गरे;
दयानिधि हे दया करीने, तारो सेवक टळवळतो,
राग दोष दावानळ जोरे, चतुर्गतिमां हुं बळतो. ॥ ३ ॥
शरणागतवत्सल तुं साचो, तव भक्तिमां भाव भळे,
तव भक्तिथी शक्ति प्रगटे, रागादि दोषो सहु टळे;
बाळ बाळ हुं तारो व्हाला, मीठी सेवा दील खरे,
अनुभवरसमां रंगाईने, सेवक सिद्धि सत्यवरे. ॥ ४ ॥
सिद्ध सनातन सत्य सुखंकर, पाये लागुं लळीलळी,
तव दर्शनथी समकित श्रद्धा, सुखनी आशा सर्व फळी;
तव गुण ध्यातां सुखडां प्रगटे, कुमति काळां कर्म टळे,
बुद्धिसागर सेवन पूजन, करतां मुक्ति स्हेज मळे. ॥ ५ ॥

श्री वीरप्रभुस्तुतिः

भुजगी छन्द.

नमो वीर विश्वेश देवाधिदेवा;
सदा ताहरी शीखमां शर्म मेवा,
प्रभु पादपद्मे रहुं भृंगरूपे;
प्रभु रूपने हुं चहुं छु उमंगे ॥ १ ॥
प्रभु तुहि साचो मुदा पाय लागुं,
मुदा ताहरा ध्यानमां नित्य जागुं,
हॅण्या रागने द्वेष ज्ञानेज भारी,
अहो शक्ति भारी स्वभावेज त्हारी ॥ २ ॥
जगज्जंतुने तारिया देशनाथी,
गॅण्यो भेदना तें प्रभुरे कशाथी,
अहो ताहरा ज्ञानमा सर्व भासे,
अहो ताहरा ध्यानमा चित्त वासे ॥ ३ ॥
दिले वीरनी भक्ति लागीज साची,
रहुं वीरनी भक्तिमां नित्य राची,
प्रभु भक्तिथी शक्ति सर्वे पमाती,
प्रभु भक्तिथी द्वेषनी जाय काती. ॥ ४ ॥
प्रभु भक्तिथी दु:खना वृन्द जावे,
प्रभु भक्तिथी सत्य आनंद थावे,
प्रभु ज्ञानथी भक्तिमां भाव सारो,
प्रभु ज्ञान भक्तियकी दु ख आरो ॥ ५ ॥
जिने भाखियु तत्त्व चैतन्य सारुं,
सदा शुद्ध चैतन्य छे तेज मारुं,
चिदानन्दरूपे प्रभु तु सुहायो,

लही ताहरो बोध आनंद पायो. ॥ ६ ॥
पिता मात ने भ्रात ने इष्ट देवा,
करूं ताहरी प्रेमथी नित्य सेवा,
कहे धीनिधि ध्येय ध्याने सुहायो,
प्रभु वीरथी वीर्य सन्भाव पायो. ॥ ७ ॥

श्री सद्गुरुस्तुतिः

भुजंगी छंद.

(गुरुने देखी वंदन करतां आ प्रमाणे स्तुति करवी.)

अहो सद्गुरु दुःखथी तें उगार्यो,
भवांभोधिथी सद्गुरु तेंज तार्यो;
नमुं हुं नमुं हुं नमुं हस्त जोडी,
लघुता सजी माननी टेव मोडी. ॥ १ ॥
भवांभोधिथी सत्य छो तारनारा,
महा दानना सत्य छो आपनारा;
कृपानाथ कोटी गमे कष्ट वारी,
लीधो नाथ तें दुःखथी तो उगारी. ॥ २ ॥
सदा एक आधार छे तुंहि मारे,
कृपानाथ तुं शिष्यनुं भव्य धारे;
अहो सद्गुरु देव तुं उपकारी,
नमुं नाथ देशो मुदा शीख सारी. ॥ ३ ॥

श्री सद्गुरुकृपामहिमा.

भुजंगी छन्दः

सुणो शिष्य सारा कहुं प्रेम लावी,
धरो भव्य शिक्षा सुख वृन्द चावी;

गुरुज्ञानने दीलमांही उतारो,
गुरु ज्ञानथी आवशे दुःखआरो ॥ १ ॥
गुरुभक्तिमां प्रेमथी चित्त जोडो,
विवेके बहु दुर्गुणोने उखेडो;
गुरुदर्शने दुःख सर्वे टळे छे,
गुरुवंदने भाग्य वेळा वळे छे ॥ २ ॥
गुरुनी दयाथी टळे कष्ट कोडी,
रहे अष्टसिद्धि सदा हस्त जोडी;
गुरुनी कृपाथी मही मान पामे,
गुरुनी कृपाथी ठरे एक ठामे. ॥ ३ ॥
विनेयो विचारी ग्रहो सत्य साचुं,
ग्रहो ना कदा दुःखदायीज काचुं;
भलामां सदा राखशो र्हेम द्दष्टि,
सदा जागशे र्हेमथी आत्मसृष्टि ॥ ४ ॥
प्रमादे न पापो करो भव्य प्यारा,
प्रमादे न सारा कदी तो थनारा;
गुरुपाद सेव्या थकी ज्ञान थाशे,
गुरुज्ञानथी राग ने द्वेष जाशे. ॥ ५ ॥
कुतर्को तजीने गुरुने भजीने,
लहो सिद्धना शर्म शान्ता सजीने,
गुरुवाक्यमां शिष्यने शर्म साचुं,
गुरुनी कृपावीण छे सर्व काचुं. ॥ ६ ॥
सजी सद्गुणोने रहो नित्य राची,
कही शीख ते मानजो दील माची;
अहो धीनिधि सद्गुरु तारनारा,
विचारी विनेयो ग्रहो दील प्यारा. ॥ ७ ॥

देवसेवा.

भुजंगी छन्दः

बाने चित्तडुं निर्मळुं धर्मवाळुं,
टळे मोह वासीत जे चित्त काळुं;
ग्रहेथी मळे दीलमां शर्म मेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ १ ॥

सदा राग ने द्वेष विहीन देवा,
करो सिद्ध सर्वज्ञनी सत्य सेवा;
भजे जेहने सर्व नासे कुटेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ २ ॥

सदा ज्ञानथी सत्यनो जेह वादी,
कह्यां तत्त्व साचां सदा जे अनादि
अहो वीर सर्वज्ञ छे देव तेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ ३ ॥

नहीं शस्त्र हस्ते नहीं संग रामा,
कहे धीनिधि वीत छे लोभ कामा;
अहो जेहमां केवलज्ञान दीवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ ४ ॥

आतमाने उपदेश.

भुजंगी छंद.

अरे आतमा चित्तमां जो विचारी,
धरी जन्मने दुर्मति शुं वधारी,
प्रभुए कह्यो धर्म चित्ते न धार्यो,
प्रमादी अरे काळ तें फोक हार्यो. ॥ १ ॥

अहंभावमां मस्त ज्यां त्यां फरे छे,
कूडां कर्मने केम जाणी करे छे,
अरे मोहना तोरमां केम माच्यो,
रुपाळा रमारंगमा शीद राच्यो. ॥ २ ॥
अरे ठाठने माठमा सर्व खोयु,
विचारी कदी रुप तारु न जोयुं,
खरे मोहनी धूळथी मुख धोयुं,
अरे जीव तें पाणीने शुं वलोयुं. ॥ ३ ॥
कदी सन्तने दान दीधु न हाथे,
धरी ना कदी सद्गुरुआण माथे,
कर्यो धर्म ते आवशे एक साथे,
जिनेन्द्रे कह्युं ज्ञानथी वीरनाथे. ॥ ४ ॥
भॅण्यो ना गॅण्यो धर्मना तत्त्व सारा,
भॅण्यो ने गॅण्यो तत्त्व जे छे नठारा,
जिनेन्द्रे कहेलुं अरे तें विसार्युं,
फसी मोहमां आयुने फोक हार्युं ॥ ५ ॥
हवे चेती ले आतमा धर्म जाणी,
गुरु बोधथी जाणी ले जिनवाणी,
कहे बुद्धिअब्धि धर्मथी शर्म खाणो,
तृषावंतने इष्ट छे जेम पाणी. ॥ ६ ॥

हित वचनामृतम्.

भुजंगी छन्द

महीमा सदा अध छे मूढ भाणी,
महीमा सदा पूज्य छे सत्यवाणी;

महीमां सदा धैर्य धारीज मोटो,
विचार्या विना मानवी थाय छोटो. ॥ १ ॥

कुडा वाक्यमां क्लेश छे दुःखदायी,
भला कार्यमां शान्ति छे शर्मदायी;
अरे हास्यथी दुःख मोटुं थनारु,
महीमां सदा इष्ट छे वाक्य सारु. ॥ २ ॥

बुरी कामनाथी कयुं विष मोटुं,
असद्वाक्यथी कोण छे जाण खोटुं;
सदा मूर्खनी संगतें दुःखगोटा,
दयाना विना आवशे जीव तोटा. ॥ ३ ॥

गुरुवाक्यना लोपथी दुःख भारी,
नथी सन्मतिना विना सत्य यारी;
अरे क्रोधथी अग्नि छे कोण भूंडी,
बुरी कोण तृष्णाथकी अन्य लूंडी. ॥ ४ ॥

नथी शर्म संतोष जेवुं विचारो,
विवेके ग्रहो देहथी ब्रह्म न्यारो;
सहु तीर्थनुं तीर्थ छे आतमा रे,
विवेकी मुदा आतमानेज तारे. ॥ ५ ॥

कळामां कळा धर्मनी एक साची,
कळामां कळा कर्मनी सर्व काची;
कथामां कथा धर्मनी दुःख टाळे,
जुठी मोहनी टेवने जेह टाळे. ॥ ६ ॥

सहु वित्तथी ज्ञाननुं वित्त साचुं,
कुडां वेण बोले बुरु तास डाचुं;
करे साधना धर्मनी तेह साधु,

अहो ढोंगी लोके जगत् फोली खाधु. ॥ ७ ॥
खरुं ज्ञान ने भक्ति ते विश्व डाह्यो,
धैर्यो धर्म ते विश्वमांहि कमायो,
खरो भक्त के शूर दाता गवायो;
खरो शिष्य ते ज्ञानिनो भेद पायो. ॥ ८ ॥
खरी सद्गुरु सेवना दुर्लभा छे,
सहु ज्योतमां श्रेष्ठ ज्ञानप्रभा छे;
सदा उच्च ने पूज्य छे विश्वज्ञानी,
सदा नीच छे विश्वमां दुष्ट मानी ॥ ९ ॥
सहु मानवी वश्य छे नम्रताथी,
सदा सुख छे विश्वमा शांतताथी.
कहे धीनिधि ज्ञानथी मुक्ति पामे,
जीवो तो ठरे ज्ञानथी एक ठामे. ॥ १० ॥

मूर्ख संगति दुःखरूप छे.

भुजंगी छन्द

कदी ना करो संगति मूर्ख त्रूरी,
अहो संगति मूर्खनी दुःख छूरी;
सदा मूर्खनी संगमां दुःख छाया,
अहो मूर्खनी संगमा कोण डाह्या ॥ १ ॥
वने वास सारो कह्यो सत्य ग्रन्थे,
लही शीख सारी चलो शुद्ध पन्थे;
खरी वातमां मूर्खतो दाट वाळे,
लडे वातमा लातथी मूर्ख गाळे ॥ २ ॥
महा मूर्खनी वातमा सार काचो,

नथी मूर्खनी संगमां लाभ साचो;
पडे संकटे मूर्खनी संगवाळो,
सदा मूर्खनी संगने दूर टाळो. ॥ ३ ॥
यथा सर्पनो संग छे दुःखदायी,
तथा मूर्खना संगमां दुःख भाइ;
अहो मूर्खनुं मुख छे भाइ काळुं,
भलुं जाणवुं मूर्खना मुख ताळुं. ॥ ४ ॥
रहे मूर्खना संगमां दुःख कोटी;
करो ना कदी संगति मूर्ख खोटी;
अहो मूर्ख लोको भमाव्या भमे छे,
महाधूर्तने मूर्ख लोको नमे छे. ॥ ५ ॥
भलानुं बुरुं स्हेजमां ते करे छे,
जरा वारमां तो लडी ते मरे छे;
कदी वित्त कोडी मळे बुद्धि थोडी,
महा मूर्खनी कोण छे विश्व जोडी. ॥ ६ ॥
अहो मूर्खनुं व्हाल ते काळ जेवुं,
हॅण्यो वानरे रायने जाण एवुं;
थनारुं भलुं ना कदी मूर्ख संगे,
मुरंगी कुरंगीपणे छे कुरंगे. ॥ ७ ॥
सदा दुःखना पोटला मूर्ख साथे,
लहे दुःख अग्नि ग्रहे नीज हाथे;
मळे मान जो मूर्खना संग लीधे,
मळे विरा जो मूर्खनो संग कीधे. ॥ ८ ॥
तथापि न रीझो महा मूर्ख संगे,
वळे दीलने दुःख थाशेज अंगे;

कहे धीनिधि मूर्खनी संग वारो,
यदि शत्रु छे विज्ञ जाणोज सारो. ॥ ९ ॥

धर्म फल महिमा.

भुजंगी छंद

रुडा धर्मथी सर्व शांति थनारी,
रुडा धर्मथी सर्व भ्रान्ति जनारी,
रुडा धर्मथी कर्मनो अंत आवे,
रुडा धर्मथी स्वर्ग सिद्धि सुहावे ॥ १ ॥
रुडा धर्मथी विश्वमां उच्च थावे,
रुडा धर्मथी पापनो लेश नावे;
रुडा धर्मथी लोकमां मान मोटुं,
रुडा धर्मथी थाय ना कांइ खोटुं ॥ २ ॥
रुडा धर्मथी दुर्गति दूःख नासे,
रुडा धर्मथी ज्ञान साचुं प्रकाशे,
रुडा धर्मथी रागने द्वेष दूरे,
रुडा धर्मथी सन्मति दीलॅ स्फुरे. ॥ ३ ॥
रुडा धर्मथी संकटो दूर जावे,
रुडा धर्मथी देवता स्तोत्र गावे,
रुडा धर्मथी शत्रुओ मित्र होवे,
रुडा धर्मथी स्वर्गना शर्म जोवे. ॥ ४ ॥
रुडा धर्मथी होय ज्यां त्या रुपालुं,
रुडा धर्मथी दुःख तो जाय कालुं

रुडो धर्म तो कर्मनो क्लेश टाळे,
रुडो धर्म तो दुर्मति शिघ्र टाळे ॥ ५ ॥
रुडा धर्मथी होय सर्वत्र सिद्धि,
रुडा धर्मथी होय छे सर्व सिद्धि,
कहे धीनिधि धर्म छे विश्व सारो,
सदा भव्य लोको दीले धर्म धारो. ॥ ६ ॥

प्रभु स्तुति.

भुजंगी छंद.

अरे देवना देव आनंद दाता,
प्रभु तुं वडो मातने त्रात भ्राता;
सदा हस्त जोडी प्रभु हूं नमुं छुं,
प्रभु पादपद्मे सदा हुं रमुं छुं. ॥ १ ॥
धरी ध्याने दोषना वृन्द टाळ्या,
धरी ध्यानने कर्मना वर्ग खाळ्या.
धरी ध्यानने केवल ज्ञान लीधुं,
धरी ध्यानने ब्रह्मनुं दान दीधुं. ॥ २ ॥
धरी ध्यानने सिद्ध सौधे सुहाया,
धरी ध्यानने मुक्तिनां शर्म पाया;
चिदानन्दरूपे प्रभु तुं सुहायो,
महा योगि तुं चित्तमां नित्य आयो. ॥ ३ ॥
अरुपी असंख्य प्रदेशी प्रमाता,
प्रभु तुं सदा तत्त्वनुं दानदाता;
तव ध्यानथी ध्येयरूपे प्रभासे,

चिदानंदनी ल्हेरियो चित्त वांसे. ॥ ४ ॥
खरा इश देवेश दातार सेवा,
अमारे सदा मोक्षना एज मेवा,
प्रभुध्यानथी प्रेमनो भेद पायो,
प्रभुप्रेमथी सत्य आनंद आयो ॥ ५ ॥
सदा सेवना देव त्हारी भली छे,
प्रभुप्रेममां चित्तवृत्ति हळी छे,
प्रभुप्रेममा धीनिधि विरमुं छुं,
सदा हस्त जोडी प्रभु हुं नमुं छुं. ॥ ६ ॥

अन्तरप्रदेशध्वनिगान.

गझल

जगत्ने आंखथी देखु, जगत्ने ज्ञानथी लेखुं,
जगत्ने देखता शान्ति, जगत्ने देखता भ्रान्ति. ॥ १ ॥
जगत्ने देखता जोगी, जगत्ने देखता भोगी,
जगत् तो देखता साचुं, जगत्तो देखतां काचुं ॥ २ ॥
जगत्ना भाव छे खोटा, जगत्ना भाव छे मोटा
'जगत्मां प्रेमनी वीणा, जगत्ना भाव छे झीणा ॥ ३ ॥
जगत् छे दुःखनी छाया, जगत्मा कर्मथी काया,
जगत्ना खेल खेलाडुं, जगत्मा तत्वना लाडु. ॥ ४ ॥
जगत्मा मोहनी बाजी; जगत्मां मूढ छे राजी,
जगत्ना जोपमां टोपो, जगत्मा कोणने रोशो. ॥ ५ ॥
जगत्मां राग ने द्वेषो, जगत्मा प्रेम ने क्लेशो,
जगत्मां कोण छे मोटा, जगत्मा कोण छे छोटा ॥ ६ ॥

जगत्‌ने जाणता योगी, जगत्‌मां मूढ छे भोगी,
जगत्‌मां मोहथी मारु, जगत्‌मां मोहथी तारु. ॥ ७ ॥

जगत्‌मां धर्म छे साचो, जगत्‌मां मोह छे काचो,
जगत्‌मां मोहथी फेरा, जगत्‌मां मोह अन्धेरा. ॥ ८ ॥

जगत्‌मां मूर्ख छे मेला, जगत्‌मां मूढ छे घेला,
जगत्‌मां ज्ञान ने गांडा, जगत्‌मां धर्मि ने वांडा. ॥ ९ ॥

जगत्‌ना प्रेममां फांसी, जगत्‌ना प्रेममां हांसी,
जगत्‌ना क्लेशथी काळु, जगत्‌ने ज्ञानथी भाळु. ॥ १० ॥

जगत्‌मां झेरना प्याला, जगत्‌मां उंघता वाला.
जगत्‌मां जागता सुखी, जगत्‌मां उंघता दुःखी, ॥ ११ ॥

जगत्‌मां प्रेमना मेळा, जगत्‌मां पुण्यनी वेळा,
जगत्‌मां सत्यना तोटा, जगत्‌मां मोहना गोटा. ॥ १२ ॥

जगत्‌मां धर्मना ग्रंथो, जगत्‌मां मोक्षना पंथो,
जगत्‌मां बंध ने मुक्ति, जगत्‌मां ज्ञानथी युक्ति. ॥ १३ ॥

जगत्‌मां भूख छे भूंडी, जगत्‌मां आश छे लूंडी,
जगत्‌ना भर्म भूंडा छे, जगत्‌ना भर्म कूडा छे. ॥ १४ ॥

जगत्‌मां सन्तनी सेवा, जगत्‌मां सत्य छे देवा,
जगत्‌मां भर्म छे छानो, जगत्‌मां भर्म छे मानो. ॥ १५ ॥

जगत्‌मां पुण्य ने पापो, जगत्‌मां धर्मनी छापो,
जगत्‌ने जाणवु न्यारु, जगत्‌ने जाणवुं प्यारु. ॥ १६ ॥

जगत्‌मां साच छे सारु, जगत्‌मां भर्म अंधारु,
जगत्‌मां आत्म छे दीवो, जगत्‌मां ज्ञानथी जीवो. ॥ १७ ॥

जगत्‌मां रंक ने राजा, जगत्‌मां पीर ने ख्वाजा,
जगत्‌ने जाणतां प्यारु, जगत्‌ने जाणतां खारु. ॥ १८ ॥

जगत्‌मां ज्ञानथी रहेवुं, जगत्‌मां दुःख सहु सहेवुं,

जगनत्मां छुं जगत्मा नहीं, अपेक्षा ज्ञानमा ए रही ॥१९॥
जगत्मा जीववु ज्ञाने, जगत्मा जागवुं भाने,
बुद्ध्यब्धि ज्ञानथी बोले, नहि को ज्ञाननी तोले. ॥ २० ॥

प्रभुप्रेमखुमारीना उद्गार.

गजल

समजजो प्रेमथी भक्ति, समजजो प्रेमथी शक्ति,
समजजो प्रेमथी सेवा, समजजो प्रेमथी मेवा ॥ १ ॥
प्रभुना प्रेमथी शान्ति, प्रभुना प्रेमथी कान्ति;
प्रभुमा प्रेम तो करशु, प्रभुना प्रेमथी तरशु ॥ २ ॥
प्रभुने प्रेमथी मळवु, प्रभुमां प्रेमथी हळवुं,
प्रभुना प्रेमथी जोगी, प्रभुमा प्रेमथी भोगी ॥ ३ ॥
प्रभुमा प्रेमथी राचु, प्रभुमा प्रेमथी साचु;
प्रभुमा प्रेम जो जागे, तदातो दोष सहु भागे ॥ ४ ॥
प्रभुमा प्रेमथी सुखो, प्रभुमा प्रेम वण दुःखो;
प्रभुने जाणता प्रेमी, प्रभुने जाणता क्षेमी ॥ ५ ॥
प्रभुमा प्रेमथी रमवु, प्रभुमा प्रेमथी भमवुं,
प्रभुने पूजीए प्रेमे, प्रभुने पूजीए नेमे ॥ ६ ॥
प्रभुमा प्रेमथी सिद्धि, प्रभुमां प्रेमथी ऋद्धि;
प्रभु छे सर्व तीर्थेशो, पूजनथी जाय छे क्लेशो ॥ ७ ॥
प्रभु आ आतमा साचो, सदा त्या प्रेमथी राचो,
प्रभुनी सत्य छे यारी, समज तु दीलमा धारी ॥ ८ ॥
प्रभु सम सर्वने भाळु, तदा छे दील अजवाळुं,
प्रभु सम सर्वने जाणु, दिले जव संग्रहनय आणु. ॥ ९ ॥

जगतमां प्रेम छे खोटो, प्रभुमां प्रेम छे मोटो;
बुद्ध्यब्धि प्रेम परखी ले, हृदयमां भव्य हरखी ले. ॥ १० ॥

सामान्य हितबोध.

गजल.

विचारी वातने बोलो, विवेके सत्यने तोलो;
लघुता दिलमां धारो, अहंता दीलथी वारो. ॥ १ ॥
गुरुगम ज्ञानने लीजे, भलामां दीलड्ड दीजे;
गुरुमां प्रेमथी भक्ति, गुरुनी भक्तिथी शक्ति. ॥ २ ॥
गुरुना वाक्यने पाळो, थता दोषो सहु टाळो;
कपटना फन्दने त्यागो, सदानिज आत्ममां जागो. ॥ ३ ॥
गणो सरखा सहु जीवो, करोने ज्ञान घट दीवो;
दया दाने बनो सारा, प्रभु प्रेमे बनो प्यारा. ॥ ४ ॥
बुरामां चित्त ना देवुं, सदा सुख शान्तिमां रहेवुं;
उपाधिथी रही न्यारा, भजोने ब्रह्मने प्यारा. ॥ ५ ॥
सदानंदे जीवन गाळो, चेतनना ध्यानमां म्हालो;
प्रभुनी भक्तिमां रीझो, कटु वेणे नहीं खीजो. ॥ ६ ॥
करो संगत शूरानी, तजो संगत अधुरानी;
अहो ज्ञानी सदा शुरो, अहो पापी सदा बूरो. ॥ ७ ॥
सदा तत्त्वे रहो राची, गणी माया महा काची;
करुणा जीवपर करवी, समाधि शान्तता वरवी. ॥ ८ ॥
कदापि क्लेश ना करवो, कदापि क्रोध ना धरवो;
बुद्ध्यब्धि तत्त्वमां मेवा, अमारे ज्ञाननी सेवा. ॥ ९ ॥

देहस्थआत्मानी परमात्मावस्थानुं भान.

गजल.

अहो आ देहमां देखो, चेतनजी ज्ञान धन पेखो,
अरूपी तत्त्व छे पोते, अरे तु बाह्य क्या गोते. ॥ १ ॥
अनंति शक्तिनो स्वामी, निःसंगी शुद्ध निष्कामी,
सहु देखे सहु जाणे, अनंता सुख दील माणे. ॥ २ ॥
परमब्रह्म स्वयं शुद्ध, परमयोगी परम बुद्ध,
परमध्याता परमध्येय, परम ज्ञाता परम ज्ञेय. ॥ ३ ॥
परमयोगी परमभोगी, विगतशोकी विगतरोगी,
अखंडानंद अविनाशी, परम पद शुद्ध विश्वासी. ॥ ४ ॥
परमभ्राता परम त्राता, परम नेता परम दाता,
परानो पार जे पावे, योगीश्वर चित्तमा ध्यावे. ॥ ५ ॥
प्रकाशे सर्वने तेजे, रमे जे ब्रह्ममा स्हेजे,
अनित्य नित्य छे हीरो, रमे छे ध्यानमा धीरो. ॥ ६ ॥
प्रकाशे पिंडमा पोते, अनंती ज्ञाननी ज्योते;
बुद्धयब्धि ध्यान पोतानु, करीने देखीए भानु ॥ ७ ॥

समय शिक्षाना उद्गार.

गझल.

जगत्‌ने स्हेमथी देखो, जगत्‌ने प्रेमथी पेखो;
जगत्मा देखवा ग्रन्थो, जगत्मा धर्मना पन्थो ॥ १ ॥
जगत्मा जाणवु सारु, जगत्मा त्यागवु खारु;
जगत्मां सत्य शोधी ले, जगत्मा सत्य बोधी ले ॥ २ ॥
जगत्मां दान देवानु, जगत्मा ज्ञान लेवानुं,
जगत्मा सत्यनु बारु, जगत्मा मोह अंधार ॥ ३ ॥

जगत्मां जागवुं जोगे, जगत्मां भूलवुं भोगे;
जगत्मां मोहनी झाडी, जगत्मां धर्मनी वाडी. ॥ ४ ॥
जगत्मां सत्य परखातुं, जगत्थी दील हरखातुं;
जगत् जंजालथी दूरे, बुद्ध्यब्धि देव सुख पूरे. ॥ ५ ॥

वखतना विचित्र रंग.

गझल.

कोइ दिन ताढ ने तडको, कोइ दीन भुखनो भडको;
कोइ दिन लक्ष्मीनी ल्हेरो, कोइ दिन रंकनो च्हेरो. ॥ १ ॥
अमीरी कोइ दिन आवे, फकीरी कोइ दिन थावे;
कोइ दिन हस्त जन जोडे, कोइ दिन मान जन मोडे. ॥ २ ॥
कोइ दिन गाममां फेरा, कोइ दिन जंगले डेरा;
कोइ दिन पुण्यनी यारी, कोइ दिन दुःखनी क्यारी. ॥ ३ ॥
अवस्था सर्व नहि सरखी, हरख जो धर्मने परखी;
बुद्ध्यब्धि धर्मनी सेवा, हमारे शुद्ध ए मेवा. ॥ ४ ॥

क्लेशविटंबना.

गझल.

सदा छे दुःख कंकासे, रहे नहि प्रेम तो पासे;
सदा छे क्लेशमां काळुं, वसे छे दील अंधारुं. ॥ १ ॥
नहि को क्लेशथी सुखी, सहु छे क्लेशथी दुःखी;
वसे छे क्लेशमां कुमति, खसे छे क्लेशथी सुमति. ॥ २ ॥
भले अग्नि धरो हाथे, भले सर्पो धरो माथे;
परंतु क्लेश ना करवो, सदा तो संप अनुसरवो. ॥ ३ ॥

जगत्मां क्लेशथी वैरी, जगत्मा क्लेश छे झेरी,
जगत्मां क्लेश करनारो, सदा ते दुःख धरनारो ॥ ४ ॥
जगतमां क्लेश छे पापी, जगत्मा क्लेश छे व्यापि,
जगत्मा क्लेशथी भूंडु, सदा नहि क्लेशथी रुडुं. ॥ ५ ॥
जगतमा युद्ध छे क्लेशे, जगत्मा क्लेश छे द्वेषे;
महा छे क्लेश खारीलो, थतो तो क्लेश वारी ल्यो. ॥ ६ ॥
बने छे क्लेशथी खोटो, बने छे क्लेशथी गोटो.
दीले तो क्लेश छे दारु, कदी नहि क्लेशथी सारु ॥ ७ ॥
मळे नहि क्लेशथी पाणी, करे छे क्लेश मळ धाणी,
कुटुंबो क्लेशथी भागे, नगारा दुःखनां वागे. ॥ ८ ॥
करेला पुण्य तो नासे, हृदयमां क्लेशना वासे,
करो नहि क्लेशथी यारी, समज आ दीलमा धारी. ॥ ९ ॥
बुरामां क्लेश छे भूरो, बुरामा क्लेश छे शूरो,
बुद्धयब्धि क्लेशने वारी. सदा सुसंप दील धारो ॥ १० ॥

मल्लिजिन स्तुति.

गजल

मल्लिजिन देवना देवा, भली छे सत्य तुज सेवा,
तमारा रूपमां राचु, सदा छे रूप तुज साचु. ॥ १ ॥
अहो इन देवनु प्यारो, जगतमा सत्य तु मारो,
तमारी भक्तिमा मस्तु, तमारी भक्तिमा हलशु. ॥ २ ॥
तमारी तेज मारी छे, हृदयमा राज थारी छे,
तमारी भक्ति छे प्यारी, अनंतानंद गुण त्यारी. ॥ ३ ॥
प्रभु तव माल छे मोटो, दगोने रंसमयी मोटो,
दयाना पंदने सापो, सदा सुख सिद्धनां आपो ॥ ४ ॥

प्रभुनी भक्तिथी शक्ति, प्रगटती आत्मनी व्यक्ति;
प्रभुने वंदतां शान्ति, प्रभुने वंदतां कांति. ॥ ५ ॥
प्रभुजी र्हेमना दरिया, प्रभुजी ज्ञानथी भरिया;
सेवकनां कष्ट कापोने, सेवकने सुख आपोने. ॥ ६ ॥
प्रभुना ध्यानथी तरशुं, अनंतां सिद्ध सुख वरशुं;
बुद्ध्यब्धि बाळने तारो, हृदयनी अर्ज अवधारो. ॥ ७ ॥

सम्प महिमा.

गझल.

अगत्मां संपमां सुखो; टळे छे संपथी दुःखो,
जगत्मां संपथी सारु, मळे छे संपथी प्यारु. ॥ १ ॥
जगत्मां संपथी शान्ति, टळे छे संपथी भ्रान्ति,
जगत्मां संपथी सुमति, टळे छे संपथी कुमति. ॥ २ ॥
जगत्मां संप छे मोटो, टळे छे क्लेशनो गोटो,
जगत्मां संप गुणकारी, जगत्मां संप सुखकारी. ॥३॥
धर्याथी संप सुख थाशे, धर्याथी संप दुःख जाशे,
भला संपे रहो जंपे, नहि को क्लेशथी कंपे. ॥ ४ ॥
उदयनुं चिन्ह छे साचुं, सदा सुसंपमां राचुं,
शुभोदय सर्व छे एमां, रहो राची सदा तेमां. ॥ ५ ॥
सदानुं शर्म थानारु, सदानुं दुःख जानारु,
मळे छे संपथी साचुं, टळे छे संपथी काचुं. ॥ ६ ॥
जगत्मां संप छे भारी, करो सहु संपनी यारी,
टळे छे संपथी क्लेशो, सुखी छे संपथी देशो. ॥ ७ ॥
सहुथी संप छे मीठो, नहि को तेह सम दीठो,
सुजन सहु संपथी राजे, उदयनी टोकमां गाजे. ॥ ८ ॥

सुसंपे वित्ततो आवे, सुसंपे दीनता जावे,
सुसंपे धर्मने थापे, सुसपे क्लेशने कापे ॥ ९ ॥
सदा सुसंपमा रहेवु, कोइने दुःख नहि देवुं.
बुद्ध्यब्धि संप बलिहारी, अमारे सपथी यारी. ॥ १० ॥

चिदानंदोद्गार.

गझल

हमारे एक छे देवा, हमारे प्रेमथी सेवा;
हमारे प्रेमथी मळवु, हमारे प्रेमथी हळवु ॥ १ ॥
जगत्मां प्रेमथी रहेवु जगत्मा प्रेमथी कहेवुं;
जगत्मां प्रेम मोटो छे, जगत्नो प्रेम खोटो छे ॥ २ ॥
खरेखर प्रेमथी योगी, अखंडानदना भोगी;
प्रभुने प्रेमथी गावा, प्रभुना प्रेमथी चावा. ॥ ३ ॥
हमोए सत्यने शोध्यु, हमोए सत्यने बोध्युं,
जीवोपर रहेमनी दृष्टि, खरेखर धर्मनी वृष्टि ॥ ४ ॥
जगत्मां कर्मथी जीवो, करे छे दुःखथी रीवो;
करुणा तेहपर करशुं, खरेखर रहेमथी तरशुं ॥ ५ ॥
करीशुं सर्वनु सारु, धर्याविण रहेम अंधारुं;
करुणा धर्म धन हेली, हमारे दील वरसेली ॥ ६ ॥
हमारे आत्मवत् सर्वे, सरीखा जीव शुं गर्वे,
लघुने मोटका प्यारा, जीवो छे ज्ञानघन सारा. ॥ ७ ॥
कदी नहि वेर को साथे, वेरु नहि शस्त्र मुज हाथे;
मळो सहु जीवने सुखो, टळो सहु जीवना दुःखो. ॥८॥
हमारे आत्मनी प्रीति, धरी में आत्मनी नीति;
जगतमा जागता तरवुं, जगतमा ब्रह्मपद वरवुं. ॥ ९ ॥

धरु नहि आत्मवण प्रीति, धरी में आत्मनी रीति;
बुद्धयब्धि आत्मनी कहेणी,खरेखर आत्मनी रहेणी ॥१०॥

स्वार्थ महिमा.

गझल.

जगत्मां स्वार्थना दरिया, सहुजन स्वार्थथी भरिया,
जगत्मां स्वार्थना प्रेमो, जगत्मां स्वार्थना नेमो. ॥ १ ॥
जगत् सहु स्वार्थमां गाजे, रहे नहि स्वार्थथी लाजे,
जगत्मां स्वार्थनी यारी, जगत् छे स्वार्थनी क्यारी. ॥ २ ॥
जगत्छे स्वार्थनुं प्रेर्युं, जगत् छे स्वार्थनुं घेर्युं,
जगत्मां स्वार्थथी पापो; जगत्मां स्वार्थनी छापो. ॥ ३ ॥
जगत्मां स्वार्थनी होळी, मनोहर स्वार्थनी बोली,
जगत् सहु स्वार्थथी अंधु, जगत् सहु स्वार्थथी बन्धु. ॥ ४ ॥
जगत्मां स्वार्थना शिष्यो, जगत्मां स्वार्थथी रीसो,
जगत्मां स्वार्थथी माया, जगत्मां स्वार्थना जाया. ॥ ५ ॥
जगत्मां स्वार्थथी मोटा, जगत्मां स्वार्थना गोटा,
जगत् सहु स्वार्थथी घेलु, जगत् सहु स्वार्थथी मेलु. ॥ ६ ॥
जगत् सहु स्वार्थ पूजारी, जुओने तत्वथी धारी,
जगत्मां स्वार्थ छे मीठो, जगत्मां स्वार्थ छे धीठो. ॥ ७ ॥
जगत्मां स्वार्थ छे भारी, गया सहु स्वार्थथी हारी,
जगत्मां स्वार्थनां व्हालां, जगत्मां स्वार्थथी कालां. ॥ ८ ॥
जगत्मां स्वार्थ छे काळो, जगत्मां स्वार्थ कंटाळो,
जगत्मां स्वार्थ छे खाडो, सदा छे मुक्तिथी आडो. ॥ ९ ॥
जगत्मां स्वार्थथी सेवा, जगत्मां स्वार्थना मेवा,
जगत्मां स्वार्थ छे शूरो, जगत्मां स्वार्थ छे शूरो. ॥ १० ॥

जगत् सहु स्वार्थनुं रागी, अहो कोइ स्वार्थनुं त्यागी,
बुद्ध्यब्धि स्वार्थने त्यागो, हृदयमां ज्ञानथी जागो ॥१२॥

असार दुनिया सज्झाय.

(श्रीरे सिद्धाचल भेटवा ए राग.)

जगमा कोइ न कोइनुं, जूठ सगपण वाजी,
मारु मारु त्या मानीने, केम रहेवुं राची. जगमा ॥ १ ॥
स्वारथिया संसारमां, जीव नाचे छे कर्मे,
साथ न काइ आवतुं, वाळ दीलडुं धर्मे जगमा ॥ २ ॥
अज्ञाने जीव आधळो, शुद्ध धर्म न देखे,
विषय वासना नाचमा. पुण्य पाप न लेखे. जगमा. ॥ ३ ॥
गद्धावैतरु वहु करे, मोहमाया भरेलो,
पापनी पोठी बांधीने, जाय नरके एकीलो, जगमा. ॥ ४ ॥
आज काल करता थका, वीती आयुष्य जावे,
धर्म कर्म वे साथमा, अंते परभव आवे. जगमा ॥ ५ ॥
चेत चेत अरे जीवडा, त्याग दुनिया बाजी,
बुद्धिसागर धर्मथी, रहेजे निशदिन राजी. जगमा ॥ ६ ॥

घडीमां नव नवा रंग.

गझल.

घडीमां सुख आवे छे, घडीमा दु ख थावे छे,
घडीमा चित्त चकडोळे, घडीमा तत्त्वने खोळे ॥ १ ॥
घडीमा ज्ञाननी वातो, घडीमा शोक नहि मातो,
घडीमा प्रेमनो प्यालो, घडीमां शोकनी ज्वाला. ॥ २ ॥

घडीमां लागतुं मीठुं, घडीमां थाय नहि दीठुं,
घडीमां चित्त आनंदे, घडीमां चित्तडुं फंदे. ॥ ३ ॥
घडीमां क्रोधने माया, घडीमां ध्याननी छाया,
घडीमां चित्त दिलगीरी, घडीमां वात अणधीरी. ॥ ४ ॥
घडीमां ध्याननी वेळा, घडीमां मित्रना मेळा,
घडीमां थाय धूळ धाणी, घडीमां थाय गुण खाणी. ॥ ५ ॥
घडीमां थाय छे सारु, घडीमां थाय अंधारु.
घडीमां अन्नने पाणी, घडीनी वात नहि जाणी. ॥ ६ ॥
घडीमां वित्तने वाडी, घडीमां बेसवा गाडी,
घडीमां रंकनी वेळा, गडीमां होय बगडेला. ॥ ७ ॥
घडीमां चित्त हडकायुं, घडीमां चित्त छे डाह्युं,
घडीमां तत्त्वनी वातो, घडीमां युद्धनी लातो. ॥ ८ ॥
घडीमां थाय अणधार्युं, जीवन तो जाय छे हार्युं,
घडीमां वात छे खोटी, घडीमां वात छे मोटी. ॥ ९ ॥
घडीना रंग छे न्यारा, समज ले दीलमां प्यारा,
घडीना रंगमां गोटा, घडीना रंगमां छोटा. ॥ १० ॥
घडीमां ज्ञाननी बाजी, घडीमां रंक ने काजी;
बुद्ध्यब्धि ध्यानमां धीरा, विवेके जाणजो वीरा. ॥ ११ ॥

मायापाशनी सज्झाय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा—एराग.

माया पाशमां जे पड्या, दुःखिया जन ते तो;
माया छे विषवेलडी, चित्त चेतन चेतो. माया. ॥ १ ॥
मृगतृष्णावत् मोहथी, कदी थाय न शांति;
संसारमां सुख नहि कदी, मिथ्या एह भ्रांति. माया. ॥२॥

चेत चेत अरे जीवडा, सत्य धर्मनुं टाणुं;
बुद्धिसागर धर्मनुं, एक शरण मजानुं. माया ॥ ३ ॥

अन्तर्वृत्ति स्वाध्याय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा-एराग

शुद्ध रमणता आदरो, थाओ निजगुण भोगी,
बाह्यदशा चित्त वारीने, थाओ सहजोपयोगी. शुद्ध ॥१॥
परमानद स्वभाव छे, शुद्ध चेतन द्रव्य,
सोह सोह ध्यानथी, सेवना कर भव्य शुद्ध ॥ २ ॥
नवधा भक्ति जे आत्मनी, करशे ते तरशे,
रत्नत्रयीनी लक्ष्मीने, वेग ते हि वरशे. शुद्ध ॥ ३ ॥
निश्चय भावदशा भजी, चेतन थाय सुखी,
अनुभवामृत पीवतां, कदी थाय न दुःखी शुद्ध ॥ ४ ॥
बाह्यदशा व्यवहारथी, भटके जीव भारी,
अप्रमत्त दशा विना, जाय उम्मर हारी. शुद्ध ॥ ५ ॥
शाब्दिक तार्किक पंडितो, बाह्यझघडे राता,
चउद पूर्वी प्रमादथी, भवोभव भटकाता. शुद्ध ॥ ६ ॥
शुद्ध रमणता प्रीतडी, निश्चय सत्य मानी,
बुद्धिसागर बोधथी, वात कोट न छानी शुद्ध ॥ ७ ॥

कपटमहिमा.

गजल.

कपटना फंद छे काळा कपटना चित्र छे चाळा,
कपटथी कर्म छे कूडुं, कपटथी थाय नहि रूडुं ॥ १ ॥
कपटमा कर्मना दरिया, कपटथी कोइ नहि तरिया,

कपटमां पापनी पोठो, कपटमां स्वार्थनी गोठो. ॥ २ ॥
कपटना कोल छे न्यारा, कपटमां स्वार्थना धारा;
कपटथी काळ आवे छे, कपटथी दुःख थावे छे. ॥ ३ ॥
कपटमां स्वार्थनी फांसी, कपटनी चित्र छे हांसी;
कपटथी धर्म छे दूरे, कपटथी दुर्मति स्फुरे. ॥ ४ ॥
कपटमां चित्त छे काळुं, कपट छे मोह कुंडाळु;
कपटना फंद छे वूरा, कपटना फंद छे पूरा. ॥ ५ ॥
कपटमां मिष्ट छे वाणी, कपटथी थाय धूळधाणी;
कपटने पंडितो परखे, कपटमां पापियो हरखे. ॥ ६ ॥
कपटमां जीव सहु झुल्या, कपटमां जीव सहु डुल्या;
कपटमां आतमा वांको, कपटमां क्लेशनो फांको. ॥ ७ ॥
कपटमां पापना गोटा, कपटथी सर्व छे खोटा;
कपटमां नीचता भाळुं, कपटमां द्वेषनुं झाळुं. ॥ ८ ॥
कपटमां कर्मनी कोडी, कपटनी कोइ नहि जोडी;
कपट त्यां धर्म नहि रुडो, कपटने जाणवो भूंडो. ॥ ९ ॥
कपट छे विषना प्याला, कपट छे अग्निनी ज्वाला;
कपटमां काळ छे काळो, कपटने ज्ञानथी टाळो. ॥ १० ॥
कपटने त्यागतां शुद्धि; कपटने त्यागतां रुद्धि;
बुद्ध्यब्धि धर्मने धारो, कपटने दूरथी वारो. ॥ ११ ॥

दुःखकर संसारस्वरूप सज्झाय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा—एराग.

दुःखदरिया संसारमां, कदी नहि सुखआशा;
विषयवासना पासना, ज्यां त्यां जंवरा तमासा. दुःख. ॥१॥
मोहे मुंझी जीवडो, ज्यां त्यां भटके मनथी;

सुख नहि ललना पुत्रथी, सुख नहि तन धनथी. दुःख ॥२॥
चेतनमा सुख नित्य छे, ज्ञान ध्यानथी वरवुं,
बुद्धिसागर धर्मथी छेडे छूटे फरवु. दुःख ॥३॥

जगत्जीवोना विचारनी विचित्रता.

गझल.

चढे छे कोड वरघोडे, चढे छे कोड वरजोडे,
पडे छे कोड पाताले, चढे छे कोट शिव म्हाले ॥ १ ॥
जगत्मा कोड जन जोगी, जगत्मां कोड जन भोगी,
जगत्ने कोड जन जुवे, जगत्ने कोड जन रुवे ॥ २ ॥
जगत्मा कोड जन रागी, जगत्मां कोइ वैरागी,
जगतना मोहमा फसीया, जगत्ना मोहमा रसीया, ॥ ३ ॥
जगत्थी कोट कटाळे, जगत्ने कोड पपाळे
जगत्नी आशथी दासा, जगत्ना जूठ विश्वासा. ॥ ४ ॥
जगत्मा मोहथी घेला, जगत्मां मोहथी मेला,
जगत्मा कोड जन झूल्या, जगत्मा कोड जन भूल्या ॥५॥
जगत् छे दुःखनी क्यारी, जगत्नी वात छे न्यारी,
जगत्मा कोट पछडाया, तरे छे कोट जन डाह्या ॥ ६ ॥
अरे कोड मोहथी वाका, अरे कोड मोहथी फाका,
बुद्ध्यब्धि संतनी सेवा, अमारे शुद्ध ए मेवा ॥ ७ ॥

जगत्नी अस्थिरता.

गझल.

जुओने आंख उघाडी, भला नहि लाडी ने गाडी,
जीवलडा सत्य जाणी ले, हृदयमा वात आणी ले ॥ १ ॥

मरेछे रंक ने राणा, मरेछे मूर्ख ने शाणा,
अमर नहि कोइ शुं फूले, अरे शुं मोहमां डूले. ॥ २ ॥
झपाटा कालना वागे, जगत्मां योगियो जागे,
जगत्मां जूठ छे माया, जगत्मां जूठ छे काया. ॥ ३ ॥
सदातो काळ शीर जागे, फुले शुं मानवी रागे,
करे शुं पापने पापी, प्रभुनी आण उत्थापी. ॥ ४ ॥
अरे शुं जन्मने हारे, अरे तुं जीव शीद मारे,
विचारी जीवडा जोजे, कर्यां सहु कर्मने धोजे. ॥ ५ ॥
दयाने दिलमां धरजे, विचारी धर्मने करजे,
समयने साधी ले शाणा, नहि को रंक ने राणा. ॥ ६ ॥
प्रभुनो धर्म करनारा, भवाब्धिशिघ्र तरनारा,
जगत्मां धर्म छे सारो, अरे नहि धर्मने हारो. ॥ ७ ॥
कर्युं ते पुण्य छे साथे, कर्युं जे पाप ते माथे.
नहि को कर्मथी छूटे, विना भोगे नहीं खूटे. ॥ ८ ॥
विचारी वात लें वीरा. धरे जे धर्म ते धीरा,
फजेती फुलतां थाशे, लहीने दुःख पस्ताशे. ॥ ९ ॥
शिखामण वात छे छेली, ग्रहीने शिख आ वहेली,
बुद्ध्यब्धि चाल शिवपंथे, धरी ले प्रेम सद्ग्रन्थे.

जरातो विचार.

गजल.

समजले चित्तमां हरखी, खरेखर धर्मने परखी,
मळ्युं आ धर्मनुं टाणुं, मळ्युं आ धर्मनुं नाणुं. ॥ १ ॥
भणीने जीव शुं भूले, भणीने जीव शुं झूले,
विचारी वात ले वीरा, धरीले धर्मने धीरा. ॥ २ ॥

जगत्मां मोहनी आजी, रह्यो शुं तेहमां राजी,
कायररे मन केम कपे, कायरनां वेण शुं जंपे || ३ ||
जगत्मां चेतजे व्हेलो, समय तो जाय छे छेल्लो,
धरीने जन्म शु धार्युं, धरीने जन्म शु वार्युं || ४ ||
विवेके वात परखाशे, तदातो सत्य सुख थाशे,
बुद्ध्यब्धि धर्मनी वाटे, चलोने भव्य शीर साटे. || ५ ||

सन्त.

गजल

हमारे सन्तनी सेवा, हमारे सन्त छे देवा,
हमारे सन्तने मळवुं, हमारे सन्तथी हळवुं. || १ ||
हमारे सन्तथी शांति, टळे छे सन्तथी भ्रांति,
सुणीशुं सन्तनी वाणी, सुधा सम दीलमा जाणी. || २ ||
करीशुं सन्तनी भक्ति, लहीशुं आत्मनी शक्ति,
हमारे संत सौभागी, जगत्मां सन्त वैरागी || ३ ||
जगत्मा सन्त छे प्यारा, जगत्थी सन्त छे न्यारा,
हमारे सन्तनी यारी, ठरीशुं, दोपने ठारी || ४ ||
हमारे सतथी वातो, भली छे सन्तनी जातो
बुद्ध्यब्धि सन्तनी सेवा, मुनीश्वर सन्त छे मेवा || ५ ||

वचननी टेक पाळ्या विषे.

गजल

वदेला वेणने पाळे, खरे ते धन्य कलि काळे,
वदेला वाक्यमा शूरा, खेरखर सन्त छे पूरा || १ ||

कहेलु फोक जो थावे, तदातो दुःख बहु थावे,
धरीने टेक जे पाळे, जगत्मां सुखमां म्हाले. ॥ २ ॥
धरीने टेक जे छोडे, शिलाथी शिर ते फोडे,
तजीने टेक जे हसतो, कुतरनी जेम ते भसतो. ॥ ३ ॥
वचननी टेक जे छंडे, पडे ते कष्टना फंदे,
वचननी टेकमां शान्ति, वचननी टेकमां कान्ति. ॥ ४ ॥
वचननी टेकमां मोटा, त्यजे जे टेक ते छोटा,
वचननी टेकमां राजे, जगत्मां कीर्ति हि गाजे. ॥ ५ ॥
वचननी टेक जे धारे, धरीने धर्म नहीं हारे,
वचननी टेकमां देवा, वचननी टेकमां सेवा. ॥ ६ ॥
वचननी टेक जे भूले, नपुंसक दुःखमां झूले,
वचननी टेक नहि खोटी, वचननी टेक नहि छोटी. ॥ ७ ॥
विचारी वाक्य नहि बोले, खरेखर मूर्ख तृण तोले,
वचननी टेक जो पापे, तदातो टेक दुःख आपे. ॥ ८ ॥
वचननी टेक सारामां, करो ना टेक नठारामां,
वचननी टेक शिव पन्थे, कही छे वात सद्ग्रन्थे. ॥ ९ ॥
सुजन छे टेकना रागी, अहो ते धन्य सौभागी,
बुद्ध्यब्धि टेकमां धीरा, सदा छे योगि जन वीरा. ॥ १० ॥

शरीरमां आत्मा देवसमान छे.

गजल.

खरेखर पिंडमां देवा, खरेखर आत्मनी सेवा;
खरेखर आत्म अज्ञाने, पडे छे जीव तोफाने. ॥ १ ॥
खरेखर आत्ममां शान्ति, खरेखर जाय छे भ्रान्ति;
खरेखर आत्ममां रहेवुं, खरेखर दुःख सहु सहेवुं. ॥ २ ॥

खरेखर आत्मनो ज्ञानी, खरेखर आत्मनी वाणी,
खरेखर आत्मनी ज्योति, ग्रहीलो पिंडमा मोति. ॥ ३ ॥
खरेखर आत्ममां रमवु, खरेखर बाह्य नहि भमवुं;
खरेखर आत्ममां प्रीति, खरेखर आत्मवण भीति ॥ ४ ॥
खरेखर आत्मना रागी, खरेखर ज्ञानथी त्यागी,
बुद्ध्यब्धि आत्मना ज्ञाने, पडे नहि जीव अज्ञाने. ॥ ५ ॥

पुण्यने पापनो फेर.

गझल.

जगत्मा पुण्यथी चढती, जगत्मा पापथी पडती,
जगत्मा पुण्यथी लीला, जगत्मां पापथी खीला. ॥ १ ॥
चहे ते पुण्यथी मळतुं, चहे ते पापथी टळतुं,
बुद्ध्यब्धि सत्यमा रहेवुं, हमारे सत्यने कहेवुं. ॥ २ ॥

धर्म अने पापनो फेर.

गझल.

जगत्मा धर्मथी सुखी, जगत्मा पापथी दु खी,
जगत्मा धर्मथी शान्ति, जगत्मां पापथी भ्रान्ति. ॥ १ ॥
जगत्मा धर्मथी उचा, जगत्मा पापथी नीचा,
जगत्मा धर्मथी साचो, जगत्मा पापथी काचो ॥ २ ॥
जगत्मां धर्मथी भोगी, जगत्मा पापथी रोगी,
जगत्मा धर्मथी ज्ञानी, जगत्मा पापथी मानी ॥ ३ ॥
जगत्मा धर्मथी तरतो, जगत्मा पापथी फरतो;
जगत्मा धर्मथी रुडा, जगत्मा पापथी भूंडा ॥ ४ ॥

जगत्मां कीर्ति छे धर्मे, पडे छे दुःख तो कर्मे;
जगत्मां धर्म दुःख टाळे, जगत्मां पाप दुःख आले. ॥ ५ ॥
जगत्मां धर्मना डंका, जगत्मां पापथी रंका;
जगत्मां धर्म बालिहारी, जगत्मां पाप भयकारी. ॥ ६ ॥
जगत्मां धर्म जयकारी, समजजो भव्य नरनारी;
बुद्ध्यब्धि धर्मने धारो, विचारी पापने वारो. ॥ ७ ॥

जीवोपदेश.

गझल.

जीवलडा चीत्त जागीले, हृदयथी सत्य मागीले;
जीवलडा सत्यमां रमजे, कदी नहि बाह्यमां रमजे. ॥ १ ॥
जीवलडा सत्य छे त्हारु, विचारी ले हृदय प्यारु;
जीवलडा सत्यमां सुखो, जीवलडा बाह्यमां दुःखो. ॥ २ ॥
जीवलडा ध्यान कर त्हारु, सदा जे शर्म करनारु;
जीवलडा ध्यानमां रुडुं, जीवलडा बाह्यमां कुडुं. ॥ ३ ॥
जीवलडा देहमां पोते, अवरमां शीदने गोते;
जीवलडा ज्ञानथी शान्ति, जीवलडा बाह्यथी भ्रान्ति. ॥ ४ ॥
जीवलडा शीख मानीले, हृदयमां वात आणीले;
जीवलडा चेतजे चित्त, धरीश नहि मोहने नित्य. ॥ ५ ॥
जीवलडा जागजे घटमां, धरीश ना चित्त घटपटमां;
जीवलडा सत्य तु योगी, जीवलडा सत्य तु भोगी. ॥ ६ ॥
जीवलडा सत्यमां देवा, जीवलडा सत्यमां मेवा;
जीवलडा सत्य तुं साचो, कदी नहि बाह्यमां राचो. ॥ ७ ॥
जीवलडा सत्यनी कहेणी, जीवलडा सत्यनी रहेणी;
बुद्ध्यब्धि ध्यानमां रहेजो, अखंडानंद झट लेजो. ॥ ८ ॥

समय हितोपदेश.

गझल.

गरज छे सर्वथी वहेली, फरज छे सर्वथी पहेली
सुधारो सर्वथी सारो, कुधारो सर्वथी खारो. ॥ १ ॥
भलामां सत्यना पन्थो, भलामा सत्य छे ग्रन्थो,
बुरामां दुर्जनो दोडे, प्रभुमां भक्त मन जोडे. ॥ २ ॥
गुरुनी भक्तिमा शक्ति, अखंडानंदनी व्यक्ति;
समयना जाण छे मोटा, समयना अज्ञ छे छोटा. ॥ ३ ॥
दयानी सत्य छे करणी, दया छे मोक्ष निःसरणी;
समजशो ज्ञानथी मुक्ति, समजशो ज्ञानथी युक्ति. ॥ ४ ॥
दया छे ज्ञानीनी हाथे, क्रिया छे ज्ञानिनी साथे,
दयामां चित्त रंगाशे, तदातो मुक्ति झट थाशे ॥ ५ ॥
दया छे निर्मली गगा, दयाथी दील छे चगा;
दयाथी देवता पासे, दयाथी संकटो नासे. ॥ ६ ॥
परखजो धर्मनुं नाणुं, परखजो धर्मनु टाणु;
विचार्या वीन ना बोलो, समय वण तत्त्व ना खोलो. ॥७॥
प्रभुने ज्ञानथी परखो, हृदयमा हेतथी हरखो;
बुद्ध्यब्धि सन्तनी सेवा, अमारे शुद्ध ए मेवा ॥ ८ ॥

चित्तमां चेत.

गझल

जीवलडा चित्तमां चेतो, झपाटो काळ तो देतो,
अरे तु जागने घटमा, पडे शु भव्य खटपटमा ॥ १ ॥
जुए शुं मानवी भोळा, फरे छे मृत्युना डोळा,

विचारो वात आ वहेली, वखत तो आवशे छेल्ली. ॥ २ ॥
जीवलडा चित्तमां जागो, कपटना फन्दने त्यागो;
भणीने भूल जो थाशे, तदा तो खूब पस्ताशे. ॥ ३ ॥
जगत्मां दुःख छे भारी, जगत् छे दुःखनी क्यारी;
विचारी धर्मने धारो, फोगट नहि जन्मने हारो. ॥ ४ ॥
करे शुं कल्पना कोटी, विषयनी वात छे छोटी;
जगत्मां संपथी चालो, जगत्मां संपथी म्हालो. ॥ ५ ॥
खरे जीव जाय छे आयु, खबर नहि वाय शो वायु;
विचारी चेती ले व्हाला, करे शुं आल पंपाला. ॥ ६ ॥
चलक तुं चेतन ज्ञानी, निरंजन नित्य सुख खाणी;
बुद्ध्यब्धि धारजे सोऽहं, हृदयमां भावजे कोऽहं. ॥ ७ ॥

कामविषयस्वरूप.

गजल.

विषयनी वात भूंडी छे, विषयनी वात कुडी छे,
विषयनो वेग छे तेजी, विषयथी लाज नहीं छेजी. ॥ १ ॥
विषयमां चित्तडुं दोडे, चढेलो स्वार ज्युं घोडे,
विषयथी चित्त भटके छे, विषयथी चित्त सटके छे. ॥ २ ॥
विषयथी जूठनी वाणी, विषयथी दोषनी खाणी,
विषयथी पाप आवे छे, विषयथी धर्म जावे छे. ॥ ३ ॥
विषय छे दुःखकर हस्ति, करे छे खूब ते मस्ति,
विषय छे विषना प्याला, विषयथी सर्व छे बाला. ॥ ४ ॥
विषयमां दुःखनी श्रेणि, विषयमां दुःखनी रहेणी,
विषयथी थाय धूळ धाणी, मळे नहि अन्नने पाणी. ॥ ५ ॥

विषयथी लाजने मूके, विषयथी कीर्तिने चूके,
विषय छे मोहनी वाडी, विषय छे क्लेशनी खाडी. ॥ ६ ॥
विषयनो कूप छे ऊंडो, विषयनो भूप छे भुंडो,
विषयनी चेन छे गांडी, विषयनी बुद्धि छे आडी. ॥ ७ ॥
विषयमां व्हाल छे खोटुं, विषयथी कोइ नहि मोटुं,
विषयनुं वृक्ष कांटाळु, विषयमां दु खने भाळुं ॥ ८ ॥
विषयनो संग छे पापी, विषयथी सुख शिर व्यापी,
विषयथी दुःखना दरिया, विषयथी कोइ ना तरिया ॥ ९ ॥
विषयनी वात छे वहेली, विषयथी दुःखनी हेली,
विषयना संगने त्यागो, बुद्ध्यब्धि दीलमां जागो. ॥ १० ॥

विवेक.

गझल.

विवेके सत्य परखातुं, विवेके दुःख सहु जातुं;
विवेके सघ छे मुक्ति, विवेके सत्र छे युक्ति ॥ १ ॥
विवेके जाणीए टाणुं, विवेके जाणीए नाणुं,
विवेके ब्रह्म रस चाखे, विवेके सत्यने राखे ॥ २ ॥
विवेके थाय छे शान्ति, विवेके जाय छे भ्रान्ति,
विवेके सत्यने परखो, नही को तेहना सरखो ॥ ३ ॥
विवेके सत्य छे मीठुं, विवेके तत्त्वने दीठुं;
विवेके धर्मने पाळे, विवेके पापने ग्वाळे ॥ ४ ॥
विवेके मूढता नासे, विवेके ब्रह्म तो भासे,
विवेके जात छे ऊंची, विवेके ज्ञाननी कुंची ॥ ५ ॥
विवेके मानवी सारो, विवेके मानवी प्यारो,
विवेके दुःखडां जावे, विवेके धर्मने पावे. ॥ ६ ॥

विवेके मानवी ज्ञानी, विवेके मानवी भानी;
विवेके भूल ना थावे, विवेके सद्गुणो आवे. ॥ ७ ॥
विवेके जाय छे हांसी, विवेके जाय छे फांसी;
विवेके मानने छंडे, विवेके मोहने खंडे. ॥ ८ ॥
विवेक उच्चत्ता आवे, विवेके नीचता जावे;
विवेके सन्मति धारे, विवेके दुर्मति वारे. ॥ ९ ॥
विवेके धन्य छे वाणी, विवेके धन्य छे प्राणी;
विवेके कर्मने टाळे, विवेके कूळ अजवाळे. ॥ १० ॥
विवेके सत्य नहि छानुं, विवेके शर्म लेवानुं;
विवेके सन्तनी यारी, बुद्ध्यब्धि शीख छे सारी. ॥ ११ ॥

लघुता गुण महिमा.

गजल.

लघुता सर्वथी मोटी, प्रभुता जाणजो खोटी;
लघुतामां प्रभुता छे, प्रभुतामां लघुता छे. ॥ १ ॥
लघुता सुख देनारी, लघुता सर्व गुण क्यारी;
लघुता सर्वथी मीठी, लघुता सन्तमां दीठी. ॥ २ ॥
लघुता मानने खंडे, लघुता दुःखने दंडे.
लघुता उच्चता आपे, लघुता दुर्मति कापे. ॥ ३ ॥
लघुता ज्ञानने आपे, लघुता ध्यानमां व्यापे.
लघुता सर्वमां पहेली, बुद्ध्यब्धि धारजे वहेली. ॥ ४ ॥

"लघुता विषे."

छप्पय छंदनी चाल.

लघुतामां प्रभुताय वसे छे ज्ञानी गावे,
लघुता गुणनुं पात्र लघुताथी गुण आवे;

लघुता गुणनुं मूळ लघुता विण धूळधाणी,
धनसत्ताथी फोक फूले छे मिथ्या मानी,
अन्तर सद्‌गुण धारवा लघुता प्रभुताद्वार छे.
बुद्धिसागर समजशो अरे लघुता जग जयकार छे. ॥ १ ॥
लघुता विद्यामूळ लघुता सज्जन पासे,
नासे मिथ्या मान लघुता हृदये वासे,
करे किंकरनुं काम सुजन लघुताना धारी,
लघुतानी अहो वात जगत्‌मां देखो भारी,
लघुता लावी शेवीयेहि सन्त सुदेवा प्रेमथी,
बुद्धिसागर ज्ञानथी कहे भव्यने शुभ नेमथी ॥ २ ॥

विनयमहत्ता.

छप्पा छन्द

विनय करो नर नार, विनयथी विद्या आवे,
विनये मान हणाय, विनयथी क्रष्टो जावे,
विनये निर्मळ दील, विनयथी उच्च कहावे,
विनये वैर विनाश, विनयथी लघुता आवे,
विनये संपत् सहु मळे, जग विनये दोषो सहु टळे,
बुद्धिसागर विनयथी जन धर्मपन्थे झट वळे ॥ १ ॥
वैरी सौ वश थाय, विनयथी समजी लेजो,
यथायोग्य बहुमान विनयथी मीठुं कहेजो;
विनये दृष्टि पमाय, विनयथी सहु गुण आवे,
विनय धर्मनुं मूळ, विनय वण मूढ कहावे,
सोनु अने विनयनी सुपरीक्षा छे तापथी,
रहे छे विनये आपथी पण नहीं रहे मा बापथी ॥ २ ॥

गुणियल विनये होय, विनयथी पुत्रो सारा;
विनये शिष्यो वेश, विनय वण होय नठारा;
विनये स्थिरता वास, विनयथी होवे मोटा,
विनय ज्ञाननुं मूळ, विनय वण होवे गोटा.
विनये भक्ति थाय छे, बहु विनये मान मळे बहु
विनये माणस शोभतो अहो विनय वर्णन शुं कहुं ? ॥ ३ ॥

विनय विना शी जात भातने जीवन जगमां;
जगमां ते धन्य धन्य विनय पेठो रग रगमां;
विनये मुक्ति होय विनयथी युक्ति सूजे,
विनये सज्जनसंग विनयथी क्षणमां बुझे,
वशीकरण महा मंत्र छेहि विनय जगमां जाणजो,
समजीने अहो भव्य लोको विनय मनमां आणजो. ॥ ४ ॥

विनये गुरुनी आण, विनयथी गुरुनी सेवा;
विनये जिनवर थाय विनय छे मीठा मेवा;
विनये तत्त्वप्रकाश विनयथी ऋद्धि पावे,
विनयमंत्रनी सेव थकी सहु पासे आवे;
विनय विना जन ढोर छे, विनयमां बहु जोर छे,
भव्य लोको जाणजो अहो विनयमहिमा ओर छे. ॥ ५ ॥

विनये निर्मळ वाक् विनय वण वाणी गंदी;
विनय विना जन मूर्ख विनय वण छे स्वच्छंदी;
विनये पग पग मान विनय वण छे धूळधाणी;
विनय विनानुं वदन जाणवुं जेवी घाणी.
विनये सहु राजी रहे बहु विनये सारा सहु कहे,
बुद्धिसागर विनयिजनने जगत्मां सहुजन चहे. ॥ ६ ॥

क्षमामहत्ता.

छप्पयछंद

क्षमा सकल गुणखाण क्षमाथी क्रोध समातो,
क्षमा दयानुं मूळ क्षमाथी सन्त कहातो,
क्षमा मुनिमां वेश क्षमाथी जगमां शोभे.
क्षमा असि धरी हस्त वैरने क्षणमां थोभे,
क्षमा विनानु मानवी अरे शोभतुं ते नही कदी,
बुद्धिसागर जल विना जेम शोभती जेवी नदी. ॥ १ ॥
क्षमा विना शो सन्त क्षमावण मोटो शानो,
क्षमाविना शी नार क्षमागुण सत्य मजानो,
क्षमाविना शो शिष्य रीसथी जे दिल भरियो
भवसागरने क्षमाविना नहि को जन तरियो,
क्षमा हृदयमां जेहने छे तेज मोटो जाणीए,
बुद्धिसागर सन्तपुरुषो क्षमा हृदयमा आणीए. ॥ २ ॥
तप जप करणी फोक क्षमावण ग्रन्थे दाखीं,
क्रोध कर्याथी संयम गुणनी लघुता भाखीं;
धर्म क्षमा छे सत्य राचशो तेमा भव्यो
दीलमां क्षमा उतारी करशो सहु कर्त्तव्यो,
धनसत्ताना तोरथीं अहो क्षमा हृदयथी जाय छे,
सत्समागम ज्ञानथीं अहो क्षमा हृदय प्रगटाय छे ॥३॥
दयातणो ज्या वास क्षमा त्या स्हेजे आवे,
दया दिल नहि लेश क्षमा ते क्याथी पावे,
नहि ज्या चेतन ज्ञान क्षमा त्या क्याथी रहेवे
ज्ञानी गुणभडार क्षमाना वचनो कहेवे,

दया क्षमा वे साथ छे ते समजशो दील मानवी;
चंद्र त्यां उद्योत वळी परकाश त्यां होवे रवि. ॥ ४ ॥
तजी क्षमाने मुनिवर क्रोधे नीचा पडिया,
क्षमा धरीने नीचजनो पण स्वर्गे चडिया;
क्षमा विना शुं तेज क्षमावण छे अंधारुं.
क्षण क्षण मांहि क्रोध करे त्यां कदी न सारु,
पगथीयुं छे मोक्षनुं शुभ क्षमा सदा सुखकार छे;
बुद्धिसागर क्षमा धर्याथी धन्य धन्य अवतार छे. ॥५॥

लोभस्वरूप

छप्पयछंद.

लोभतणो नहि थोभ लोभथी कुमति जागे,
लोभे लक्षण जाय लोभथी लज्जा त्यागे;
लोभे हिंसक थाय, लोभथी जूठुं बोले.
लोभे चोरी थाय, लोभथी कूडुं तोले,
लोभे पापो सहु करेछे, लोभे जन ज्यां त्यां फरे;
बुद्धिसागर लोभथी जीव रंकने पण करगरे. ॥ १ ॥
लोभे छे अन्याय, लोभथी समता नासे,
लोभे शान्ति दूर, लोभथी दया न पासे;
लोभे नहि परमार्थ, लोभथी सत्य न धारे.
लोभे प्राणी तात भ्रातने स्हेजे मारे;
लोभ अहो आ जग विषे सहु, महा पाप शिरदार छे,
बुद्धिसागर लोभ नहि जस धन्य तस अवतार छे. ॥२॥
लोभे मीठुं वेण, लोभथी भुंडी बुद्धि,
लोभे कंजुस होय लोभथी कदी न शुद्धि;

लोभे तृष्णा वैर झेरने मनमां काती.
लोभे जन धूताय, लोभथी भली न जाती,
लोभे लालच सोगणी छे, लोभे तो सन्मति हणी,
लोभे इश्वर वेगळो छे, मुआ पछी को नहि धणी. ॥ ३ ॥
लोभे व्यसनी होय, लोभथी पापी पूरो,
लोभे छे चडाळ, लोभथी पापे शूरो,
लोभे मनडुं क्रूर, लोभथी चित्त न चगा,
लोभ त्यजाथी अंतर प्रगटे समता गंगा;
लोभे दुर्मति उपजे महा, लोभे नरके जाय छे,
बुद्धिसागर लोभथी जीव चतुर्गति भटकाय छे. ॥ ४ ॥
लोभे मूढ मनुष्य, लोभथी कदी न शान्ति,
लोभे कदी न उच्च, लोभथी प्रगटे भ्रान्ति,
लोभे सन्निपात, लोभथी चित्त न ठरतुं,
लोभे नहि आनन्द, चित्तडु ज्या त्या फरतुं,
लोभ अहो महा भूत छे जग, वळग्युं तेहने दुःख छे,
बुद्धिसागर लोभ छडे, चित्तमा बहु सुख छे. ॥ ५ ॥
उंच नीचने पाय पडे छे, लोभे जाणो,
लोभ मदीरा घेन चड्याथी होय न शाणो
लोभे काळो केर, लोभथी होवे फासी,
लोभे छे अंधेर, लोभथी थाती हासी
लोभना बहु भेद छे ने, लोभ ज्या त्यां खेद छे,
बुद्धिसागर आत्मज्ञाने, लोभनो विच्छेद छे ॥ ६ ॥
लोभ त्यज्याथी धीर वीरने सन्त कहावे;
लोभ त्यज्याथी शास्वत सुखडा स्हेजे पावे.
लोभ तजीने भव्यजनो आतमने तारो,

संतोषे सहु सुख, लोभना त्यागे धारो.
लोभ त्यज्याथी मानवी, मंगळमाळा पाय छे,
बुद्धिसागर ज्ञानयोगे, समतानंद सुहाय छे. ॥ ७ ॥

" गुरुभक्तिमहिमा "

छप्पयछंद चाल.

गुरुभक्ति वण जीव तत्त्वने क्यांथी पामे,
गुरुभक्ति वण जीव ठरे नहि निश्चळ ठामे;
गुरुभक्ति वण तत्त्वज्ञाननी वात न जाणे,
गुरुभक्ति वण प्रेमभावने क्यांथी आणे.
गुरुविना नहि धर्म छे ने गुरु विना नहि शर्म छे;
गुरु विना नहि ज्ञान मुक्ति गुरु विना तो भर्म छे. ॥१॥
गुरुगम विण नहि ज्ञान सान तो क्यांथी आवे,
गुरु विना नहि शास्वत सुखडां प्राणी पावे;
गुरु विना नहि तप जप संजम किरिया साची,
भव्यो गुरुनुं शरण करीने र्हेजो राची;
गुरुनी भक्ति साचवीने तप जप संयम सहु करो,
गुरुभक्ति थकी भव्य जीवो भवसागरने झट तरो. ॥२॥
गुरु विना तो भवसागरमां भटके प्राणी,
समजे नहि ते पामरप्राणी जिनवर वाणी;
आपमतिथी अवळा चाले नगुरा प्राणी,
नगुरा जीवो कदी न होवे सम्यग् नाणी;
गुरु विना नहि सन्मति अहो प्रगटे छे उलटी मति;
मायामां मस्तान थइ अरे पामे शुं ते सद्गति ? ॥ ३ ॥

गुरुशरणथी लघुता दिलमां प्रगटे सारी,
गुरुशरणथी निर्भय थावे नरने नारी;
गुरुशरणथी मानादिक सहु दूरे नासे,
गुरुशरणथी श्रद्धा साची हृदये भासे;
गुरुशरणथी मानवी तो तत्त्व साचु पामशे,
गुरुशरणथी जगत्मा अहो कीर्त्ति सघळे जामशे. ॥ ४ ॥

गुरुशरणथी संयम शक्ति प्रगटे भारी,
गुरुशरणथी प्रगटे छे समता सुखकारी;
गुरुशरणथी उद्धताइ पहेली नासे,
गुरुशरणथी कदाग्रहादि दूरे जाशे,
गुरुशरणथी सपजे छे, पंचम गति पलवारमां,
सत्य शरणुं सद्गुरुनुं समजशो संसारमा. ॥ ५ ॥

गुरुनी निंदा करी वदनथी केटक पडीया,
गुरुगुण गाइ शिवपुर महेले केइक चडीया,
गुरुनी आणा लोपी पामर केइक भूल्या,
मायादरिये गुरु विना तो केटक झूल्या,
आतमज्ञान ज्ञाता गुरुनु शरण सदा सुखकार छे;
गुरुविनये जे नित्य राता सफल तस अवतार छे. ॥६॥

गुरु ज्ञानथी देव इष्ट तो शिष्यो जाणे,
सद्गुरुगमथी भव्य राचशो आतम ज्ञाने;
सद्गुरुगमथी सहु समजाशे धरजो चित्ते
गुरुविनयथी खुश रहे छे पण नहि वित्ते,
सद्गुरुना जे सेवको ते भवसागर स्हेजे तरे;
बुद्धिसागर गुरुशरणथी सत् संपत् शिष्यो वरे ॥ ७ ॥

क्रोध स्वरूप.

छप्पय.

क्रोधे बोध निरोध, क्रोधथी होवे काळुं;
क्रोधे तनुमां ताप, क्रोधे छे द्रुम कंटाळुं;
क्रोधे भूले भान, क्रोधथी ज्ञान न सूजे,
क्रोधे काळो नाग, क्रोधथी लेश न बूझे.
क्रोध कर्याथी मानवी तो भूत सरखो भासतो;
क्रोध महा चंडाळ जेवो धर्म दूरे नासतो. ॥ १ ॥

क्रोधे पडे न चेन, आंखमां लाली आवे;
बोले कडवां वेण जगतमां दुष्ट कहावे;
क्रोधे थावे घात क्रोधथी निन्दा थावे;
क्रोधे मूके आळ गाळ तो वचने आवे;
क्रोध कळंकी कारमो छे, क्रोध ज्यां त्यां वेर छे;
क्रोध थकी तो कष्ट कोटी क्रोधे जगमां झेर छे. ॥ २ ॥

नीच थको पण नीच क्रोध छे सहुथी बूरो,
क्रोध महा विकराळ क्रोधथी पापी पूरो;
क्रोधे पूर्व करोड वर्षनुं संयम जावे,
क्रोधे मित्र न होय जगतमां ज्ञानी गावे;
क्रोधाग्नि ज्वाळा थकी तो स्वपर आतमा सहु बळे;
तप जप किरिया करो भव्य पण क्रोध सहित तो ना फळे. ३

क्रोध नरकनुं द्वार क्रोध छे वळती सगडी;
क्रोधे द्वीपायन तणी तो बाजी बगडी;
क्रोधे वित्त विनाश क्रोधथी होय न सारुं,
महा पापनी तोप क्रोध छे तेमां दारु;
क्लेश अग्निथी तोप धडूके जननी हाणी,

क्रोधे दुर्गति होय दीलमा एवुं जाणी;
क्रोध करे ने करावतो ते नरकगति मेमान छे,
मानव पण नहि मानवी ते जाणजो हेवान छे. ॥ ४ ॥
क्रोधे नरके पडीया केइक पडशे प्राणी,
क्रोधे राज्यविनाश क्रोधथी छे धूळ धाणी;
क्रोधे सन्त न होय क्रोधथी होवे कूडो,
क्रोधे कारज नाश क्रोधथी भाख्यो भूडो,
सर्प थकी पण क्रोधथी, अहो मानव तो नीचो खरो,
क्रोधाग्नि ज्या सळगतो त्यां क्याथी समताजलझरो. ॥ ५ ॥
क्रोधे केइक चतुर्गतिमांही आथडीया,
क्रोधे केइक लक्षणवंता पण लडथडीया,
महा भैरव छे क्रोध तेहथी दुःखना दरीया,
क्रोध तज्यो ते सन्त धन्य जग ते अवतरीया;
क्रोध भयंकर प्लेगने अहो टाळीये समताजळे;
बुद्धिसागर सहनशीलता राखवाथी सहु मळे ॥ ६ ॥

" सन्तसमागममहिमा "

छप्पय छंद.

प्रगटे जो महा भाग्य सन्तनी सेवा लहीये,
प्रगटे जो महा भाग्य सन्तनी पासे रहीये,
प्रगटे जो महा भाग्य सन्तनी सुणीये वाणी,
प्रगटे जो महा भाग्य मळे तो सन्त सुनाणी.
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रनी अहो पदवी मळवी स्हेल छे,
पण सन्त साचा प्राप्त करवा जगत्मां मुश्केल छे ॥ १ ॥

सन्तमळ्याथी मळीयुं समजो उत्तम नाणुं,
सन्तमळयाथी मळीयुं समजो उत्तम टाणुं;
सन्तसमागम दुर्लभ पण सुलभ छे ज्ञाने,
सन्तसमागम थकी चतुर तो तत्त्व पिछाने;
लोभी पामर प्राणीयो अहो सन्तसमागम नहि करे;
सन्तसमागम कर्या विना जीव भवसागरने शुं तरे ? ॥ २ ॥
कोइ कहे छे अमृत तो पाताळे र्हेवे,
ज्ञानी जन तो सन्त समागम अमृत केहेवे;
कोइ तो पत्थरने चिन्तामणिज बोले,
चिन्तामणि ते सन्त जनो छे पडदो खोले;
सन्तसमागम कीजीये अरे अमृतप्याला पीजीये,
चकोरने जेम चंद्र तेमज सन्त देखी रीझीये. ॥ ३ ॥
सन्तसमागम अन्तर गुणने स्हेजे आपे,
मायादुःखवह्निने क्षणमां ते तो कापे;
सन्त जनोनुं मान कर्याथी लघुता आवे,
क्रोध मान इर्ष्यादिक दोषो क्षणमां जावे.
सन्त जनोने देखीने जीव मान तेनुं बहु करो;
बुद्धिसागर सन्त सेवे मुक्तिने क्षणमां वरो. ॥ ४ ॥
सन्तसमागम सफल सदा छे शास्त्रो गावे,
कोइक विरला समजुना मनमां ते आवे;
सन्त समागम शिवपुरनो साचो संदेशो,
मानो तेने सत्य धरो नहि मन अंदेशो;
संतो जंगम तीर्थ छे, अहो सन्तो जग सुखकार छे;
बुद्धिसागर सन्तसेवा जगतमां जयकार छे. ॥ ५ ॥

" शोक विषे. "

छप्पयछन्द.

शोके अक्कल जाय शोकथी चिन्ता प्रगटे;
शोके तनुने ताप शोकथी शान्ति विघटे,
शोके भूले भान कशुं नहि हाथे आवे,
शोक कर्याथी आर्त्त ध्यान तो स्हेजे थावे.
शोके सूझे नहि कशुं ने शोके मन दु:खाय छे,
जगत्मांही शोकयोगे हर्ष दूर जाय छे ॥ १ ॥
शोके नासे प्रेम शोकथी प्रगटे भ्रान्ति
शोके तनुमां रोग बगडती तनुनी कान्ति;
शोके स्थिरता नाश शोकथी जीवन बगडे,
बंध पडे छे कर्म शोकथी वर्ते झघडे
शोकसागर जे पडया ते चतुर्गतिमां रडवडया;
अशुभध्याने पुष्ट थइने केइक लाखो लडथडया ॥२॥
शोके अश्रुधार शोकथी हिम्मत नासे,
शोके शत्रु आप शोकथी ध्यानज नासे;
शोके दीनता दीन शोकथी क्यांय न सारुं,
शोके सन्मति नाश शोकथी होय नठारु,
शोके धीरज जाय छे अहो शोके मूढ कहाय छे,
बुद्धिसागर समजशो अरे शोकथी दुःख थाय छे ॥३॥

आळदोष.

छपयछन्द

परने देवे आळ आळ तेनुं मुख भूंडुं;

पापीनो शिरदार तेहनुं थाय न रुडुं,
परने देतां आळ घात वेनी तो कीधी;
परने देतां आळ नरकनी वाटज लीधी.
कुडां आळ चढावतो जीव जगत्मां चंडाळ छे;
काळनो अरे काल कपटी जाणजो महाकाळ छे. ॥ १ ॥
कलंकथी छे कर्म धर्म तो दूरे नासे;
देतां कूडां आळ हृदयथी धर्म प्रणाशे,
परभवमांहि दुःख आळथी आळज आवे;
तप जप किरिया फोक आळथी नरक सिधावे,
परने आळ चढाववाथी रौरव दुःखो भोगवे;
जाणजो जीभ सर्प्पिणी अरे परापवादो जे लवे. ॥ २ ॥
सीता सतीए परभवमांहि आळ चढाव्युं;
तेथी सीता भवमां आळज खोटुं आव्युं,
समजो सज्जन कदी न सारु थाशे आळे;
आळ दानथी नीच जगत्मां जीवन गाळे,
आळने देनारनुं अहो कदी न सारु थाय छे;
मनुष्य पण ते दैत्य छे जगजीवन पापे जाय छे. ॥ ३ ॥
आळ दोष देनार जगत्मां ज्यां त्यां भटके,
कदी न पामे सुख दुःखथी भवमां अटके;
मूंगो टुंटो परभवमां प्राणी ते थावे.
महा दुःख अवतार प्राणिया पापे पावे,
आळ दोष देनारनुं तो जीवन फोगट जाय छे;
बुद्धिसागर समजशो जीव धर्मथी सुख थाय छे. ॥४॥

निन्दा.

छप्पयछन्द.

निन्दानो करनार जगत्मा पापी पूरो,
निन्दानो करनार जगत्मा दोषे शूरो;
निन्दानो करनार जगत्मा मोटो पापी,
निन्दानो करनार जगत्मा जूठ विलापी,
नाम देइ निन्दा करे ते जगत्मां चंडाळ छे,
निन्दानो करनार खरेखर जगत्मा विकराळ छे ॥ १ ॥
परनी लवरी जे जन करतो ते नहि रुडो,
परलवरीमां रक्त जगत्मां सहुथी भूंडो;
इर्ष्याने अभिमान थकी जे निन्दा करतो,
क्रोधथकी निन्दक नर कदीय न ठामे ठरतो,
निन्दा लवरी जे करे जन वदन तेहनु वाळवुं,
दोषदृष्टि कागडा जन वदन नहि तस भाळवु ॥ २ ॥
पर अपवादे भव्य जाणजो मुखडुं दोषी,
कहेतो परना दोष बने छे निज निर्दोषी,
चोथो छे चंडाळ जगत्मां निंदक नागो,
निदक सहुथी नीच संगथी दूरे भागो;
ज्यातक दृष्टि दोषनी छे बहु तरतकतो अंधेर छे,
जगत् जीवो जाणजो अरे निंदा मोटुं झेर छे ॥ ३ ॥
निन्दाथी छे वैर झेरने हिंसा मोटी,
निंदा दुःखनी खाण जगत्मां निन्दा खोटी,
निन्दाना करनार जनोना नहि छे तोटा,
गप्पा मारी जूठ वचनथी वाळे गोटा,
निन्दक नरके जइ पडे अहो दुःख रौरवथी रडे,

निन्दकनी छे दृष्टि अवळी सत्य तेने शुं जडे. ॥ ४ ॥
निन्दानां बहु पाप सूत्रमां जोजो भाख्यां,
नाम देइने निन्दक लोके दुःखो चाख्यां;
यति सतीनी जे जन खांते निन्दा करता,
कर्म ग्रहीने चतुर्गतिमां पामर फरता;
तप जप संयम साधनारूप धर्मकरणी सहेल छे,
दोष निन्दा त्यागवी अरे सर्वेने मुश्केल छे. ॥ ५ ॥
निन्दाथी नर नार जगत्मां सुख ना पामे,
निन्दाथी नर नार जगत्मां ठरे न ठामे;
निन्दा दोषे जगत्जीव तो सर्वे भूल्या,
डहापणना पण दरिया निन्दक केइक डूल्या;
निन्दा तजतां सहु तज्युं अहो सज्जन मनमां धारजो,
बुद्धिसागर दृष्टि गुणनी धारी आतम तारजो. ॥ ६ ॥

ज्ञानमहिमा.

छप्पयछंद.

करो ज्ञानिनुं मान ज्ञानिनी पासे किरिया,
ज्ञानविना नहि भान ज्ञानवण कोय न तरिया;
ज्ञानविना तो दुःख ज्ञानवण अंधाधुंधी,
ज्ञाने कर्मविनाश ज्ञानथी प्रगटे शुद्धि;
ज्ञानी जगचिंतामणि अहो ज्ञानी जगमां दिनमणि,
ज्ञानिनुं बहु मान करतां मुक्ति छे सोहामणी. ॥ १ ॥
ज्ञानविना शो धर्म ज्ञानवण भूल न भागे,
ज्ञानविना शुं तत्त्व ज्ञानथी चेतन जागे;
ज्ञाने शाश्वत शर्म ज्ञानथी प्रगटे युक्ति,

ज्ञाने नासे मान ज्ञानथी प्रगटे भक्ति,
सत्यासत्य जणाय छे ने ज्ञाने तत्त्व पमाय छे,
बुद्धिसागर ज्ञानथी ता परमानद सुहाय छे ॥ २ ॥

ज्ञाने होवे सुख ज्ञानथी साधु परखे,
ज्ञाने आतमदेव ज्ञानथी हृदये हरखे,
ज्ञाने कर्म विनाश ज्ञानथी स्वरूपभोगी,
ज्ञाने तप जप ध्यान ज्ञानथी अंतर्योगी,
ज्ञाने शक्ति आत्मनी सहु प्रगटती क्षणवारमां,
ज्ञानवण नहीं मुक्ति भव्यो समजशो संसारमां ॥ ३ ॥

सम्यग् आतमज्ञान विना कतु होय न शांति,
आतमज्ञान विना छे जगमा ज्या त्यां भ्रांति;
ज्ञानाविना नहि ग्रन्थ ग्रन्थ वण तत्त्व न पावे,
ज्ञाने उच्च कहाय ज्ञानवण नीच कहावे;
प्रगटे ज्ञानप्रकाश तो घट सर्व शक्ति संपजे,
आतमज्ञानी विश्व मोटो सत्य इश्वरने यजे. ॥ ४ ॥

आतमज्ञाने राग टळे छे द्वेषज नासे,
आतमज्ञाने नवतत्त्वादिक सम्यग् भासे,
आतमज्ञान त्या ध्यान खरु छे ज्ञानी गावे,
पण कोइ विरला आतमज्ञानने दील पचावे,
अनंत शक्ति आत्मनी तो आतमज्ञाने जागती
अशुद्ध परिणति आत्मनी तो आत्मज्ञाने भागती ॥ ५ ॥

आत्मज्ञानथी भाव चरणमा लय तो लागे,
रंगातो रागे नहीं आतमज्ञानी जागे,
आत्मानुभवरंगे सुखदा सर्व विकाशे

आतमज्ञाननो योग भोग तो साचो भासे,
आतमज्ञाने रीजीए जन मन वीजे नहि दीजिए;
ज्ञान ध्याने जिवन गाळी शाश्वत शिवपुर लीजीए. ॥ ६ ॥
चिदानंद भरपूर भरेला आतमज्ञानी,
अंतरमां उपयोग ज्ञान छे गुणनी खाणी;
आत्मिक शुद्ध स्वभाव ज्ञानथी सहेजे जागे.
आतमज्ञाने सत्य लहीने जूठज त्यागे,
चिदानन्द चेतनमयी घट आतम व्यक्ति ध्याइए;
बुद्धिसागर ज्ञानयोगे सर्व मंगल पाइए. ॥ ७ ॥

" कर्मस्वरूप "

छप्पय छंद चाल.

कर्म करे ते होय कर्मने शर्म न कोनी,
कर्मे नृपति होय मळे नहि कर्मे दोणी;
कर्मे मागे भीख, कर्मथी नोबत वागे,
कर्मे धक्का खाय, कर्मथी पाये लागे.
पुण्य पाप बे कर्म छे, जग पुण्य थकी शाता मळे;
प्रगटे पापोदय तदा तो दुःखनी वल्ली फळे. ॥ १ ॥
चतुर्गतिमां फेर कर्मथी सघळे भटके,
कर्मगति विकराळ, कर्मथी प्राणी अटके;
उच्च नीच अवतार कर्मथी जगमां देखो,
पिता तणा बे पुत्र कर्मथी भिन्नज पेखो;
शरीर कारण कर्म छे जग, कारण वण नहि काज छे;
रागादिकथी कर्मबंधन, कर्मने शी लाज छे ? ॥ २ ॥
रागादिकनो कर्ता तेहज शरीर कर्त्ता,

रागादिकनो हर्ता तेहज शरीर हर्ता;
कर्ता हर्ता एकज पण परिणाम विशेषे,
निद्रामां जे होय सुणो जाग्रतमां ते छे;
सुखे सूतो हुं कहीने जाग्रतमा जे जागतो,
कर्ता हर्ता कर्मनो ते आतम एकज छाजतो ॥ ३ ॥
कर्ता भोक्ता कर्म तणो आतम अज्ञाने,
देह सृष्टिनो कर्ता हर्ता सूत्र वखाणे;
शरीर व्यापक आतम इश्वर कर्म करे छे,
शरीर व्यापक आतम इश्वर कर्म हरे छे;
आतम इश्वर कर्मनो तो बंधकर्ता जाणीये,
शुद्धोपयोगे आत्म इश्वर कर्महर्ता मानीये. ॥ ४ ॥
कर्माष्टकनो नाश कर्याथी सिद्ध स्वरूपी,
सिद्ध सनातन निर्भय देशी रुपारुपी,
कर्माच्छादन दूर गयाथी अनंत शक्ति,
कर्माच्छादन दूर गयाथी निर्मल व्यक्ति;
कर्म सहित ससार छे ने कर्मरहित भव पार छे;
कर्म टाळे आत्म ध्याने सफल तस अवतार छे. ॥ ५ ॥
रागादिकथी कर्म कर्मथी प्रगटे काया,
पुद्गल रुपे अष्ट कर्म छे नहि पडछाया,
कर्म योगथी रुपी आतम कर्म ग्रहे छे,
स्थिति अनादि काल कर्मने एम लहे छे;
पण विभाविक कर्म छे ते आतमध्याने झट टळे,
बुद्धिसागर ध्यानयोगे चिदानंद मेळो मळे ॥ ६ ॥

" शिष्यस्वरूप. "

छप्पय छंद.

गुरु भक्तिमां रक्त विनयथी शोभे काया,
धन्य धन्य ते शिष्य जगत्मां जननी जाया,
गुरु गुणनुं बहु गान करे ने अंतर प्रीति,
गुरु आणामां प्रेम बहु दिल नहि छे भीति;
गुरु आधीन वर्ते सदाने गुरु वैयावृत्ये रहे,
बुद्धिसागर भक्त प्रेमी शिष्य शास्वत सुख लहे. ॥ १ ॥
गुरुवचनमां श्रद्धा साची गुणने धारे,
गुरुविनयमां व्हाल खरेखर वृत्ति ठारे;
गुरु कहे ते सत्य हृदयमां नक्की आणे,
गुरुवचन परमार्थ विवेके मनमां जाणे;
गुरु वन्दन त्रिकाळ करे ने गुरु सेवामां व्हाल छे,
सद्गुरु विश्वास खरेखर चरणसेवन ख्याल छे. ॥ २ ॥
गुरु कहे ते करतो कारज हाम धरीने,
मन वाणी कायाथी भक्ति धर्म धरीने;
गुरुनिन्दक नहि होय कदापि प्राण पडे पण,
सहनशीलता बेश हृदयमां शोभे गुणगण;
पर उपकारी सद्गुरुनी श्रद्धामां राची रहे;
चित्त चंचलता हरी खरे योग्य शिष्यो सुख लहे. ॥ ३ ॥
माथा साटे मालज जेवी गुरुनी भक्ति,
करीने शिष्यो प्रगटावे गुणगणनी व्यक्ति;
गुरुनी भक्ति दुःख दावानळ शान्त करे छे,
गुरुनी भक्ति दिलना दोषो सर्व हरे छे;
" द्रोण " गुरुनी भक्तिथी अहो भील्ल विद्या झट वर्यो;

सद्गुरुना सेवकोए सत्य मारग अनुसर्यो ॥ ४॥
विनयवंत ने धीर वीर भक्तिमां शूरा,
गुरुमा साचो प्रेम सदा छे धर्मे पूरा,
गुरुवचने नहि शंक विवेके साचुं परखे,
गुरु आवे के ऊभा थइने मनमा हरखे;
हस्त जोडी प्रेमथी अहो वन्दन करता ते मुदा;
बुद्धिसागर गुरुविनयथी शिष्य ले सुख संपदा.

"दारु विषे"

छप्पयछंद

दारु छे दुःखकार दारुए दाटज वाळ्यो,
दारु दीनतामूळ दारुथी देशज हार्यो,
दारु दुर्मति मूळ दारुथी जीवनी हानी,
दारु छे महा झेर दारुथी बने तोफानी,
तन धन लक्ष्मी नाशनुं अरे कारण दारु जाणजो,
भूतनो पण भूत दारुज समजु जन पीछानजो ॥ १ ॥
दारुपानी पाप करे छे जगमां भारे,
दारुपानी वेश्या सगे जीवन हारे,
दारुपाने सघळा दोषो स्हेजे आवे,
प्रगटयो पण जे लेश गुण ते क्षणमा जावे,
दारुमा कफास छे अहो दुर्मति झट उफले,
दारुथी तो देखी लेशो भाग्य वेळा नहि वळे ॥ २ ॥
दारुनो पीनार कदी नहि ठामे ठरशे,
भुली आतमभान पापनां कामो करशे;
बहुने मात कहे छे जननीने वहु कहेवे,

नासे छे गुण मान दारुथी सन्त न सेवे;
पायमाली आ देशनी तो दारु पीतां थइ घणी;
दारु छे विकराळ भैरव संगत तो वीहामणी. ॥ ३ ॥
बहु नृपतिए दारु पानथी राज्यो हार्यां,
दारु घेने क्रूर मनुष्ये मानव मार्यां;
दारु दुःख दावानळ संगे थाय नठारुं,
विष थकी पण भुंडो दारु थाय न सारुं;
दारुना परमाणुओथी मलीन काया थाय छे,
दारुडीयानी संततिमां असर तेनो जाय छे. ॥ ४ ॥
दारुनो पीनार तेहथी धर्म ज छेटे,
दारुनो पीनार जगत्मां दुःखडां वेठे;
सर्व दोषनुं कारण दारु जे जन त्यागे,
ते जन होय पवित्र धर्म तो घटमां जागे;
दारुपान निवारिने जन धर्म साचवजो मुदा,
बुद्धिसागर ज्ञान पामी लीजीये सुख संपदा. ॥ ५ ॥

चोरी.

छप्पयछंद.

चोरीनो करनार जगत्मां चोर कहावे,
महा घोर छे कर्म जगत्मां समजो भावे;
चोरीनो करनार कदी नहि ठामे ठरशे,
चोरीनो करनार कदी ते दुःखे मरशे;
आ भव परभव दुःखडां तो चोरी करतां पामीए,
करे नहि जे स्तेय कर्मो मस्तक तेने नामीए. ॥ १ ॥
चोरी करतां पेट भराशे नहि को काळे;

चोरी दुःखनी खाण भाग्यने उंधुं वाळे,
चोरी करतां घातक जूठा बोलो थावे,
चोरीनो करनार पलकमां शीश कटावे,
धणी नही को चोरनो ने चोरीथी मन धूजतुं,
दुर्मतिथी धर्मकरणी सत्य तत्त्व न सूजतुं. ॥ २ ॥
चोरीनो करनार नरकमां व्हेलो जावे,
चोरीनो करनार कदी नहि निर्भय थावे;
चोरी करतां कूळ कलकी कीर्त्ति नाशे,
मळे न साची टेक सुजन नहि वेसे पासे,
अढार वांका ऊंटनां छे चोरनां तो लाख छे,
लाखनुं पण वित्त अन्ते चोरीथी तो राख छे ॥ ३ ॥
जेवुं सरिता पूर चोरनी लक्ष्मी तेवी,
जेवो जल बुद्बुद् गगनमां विद्युत् जेवी,
परनी लक्ष्मी लेता परना प्राण हणे छे,
परनी लक्ष्मी लोभे दुःखनी खाण खणे छे.

परलक्ष्मी पथ्थर समी गणी चोरी व्यसन निवारीए,
समजीने अहो भव्य लोको चेतनने झट तारीए ॥ ४ ॥
कूडे तोले असत्य मापे चोर कहावे,
चोरीनो करनार दया शुं ? दिलमा लावे,
चोरीनो करनार जगतमा समजो नागो,
चोरीनो करनार तेहथी धर्म ज आघो
दिवस चोरो छे घणाने रात्री चोरो घोर छे,
चोरवृत्ति चतुर लोको चोरना पण चोर छे. ॥ ५ ॥
मन वच काया थकी चोरीनो त्याग करे जे,
भव पायोधि दुःखदायिने स्हेज तरे जे,

चोरीमां नहि सुख जाणजो सज्जन लोको,
जगमां मोटुं पाप जाणजो यमनो धोको.
चोरी त्यागे जे जनो ते मंगल माला पामता,
बुद्धिसागर जगतमां जश कीर्त्तिथी खूब जामता. ॥६॥

" उद्यममहिमा. "

छप्पयछंद.

उद्यमथी सहु थाय जगतमां जाणी लेजो,
उद्यम धरीने अंग अनुद्यमने शिख देजो;
उद्यम सुखनुं मूळ खरेखर शक्ति मोटी,
उद्यम इश्वरतुल्य वात नहिं किंचित् खोटी;
उद्यम इच्छित आपतो अहो उद्यम अंगे आणीए;
बुद्धिसागर मुक्तिनां सुख उद्यमे झट माणीए. ॥ १ ॥
पुण्य पाप बे कर्म अहो उद्यमथी लागे,
पुण्य पाप बे कर्म अहो उद्यमथी भागे;
पुण्यकर्मनो उद्यम करतां पुण्य ज आवे,
पापकर्मनो उद्यम करतां पाप ज थावे;
शुभाशुभ परिणामथी तो पुण्य पाप बंधाय छे,
आत्मज्ञाने आत्मध्याने द्विविध कर्म कपाय छे. ॥ २ ॥
अशुभ विचारे पाप ज प्रगटे दिलमां धारो,
शुभ परिणामे पुण्य बंध छे इष्ट विचारो;
शुद्ध विचारोद्यमथी जीवो अनन्त तरीया,
अशुभ विचारोद्यमथी तो भवमांही फरीया;
धर्मध्यानोद्यमथकी अहो पुण्य पाप बे तो खरे,
बुद्धिसागर ध्यान उद्यम पामीने प्राणी तरे. ॥ ३ ॥

पापथकी पुण्य ज छे सारुं शुभ व्यवहारे,
पुण्यथकी संवर छे सारो आतम तारे,
प्रसन्नचंद्र राजर्षि पेठे मनथी पापो,
अशुभ विचारो प्रगट थाय ते क्षणमां कापो,
मनसंयमथी कर्मनी तो वर्गणा नहि आवती,
ध्यान किरिया अशुभ कर्मो शुभपणे बदलावती. ॥ ४ ॥
शुद्ध विचारो शुद्ध ध्यान छे उद्यम मोटो,
शुद्ध विचारो करतां आवे कदी न तोटो;
दीलथी शुद्ध विचारो एहिज साची किरिया,
शुद्ध विचारो क्रिया करिने अनंत तरीया;
मन वाणी काया थकी अहो शुभोद्यम सुखकार छे,
धर्म यत्ने कर्म नासे जगतमा जयकार छे ॥ ५ ॥
आत्मस्वरुपनी किरिया उद्यम साचो जाणो,
रमणता किरिया उद्यम पर्याय पिछाणो,
पिंडस्थादिकध्याने उद्यम प्रेमे करीए,
कर्मदलिकनो नाश करीने शिवपुर वरीए,
अंतरना उपयोगमां झट रमणता उद्यम खरो,
परम महोदय मार्ग जाणी भव्य जीवो अनुसरो ॥ ६ ॥
जेने जेवो उद्यम फळ तो तेवु मळशे,
समजीने सुपात्र जीवशिव पन्थे वळशे,
मनुष्यक्षेत्रमां शिव वस्तु मानव व्यापारी,
उद्यम करवो सत्य भव्य आलसने वारी,
आत्मव्यक्ति प्राप्त करवा, उद्यम अनुपम एक छे,
बुद्धिसागर हृदय दिनमणि ज्ञानकारण छेक छे ॥ ७ ॥

ध्यान.

छप्पयछंद.

चिदानंद भरपूर ध्यानथी चेतन भासे,
आर्त द्वितीय रौद्र ध्यान तो क्षणमां नासे;
क्रिया स्वरुपी ध्यान हृदयमां ज्ञाने जागे.
मोहादिक सहु दोष हृदयथी क्षणमां भागे,
ध्याने अनुभव ज्ञान छे ने ध्याने केवलज्ञान छे;
ध्यान विना नहि मुक्ति भव्यो समजशो सुखखाण छे. १
ध्याने नासे मान ध्यानथी प्रगटे मुक्ति,
दर्शन ज्ञान चरण सद्गुणनी ध्याने युक्ति;
ध्याने विषय विनाश ध्यानथी स्थिरता आवे.
अनुभवनुं जे सुख ध्यानथी चेतन पावे,
पिंडस्थादिक ध्यानथी तो अजरामरपद पास छे;
आत्मध्याने सर्वसिद्धि देवता पण दास छे. ॥ २ ॥
ध्यानक्रिया करनार जगत्मां जय करनारो,
भवसागरने सहजवारमां ते तरनारो;
ध्याने लब्धि सर्व ध्यानथी थाय न दुःखी,
अन्तरमां उपयोग ध्यानथी शाश्वत सुखी;
ध्याने ज्ञान प्रमाण छे ने ध्याने स्थिरता सार छे,
ध्यानिनुं बहु मान करतां जगत्मां जयकार छे. ॥ ३ ॥
संवरमां छे सार ध्यान जगमां जयकारी,
धन्य धन्य अवतार ध्यानिनो शिवसुखकारी;
ध्याने शुद्ध चारित्र ध्यानथी सर्वे लेखे,
धन्य धन्य अवतार ध्यानिनो आतम देखे;
जेवुं चेतन ज्ञान छे दील तेवुं ध्यान कराय छे,
स्याद्वादज्ञाने ध्यानथी तो जन्मनां दुःख जाय छे. ॥ ४ ॥

मन चंचळता सर्व टळे छे ध्यान कर्याथी,
आतमज्ञाने सहज समाधि ध्यान वर्याथी,
आतम ते परमातम ध्याने निश्चय समजो,
भेदभाव सहु दूर करे छे तेमां रमजो;
धर्म ध्यानने शुक्लथी तो स्वर्गने शिव थाय छे,
ध्याननी विशुद्धता लही चिदानंद परखाय छे ॥ ५ ॥
चेतन शुद्धि ध्यान करे छे दोष हरीने,
चिदानदथी मोज करे छे ध्यान वरीने,
मुक्तिनां सुख जीवंता पण ते दर्शावे,
अंतरमां उद्योत ध्यानथी क्षणमां थावे,
ध्यान सकल गुणस्थान छे ने ध्याने अमृतपान छे,
बुद्धिसागर सकलगुणमां ध्यान एक परधान छे

गंभीरगुण.

छप्पयछंद

धन्य धन्य गभीर जगत्मां गुण छे सारो,
सुन्दर लागे सर्व जनोने गुण ए प्यारो,
गंभीरगुण धरनार जगत्मां जय वर्तावे,
क्षुद्रादिक सहु दोष पलकमां दूर हठावे;
समुद्रनी छे उपमा अहो गभीर गुणने जाणजो,
सत्य समजी भव्य लोको हृदयमांहि आणजो. ॥ १ ॥
गंभीरगुण धरनार जगतमा सहुथी मोटो,
गंभीरता वण वात करंता वळशे गोटो;
गंभीरगुणथी नात जातमा संप रहे छे,
गभीरगुणथी ज्ञान वधे छे सन्त कहे छे,

गंभीरगुण प्रगटे तदा तो योग्यता प्रगटे खरी,
गंभीरगुणथी सन्तलोके मुक्तिने सहेजे वरी. ॥ २ ॥
तप जप संयम गंभीरगुणथी लेखे आवे,
गंभीरगुणथी मान पान ने प्राणी पावे;
गंभीरगुणथी वेर झेर ने द्वेषज टळशे,
गंभीरगुणथी सन्तजनोमां प्राणी भळशे;
गंभीरता प्रगटे नहीं ता माणस पण ते ढोर छे,
गंभीरगुण प्रगटे खरो तो सर्व वाते जोर छे. ॥ ३ ॥
गंभीरताने हृदय धरे ते जन छे मोटा,
क्षुद्रउदर माणसना जगमां नहि छे तोटा;
धर्मकर्ममां गंभीरगुण जाणो सहु पहेलो,
गंभीरगुण आव्या वण जनतो जाणो घहेलो;
गंभीरगुणधारक जनो अहो जगत्मां छे जयकरा,
ऋद्धि सिद्धि पामता जन जाणजो ते सुखकरा. ॥ ४ ॥
गंभीरगुणथी सज्जनताने पामे प्राणी,
गंभीरगुणथी प्रगटे विद्या गुणनी खाणी;
सर्वगुणोनी आगळ गंभीर गुणतो गाजे,
गंभीरता वण बहु गुणवंतो तोपण लाजे;
गंभीरगुणने धारीने शिव मंगलमाला पामिए,
बुद्धिसागर धन्य ते मही प्रेमे मस्तक नामिए. ॥ ५ ॥

योगस्वरूपः

मराठी साखी राह.

अलख निरंजन सिद्ध सनातन, जिनवर जय महादेवा,
क्षायिक चेतन वीर स्वयंभु, नमन करु सुख लेवा;

आजे आनद रे तत्त्वस्वरुप लहीशुं, तत्त्वनी वात कहीशुं आजे. १
यम नियम आसन जयकारी, प्राणायाम अभ्यासी,
प्रत्याहार धारणा धारी, ध्यान समाधि समासी. आजे. ॥ २ ॥
आनदघननी वाणी जाणी, योग लहो गुणखाणी,
ब्रह्मरंध्रमां अनहदनादे, सुरता तत्र समाणी. आजे ॥ ३ ॥
यौगिक विद्या ब्रह्म समाधि, ज्ञानीजन एम बोले,
हेमचंद्र महाज्ञानी बोले, योगना नहि कोइ तोले. आजे ॥ ४ ॥
भक्तिनो महिमा जे भारी, ते पण योग समानो,
यौगिकविद्या ब्रह्मसमाधि, जाणे ते सुख पातो आजे ॥ ५ ॥
ईश्वरसम आतमनी शक्ति, यौगिकविद्याभ्यासे,
सम्यग्योगनुं ज्ञान लह्याथी, मायाभ्रांति नासे आजे ॥ ६ ॥
परमब्रह्म स्वरुपनुं कारण, योगाष्टक अवधारी,
अनेकान्त स्वरुप समाधि, पामो नर ने नारी. आजे ॥ ७ ॥
तत्त्वोद्धार करीने प्रेमे, आतमस्वरुप जगावी,
बुद्धिसागर मगल वरशो, जगमां यश वर्तावी आजे ॥ ८ ॥

आत्मजागृति.

दुहा

चिदानन्द निर्भय सदा, निश्चल एक स्वरुप,
प्रेमे आतम सेवता, विरटे भवभयरूप. ॥ १ ॥
रत्नत्रयिनुं धाम छे, अकलकला गुणखाण,
अविनाशीना ध्यानथी, होवे अमृतपान ॥ २ ॥
अनुभव अमृतस्वादथी, निश्चय रूप जणाय,
ज्ञाता ध्याता आतमा, ज्ञाने मन परखाय ॥ ३ ॥
नित्यानित्य विचारिये, भेदाभेद सहाव,

सापेक्षाए आतममां, समज्याथी सुख दाव. ॥ ४ ॥
अखण्ड निर्मल सत्य तुं, परम महोदय गेह,
अन्तर्दृष्टि देखजे, वसियो तुं आ देह. ॥ ५ ॥
ज्योतिः झळहळती सदा, चेतननी सुखकार,
शक्ति अनंति सिद्धसम, ध्यातां भवनो पार. ॥ ६ ॥
परपुद्गलथी भिन्न तुं, धर त्हारो विश्वास,
त्रिभुवनपति तुं देहमां, समजे तो सुखवास. ॥ ७ ॥
ज्ञाता ज्ञेय अनन्तनो, जाग जाग मन चेत.
जाग्रत था तुं आतमा, काळ झपाटा देत. ॥ ८ ॥
सहु मंगलनुं स्थान तुं, सिद्ध बुद्ध परमेश,
बुद्धिसागर ध्यानथी, पामो निर्भयदेश. ॥ ९ ॥

ध्यानोद्गार.

भुजंगी छन्द.

करुं हुं कहो प्रेम तो कोण साथे,
धरुं हुं कहो भारने कोण माथे;
नथी कोइ मारु हवे केम हारु,
हवे चेतीने ब्रह्मने ना विसारु. ॥ १ ॥
खरामां खरा तत्त्वने आज जाण्युं,
खरामां खरा सुखने आज माण्युं;
चिदानन्दने ध्यानथी आज ध्यायो,
खरा सुखने प्रेमथी आज पायो. ॥ २ ॥
टळी बाह्यमां सुखनी आज आशा,
महा मोहना बाह्यना ए तमासा;
अहो आज हुंतो बन्यो ब्रह्मभोगी,

अहो आज हुंतो बन्यो ब्रह्म योगी. ॥ ३ ॥
अहो आज हुंतो दयागंग न्हायो,
अहो आज हुतो खरुं त व पायो,
खरा शुद्धरुपे अहो हु सुहायो,
परावेगथी आपने आप गायो. ॥ ४ ॥
विकारो तमामो टळ्या एकताने,
बुरी आश छूटी खरा ब्रह्मभाने;
खरा शुद्ध चैतन्यमा दृष्टि लागी,
प्रभुप्रेमथी आतमनी ज्योत जागी. ॥ ५ ॥
प्रभुप्रेमथी ध्याननो भेद पावे,
धरी ध्यान ने सिद्धरुपे सुहावे,
कहे धीनिधि ध्यानमां काळ गाळो,
खराब्रह्ममां मानवी नित्य म्हालो ॥ ६ ॥

सत्संग.

गझल

करोने संग सतोनी, करोने संग भकतोनी;
करोने संग ज्ञानिनी, करोने सग ध्यानिनी. ॥ १ ॥
करोने संग साचानी, तजोने संग काचानी;
करोने संग मोटानी, तजोने संग खोटानी. ॥ २ ॥
करोने सग योगिनी, तजोने सग शोकिनी;
करोने सग पूरानी, तजोने संग अधुरानी ॥ ३ ॥
करोने संग समजुनी, तजोने संग खूनीनी,
करोने सग सारानी, तजोने संग नठारानी ॥ ४ ॥
करोने संग चेतननो, तजोने संग अचेतननो;

करीने संग शूरानी, तजीने संग क्रूरानी. ॥ ५ ॥

करीने संग सुमतिनो, तजीने संग कुमतिनो;
बुद्धियथि संग छे जेवी, प्रगटती बुद्धितो तेवी. ॥ ६ ॥

धिक्कारवा योग्य.

छप्पयछंद.

धिक् तेनो अवतार जगत्मां धर्म न धार्यो,
धिक् तेनो अवतार जन्मने फोगट हार्यो;
धिक् तेनो अवतार गुरुनुं शरण न कीधुं,
धिक् तेनो अवतार साधुने दान न दीधुं;
पर उपकार करे नहीं ने धर्मिजनपर खार छे,
नीचमां ते नीच कुमति धिक् धिक् अवतार छे. ॥ १ ॥
धिक् तेनो अवतार वदी नहि मीठी वाणी,
धिक् तेनो अवतार परस्त्री प्रेमे दीठी;
धिक् तेनो अवतार गुरुनी निंदा करतो,
धिक् तेनो अवतार नकामो ज्यां त्यां फरतो;
धिक् तेनो अवतार छे जग कर्या गुणने ओळवे,
वित्त माटे जूठ बोली असत्य वचनो जे लवे. ॥ २ ॥
धिक् तेनो अवतार वदीने जे नहि पाळे,
धिक् तेनो अवतार धर्मथी जे कंटाळे;
धिक् तेनो अवतार शोकमां निशदिन झूले,
धिक् तेनो अवतार वित्तना तोरे फूले;
विश्वासघातक जे बने नर धिक् तेनो अवतार छे,
शूरदानी भक्त वण जन जगत् मांहि भार छे. ॥ ३ ॥
धिक् तेनो अवतार अन्यने आळ चढावे,

धिक् तेनो अवतार प्रभुने दील न ध्यावे;
धिक् तेनो अवतार दयानी वात न जाणी,
धिक् तेनो अवतार पापनी बोले वाणी,
पशु पंखीने मारीने बहु पापी उदर जे भरे,
धिक्कार तेवा दैत्यजनने नरकमांहि अवतरे ॥ ४ ॥
वित्त छता पण दान न दीधुं ते जन खोटा,
धिक् तेने शतवार पापथी वाळे गोटा,
धिक् तेने शतवार अन्यनुं हित न कीधुं,
धिक् तेने शतवार दारुनुं पान ज कीधुं;
धन्य धन्य जगमां नरा ते परउपकारे रक्त छे,
बुद्धिसागर धन्य ते नर सन्त सज्जन भक्त छे. ॥ ५ ॥

॥ धन्यवाद आपवा योग्य ॥

छप्पय छंद.

धन्य धन्य अवतार जगत्मां जे उपकारी,
धन्य धन्य ते भव्य करे जे सज्जनयारी,
दया दानमा रक्त वदे छे वचन विचार्यु,
चोरी चुगली त्याग तजे छे सज्जन वार्यु.
धन्य धन्य जगमा अहो ते आप तरे न तारता,
पापकारक मूर्ख जनने सदुपदेशे वारता ॥ १ ॥
धर्मिजनो पर प्यार चित्तमा धर्मज प्यारो,
निन्दा लवरी त्याग कदी नहि होय नठारो,
वित्त छता नहि मान लघुता अन्तर धारे,
देइ जनोने दान खरेखर दुःख निवारे
जुवानीना जोरमा जे विषयविकारो टाळतो,

धन्य धन्य जगमां अहो ते चित्तधर्म वाळतो. ॥ २ ॥

धन्य धन्य जगमां सुजन जे मोह निवारे,
सद्गुरुगमथी ज्ञान लहीने सत्य विचारे;
अंतरमां उपयोग भोगने रोगज लेखे,
परधन पत्थर परललनाने जननी लेखे;
धन्य धन्य जगमां अहो ते बोले तेवुं पाळता,
आत्मध्याने लीन थइने दृष्टि अंतर वाळता. ॥ ३ ॥
भोग समयमां योग विचारो दिलमां आवे,
दारुनो परिहार मांसने कदी न खावे,
कपट कळानो त्याग राग सज्जननी संगे;
कुव्यसनोनो त्याग धरे छे गुणने अंगे,
धन्य धन्य जगमां खरेखर भक्तने दातार छे;
बुद्धिसागर धन्य योगी सफळ तस अवतार छे. ॥ ४ ॥

मोहस्वरुप.

छप्पयछंद.

महा मोह बळवान मोहमां सर्वे फसिया,
मोह मदिरा घेन करी जीवो जग वसीया;
भवनुं कारण मोह मोहथी सहु जन दुःखी,
मोहाधीन जे भव्य कदी ते थाय न सुखी;
मोहे जन मुंझाय छे जग मोहे भ्रांति मन पडे,
अज्ञभाव मोह प्रगटे भवाटवीमां रडवडे. ॥ १ ॥

मोह भूपनां रूप जगत्मां विचित्र भासे;
मोहे हिंसा थाय मोहथी दया विनाशे,
मोहे बोले जूठ मोहथी व्यसनी थावे;

चोरी जारी चुगली दोषो मोह करावे,
मोहे जगमां दास छे सहु मोह महा जगपाश छे,
मोहपुत्री दुःखदायी जगत्मांहि आश छे. ॥ २ ॥
जगजन मनमां मोह विराजे गडगडगाजे,
मोहे जगजन चाले बोले स्वारथ काजे,
मोहे दूरे धर्म मोहथी दुनिया चाले,
पशु पक्षियो प्रेमधरी बच्चाने पाळे;
मोह शत्रु बळवान् छे जग मोहे नाटकतान छे,
मोहनृपति राज्य भारे जगत्नो सुलतान छे. ॥ ३ ॥
मोहे मूके लाज मोहथी अक्कल बूरी,
मोहे लुटे चोर मोहथी मारे छूरी,
मोहे भासे जूठ मोहथी ठरी न बेसे,
मोहे वधतो लोभ मोहथी जीवन क्लेशे,
चोळ मजीठना रंग सम, मन मोहे निशदिन व्यापियुं,
मोहनुं तो जोर भारे मलीन मनडु पामीयुं. ॥ ४ ॥
मोह महा छे काळ जाळमा सहु जकडाया,
अतर बाहिर दुःख मोहथी कोइ न डाह्या,
कोलेराने प्लेग थकी पण मोहज खोटो,
मोहे वाळ्यो दाट मोहथी ज्या-त्या गोटो,
मोहभूतना दास जे जन चतुर्गतिमा अडवडे,
मोहनी जञ्जाळमाहि कुटीने प्राणी पडे ॥ ५ ॥
मोहे ज्ञान न थाय मोहथी सान न शान्ति,
मोटो छे चंडाळ मोहथी कदु न क्षान्ति,
मोटे बाधे दुःख मोहथी विष न मोटुं
मोहे मोटां पाप मोहथी मनडुं खोटुं,

मोह मूकी जागीए घट सन्तसेवा कीजीए;
बुद्धिसागर तत्त्व समजी आतमभावे रीझीए. ॥ ६ ॥

समाधिस्वरूप.

मान मायाना करनारा रे—ए राग.

करो सत्य स्वरुप समाधि रे, तेथी टळशे उपाधिने व्याधि;
योग अष्टांगने शुद्ध साधि रे, करो दूरे सकल दुःख आधि.
चित्त चंचलता दूर ज जावे, अनहद आनंद थावे;
सर्व संकल्पनी सिद्धि खरेखर, रुद्धि सिद्धि सहु पावे रे. करो. १
आतमना ज्ञानथी दुःख टळे छे, सिद्ध स्वरुप मळे छे;
ब्रह्मा ने विष्णु, शंकर ने शक्ति, आतममां सर्व भळे छे रे. क०२
यौगिक विद्याभ्यास कर्याथी, विषयविकारो टळे छे;
ज्ञानीना योग्य छे यौगिक विद्या, समजु शिष्योने फळे छे रे. क० ३
क्रियमाण वळी संचित कर्मो, आतमसमाधि हरे छे;
अनंत शक्तिओ प्रगटे छे घटमां, परम स्वरूप वरेछे रे. क० ४
अन्तरनी शक्तियो भव्य जगावो, लेजो मानवभव ल्हावो;
बुद्धिसागर घट सत्य समाधि, मुमुक्षु जन झट पावो रे. क० ५

"साधु"

छप्पय छंद.

सेवो साधु सत्य खरा जे आतम ज्ञानी,
चलवे नहि पाखंड, हृदयमां निराभिमानी;
वदे सदा परमार्थ स्वार्थनी दिल नहि फांसी,
विषयविषनो त्याग सदा जे धर्मविलासी;

परम स्वरुपे राचता ने चित्त दोषो परिहरे,
कपटथी जे दूर रहेवे सत्य शांति ते वरे ॥ १ ॥
वैरागी गभीर वदे जे निर्मळ वाणी,
अंतर्मां उपयोग अहो जे सद्गु गुणखाणी,
आतमज्ञान विना नहि जगमा साचा साधु,
कपटीओए जगतवृंदने फोली खाधुं,
मन वशमा राखे सदा ने कनक कान्ता परिहरे,
बाह्य किरिया राचता नहि साधु तेवा सुख वरे. ॥ २ ॥

वेश धरीने क्लेश न करता समता दरीया,
ज्ञान ध्यानमा निश्चळ चेतन चित्सुख वरिया,
वेष अने आचार ज्ञानथी साधु परखो,
करो ज्ञानिनुं मान सदा मनमांहि हरखो,
साधु सद्गुरु चरणकमळे, दास जननो भृग छे,
धन्य धन्य ते मुनिवरा जग, ध्यानमा जस रंग छे. ॥३ ॥
समजे नहि निज तत्त्व साधु शु आतम साधे
समजे नहि निज तत्त्व अहो ते धर्म विराधे,
ज्ञान विना किरिया पाखडे जे जन वळग्या,
तेवा साधु मुक्ति पंथथी बहु छे अळगा;
सदुपदेशे सत्यने जे समजावे प्रेमे करी,
बुद्धिसागर सत्य साधु मानवा उलट धरी. ॥ ४ ॥

शुद्धस्वरूपप्रेममां सर्वनी ऐक्यता.

वहचन्दु भक्तिना भाइ नाणा, ए राग

प्रेमथी लागे जगत सहू प्यारुं,
मुज आतम सम जीव धारुं रे, प्रेमथी.

निश्चय नयथी निर्मळ जीव सहु,
नथी जीवोथी तो छेटुं;
शुद्ध स्वरुप प्रेमभूननी खुमारी,
प्रगटयाथी जीव सहु भेटुं रे. प्रेमथी० ॥ १ ॥

दुःखवुं नहि तल भार हुं कोइने,
प्रेमथी लोको निहाळुं;
प्रेमना रसमां लदबद थइने,
पुत्रनी पेठें पंपाळुं रे. प्रेमथी० ॥ २ ॥

प्रेम त्यां शोक नहि, शोक त्यां प्रेम नहि,
प्रेमे जगत सहु सारु;
प्रीतिनी भक्तिमां भूल नहि पडशे,
प्रेम विना सहु खारुंरे. प्रेम० ॥ ३ ॥

आतमना प्रेमथी आत्म समान सहु,
लुखुं लागे छे प्रेम पाखे;
आतमना ज्ञानमां भर्म न भूल छे,
शुद्ध आनंद रस चाखेरे. प्रेम० ॥ ४ ॥

ज्ञानीनो प्रेमरस करे जीवोने वश,
ज्ञानीनो प्रेम शुद्ध सारो;
वृत्ति ठरे छे ठाम आवीने प्रेममां,
ब्रह्म स्वरुप प्रेम धारोरे. प्रेम. ॥ ५ ॥

निन्दादि दोष शुद्ध प्रेमथीज नाशता,
अन्तरनी दृष्टि उघाडे;
गुरुनुं शरण प्रेम पाखे न सांपडे,
शुद्ध स्वरुपने पमाडेरे. प्रेम० ॥ ६ ॥

आतमना प्रेममां लाज न लेश छे,

प्रगटे हृदय शुद्ध देवा;
बुद्धिसागर पीवे प्रेमना प्याला,
मीठा अमृतरस मेवा रे. प्रेम. ॥ ७ ॥

" गुरुस्तुति. "

व्हेचशुं भक्तिना भाइ नाणा,–ए राग.

ज्ञानना दाता गुरुजी उपकारी, नमुं भावे सदाय सुखकारी रे, ज्ञानना०
दया करीने इष्ट तत्त्व बतावी, दीलमांथी तम सहु टाळ्युं,
ब्रह्मस्वरुपनो भेद बतावी, ममतानुं मूळ खूब वाळ्युं रे. ज्ञा० १
आत्मस्वरुपनुं ध्यान करावी, शाश्वत सुख चखाड्युं,
समतासरोवरे आतमहंसनुं, चित्तडुं वेग थकी वाळ्युं रे. ज्ञा० २
उपकार आपनो कदी न विसरुं, समकित दायक स्वामी,
प्रत्युपकार कदी आपनो न थावे, नमन करुंछुं शिर नामी रे. ज्ञा० ३
शरण शरण गुरु त्हारुं सदाय मुज, प्रभुछो प्राण थकी प्यारा,
दया करीने गुरु आशिष देशो, दीलमां वस्याछो गुरु म्हारा रे. ज्ञा० ४
विषयवासना दूर निवारी, आपी अंतर ज्ञानकुंची,
जीवनो शीव गुरु आपे बनाव्यो, करीने जात मुज उंची रे. ज्ञा० ५
जय जय जय गुरु देव कृपाळु, धन्य मनुष्य अवतारी,
बुद्धिसागर गुरु स्मरण करुंछु, वन्दन वार हजारी रे ज्ञानना० ६

शुद्ध स्वरूपविचार.

व्हेचशुं भक्तिनां भाइ नाणां–एराग.

आत्मन् शुद्ध स्वरूप जो विचारी,
जाय मानव भव केम हारी रे. आत्मन्०

लोक अलोकने ज्ञाने प्रकाशे,
शक्ति अनंतनो तुं स्वामी;
थइने पामर केम पडी रह्यो तुं,
अंतर्मां जाग सुखकामीरे. आतमन्. ॥ १ ॥

अन्तरना ज्ञानथी अन्तरना ध्यानथी,
आवशे दुःखनोज आरो;
त्रण भुवननो स्वामी छे देहमां,
परखील्यो प्राण थकी प्यारो रे. आतमन्. ॥ २ ॥

गंजीना ढेरमां अग्निनो कणियो,
बाळे बधीने एकवारे;
चेतनज्ञानथी कर्मनी वर्गणा,
नासे सकल दुःख वारे रे. आतमन्. ॥ ३ ॥

जेम जेम शुद्धस्वरूपे प्रकाशे,
तेम तेम कर्म विनाशे;
ध्यानचरणथी कर्म खरे छे,
अनंत गुणो विकाशे रे. आतमन्. ॥ ४ ॥

भक्ति भलीज भाव आतम देवनी,
आनंदघन तुं ज पोते;
बुद्धिसागर हीरो हाथ चढ्यो छे,
बीजे तुं शीदने गोते रे. आतमन्. ॥ ५ ॥

व्हेंचशु भाइ भक्तिनां नाणां-ए राग.

आतम तमे शक्ति अनंत थकी खीलो,
समता सरोवर झीलो; आतम०

असंख्य प्रदेश मय शास्वत सुखमय,
आलसथी थाय केम ढीलो,
अंतर् उद्यम थकी शुद्ध स्वरूपमय,
कर्मपातक सहु पीलोरे - आतम. ॥ १ ॥
तारा प्रकाशता चंद्र प्रकाशतो,
सूर्य प्रकाश करे भारी;
अनंत ज्ञान थकी सहुने प्रकाशे,
तेजनो तेज तु विचारी रे. आतम. ॥ २ ॥
बाह्यमां सुख नहीं अतरमां सुख छे,
चेतन थाय शुं हठीलो;
ब्रह्मा शंकर हरि आतमराम तुं,
सत्ताए सरस छबीलो आतम ॥ ३ ॥
निज पर दोपना भानने विसारी;
अतरमां थाजे एकीलो,
बुद्धिसागर गुरुवाणी विचारी,
था तुं खतीलो टेकीलो रे आतम. ॥ ४ ॥

आनंदघन.

वहेंचशु भक्तिनां भाइ नाणा-ए राग.

आनंदघन आतमना गुण गाशो, तमे शाश्वत सुखडा पाशो. आनंद
आतमना प्रेमथी आतमना नेमथी, ऋद्धि अनंति कमाशो,
अन्तर प्रदेशमा क्लेश न लेश छे, जागीने झटपट जाशो आनंद १
आतमना देशमा शाश्वत सुख छे, निरंकवंतनोज वासो,
नित्य अनित्य शुद्ध बुद्ध अविनाशी. वैखरीथी केम कलाशो. आनंद २

सत्य स्वरुप ज्यां ताप न लेश त्यां, केवल ज्योतथी प्रकाशो;
बुद्धिसागर गुरु ज्ञाननी घेनमां, निर्भय योगी जणाशो. आनंद. ३

भावना समान संस्कारफल.

व्हेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

भावना जेवी तेवुंज फळ पावो;
जेवुं ध्येय तेवा थइ जावो रे. भावना.
रंकनी भावना रंकनां दुःख दे,
सुखिनी भावनाथी सुखो;
ध्येयस्वरुप दिल थातां शुभाशुभ,
आतममां सुख दुःखो रे. भावना. ॥ १ ॥
शुभाशुभ संस्कार पडे छे दील,
पुण्य पाप भावनाथी;
संस्कारथी मति तेवीज प्रगटे,
लागे खरुज समज्याथी रे. भावना. ॥ २ ॥
दोषो विचारतां दोषोना बीजने,
वावे हृदयमांहि प्राणी;
गुणो विचारतां गुण संस्कारने,
प्रगटावे दीलमां ज्ञानी रे. भावना. ॥ ३ ॥
इयळ भ्रमरी भावना जोरथी,
भृंगी स्वरुप झट पावे;
सिद्ध स्वरुपने ध्याने विचारतां,
सिद्ध बुद्ध पद पावे रे. भावना. ॥ ४ ॥
उच्चने नीच भाइ भावना जोरथी,
थाशो हृदय त्यो विचारी;

बुद्धिसागर सिद्ध ध्येयना ध्यानथी,
सिद्ध स्वरूप जयकारी रे भावना ॥ ५ ॥

ध्यानजीवन.

व्हेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां ए राग.

ध्यानमां नक्की जीवन जीव गाळो,
दोषो सकळ झट टाळोरे ध्यानमां०
संकल्प श्रेणि निवारीने क्षणमां,
वृत्ति चेतनमांहि वाळो;
असंख्यप्रदेशमां चित्त रमावो,
कदी न लेश कटाळोरे. ध्यानमां. ॥ १ ॥
दोषोने खाळवा ने रोगोने टाळवा;
छंडोने क्रोध महा काळो,
सद्गुण दृष्टि धारी हृदयमां,
त्यागो निदानो तो टाळोरे ध्यानमां ॥ २ ॥
सामर्थ्य योगथी ध्यान लगावतां,
रुद्धि अनंत दिल भाळो,
बुद्धिसागर प्रभु ध्यान प्रतापथी,
मुक्ति पुरीमाज म्हालोरे, ध्यानमां ॥ ३ ॥

भक्तिमेवा.

व्हेंचशु भक्तिनां भाइ नाणा-ए राग.

भाळजो भक्तिनो योग खूब भारी,
भक्तिथी भूल ना थनारीरे भक्ति; भाळजो.
भक्तिना भावमां आनद उपजे,

भक्तिनी ओर छे खुमारी.
भक्तिना योगमां एक स्वरुपता,
भक्तिथी सिद्धि थनारीरे. भाळजो. ॥ १ ॥
भक्तिमां भान एक सत्य स्वरुपनुं,
भक्ति छे योग एक मोटो;
ज्ञान विना अरे भक्तिना नामथी,
वाळ्यो प्रपंचीए गोटोरे. भाळजो. ॥ २ ॥
देवगुरुनी भाइ भक्ति कर्याथी,
सहज स्वरुप निज पावे;
निष्काम भक्तिथी शक्ति जगे छे,
जीवनो शिव झट थावेरे. भाळजो. ॥ ३ ॥
कारुण्यभावनाथी जीवोनी भक्ति,
भाव दयाथी तेम धारो;
उपकार बुद्धिथी भक्ति गुरुनी,
तरतमयोगे विचारोरे. भाळजो. ॥ ४ ॥
आतमनुं ध्यान ते भक्ति छेवटनी,
भक्ति ते ध्यान कहावे;
बुद्धिसागर गुरु ध्यान सेवाथी,
केवळ ज्ञान झट थावेरे. भाळजो. ॥ ५ ॥

विषयत्याग.

व्हेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां–ए राग.

आतमा फुली करे शुं फजेती,
जागी ले चित्त मांहि चेतीरे आतमा;
जन्म जरा वळी मृत्युनी नदियो,

चार गतिमाहि वहेती.
चेतो चतुर जीव जलदीज चेतो,
पाणीना पूरथी कहेतीरे आतमा. ॥ १ ॥
बाह्य विषय विष जेवा गणीने,
करशो अंतर गुण खेती,
सुमतिना संगे रगे तो रीजीए,
शाश्वत सुख जे देतीरे. आतमा. ॥ २ ॥
आतमनी धारणा आतमना ध्यानमा,
सुरता सहज भाव रहेती,
बुद्धिसागर गुरु तत्त्वस्वरुपमां,
रहेजो वाणीज एम कहेतीरे आतमा. ॥ ३ ॥

दुनियादारी.

वेहेचशु भक्तिनां भाइ नाणां-एराग

दुनियादारी जरुर दुःखकारी,
चेतो भविक नरनारी रे. दुनिया०
स्वप्न समान मोह मायानी बाजी,
कोइनी कदी न थनारी;
मायामां मुंझी फुली फरे शु,
जाय उमर अरे हारी रे दुनिया. ॥ १ ॥
अंतरना शोधथी अतरना बोधथी,
शाश्वत सुखनी खुमारी,
अन्तर प्रदेशमां ध्याने प्रवेशतां;
सिद्धि समाधि थनारी रे दुनिया. ॥ २ ॥
बाह्य प्रदेशमां मोह मलीनता,

कर्म कलंक बहुभारी;
शुद्धोपयोगथी कर्म खरे छे;
समजो स्वरुप सुखकारीरे. दुनिया. ॥ ३ ॥
स्थिरता चेतनमां थावे जो ध्यानथी,
कर्मकलंक दूर जावे;
बुद्धिसागर गुरुज्ञान प्रतापे,
परम स्वरुप झट पावेरे. दुनिया. ॥ ४ ॥

ब्रह्मरस.

व्हेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-एराग.

ब्रह्मरस भोगी जगत्मांहि योगी,
ब्रह्म भोगे नथी कोइ रोगीरे. ब्रह्म.
ब्रह्मना गानमां ब्रह्मना तानमां,
ब्रह्मना ध्यानमां खुमारी;
ब्रह्मनी ल्हेरमां वैर विरोध जाय,
ब्रह्मानुभव सुखकारी रे. ब्रह्म. ॥ १ ॥
ब्रह्मना भानमां आनंद सत्य छे,
ब्रह्म स्वरुप शुद्ध साचुं;
ब्रह्म विना भाइ जडमां न सुख लेश,
ब्रह्म स्वरुपमांहि राचुं रे. ब्रह्म. ॥ २ ॥
ब्रह्म स्वरुप छे आतमराम देह,
शोधोने ध्यानथी तपासी;
अनंत आतमा ब्रह्मस्वरुपमय,
केवलज्ञानथी प्रकाशीरे. ब्रह्म. ॥ ३ ॥
संग्रहनयथी सत्ताए एकरुप,

व्यक्तिथी भिन्न विचारो;
सापेक्षताथी ब्रह्मस्वरुपने,
जाणीए सत्य आधारो रे ब्रह्म. ॥ ४ ॥
रत्नत्रयिनी रुद्धि विचारो,
ध्यावो परमब्रह्म पोते;
बुद्धिसागर प्रभु ब्रह्मस्वरुपमय,
बीजे तुं शीदने गोतेरे. ब्रह्म. ॥ ५ ॥

सद्गुणदृष्टिभावना.

म्हेंचशु भक्तिनां भाइ नाणा-ए राग.

सद्गुणदृष्टि धरीने सुख लीजे,
गुणिनुं मान बहु कीजे रे. सद्गुण.
सद्गुणिजननुं गान कर्याथी,
प्रगटे छे गुण तेज दीले;
जेवा विचार दिल सस्कार तेवा,
सस्कार फळ मन खीले रे सद्गुण. ॥ १ ॥
कृष्णनी दृष्टि छे कुतराना दतमा,
उज्वलरुपने वखाणे,
सद्गुणदृष्टिथी संस्कार गुणना,
युक्तिथी योग्य जीव जाणे रे सद्गुण ॥ २ ॥
दीवसमां स्त्रीना विचारथीज प्रगटे,
स्वप्रामा स्त्रीज निरखेली;
जेवा विचार संस्कारतोज तेवा,
तत्त्वनी वात आ ठरेली रे सद्गुण. ॥ ३ ॥
विकथा विवादमा दोप विचारथी,

संस्कार दोषीं पडे छे;
आकृतिवत् प्रतिबिंब दर्पणमां,
शोध्याथी सत्य जडे छे रे. सद्गुण. ॥ ४ ॥
गुणनी छे आदिने दोषो अनादि,
जेवो विचार दील तेवुं;
सद्गुणदृष्टिथी गुणो खीले छे,
सत्य विचारीने लेवुं रे. सद्गुण. ॥ ५ ॥
जेवुं मनन तेवी धारणा थाय छे,
स्मृति छे धारणाथी तेवी;
विषयवासना स्मृतिनुं कारण,
प्रथमज धारणा लेवी रे. सद्गुण. ॥ ६ ॥
दृष्टि समानज विचारो तो थाय छे,
सद्गुणदृष्टि भली छे;
सद्गुणदृष्टिथी गुणोनी भावना,
दृष्टि सज्जनने मळी छे रे. सद्गुण. ॥ ७ ॥
जेवो अभ्यास तेवी दृष्टि खीले छे,
जोशो हृदयमां विचारी;
गुणोनी भावना भाव वधारे,
अभ्यास भावना सारी रे. सद्गुण. ॥ ८ ॥
खोळामां ललना ने पुत्री वे बेसे,
दृष्टिथी भावनाज न्यारी;
दृष्टिनी भावना पाडी पडे छे,
समजो हृदय नरनारी रे. सद्गुण. ॥ ९ ॥
सद्गुण भावना दृष्टि खीलावो,
उच्च जीवन अधिकारी;

बुद्धिसागर गुरुभावना ब्रह्मनी,
परमस्वरुप जयकारी रे. सद्गुण. ॥ १० ॥

॥ विचारीने सर्व करवुं. ॥

व्हेंचशु भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

बोधथी बोलो विचारी सुधारी,
लखो लेखोने पहेलां विचारीरे. बोधथी,
नात जात वाटमां विचारी बोलीए,
विचारे वात थाय सारी.
विचारी बोलतां शोक न सपजे,
थाशे न मोटी खुवारीरे. बोधथी. ॥ १ ॥
विचारी चालीए विचारी म्हालीए,
विचारी वेसीएज ठामे,
विचारी खोलीए वातो हृदयनी;
कीर्ति जगत्माहि जामेरे. बोधथी. ॥ २ ॥
विचारी उठवुं विचारी उंघवु,
शिक्षा विचारीने दीजे;
द्रव्य ने काल भाव क्षेत्र विचारी,
कृत्यथी झट सुख लीजेरे बोधथी ॥ ३ ॥
विचारी पूजीए विचारी झुझीए,
विचारी पाटनेज मूको,
पस्तावुं पाछळथी पडशे न भाइओ,
चतुर चित्तमां न चूकोरे. बोधथी. ॥ ४ ॥
विचारी शोधीए विचारी वोधीए,
विचारे भूल ना थनारी,

धर्मविचारमां सुख सदाय छे,
पापे तो दुःख थाय भारीरे. बोधथी. ॥ ५ ॥
विचारी खाइए विचारी गाइए,
विचारी ध्याइएज देवा.
विचारी जोइए विचारी रोइए,
विचारी कीजीएज सेवारे. बोधथी. ॥ ६ ॥
विचारी बाळवुं विचारी खाळवुं,
विचारी टाळवुं नठारुं;
विचारी पाळवुं विचारी हालवुं,
विचारी कीजीएज सारुरे. बोधथी. ॥ ७ ॥
विचारी दोडीए विचारी छोडीए,
विचारी त्यागीएज खोटुं;
विचारी दीजीए विचारी लीजीए
विचारे काम थाय मोटुं रे. बोधथी. ॥ ८ ॥
विचारी टेक नेक कीजे वदीजे,
विचारे काम थाय रुडुं;
विना विचारथी नफामां खोट छे;
विना विचारथीज भूंडुं रे. बोध. ॥ ९ ॥
विचारी वातने जावुं सभामां,
समजो सज्जन नरनारी;
बुद्धिसागर गुरु तत्त्वविवेके;
शाश्वत सिद्धि थनारी रे. बोध. ॥ १० ॥

धर्मनी सज्झाय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा-एराग.

रे जीव धर्मने धारीए, वारीने मोहमाया,
हुं ने मारु फोक छे, पाणीना पडछाया. ' रे जीव ॥ १ ॥
पृथ्वी थइ नहि कोइनी, गाडी वाडीने लाडी;
भ्रान्तिमां भटके अरे, पडियो मोह खाडी; रेजीव. ॥ २ ॥
जेवी सन्ध्या वादळी, जलमध्य पतासा,
कायानी माया तेहवी, दर्पणगत छाया. रेजीव. ॥ ३ ॥
पूर नदीनुं जेहवुं, जेवी स्वप्नानी सृष्टि,
झांझवाना जल जेहवी, जूठ मोहनी दृष्टि रेजीव. ॥ ४ ॥
पुद्गल वाजाथी भिन्न तु, शुद्ध चेतनराया,
बुद्धिसागर जागता नर, रत्न कमाया. रेजीव. ॥ ५ ॥

॥ परम प्रभु गान. ॥

नाथ कसे गजको वन्ध छोडायो-ए राग

परम प्रभु अन्तर आतम परखो, ध्याने जोइ जोइ हरखो परम.
दर्शन ज्ञान चरण गुण धारी, शुद्ध बुद्ध अविकारी,
शक्ति अनंति स्थिरता योगे, प्रगटे छे जयकारी. परम ॥ १ ॥
आपो आप विचारे प्रगटे, व्यक्ति स्वरुप विलासी,
शोधो वोधो आतम देवा, त्या छे गगा काशी. परम ॥ २ ॥
आतम अनुभव निश्चय स्थिरता, प्रगटावो सुखकारी,
हरिहर ब्रह्मा इश्वर पोते, तरतम योग विलासी. परम. ॥ ३ ॥
षड् दर्शननो झगडो भागे, भेद ज्ञान झट जागे,
शुद्ध स्वरुपे रहेतो रागे, पर परिणतिने त्यागे. परम. ॥ ४ ॥

ध्यावो गावो आतम देवा, सुख कर करशो सेवा,
बुद्धिसागर अनुभव मेवा, ध्याने झटपट लेवा. परम. ॥ ५ ॥

चिद्घनगान.

व्हाला वीरजीनेश्वर–ए राग.

प्यारा चिद्घन चेतन शुद्ध स्वरुप तत्र धारजोरे,
पामी हीरो हाथे अलबेला नहि हारजोरे;
निराकार निःसंगी ज्ञानी, अनंत दानादिकनो दानी,
दिल आदर्शे चिदानंद अवधारजोरे. प्यारा. ॥ १ ॥
उपशम क्षयोपशमनी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति,
निश्चल ध्याने पोताने झट तारजोरे. प्यारा. ॥ २ ॥
अलख खलकमां साचो समजो, सुरताथी स्हेजे त्यां रमजो,
विषय विकारो वेगे दीलथी वारजोरे. प्यारा. ॥ ३ ॥
कर पोतानी प्रेमे भक्ति, खीलवजे तुं निजगुण शक्ति,
चेतन चेती झटपट कर्म कलंक विदारजोरे, प्यारा. ॥ ४ ॥
अलबेलो साहिब तुं प्यारो, पोताने पोते ध्यानारो,
बुद्धिसागर परम प्रभु संभारजोरे. प्यारा. ॥ ५ ॥

श्रीयशोविजयजीस्तुति.

व्हाला वीर जीनेश्वर–ए राग.

व्हाला यशोविजयजी व्हेला दीलमां आवजोरे,
जाणी बाळक त्हारो करुणा दीलमां लावजोरे,
अपूर्व ज्ञानी धर्मधुरंधर, वाणी सारी छे शिव सुखकर,
तुज वाणीनो शुद्धाशय बतलावजोरे. व्हाला. ॥ १ ॥

तव पुस्तक साचां में परख्यां, रोम रोम प्रेमे सहु हरख्यां,
म्हारा हृदय समुद्रे प्रवेश मुज करावजोरे. व्हाला. ॥ २ ॥
सात नयोना ज्ञाता पूरा, नहि को वाते प्रभो अधुरा,
तुज ग्रन्थोनो बोध हृदयमां ठावजेरे. व्हाला. ॥ ३ ॥
तुज भक्तिथी सत्य निहाळुं, विषय विकारो वेगे टाळुं,
वाचक दीनबंधो तुं सेवक स्हाये धावजेरे. व्हाला. ॥ ४ ॥
अनेकान्त मतना प्रभु ज्ञाता, अनेकान्त आतमना ध्याता,
बुद्धिसागर करुणा दिल प्रगटावजोरे. व्हाला. ॥ ५ ॥

अन्तरमां सुख.

व्हाला वीरजीनेश्वर–एराग.

खरेखर सत्य सुख छे अतरमां अवधारजेरे,
साचुं समजी व्हाला विषय विकारो वारजेरे;
माटीनी मानी जे रुद्धि थाशे नहि तेथी कंइ सिद्धि,
व्हाला समजी वेगे अतर्धनने धारजेरे खरेखर ॥ १ ॥
बाह्य विषयमा सुखनी आशा, मोह बुद्धिना जाण तमासा,
व्हालम समजी साचु जीवन व्यर्थ न हारजेरे. खरेखर. २
जे जे अंशे स्थिरता धारे, ते ते अंशे धर्म वधारे,
तारक भवजलधिथी पोताने झट तारजेरे खरेखर. ॥ ३ ॥
सामग्री पामीने चेतो, चेते ते शिव सुखने लेतो;
वाल्हम शुद्ध स्वरुप तारु ते टील विचारजेरे. खरेखर ॥४॥
प्रगटे छे उद्यमथी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति,
वाल्हम बुद्धिसागर पोताने सभारजेरे. खरेखर. ॥ ५ ॥

आत्मोपयोग.

व्हाला वीर जीनेश्वर-एराग.

व्हाला हरतां फरतां ब्रह्म स्वरुपने ध्यावजेरे;
निश्चय अंतर्धनमां श्रद्धा साची लावजेरे;
विषय विचारो दूर हठावी, मनमां अन्तर्यामी भावी,
चेतन अनंत लक्ष्मी क्षायिक भावे ठावजेरे. व्हाला. ॥ १ ॥
चित्तवृत्ति अंतरमां स्थापी, थाजे निश्चय निजगुण व्यापी,
असंख्य प्रदेशी घरमां व्हेलो आवजेरे. व्हाला. ॥ २ ॥
भजवी भावे निजगुण भक्ति, खीलववी चिद्घननी शक्ति;
प्रेमी उद्यमथी तुं ब्रह्म स्वरुपने पावजेरे. व्हाला. ॥ ३ ॥
ब्रह्मज्ञानथी भागे झघडो, दूर रहेशे मायानो वगडो;
वाल्हम मोहादिक शत्रुने दूर हठावजेरे. व्हाला. ॥ ४ ॥
अन्तर्यामी चिद्घन परखी, पामी हीरो लेजे हरखी;
बुद्धिसागर सोऽहं गायन गावजेरे. व्हाला. ॥ ५ ॥

चेतवणी.

व्हाला वीर जनेश्वर-एराग.

चेतन चतुर थइने मोहे शुं मुंझाय छे रे;
खरेखर धन दाराथी कदी न शांति थाय छे रे,
माया ममताथी शुं फूले, बाह्य दृष्टिथी भवमां झूले;
समजु धोळे दहाडे शुं चउटे लुंटायछेरे. चेतन. ॥ १ ॥
अवसर मळीयो शीदने चूके, गद्धानी पेठे शुं भूंके;
अरे जीव मळीयुं टाणुं शीदने हारी जाय छे रे. चेतन. ॥२॥
अर्क तणां आकुलां जेवां, तन धन योवन मन छे तेवां;
हीरो हाथे चढीयो चूकी क्यां भटकायछेरे. चेतन. ॥३॥

चेतचेत आतम तुं चटपट, दूर करी दुनियानी खटपट;
प्रेमे बुद्धिसागर सद्गुरु संगत स्हायछेरे;
पामी अंतर्धनने आतम तो हरखायछेरे चेतन. ॥ ४ ॥

" अमूल्य शिक्षा "

व्हाला वीर जीनेश्वर-एराग

सुखकर अमूल्य शिक्षा मानवी होय तो मानवीरे,
फीकरनी फाकी करीने फकीर होय तो फाकवीरे;
मौन विना मुनिवर ते शानो ? दान कर्या वण शानो दानो ?
छबीलो होय तो दिलमां सत्य वातने छापवीरे. सुख० ॥ १ ॥

न्याय विना राजा नहि दीपे, तृपा छीपे नहि समुद्र टीपे,
धर्म विना नहि सुखनी वात पिछानवीरे सुख० ॥ २ ॥
नाक विना शोभे नहि काया, शोभे शुं ? तरुवर विण छाया,
धर्म विना तेवी जींदगानी जाणवीरे. सुख० ॥ ३ ॥
अक्कल वण जेवी छे शक्कल, मेघविना शोभे नहि मरुस्थळ,
धर्म विना तेम भूंडी वेळा भाळवीरे सुख० ॥ ४ ॥
हळी मळी आनदे चालो, बोल्युं तेतु निश्चय पाळो;
रसने निंदाथी राखो रसनाने जाळवीरे. सुख० ॥ ५ ॥
देश वेप ने कदीन त्यागो, अन्तरना उपयोगे जागो;
बूरी परनी वातो दूर थकी ते वाळवीरे सुख० ॥ ६ ॥
जननी जुओ न वाजु काळी, अवगुण दृष्टि टेवो टाळी;
जीवन वेळा सर्वे सज्जन साथे गाळवीरे. सुख० ॥ ७ ॥
नीतिनी रीतिमा भीती, धर्म करंतां कदी न भीति,
वेगे वेळा सारी ब्रह्मज्ञानथी वाळवी रे सुखकर० ॥ ८ ॥
सर्वे कार्यमां राखो समता, उत्तम सज्जन सहेजे नमता,

बोली वाणी भव्यो प्राण पडे पण पाळवी रे. सुख० ॥ ९ ॥
साचुं ते जाणो मन मारुं, जूठाने करशो झट न्यारुं;
बुद्धिसागर हित शिक्षा, दिल लाववी रे. सुख० ॥ १० ॥

ध्यान प्रेरणा.

माढ राग.

ध्याने सुख भरपूर रे, जीव ध्याने सुख भरपूर,
वाजे मंगळ तूर रे, जीव ध्याने सुख भरपूर;
परा पश्यंति मध्यमारे, वैखरीथी भिन्न;
हृदय कमळमां ध्यानथी रे, होवे छे त्यां लीन रे. जीव० ॥ १ ॥
मर्मस्थानमां जाणीए रे, असंख्य प्रदेशो भव्य;
मन संयम ते स्थानमां रे, जाणो शुभ कर्तव्य रे. जीव० ॥ २ ॥
षट चक्रोना स्थानमां रे, असंख्य प्रदेशो होय;
ध्यान करो त्यां तेहनुं रे, शक्ति प्रकाशती जोय रे. जीव० ॥३॥
षट चक्रोना स्थानमां रे, कमळ वर्णनो रे न्यास;
तेमां मनडुं स्थापवुं रे, सालंबन ते खासरे. जीव० ॥ ४ ॥
प्रणवादिक सालंबने रे, लब्धि प्रगटती देख;
केवळ आतम ध्यानथी रे, चिद्घन निर्मळ लेख रे. जीव० ॥५॥
पगथी मस्तक व्यापीने रे, आतमनो छे वास;
क्षयोपशमनी भिन्नता रे, ध्याने प्रगटे खासरे. जीव० ॥ ६ ॥
पर कर्ता हर्ता कह्यो रे, परना ध्याने जीव;
निज कर्ता निज ध्यानथी रे, होवे जीवनो शीव रे. जीव० ॥७॥
पुद्गळमां व्यापो प्रभु रे, असंख्य प्रदेशी देव;
शक्ति अनंति साहिबो रे, करे पोतानी ते सेव रे. जीव० ॥ ८ ॥
अनंत देहोने रचीने, छोडयां छे दील जाण;

देह सृष्टि वर्तमाननी रे, कर्ता तेनो पिछान रे. जीव० ॥ ९ ॥
देह सृष्टि रचना करे रे, राग द्वेषना योग;
राग द्वेषना नाशथी रे, सृष्टि देह वियोग रे. जीव० ॥ १० ॥
सृष्टि कर्ता नहि हुवे रे, निर्मळ इश्वर देव,
राग द्वेपाभावथी रे, बने न एवी टेवरे. जीव० ॥ ११ ॥
राग द्वेष सद्भावथी रे, इश्वर नहि कहेवाय;
शुद्ध इश्वर निर्मला रे, सृष्टिना कर्ता न थाय रे. जीव० ॥ १२ ॥
सहु जीवो परमातमा रे, सत्तायी कहेवाय;
ध्याने कर्म विनाशथी रे, सिद्ध सदा परखाय रे. जीव० ॥१३॥
पिंडस्थादिक ध्यानथी रे, ध्यावो आतम राय;
बुद्धिसागर गुरु लही रे, केवळ कमला पाय रे. जीव० ॥ १४ ॥

" आत्मध्येय. "

माढ राग

प्रगटे आतम भान रे, दील प्रगटे छे भगवान्,
होवे जब एक तान रे, दील प्रगटे छे भगवान्
आत्म प्रदेशो ध्यावता रे, शक्ति प्रगटे सर्व,
ध्यान क्रिया अभ्यासथी रे, नासे मिथ्या गर्व रे. दि० ॥१॥
अगम अगोचर वस्तुनो रे, वीरला पामे पन्थ,
गुरुगम वण केइ प्राणिया रे, थाक्या भणीने ग्रन्थ रे. दि० ॥२॥
ज्ञानविना श्रद्धा नही रे, श्रद्धा वण शी सेव;
अनेकान्त नय योगथी रे, सेवो आतम देवरे दि० ॥३॥
उपयोगे आतम भजो रे, असंख्य प्रदेशी राय,
सहज समाधि सपजे रे, अतर सुख परखाय रे. दिल ॥४॥
शक्ति अनंति शाश्वती रे, प्रगटे नासे रोग;

आपो आपें विचारतां रे, पामे सुखनो भोग रे. दिल. ॥५॥
ज्ञेय ज्ञान दो भाव छे रे, सामान्य अने विशेष;
शुद्ध ज्ञानथी जाणतां रे, लहीये निर्मळ देश रे. दिल. ॥६॥
सेवो ध्यावो आतमा रे, प्रगटे छे सुख पान;
बुद्धिसागर ज्ञानथी रे, सोऽहं गावो गान रे. दिल. ॥७॥

परास्थिति प्रेरणा.

सुण आतमा परापश्यंति, मध्यमाथी निजने वाल्हम जाणजे;
मध्यमा विचार बलथी, शुद्ध श्रद्धा आणजे सुण. ॥
शुद्ध सत्ता परम इश्वर, देव तुं छे देहजी.
भावनाथी व्यक्ति रुपे, थावे गुण गण गेहरे. सुण. ॥ १ ॥
दीनतादि भाव त्यागी, भावो शुद्ध स्वभावजी;
सत्य भावे सत्य प्रगटे, विणसतो परभावरे. सुण. ॥ २ ॥
शुद्ध रटना नेमथी तुं, दर्शन आपे देवजी;
पोताने तुं ध्यावतो ने, पोते तुं छे देवरे. सुण. ॥ ३ ॥
परम आत्म स्वरुपमां तो, आनंद अपरंपारजी;
ओळखतां निजरुपने झट, नासे मिथ्याचाररे सुण. ॥ ४ ॥
खेल खेले नव नवातुं, ज्ञान ज्ञेय स्वरुपमां;
अलख इश्वर नित्य तुं छे, शुद्ध भक्ति रुपमां. सुण. ॥ ५ ॥
रुपारुपी तुं प्रभु छे; सत्य तारुं व्हालजी;
प्रेमीनो पण प्रेमी साचो, सत्य धन संभाळरे सुण. ॥ ६ ॥
जाग चेतन जाग चेतन, केम करतो वारजी;
तुज विना नहि चेन दिलमां, सारमां तुं साररे. सुण. ॥७॥
पंच परमेष्ठि प्रभु पण, आतमथी पूजायरे;
बुद्धिसागर ज्ञान वातो, समजुने समजायजी. सुण. ॥ ८ ॥

चेतनदर्शन.

जीव जोइले निज रुपने झट शुद्ध परखी तत्त्वनिश्चय धारजे,
संसार छे पण नास्तिभावे आतममां अवधारजे. जीव०
भान भूली मनमां फूली, झुल्यो सहु ससारजी,
भूतकालिक विषय भूली, मोह निंद्रा वाररे. जीव. ॥१॥
आतमहीरो हाथ आव्यो, देखीने तुं देखजी,
मोहबाजी त्यां शुं राजी, प्रेमथी झट पेखरे. जीव. ॥२॥
खुदा विष्णु राम तुं छे, अर्थभेदें भेदजी,
शब्दभेदे अर्थ एके, अनेकान्तनय वेद रे. जीव. ॥३॥
स्याद्वादभावे सत्य जाणी, सेवीए आतमरामजी,
ब्रह्म गुण आधार आतम, ब्रह्मनुं ते धामरे जीव. ॥४॥
एकनयथी दृष्टिभेदे, भेद प्रगटे जाणजी,
स्याद्वाद समज्या विन जगमां, धर्म ताणंताणरे जीव ॥५॥
चित्तवृत्ति स्थिरतायी, आतमभक्ति थायजी,
आतम ते परमातमा छे, ध्यानथी परखाय रे जीव ॥६॥
आनंदल्हेरो ऊछळेजी, ध्यानसागरमांहिजी,
ज्ञान दर्शन चरण स्थिरता, एकचित्त प्रवाहरे. जीव.॥७॥
ध्यान सरवर हंस खेले, आनंद अपरंपारजी
बुद्धिसागर भक्तिभावे, थयो सफल अवताररे. जीव ॥८॥

" गुरुशरण "

गुरुशरणथी जीव जागजे झट मोह माया क्लेश निंद्रा वारजे,
गुरुचरणनी सेवनाथी आतमने अरे तारजे. गुरु०
गुरुकृपा वण जीवडा अहो, ठरे न एके ठामजी,

गुरुकृपाथी ज्ञान ठरतुं, होवे गुणगण धाम रे. गुरु.॥१॥
गुरुकृपाथी चित्त निर्मळ, पेखे शास्वत पन्थजी;
गुरुकृपा विण तत्त्व नहि छे, वांचे लाखो ग्रन्थ रे. गुरु.॥२॥
गुरुकृपाथी दुःख नासे, आनंद अपरंपारजी;
गुरुकृपाथी आत्मदर्शन, अनेकान्त मत प्यार रे. गुरु.॥३॥
गुरुकृपाथी देवदर्शन, भासे आतम ज्योतजी;
गुरुकृपाथी श्रुतवाणी, समजतां उद्योतरे. गुरु.॥४॥
गुरुमहिमा मेरु सम छे, कहेतां नावे पारजी;
बुद्धिसागर गुरुकृपाथी, सफल छे अवतार रे. गुरु.॥५॥

अनंतज्ञानभंडार आत्मा.

झूलणा.

रुद्धि सिद्धि धणी चेत चेतनमणि,
ज्ञानने ज्ञेयरुपे सुहायो;
ज्ञेयथी भिन्न तुं ज्ञानथी भिन्न नहि,
आतमा ज्ञेयरुपे कहायो. रुद्धि० ॥ १ ॥
ज्ञेयथी भिन्न नहि ज्ञानपर्यायथी,
ज्ञानथी सर्व सापेक्षयोगे;
ज्ञान ते धर्म छे मुख्य लक्षणपणे,
ज्ञान वण आतमा दुःख भोगे. रुद्धि. ॥ २ ॥
केवलज्ञानथी सिद्धिना शर्ममां,
आतमा झीलतो तत्त्वयोगी;
ज्ञान वण आंधळो जीव समजे नहि,
आतम रुद्धि थकी छे वियोगी. रुद्धि. ॥ ३ ॥
नित्य अभ्यासथी ज्ञानशक्ति वधे,

केवल ज्ञान अंते प्रकाशे,
प्रेमउत्साहथी वीर्य शक्ति जगे,
वीर्य शक्ति अनंति प्रभासे   रुद्धि. ॥ ४ ॥
योग उद्योगथी मुक्ति सोपानमा,
आतमा धैर्यथी पाद मूके,
प्रेमथी भावना भावता आतमा,
कदी नही धैर्यथी भव्य चूके.   रुद्धि. ॥ ५ ॥
शक्तिना योगथी व्यक्ति शुद्धि जगे,
सत्य आनंदनी घेन आवे;
भक्ति विश्वासथी आतमा उच्च छे,
शुद्ध अभ्यासथी दुःख जावे   रुद्धि ॥ ६ ॥
जागीये क्षण क्षणे लागीए ध्यानमा.
बाह्य संसर्ग सर्वे निवारी;
शुद्ध चैतन्यना रूपमा राचवु,
आतमा जाणजो शक्तिधारी   रुद्धि. ॥ ७ ॥
उद्यमा उच्च तुं रायनो राय तु,
जागजे दीनता भाव टाळी,
आत्मना प्रेममा परम ईश्वर प्रभु,
जागजे चित्तने ध्यान वाळी.   रुद्धि. ॥ ८ ॥
जागजे आतमा जागजे आतमा,
शुद्ध उपयोगथी ध्यान धारी,
बुद्धिसागर सदा जागजे ध्यानथी,
शक्तिउत्साहथी मुक्ति सारी.   रुद्धि. ॥ ९ ॥

अन्तरसुख.

माढराग.

अंतरमां साचुं सुखरे, अहो बाह्यविषयमां दुःख;
सुत होवे न वंध्याकूखरे, कदी भागे न स्वप्ने भूख,
अनंतसुख गुण आतमा रे, चिद्घन चेतनराय;
अंतरना उपयोगथी रे, सत्यानंद कहाय रे. अंतरमां. ॥१॥
बकवादी केइ बहु बके रे, गप्पां मारे लाख;
गाडी वाडी लाडीमां रे, अंते राखनी राख रे. अंतरमां. ॥२॥
मारु तारु मानीने रे, भटके शुं परदेश;
विषयवासनाजोरथी रे, क्षणक्षण प्रगटे क्लेश रे. अंतरमां. ॥३॥
साचुं सुख न संपजे रे, विषय प्रतीते दील;
समजी साचुं साहिबा रे, समतागंगमां झील रे.अंतरमां.॥४॥
निर्मलज्योति झगमगे रे, करतां आतमध्यान;
अनुभवामृत चाखीए रे, वर्ते साचुं भान रे. अंतरमां. ॥५॥
गगनगढे जइ म्हालवुं रे, पासी निर्भय देश;
क्षायिकभावे देशमां रे, लेश न वर्ते क्लेश रे. अंतरमां. ॥६॥
चेतन ध्याने रीजीए रे, कीजे दिल विश्वास;
तैलनी धारा जेहवी रे,ध्याननी संततिवास रे.अंतरमां.॥७॥
अनेकान्तनय ओळखी रे, सेवो ध्यावो देव;
बुद्धिसागर प्रेमथी रे, कीजे आतमसेव रे. अंतरमां. ॥८॥

राजयोग.

माढ राग.

मनआनंद सत्य सुहायरे बहु, आनंद सत्य सुहाय;

वैखरीथी केम कहायरे. मन

यम नियम आसन करी रे, प्राणायाम अभ्यास;

प्रत्याहार धरी धारणा रे, ध्याने थयो विश्वासरे. मन.॥१॥

अध्यातमज्ञाने करी रे, शुद्ध चरणमां स्थिर,

सत्यसमाधि ते वरी रे, थयो छे चेतन धीर रे. मन.॥२॥

क्षयोपशमज्ञाने करी रे, चेतन ध्यान कराय;

स्थिरतायोगे संपजे रे, आत्मसमाधि को पाय रे. मन ॥३॥

अनेकान्तनयवादथी रे, नासे भ्रान्ति दूर,

आपोआप विचारतां रे, वागे मंगल तूर रे. मन.॥४॥

आतमअनुभव ज्ञानथी रे, नासे मिथ्या क्लेश,

चेतन शुद्धोपयोगथी रे, होवे जीव परमेशरे. मन ॥५॥

सहजयोग सद्गुरुथी खरो रे, उपदेशे छे जिन,

देश सर्व विरति थकी रे, आतम होवे पीन रे मन ॥६॥

उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक, भावे साचो धर्म,

साधन साध्यस्वरुप छे रे, टाळे सघळां कर्म रे. मन.॥७॥

नवतत्त्वादिक ज्ञानथी रे, प्रगटे छे उपयोग;

सहज रमणता योगथी रे, प्रगटे क्षायिकभोग रे मन ॥८॥

ज्ञानोद्यमथी साधना रे, करवी धरी उमंग;

शाश्वतसिद्धिसुखनो रे, अनुभव आवे अगरे मन.॥९॥

अंतरमां निश्चय धरी रे, चाले जे व्यवहार,

चढते भावे संपजे रे, शाश्वतसिद्धि उदार रे. मन.॥१०॥

आत्मिकशुद्ध स्वभावनो रे, प्रगटे धर्म अनंत,

शांति आतमना खरी रे, भाखे वीर भदंतरे. मन.॥११॥

सेवो ध्यावो आतमा रे, आतम सिद्धस्वरुप,

आतमध्याने आतमा रे, टाळे भवमय धूप रे. मन॥१२॥

जाणो देखो आतमा रे, लोकालोकनो भाण;
बुद्धिसागर योगथी रे, कोटि होय कल्याण रे. मन.॥१२॥

योगरहस्य.

माढ राग.

भरपूर आनंद आजरे, घट भरपूर आनंद आज,
राखी गुरुए लाजरे. घट.
सकल तीर्थस्वामी लह्योरे, गइ उपाधि दूर,
समतासरोवर झीलतोरे, हंसलो आनंदपूररे. घट. ॥ १ ॥
गंगा यमुना सरस्वतिरे, पामी तेनो भेद,
पिंडमां परगट पेखतांरे, जात भात नहि वेदरे. घट.॥ २ ॥
अंतर ज्योति झगमगीरे, नाठी मिथ्या रेन,
अजपा जापे जागतांरे, प्रगटी साची घेनरे. घट. ॥ ३ ॥
जे जेनुं ते भोगवेरे वस्तुस्वरूपे एम,
चिदानंद परमातमारे, जय जय मंगळ क्षेमरे. घट. ॥ ४ ॥
केवलज्ञानी आतमारे, अजरामर सुखकार,
अनंतज्ञाने मुक्तिमांरे, वर्ते छे निर्धाररे. घट. ॥ ५ ॥
रेचक पूरक भावथीरे, कुंभक टाळे कर्म,
अन्तर्यामी ओळखेरे, नासे मिथ्या भर्मरे. घट. ॥ ६ ॥
तीर्थंकरनी वाणीथीरे, परमरूप परखाय,
वस्तुस्वरूप नहि अन्यथारे, लडालडी केम थायरे. घट. ७
सागरमां सघळी नदीरे, मळती खरखर आय,
जिनदर्शनमां जाणजोरे, दर्शन सर्व समायरे. घट. ॥ ८ ॥
जैन अने जिन आतमा रे, षड्दर्शनमां सर्व;
सघळी दुनिया जैन छे रे, जाणे नासे गर्व रे. घट. ॥ ९ ॥

राग द्वेष जीत्या थकी रे, होवे सघळा जिन,
जिनउपासक जैन छे रे, जाणी न थावो दीन रे. घट. ॥१०॥
हर रेचक कुंभक हरि रे, ब्रह्मा पूरकरुप,
द्रव्यभाव बे भेदथी रे, प्राणायामस्वरुप रे घट. ॥ ११ ॥
स्याद्वाद समज्या विना रे, दुनिया सहु कूटाय;
आतमज्ञान विना कदी रे, भेदभाव नहि जायरे. घट ॥१२॥
वैखरी वाणी शुं कहे रे, चिन्मय चेतन खास,
परा पश्यंति पामीने रे, प्रगटे साचो भास रे. घट ॥ १३ ॥
साकर सरिता जळ मळीने, तन्मयताने पाय,
बुद्धिसागर धर्मथी रे, आपोआप समाय रे. घट ॥ १४ ॥

जाहेरचेतवणी.

मुखडा क्या देखे दर्पणमें-ए राग

जीवडा चेती ले तुं मनमा, भटके शुं भववनमां जीवडा.
अमृतने त्यागी चेतन तु, नाहक मूरख बन मा;
विषयपिपासा, विषमम तेने, अमृत मूरख गण मा. जीवडा १
पुद्गलनी इच्छाने छंडो, मुंझे शुं परधनमां,
बुद्धिसागर अन्तर शोधो, व्याप्यो चेतन तनमा जीवडा. २

प्रभातभावना.

प्रभाती राग.

करुणा करजे सर्व जीवोपर, भाव दया चित्त धारी रे;
सत्ताए छे सिद्ध समा जीव, अंतरमां अवधारी रे.
करुणा० ॥ १ ॥
सर्व जीवोनुं सारु इच्छो, तेथी उन्नत थवाने रे;

वीर प्रभुए फणीधर बोध्यो, कर्मकलंक कटाशे रे. करुणा. २
अशुभ विचारो सर्व निवारी, निज पर उन्नति कीजे रे;
उच्चजीवन वधशे निशदिन जग, शाश्वतसुख घट लीजे रे.
करुणा. ॥ ३ ॥

मन वाणी कायाथी करीए, परनुं सारु जगमां रे;
सन्तजनोने भाव दयामय, धर्म वस्यो रगरगमां रे. करुणा. ४
उत्तम जीवन आज दीवसथी, जिनवर हेते थाशो रे;
बुद्धिसागर चिन्मय चेतन, मंगल कमला पाशो रे. करुणा. ५

गुरुस्तवनम्.

प्रणमुं सद्गुरुना पदपंकज, जेणे जणाव्यो धर्मरे,
षड् द्रव्योनुं स्वरुप बताव्युं, टाळ्यो मिथ्या भर्मरे,
ए उपकार गुरुनो न भूलुं, संभाळुं दिन रातरे,
समकित दायक महा उपकारी, मात पिता मुज भ्रातरे ए १
नव तत्त्वादिक बोध करीने, सत्य बताव्युं स्वरुपरे,
सप्त नयोथी धर्म जणावी, टाळ्यो भवभय धूपरे. ए ॥ २ ॥
सप्त भंगथी तत्त्व बतावी, संशय टाळ्या सर्वरे,
आतमना त्रण भेद जणावी, टाळ्यो मिथ्या गर्वरे, ए ॥ ३ ॥
चार निक्षेपे छे सहु वस्तु, वस्तु छे स्याद्वादरे,
सत्य ज्ञानथी सत्य प्ररुपी, टाळ्यो वाद विवादरे ए. ॥ ४ ॥
षड् दर्शनमां सत्य खरेखर, जिनदर्शन जयकार रे;
जिनदर्शन स्पर्शनना योगे, आनंद अपरंपार रे. ए. ॥ ५ ॥
चार प्रमाणे जिनदर्शनने जाण्युं जगमां सत्य रे;
शुद्ध स्वभावे निजवर्तननुं जाण्युं सहु कर्तव्य रे. ए. ॥ ६ ॥
संशय सघळा दूर करीने, समकित आप्युं रत्न रे;

परंपरागम पन्थ बतावी, ग्रहण कराव्यो यत्न रे. ए ॥ ७ ॥
कुंची वण जेम ताळुं न खूले, गुरुगम विण तेम धर्मरे,
गुरुगम वण जे पामर प्राणी, पामे नहि शिव शर्मरे ए. ॥ ८ ॥
षड्दर्शनना भेद बतावी, शुद्ध कह्या परमार्थरे,
अन्तर्धनने शुद्ध जणावी, हेय कह्यो बाह्यार्थरे. ए. ॥ ९ ॥
क्षयोपशम, उपशम ने क्षायिक, औदयिकना जे भेदरे,
पारिणामिक रुप बतावी, टाळ्यो मिथ्या खेदरे. ए. ॥१०॥
आपपसाये आतमस्वरुपे, स्थिरता थावो बेशरे,
बुद्धिसागर सद्गुरु गाने, आनंद होय हमेशरे. ए. ११ ॥

सारी शिक्षा.

मुखडा क्या देखे दर्पनमें-ए राग

शिक्षा धारी ले मन सारी—खटपट सर्वे वारी शिक्षा-
विकथा निन्दामा जीवलडा, उम्मर जावे हारी,
लक्ष्मी ललनानी लालचमा, कर्म करे शुं भारी. शिक्षा. ॥१॥
हुने मारुं जडमां मानी, सत्य न वात विचारी,
मायानी लटपटमां मूरख, धर्मवात नहि धारी. शिक्षा. ॥२॥
ज्ञानवात तो दील न गमती, प्यारी घेवर घारी,
दुनियामां स्वारथना सगपण,दुनिया दु खनी कयारी.शिक्षा. ३
करजे मुनिवर गुरुनी यारी, श्रद्धा भक्ति वधारी;
बुद्धिसागर गुरुकृपार्थी, मंगलनी तैयारी. शिक्षा. ४

उपाधि.

गजल

उपाधि दुःखनी क्यारी, उपाधि मूर्खने प्यारी;
उपाधि स्वस्थता टाळे, उपाधि धर्मने खाळे. ॥ १ ॥

उपाधि दुःखनी कुंची, विनाशे धर्मनी रुचि;
भमे छे चित्त चकडोळे, उपाधि पापमां ढोळे. ॥ २ ॥
उपाधि झेरना प्याला, उपाधि अग्निनी ज्वाला;
उपाधि राक्षसी भूंडी, उपाधि मोहनी लूंडी. ॥ ३ ॥
उपाधि भान भूलावे, उपाधि रोगने लावे;
उपाधि भ्रांत जनमां छे, उपाधि भ्रांत मनमां छे. ॥ ४ ॥
उपाधि टाळतां शांति, उपाधि टाळतां कांति;
बुद्ध्यब्धि ध्यानमां रहेवुं, अनंतुं सुख दील लेवुं. ॥ ५ ॥

स्वरूपोद्‌गार.

गझल.

तजु छुं भाव ममताना, सजु छुं भाव समताना;
खरी नहि बाह्य उपाधी, अहो त्यां मोहथी आधि,
परम शक्ति विलासी हुं, परम शांति प्रकाशी हुं;
अखंडानंद भोगी हुं, अखंडानंद योगी हुं. ॥ २ ॥
नही हुं लिंग के जाति, नहि हुं देह के ज्ञाति;
रह्यो हुं ज्ञानमां जागी, थयो हुं सत्यनो रागी. ॥ ३ ॥
जगत्‌ना खेलथी न्यारो, अनंता जीव पर प्यारो;
खमावुं सर्व जीव राशि, थयो छुं तत्वविश्वासी. ॥ ४ ॥
परम ध्यावुं परम भावुं, परम चाहु परम गाउ;
परम चैतन्यमां प्रीति, परम चैतन्यमां रीति. ॥ ५ ॥
नथी थातुं नथी जातुं, अपेक्षा वाक्य कहेवातुं;
समायो छुं स्वभावे हुं, परमज्ञान प्रभावे हुं. ॥ ६ ॥
अहो हुं ज्ञाननो दरियो, अहो हुं सुखथी भरियो;
अहो हुं शुद्ध वैरागी, बन्यो हुं मोहनो त्यागी. ॥ ७ ॥

रह्यो हुं शांतरस झीली, रह्यो हुं शांतरस खीली;
बुद्धयब्धि तत्त्वमां रंगी, थशो सहु जीव सत्संगी. ॥ ८ ॥

आत्माना दयाना उद्गार.

गजल

दयामय दृष्टिथी देखुं, दयामय दृष्टिथी पेखुं;
दयामय देश छे म्हारो, दयामय देश छे प्यारो. ॥ १ ॥
दयामय मेघ छे वृष्टि, खीले छे धर्मनी सृष्टि,
दयामय चित्त गंगा छे, दयामय चित्त चगा छे. ॥ २ ॥
दयामय तीर्थ चेतन छे, दयामय धन्य ते मन छे,
दयामय दील छे देवा, दयामय दीलनी सेवा ॥ ३ ॥
दयाथी सुखने शान्ति, दयाथी जाय छे भ्रांति;
दया त्यां धर्मनो वासो, दयानो रंग छे खासो. ॥ ४ ॥
दयाना सगमा रहेवु. दयाथी तत्त्वने कहेवु,
दयाथी बोलवुं सारु, दयाथी बोलवुं प्यारुं ॥ ५ ॥
दयाथी सर्व धर्मो छे, दयामा धर्म कर्मो छे;
दयाने प्रेम लावे छे, दयाथी सुख थावे छे ॥ ६ ॥
दयाथी धर्म प्रगटे छे, दयाथी कर्म विघटे छे,
बुद्धयब्धि चित्तमा प्यारी, दया माता सदा सारी ॥ ७ ॥

सूती वखते आत्मोद्गार.

धीराना पदनो राग

शरीरनो तु संगी रे, आतम अवधारजे,
शुद्धरुप समजी रे, विषयाविष वारजे; शरीर०
नाना मोटा वृद्ध युवा नर, नारीना पर्याय;

पुद्गलना व्यवहारे आतम, जगमांहि कहेवाय.
जाणीने झट जोइ ने, चित्तमां विचारजे. शरीर० ॥ १ ॥
अनंतशक्ति स्वामी वाल्हम, गुणपर्यायाधार,
देह देवळना वासी जोगी, करजे कृत्य विचार;
बाजी पामी सारी रे, हवे नहि हारजे. शरीर० ॥ २ ॥
खेलाडु थइने शुं खेले ?; बाहिर माया खेल,
रेती पीले तेल न निकळे, समजण छे मुश्केल;
नाव पामी सारुं रे, पोताने तुं तारजे. शरीर० ॥ ३ ॥
मानव मुसाफर दुनियामां, चेत चेत झट चेत,
उंघे उंघण पार न आवे, काल झपाटा देत,
अंतरना अलबेला रे, पोताने संभारजे. शरीर० ॥ ४ ॥
सत्यानंद स्वरुपी शाश्वत, धर पोतानी टेक,
क्षीर नीरनी पेठे हंसा, धरजे सत्यविवेक;
बुद्धिसागर प्रेमे रे, आतमने उद्धारजे. शरीर० ॥ ५ ॥

ॐ नमः

भेदुए भेद आपो.

धीराना पदनो राग.

भेदूए भेद आप्योरे, आतमरुप परखायुं;
थातुं नथी जातुं रे, ज्ञानीयोए बहु गायुं. भेदु०
यम नियम आसनने साधी, साधी प्राणायाम,
प्रत्याहार धारणा धारी, ध्याने बन्यो छे निष्काम;
समाधि स्वरुपे रे, आतमनुं सुख पायुं. भेदु. ॥ १ ॥
बाहिर इच्छा विरमी स्हेजे, उदासीनता पाय;
शाताशातावेदनी आवे, हर्ष शोक नहि थाय;
उपयोग भासे छे, ठाम मन झट आयुं. भेदु. ॥ २ ॥

धन्य गुरु साचा उपकारी, वाल्यो शिवपुर पन्थ;
गुरुगम वण को सार न पामे, कोटी भणे जो ग्रन्थ,
गुरुए मने तार्यो रे, थयुं मारा मन धार्यु. भेद्दुं ॥ ३ ॥
नयनी वातो कोइक पातो, सद्गुरु जेने शीर;
आपमतिए लातो खातो, समज्या वण तो अधीर,
अपेक्षाए वाणी रे, जाणी मन-हरखायुं. भेदु. ॥ ४ ॥
अंतर चक्षु जो उघडे तो, आपोआप प्रकाश,
चिदानंद चेतनमय मूर्त्ति, गुण पर्याय विलास,
बुद्धिसागर प्रेमे रे, तत्त्व स्वरुप पायुं. भेदु. ॥ ५ ॥

आत्मदेशोन्नतिना आवेशोद्गार.

हरिगीत.

हे पत्र तु जा प्रेमथी जनना हृदयमा पेसजे,
बहु लागणीथी ध्यान खेंची स्थानमां स्थिर वेसजे,
सहु प्रेमिओना प्रेमना वृद्धि करी झट वारमां,
धर्मोन्नतिथी सकल जन मन पूर्ण कर संसारमा. ॥ १ ॥
बहु वैरिओना वैर नासो कपट टळशो कारमां,
सुसंपथी मंगल लहो सहु मनुष्यना अवतारमां,
देशोन्नतिमां सर्वजननुं चित्त साचुं लागजो,
देशोन्नतिमा भव्य लोको धर्मथी झट जागजो. ॥ २ ॥
आ देशमा तो क्लेशथी हानि थइ गणजो घणी,
प्रजा थइ छे रांकडी माथे नही शुभ कोइ धणी;
परदेशीओना जोरथी व्यापार भाग्यो देशनो,
निज देशमा परदेशीओनो पाट भारे क्लेशनो. ॥ ३ ॥

जन जागजो मन ज्ञानथी झट संपनां कामो करो,
परतंत्रताने त्यागीने निज तंत्रता मनमां धरो;
परदेशीओना पासथी सुखवास नाठो आपणो,
परदेशीओना रागथी निज देश नहि सोहामणो. ॥ ४ ॥
निज देशना घातक बन्या परदेशीओना प्रेममां,
निज देशना पापी बन्या परदेशीओनी रहेममां;
परदेशीओ लक्ष्मी हरे छे, देशनी बहु जोरथी,
परतंत्रतानी बेडीमां फूलो फरी शुं तोरथी. ॥ ५ ॥
निज देशने हार्या थकी हार्युंज सघळुं जाणजो,
निज देशने जीत्या थकी जीत्युंज सघळुं आणजो;
निज देशनो घातक बने ते मानवी नहि ढोर छे,
निज देशनो शत्रु बने जे मानवी नहि चोर छे. ॥ ६ ॥
निज देशनी भव्योन्नतिमां भाग लेवो जोरथी,
निज देशनी भव्योन्नतिमां भाग लेवो तोरथी;
विद्या विनय विवेकथी विचार करवा देशना;
झट रागने बहु द्वेष हरवा मूळ कापो क्लेशना. ॥ ७ ॥
बहु धैर्यथी निज देशनी ध्याने रहो गुलतानमां;
निज देशनी उन्नतिना उपाय सजो ज्ञानमां,
निज देशना आवेशमां उपाय करशो सोगणा;
वेळा गई आवे नहि राखो नहि कांइ मणा. ॥ ८ ॥
निज देशनो उद्धार करवा धर्म बंधु जागजो;
अन्तर प्रदेशी आतमानी उन्नतिमां लागजो,
आत्मोन्नतिथी देश सघळो सुधरशे क्षणवारमां;

वेळा मळी छे ज्ञानयोगे चढतीं छे क्षणवारमां. ॥ ९ ॥
खराखरीनो खेल छे आ समजील्यो संसारमां,
पामी अरे तुं मनुष्य भव देशोन्नतिने हार मां,
देशोन्नतिमां स्हाय करशो सर्व देवो प्रेमथी;
देशोन्नति दीक्षा थकी छे व्रत धर्यां ते नेमथी. ॥ १० ॥
निज देशना शुभ ग्रंथ वांची देशनी दाझे चढो;
निज अतुल बळथी आत्मभोगे शत्रुनी साथे वढो,
जय नादथी देशोन्नतिमां बुद्धिसागर धर्म छे,
अध्यात्म भावे भव्य शिक्षा समजतां शिव शर्म छे ॥ ११ ॥

ॐ

सहुनुं सारु इच्छो.

धीराना पदनो राग.

इच्छो सहुनुं सारुं रे, करुणाना करनारा,
सारुं छे सहुने प्यारु रे, दया दिल धरनारा इच्छो०
कर्माधीन दोषी छे दुनिया, खेले माया खेल,
मोह मदिरा दोषे भुरा, दोष न जुवे समजेल,
दोषीना दोष टाळो रे, सकल जीव दिल प्यारा. इच्छो० १
कोइ न शत्रु जीवो जाणो, निमित्त कारण होय,
दुःख सुख कारण कर्म खरु छे, ज्ञानथकी अवलोय,
दोष दृष्टि टाळो रे, सत्यने समजनारा. इच्छो० २
जेवु दीलमा तेवु पामो, गुण अवगुणनी दृष्टि,
दोष दृष्टिथी दोषी थाशो, गुण दृष्टि गुण सृष्टि,
मातानी दृष्टि राखो रे, भवोदधि तरनारा. इच्छो० ३

दोषीना दोषोनी साम्तुं, कदी न देखो भव्य,
परगुण परमाणु पर्वत सम, गणजो ए कर्तव्य;
धन्य तेह डाह्या रे, निन्दाना थकी डरनारा. इच्छो० ४
भाव करुणा जलधि आतम, करजो निर्मल दील,
परनुं सारुं मनमां प्यारुं, ए उत्तम जन शील;
बुद्धिसागर भावे रे, परम सुख वरनारा. इच्छो० ५

धीराना पदनो राग.

केम उंघे छे.

उंघमां शुं ? उंघे रे, मिथ्या रैण अंधारी,
उंघमां अथडायो रे, शुद्ध बुद्ध सहु हारी;
मोहे परपुद्गलनी संगे, भूल्यो चेतन भान,
साचा श्री सद्गुरुनी संगत, पाम्या वण अज्ञान;
बाह्यमां भमीने रे, भूल कीधी बहु भारी. उंघ० ॥ १ ॥
जाग जाग चेतन निज दिलमां, पामी सद्गुरु योग,
अंतरमां उतर्याथी स्हेजे, भोगवशे सुख भोग;
बुद्धिसागर जागी रे, लहो शीव बहु प्यारी. उंघ० ॥ २ ॥

परपंचात.

धीराना पदनो राग.

परनी पंचातेरे, नथी भलुं कोइ काळे,
जीवलडा तुं जाणीने, पडिश नहि जंझाळे;
अमुक दोषी अमुक डाह्यो, तेनी शी पंचात,
पंचाते परनी निन्दाथी, मुरख खाइश लात;
पडे तेने वागेरे, परमां शुं मन घाले. परनी. ॥ १ ॥

परनी खटपटनी लटपटमां, भूलीश आतम भान,
परपंचाते पडतां गांडो, थाइश जीव नादान,
पंचातना बखेडे रे, गमारतो जीवन गाळे. परनी० ॥ २ ॥
चार गतिमां भटके शाथी, तेनी नहि पंचात.
परनी निंदा लवरी करतां, भवमाहि भटकात.
समजण साचीरे, समजी सुजन चाले. परनी. ॥ ३ ॥
परमां पेठाथी जीवलडा, पामीश भारे खेद,
जोइ जोइने जोइ लेजे, समजी साचो भेद;
खस बूरी जाणीने, कहो कोण पंपाळे. परनी. ॥ ४ ॥
परपंचाते तत्त्व न मळशे, जीवन जाते फोक,
अंतरमां उतर्या वण भटके, पामर मूरख लोक,
चित्तनी चंचळतारे, चिंता क्षण क्षण वाळे. परनी. ॥ ५ ॥
परनी पंचातो करवाथी, आर्त रौद्र बे ध्यान,
दुर्लभ मानव भवने हारे, मिथ्यामति अज्ञान,
लीट पंडी मार्खीरे, तेनु कंइ नहि चाले परनी. ॥ ६ ॥
माखीनी अवस्था पेठे, पचाते जञ्जाल,
समजीने शिखामण दीलमां, मनडु धर्मे वाळ,
दुनिया दीवानीरे, परम धन नहि भाळे परनी. ॥ ७ ॥
खुमाडाना बाचका भरतां, कांइ न आवे हाथ,
राग द्वेषे परपंचाते, भूलीश नहि जगनाथ,
बुद्धिसागर योगीरे, ध्यानथी आनंद म्हाळे. परनी. ॥ ८ ॥

म्हारु कोइ नथी.

धीगाना पदनो राग.

नथी कोइ म्हारूरे, म्हारु म्हारी पास खरे,
मायाथी मानी म्हारुरे, फोगट केम फुली फरे, नथी

पोताने परख्या वण नक्की, कदी न आवे पार,
दुनियानी जंझाळे मूरख, होय न सुख लगार;
ध्यान विना चेतनरे, कहो केम तुर्त तरे. नथी. ॥ १ ॥
व्हालामां व्हालुं जे मान्युं, कनक कान्ता महेल.
जूठी बाजीगर बाजीसम, पुद्गलना सहु खेल,
म्हारु त्हारु परमांरे, मानी मूढ पाप करे. नथी. ॥ २ ॥
वस्तु स्वभावे धर्म न जाण्यो, पुद्गल मान्यो धर्म,
पर स्वभावे निशदिन पामर, बांधे उलटां कर्म,
धनीने मानी मोटारे, लक्ष्मीने माट करगरे. नथी. ॥ ३ ॥
चेतनना आनंद विना तो, विषयानंद न त्याग,
अनुभव जो आतमनो जागे, तो नासे परराग,
सद्गुरु कीधेरे, स्हेजे सहु काज सरे. नथी. ॥ ४ ॥
सद्गुरुनी वाणीमां श्रद्धा, राखे प्रगटे धर्म,
आतमना उपयोगे मुक्ति, नासे मिथ्या भर्म,
बुद्धिसागर ध्यानेरे, शिव सुख भव्य वरे. नथी. ॥ ५ ॥

इष्टदेवनुंआवाहन.

धीराना पदनो राग.

इष्ट देव आवोरे, दया दृष्टि दील धरी,
दर्शन देव आपोरे, बाळक कहे करगरी. इष्ट.
दुःखनां वादळ दूर करो झट, वाल्हम प्राणाधार,
खरी वातना बलो प्यारा, सत्य त्हारो आधार;
तुंहि तुंहि ध्यावुंरे, तन्मय चित्तकरी, इष्ट ॥ १ ॥
शांति तुष्टिना करनारा: करजो प्रेमे स्हाय.
महामत्र जाप सुख सघळां, रोग शोक दूर जाय,

लाज तुज हाथेरे, श्रद्धा धरी टील खरी. इष्ट. ॥ २ ॥
तुज भक्तिथी मंगल माला, धार्या थावे काम.
ऋद्धि सिद्धि विजय पताका, फरको ठामो ठाम,
बुद्धिसागर ध्यानेरे, वांछीत वस्तु वरी. इष्ट. ॥ ३ ॥

पैसा.

पैसा पैसा पैसा त्हारी वात लागे प्यारी रे,
रात दिवस पैसाने माटे भटके नरने नारी रे. पैसा. ॥ १ ॥
भणवुं गणवुं पैसा माटे, पैसे घेवर धारी रे,
पैसाथी वालुडा छाना, पैसानी मोटी यारी रे पैसा. ॥ २ ॥
पैसाथी परमेश्वर न्हानो, पैसो देव वेचावे रे,
पैसानी पूजारी दुनिया, पैसो नाच नचावे रे.पैसा. ॥ ३ ॥
हिंसा चोरी पैसा माटे, पैसाथी सर्वे व्हालुं रे,
आजीजी पैसाने माटे, वचन बोलवुं कालुं रे. पैसा. ॥ ४ ॥
पैसा माटे नोकर रहेवुं, पैसा माटे शेठो रे,
पैसा माटे राजा रैयत, पैसा माटे वेठो रे. पैसा. ॥ ५ ॥
पैसा आगळ गुरु नकामा, पैसा माटे दंडे रे,
पैसा माटे गांडो पैसा, माटे माथुं फोडे रे. पैसा. ॥ ६ ॥
पैसाथी व्हाला छे बापा, पैसा माटे छापा रे,
पैसाना लोभे छे टंटा, युद्धे कापकापा रे पैसा. ॥ ७ ॥
पैसाथी दूरे जे रहेता, ते जन साचा त्यागी रे;
बुद्धिसागर निर्लोभी जन, मुनिवर छे वैरागी रे पैसा. ॥ ८ ॥

गप्पां.

गप्पां गप्पा गप्पा मारे, कदी न साफ थाशे रे,

गप्पां मारे ज्ञान न मळशे, उमर एळे जाशे रे. गप्पां. ॥१॥
गप्पां मारे आळस प्रगटे, थाय न पर उपकारी रे;
अंतर्धननो नाशज नक्की, उमर जाशे हारी रे. गप्पां. ॥२॥
नवरो बेठो नखोद काढे, समजो नरने नारी रे;
अेदीजननां लक्षण एवां, मारे पेट कटारी रे. गप्पां.॥३॥
प्रभु भजनमां कायर कंपे, गप्पां मारे हरखे रे;
हिताहित शुं करवुं मारे, मूरख ते नहि परखे रे. गप्पां.॥४॥
परनी पंचातो करवाथी, धर्मे कदी न बुझे रे;
बुद्धिसागर समजु समजे, सारो रस्ते सुझे रे. गप्पां.॥५॥

चिदानंद.

परमप्रभु सब जन शब्दे ध्यावे—ए राग.

चिदानंद शुद्ध बुद्ध अविकारी,
परमप्रभु जयकारी. चिदानंद.
क्षायिक नव लब्धिनो भोगी,
क्षायिक गुण गण योगी;
नित्या नित्या स्वरुप विलासी,
जड पुद्गलथी अयोगी. चिदानंद. ॥ १ ॥
असंख्य प्रदेशी चिद्घन व्यक्ति,
शक्ति अनंतनो स्वामी;
ज्ञाता ज्ञेय अनंतनो समये,
निर्वेदी निष्कामी. चिदानंद. ॥ २ ॥
सदसत् एकानेक स्वरुपी,
शाश्वत सुख विलासी;
निश्चय निज गुण ध्यान कर्याथी.

नाठी सकळ उदासी चिदानंद. ॥ ३ ॥
केवल ज्ञानी निजगुण दानी,
आपोआप प्रकाशी,
पूज्यने पूजक ध्येयने ध्यानी,
शुद्ध चरण विश्वासी. चिदानद. ॥ ४ ॥
सहज स्वरुपी रुपारुपी,
जलपंकजवत् न्यारा,
बुद्धिसागर रुद्धि सिद्धि,
शुद्धानंद अपारा चिदानंद. ॥ ५ ॥

राजानुं लक्षण.

छप्पयछंद.

नृपति ते कहेवाय न्यायथी रैयत पाळे,
नृपति ते कहेवाय प्रजाना संकट टाळे;
नृपति ते कहेवाय लोभथी रहेवे दूरे,
नृपति ते कहेवाय प्रजानां दु:खो चूरे
पुत्र पेठे पाळतो जे रैयतने निशदिन सदा,
प्रजापाळक तेज साचो जूठ वदतो नहि कदा ॥ १ ॥
पीडे नहि तलभार कोइने कपट करीने,
पीडे नहि तलभार लोभथी वित्त हरीने,
परस्त्रियाने जननी सम लेखे छे मनमा,
अन्याये मुझे नहि नृपति रैयत धनमां;
ठगा प्रपंची लांचीआने योग्य शासन आपतो,
गरीब जनने स्हाय आपी दुःख सर्व कापतो. ॥ २ ॥
साधु संगत करे सदा निज कुमति हरवा,

योग्यजनोनुं मान करे छे सद्गुण धरवा;
रैयतनी आंतरडी दुःखवे थाय न सुखी,
सन्तजनोनी हाय मळ्याथी नृपति दुःखी;
धननो लोभ धरे नहि दिल करो नवा न वधारतो,
व्यापार हुन्नर स्हाय आपी रैयतने उद्धारतो. ॥ ३ ॥

दगा प्रपंची अन्यायी नृपति छे खोटा,
लोभे रैयत पीडे तेना नहि छे तोटा;
मगरुरीमां म्हाले केइक मदिरा पानी,
अक्कलना नादान दीलमां जे अभिमानी;
बायला बकवादिया केइ नृपतियो नजरे पडे,
प्रजाजनने पीडवाने सहजमां शूरे चडे. ॥ ४ ॥

रैयतने पीड्याथी निर्वंशी केइ मरिया,
रैयतने पीड्याथी नृपति ठाम न ठरिया;
रैयतने पीड्याथी नर्के राजा जाशे,
रैयतने पीड्याथी रौरव दुःखडां पाशे;
जूलम करीने चालिया केइ बादशाहने राजवी,
राज्य साथे लइ गया नहीं समज सदा नृपति भवी. ॥५॥

भेद भाव पुत्रोमां राखे ते नहि माता,
रैयतने चुसे ते नृपति नरके जाता;
कलिकालमां पापी नृपति थाशे लाखो,
रावण जेवा नृपतिनी पण अंते राखो;
कर वधारी कारमा बहु रैयतने कनडे सदा,
दैत्य जेवा नृपतियोथी शुभ थाशे नहि कदा. ॥ ६ ॥
पश्चिमवतनी संगे नृपति कोइक सारा,
तज्यां धर्मनां कृत्य बन्या कुसंग नठारा;

नास्तिकना शिरदार देशनुं भव्य न ताके,
वेश्या साथे प्यार मियाथी प्रेम न राखे;
"ओलराइट" करता आवडयुं के फूले सत्ता तोरमां,
अक्कड थइने आथडे छे त्रण टट्टु जोरमां ॥ ७ ॥

मारे बकरां मोर देशनी दाझ न जाणे,
मदिरामां बेभान बनीने उंघु ताणे;
जूगारी ने नीच जनोनी सोबत राखे,
सज्जननो ते संग कर्यात्रण सत्य न चाखे;
देशनो जे वेष तेने दूर करता टायला,
देशनो उद्धार करवा समजता शु वायला. ॥ ८ ॥

परदेशिनी नकल पण अकलथी आघा,
परदेशीना वेचता राखे छे डाघा;
"गुरजी" पाळी "वेल" कही दीवसने गाळे,
उकाळे शु देशनणुं कूतर जे पाळे;
श्वान चाटे वदन नृपनुं दीवस एळे गाळता,
श्वानसंगी नृपतियो शु जन्मीने उकाळता. ॥ ९ ॥

नहि धर्मिनो संग भलुं तेनु शुं थावे,
दया तणो नहि लेश हृदयमा सुख शुं पावे,
प्रभु उपर नहि प्रेम क्रोधथी जे धगधगता,
कावतरांनी झाळ करी रैयतने ठगता.
नृपति एवा जन्मीयाथी देशना बेहाल छे,
वीरला कोइ सत्य नृपति व्यापियो कलिकाळ छे ॥१०॥
देशोद्धारक व्रत करे तेनाथी अळगा,
देशतणी नहि दाझ व्यसनमा केडक वळग्या.
धर्मनी वातो व्हेम करीने जे उडावे,

एवा नृपति जन्म धरीने सत्य न पावे;
गप्पां हांके सोगणां ने हिंमत धारे भीमनी,
एकला तो रजनीमांहि वहिर् जाय न सीमनी. ॥११॥
परदेशीनो वेष धर्यो पण संप न धार्यो,
परदेशीनी नक़ल करतां जन्मज हार्यो;
रोफ धरीने पैसानो धूमाडो करता,
हाजी हा करता नरनी साथे जे फरता.
नृपति एवा जागवाथी भाग्य वेळा शुं वळे,
देशनां जो भाग्य होय तो उच्च नृपति नीकळे. ॥ १२ ॥
रैयतने दंडीने तेना पैसे म्हाले,
विना विचारे खर्चे करीने दाटज वाळे;
विद्याना वैरीने झेरी हुन्नर वाटे,
वात कहुंछुं साची नृपति शिक्षा माटे;
चतुरनृपति चेतीने झट धर्मपन्थे चालजो,
बुद्धिसागर सत्य समजी भाग्यवेळा वाळजो. ॥ १३ ॥

शाश्वत चेतन.

अब मैं साचो साहिब पायो. ए राग.

चेतन तुंहि शाश्वत शिव सुख दरियो,
तुं तो ज्ञानादिक गुण भरियो. चेतन.
क्षयोपशम उपशम ने क्षायिक, भावे निजगुणभोगी,
अंतर अनुभव अमृतस्वादी, योगी पण तुं अयोगी चेतन २
केवल कमला रुद्धि प्रकाशी, सिद्ध बुद्ध अविनाशी,
जाग जाग हवे तत्त्व स्वरुपे, तुजने दउ शाबासी. चेतन. २
अजरामर निर्मल सुखकारी, अकळ क़ळा जयक़ारी,

पोताने तारे तुं प्रेमे, सत्ता शुद्ध समारी चेतन. ॥ ३ ॥
प्रभु वाणी जयनाद करीने, सत्य स्वरुप बतावे,
निर्मल समता सरवर हंसा, झीले शुद्ध कहावे, चेतन. ॥ ४ ॥
अंतर परिणति वण व्यवहारे, शोधे पार न आवे,
बाह्य क्रियामां झघडा भारी, तत्त्व न कोइ पावे, चेतन. ॥५॥
अंतर परिणति लक्ष्य विचारी, साधनथी तेह साधे,
बुद्धिसागर चढते भावे, ध्यानदशा सुख वाधे. चेतन ॥६॥

इश्वरस्तुति.

हरिगीत.

जय सत्य इश्वर विश्व वत्सल सत्य ज्योति सुखकरा,
शक्ति अनंति व्यक्तिमय तुं पाप टाळे दु:खहरा;
ज्ञानथी तुं ज्ञेयनो भासक प्रभो छे सर्वदा,
नत सुरा सुर वज्रि पदकज वंदुं छुं वीरजिन सदा. ॥ १ ॥
जय विश्व पूजित विश्व तारक धर्म धारक देव छे,
जय सत्यें ज्ञानी परम योगी शुद्ध त्हारी सेव छे,
हे देवना पण देव व्हेला दया करी उगारजो,
सम्यक्त्व स्थिरता शित्र आपी बाळने झट तारजो. ॥ २ ॥
मन रागने द्वेषज सदा संसारनुं तो मूळ छे,
जिन तत्त्वने जाण्या विना तो जाणवुं ते धूळ छे;
सहु दोषनां तो मूळ नासे ज्ञान एवुं आपजो,
निज बाळने प्रेमे करीने धर्ममा स्थिर थापजो ॥ ३ ॥
हे परम करुणावंत व्हाला ध्यान त्हारु सार छे,
परमात्म व्यक्ति परम व्यक्ति भोगी तु निर्धार छे,
निज दीलमा तु आवतो मगटावतो सुख लहेरियो,

मध्यमाना गानमां धूजावतो महा वैरियो. ॥ ४ ॥
आधार मारे सत्य तुंहिज दोषनी पोठो हरे,
महावीर जिनवर चरण सेवक भवाब्धि क्षणमां तरे;
त्रिशला तनय सिद्धार्थराजा कूळ दीपक इश छे,
बुद्धयब्धि सेवक तारशो आधार विश्वावीश छे. ॥ ५ ॥

कीर्ति.

कीर्ति कीर्ति कीर्ति त्हारु नाम लागे प्यारु रे;
कीर्ति माटे वाजां गाजां बोले सारु सारु रे. कीर्ति.
कीर्ति माटे शीरा पूरी, भोजन सरस जमाडे रे;
कीर्ति सहुथी मीठी व्हाली, नाखे भ्रमणा खाडे रे. कीर्ति.१
कीर्तिना माटे केइ दोडे, केइक नाम छपावेरे;
कीर्ति माटे आगेवानी, कीर्ति धर्म भूलावेरे. कीर्ति. २
कीर्ति माटे कष्टो वेठे, केइक नरने नारी रे;
सी–आइ–इना पुच्छो माटे, काम करे केइ भारी रे.कीर्ति.३
कीर्ति माटे पैसा खर्चे, कीर्ति माटे काया रे;
कीर्ति जगमां कामणगारी, डाह्या पण मकलाया रे. कीर्ति.४
कीर्ति माटे दोडंदोडा, कीर्ति माटे भूले रे;
कीर्तिनी आशाना वशमां, प्राणी भवमां झूले रे. कीर्ति.५
कीर्ति माटे करोड खर्चे, वेश्या नाच नचावे रे;
कीर्तिनो धुमाडो भारी, हर्ष आंगुडां लावे रे. कीर्ति.६
कीर्ति माटे खोटुं सारु, कीर्ति प्राण त्यजावे रे;
कीर्तिनी भूखी छे दुनिया, ज्यां त्यां खत्ता खावे रे. कीर्ति.७
छापावाळा वित्त रळे छे भाट भवैया जाशो रे;

कीर्तिना मोहे जो पडशो, तो अंते बहु रोशो रे. कीर्ति ८
कीर्ति गाडाने पण व्हाली, कीर्ति छे लटकाळी रे;
कीर्ति कामणगारी जगमा, कीर्ति छे महाकाली रे. कीर्ति ९
कीर्तिनी पूजारी दुनिया, सन्तो समजे साचुं रे;
नाम कर्मना उदये कीर्ति, तेमा शुं हुं राचुं रे. कीर्ति. १०
कीर्तिनी लालचने छंडी, सद्गुण कीर्ति करशो रे,
बुद्धिसागर मंगलमाला, धर्मोदयथी वरशो रे. कीर्ति. ११

काया अने चेतन चर्चा.

राग धीराना पदनो

बोले काया शाणीरे, चेतन तमे क्यां वसिया,
मारु मारु मानीरे, मायावश कर्म फसिया.
चेतन तुं मुसाफर जगमा, वसियो मारे घेर,
तुं नहि मारो हुं नहि तारो, माने शुं मन ल्हेर.
चेत चेतन शानेरे, अन्तर अनुभव रासिया. बोले ॥ १ ॥
चेतन हवे बोलेरे, व्हाली काया शुं बोले,
प्राण थकी प्यारीरे, नहि कोइ तुज तोले,
खवराव्युं पीवराव्युं तुजने, नवराव्युं बहु पेर,
हवा दवाथी तुजने पोष्युं, वसियो त्हारे घेर,
वस्त्रोथी शणगारुरे, मारे तुं मुवा मोले चेतन. ॥ २ ॥
हरता फरता तारी खबरो, लउं छुं वारंवार,
रग रसीली अमरकाया, तुं छे प्राणाधार,
बोल नहि खाटु रे, मन मारु बहु डोले चेतन ॥३॥
काया पाछी कहेती रे, चेतन हुतो नहि त्हारी,
तने हु नथी परणी रे, हजी हु बाळकुंवारी;

हुंतो जड छुं तुं तो चेतन, जूदी जाण सगाइ,
हुंतो रुपी तुंहि अरुपी, सगपणनी न भलाइ;
तारी न त्रण काळे रे, करु नहीं तुज यारी. चेतन. ॥४॥

मारी मारी मानी चेतन, कर नहि मारी सेव,
तारां मारां लक्षण जूदां, शी प्रीतिनी टेव;
समज्यो न साचुं रे, उमर तें फोगट हारी. काया. ॥ ५ ॥

चेतन हवे बोले रे, कायानां वेण संभारी;
काया छे तुं तो न्यारी रे, वात हवे निर्धारी,
आजलगी हुं मारी मानी, करतो तारी सेव,
मोह मदिरा घेने घेर्यो, समज्यो न आतम देव;
हवे हुं साचुं समज्यो रे, उपयोग दिल धारी. चेतन. ॥६॥
भूंडी तारा माटे में तो, कीधां भारे पाप,
भोगववां ते मारे पडशे, एवी प्रभुनी छाप;
हवे शुं थाशे मारु रे, वात भूल्यो बहु सारी. चेतन. ॥७॥

काया पाछी बोले रे, चेत तुं चेतन भावे,
माराथी तुं तो न्यारो रे, भूलीश नहि परभावे;
मारामां हि वास कर्यो पण, धर तारो विश्वास,
आज थकी मूरख तुं नाहक, बनीश नहि मुजदास;
मोहना धतींगे रे, कदी नहि सुख थावे. काया. ॥८॥

चेतन हवे जाग्यो रे, कायानां वेण संभारी,
ध्यावे रुप साचुं रे, अंतरमांहि अवधारी;
छंडी कायानी मायाने, ध्यावे आपोआप,
निराकार निःसंगी निर्मल, करतो अजपाजाप;
अंतर सुख भोगी रे, थयो हवे जयकारी. चेतन. ॥९॥
कायानी मायाथी अळगा, रहेवुं धारी ध्यान,

अलख स्वरुपी आतम देवा, शक्तिथी भगवान;
बुद्धिसागर ध्याने रे, वात सत्य निर्धारी. चेतन. ॥१०॥

विषय.

ओधवजी सदेशो कहेशो श्यामने-ए राग

विषय पिपासा विषथी भुंडी जाणजे,
विषयेच्छाथी चित्त चंचळता थायजो;
विषयेच्छाथी कर्म ग्रहण संसारमां,
विषयेच्छाथी दुःख घणा प्रगटायजो विषय. ॥ १ ॥
विषय वेगमां कुमतिनु साम्राज्य छे,
विषय वेगथी कीर्ति धननो नाश जो,
विषय वेगथी रौरव दुःखो संपजे,
विषय जोरथी वधती निशदिन आशजो विषय. ॥ २ ॥
विषयेच्छाथी अशुभ वधती भावना,
विषयेच्छाथी प्रगटे खोटां ध्यानजो,
विषयेच्छाथी आधि व्याधि संपजे,
विषयेच्छा छे महाउपाधि स्थानजो विषय ॥ ३ ॥
विषयेच्छाथी ठाम ठरे नहीं टीलडु,
विषयेच्छाथी मूरख परआधीन जो,
विषयेच्छाथी नफ्फट नागो जन कहे,
विषयेच्छाथी उच्च जनो पण हीन जो. विषय ॥ ४ ॥
उत्तम जन तो विषय वृक्षथी वेगळा.
करता प्रेमे अनुभव आतम ध्यानजो;
बुद्धिसागर मगलमाला पामशो,
वैराग्ये वाळो मनडुं गुण वानजो विषय. ॥ ५ ॥

आनन्दल्हेर.

धोरांना पदनो राग.

आनंद ल्हेरो प्रगटी रे, परमरुप परखायुं;
अंधारु दूर नाठुं रे, सहजरुप निर्धार्युं. आनंद०
अजपाजापे रटना लागी, झळकी रुडी ज्योत,
झरमर झरमर मेहुला वरसे, थयो महा उद्योत;
अंतरमां उलटथी रे, मन मारु हरखायुं. आनंद० ॥ १ ॥
अनुभव दर्शन प्रेमे कीधां, भ्रान्ति नाठी दूर,
सहज स्वरुपे स्थिरता योगे, सुख प्रगटयुं भरपूर;
परखीने हीरो लीधो रे, निर्भयपद आयुं. आनंद० ॥ २ ॥
अलखदेशमां प्रेमे खेलुं, निश्चय आतमदेश,
असंख्य प्रदेशे क्षायिकभावे, वसतां लेश न क्लेश;
ज्ञानियोनी वातो रे, ज्ञानथकी ए गायुं. आनंद० ॥ ३ ॥
अनंतभवनी भागी भ्रमणा, गुरु कृपाए खास,
पावे ते छुपावे एवो, आव्यो मन विश्वास;
अगम ज्ञान मोटुं रे, छुपे नहि छुपाव्युं. आनंद० ॥ ४ ॥
गुरु कृपाथी ध्याने रहीने, रीझवशुं जगनाथ,
न बोल्यामां नवगुण समजी, रहीशुं अनुभव साथ;
बुद्धिसागर प्रेमे रे, अनुभव पद पायुं. आनंद० ॥ ५ ॥

वीर जिन दर्शन स्तवन.

प्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीए रे–ए राग. 5

जिनवर वीर प्रभुनां दर्शन कीजेरे,
त्यागीने दुःखदायी संसारने;
बार वर्ष निःसंगे चेतन ध्यायोरे,

ध्यान थकी सफल कर्यो अवतारने.
समताए तजीया मोह विकारने,
धर्म क्षमा धरीने तजीया खारने,
धन्य धन्यरे वीर प्रभु अणगारने.
नमजीने चेतन शिक्षा धारने ॥ १ ॥
गुण स्थानक सोपाने ध्याने चढीयारे,
मुक्तिना महेलेरे प्रभुजी विराजीया,
कर्म कटक सहारी जिनपद लीधुंरे,
लोकांते सिद्ध थइने गाजीया. समता. ॥ २ ॥
क्षायिक भावे नवरुद्धिना भोगीरे,
उपयोगी समये समये सर्वना;
रुपारुपी सहज स्वरुपी योगीरे,
भावथकी महा वीररे वर्ते गर्वना. समता ॥ ३ ॥
कृपा करीने ध्याने दीलमा आवोरे,
विषयादिक वैरि शिघ्र निवारजो;
गांडो पण आ बाळ तमारो जाणीरे,
भव सागरनी पारे प्रभुजी उतारजो समता. ॥ ४ ॥
बाळ तमारो कहीने प्रभु बोलावोरे,
व्हाला वीर सेवक व्हारे आवजो;
जिनवर दर्शन स्पर्शन करवा रसीयोरे,
अंतरना स्वामीरे करुणा लावजो समता. ॥ ५ ॥
म्हारो करी बोलावो हस्त ग्रहीनेरे,
सेवकने तारेरे शोभा आपनी,
बुद्धिसागर वीर जिनेश्वर तारोरे,
भक्ति एक साचीरे, वीर मानापनी. समता. ॥ ६ ॥

॥ अवधूतगान. ॥

मारी अन्तर चक्षु प्रकाशी रे, मनडुं थयुं रे उदासी;
सूर्यने चंद्र बेउ साथ प्रकाशे, प्रगटी अन्तरमांहि काशी रे. मनडुं०
सरस्वतिनदीमां हुं प्रेमथकी न्हायो, हुंतो थयोछुं गगन गढवासी रे.
मनडुं० ॥ १ ॥

मेरुना उपर चढी गयो हुंतो वेगे, पोताने हुं दउछुं शाबाशी रे. मनडुं०
बुद्धिसागर गुरु ज्ञानीओनी वातो, जेणे जाणी तेणे जाणी छे
विलासी रे. मनडुं० ॥ २ ॥

सामायक स्वाध्याय.

प्रभुपडिमा पूजीने पोसह करीए रे–ए राग.

समताभावे सामायकमां रहीए रे,
सामायिक योगे शिवसुख थाय छे;
समभावे रहेवाथी अनुभव जागे रे,
स्थिरताना योगे तत्त्व जणाय छे.

अंतरना उपयोगे धर्म ग्रहाय छे,
चंचळता मननी दूरे जाय छे;
वैराग्ये भाव भलो परखाय छे,
धन्य धन्य रे समता भाव सुहाय छे. अंतर. ॥ १ ॥

गुरुमुखथी सामायक उच्चरे श्रावक रे,
लाख चोराशी जीव योनिने खमावतो;
दश मनना दश वचनना द्वादश काया रे,
बत्रीश दोषो टाळी आतम भावतो. अंतर. ॥ २ ॥

पिंडस्थादिक चार ध्यानने धरीए रे,
वरीए रे धर्म शुकल बे ध्यानने,
आर्त रौद्र बे ध्यान बुरां परिहरीए रे,
तजीए रे माया ममता मानने. अंतर. ॥ ३ ॥
धर्म ग्रन्थने भणीए गणीए भावे रे,
विकथानी वातो लेश न कीजीए;
द्रव्य गुण पर्याये वस्तु विचारी रे,
वस्तुस्वभाव धर्म ग्रहीने रीझीए अंतर. ॥ ४ ॥
स्थिर उपयोगे ध्यान समाधि वरीए रे,
झळकेरे ज्योति आतमरामनी,
श्वासोश्वासे अजपा जापे स्मरीए रे,
वाटेरे चालो अविचळ धामनी. अंतर. ॥ ५ ॥
आत्मज्ञानथी सत्य समाधि पामोरे;
वामोरे राग द्वेष बे दोषने,
मैत्री प्रमोद करुणा माध्यस्थ विचारो रे;
धारोरे निरुपाधि सुख पोषने. अंतर. ॥ ६ ॥
नय निक्षेपे सामायकने समजी रे;
कीजीए सामायक शिववेलडी,
समतामृतभोजनथी प्रगटे शान्तिरे,
समतानी आगेरे शुं छे? शेलडी. अंतर. ॥ ७ ॥
सिद्ध समा समताथी सर्वे जीवोरे;
भटकेरे कर्मथकी संसारमा,
कर्म दोष त्यां जाणी जीव खमावोरे,
समतानो ल्हावोरे मनु अवतारमा अतर ॥ ८ ॥
जाग जाग चेतन तु सामायकमा रे,
मुंझीश नहि मुसाफर मायाझाळमां,

बुद्धिसागर सामायक उपयोगे रे;
गाळोने जीवन सहु कल्याणमां. अंतर. ॥ ९ ॥

श्री वीरप्रभुस्तवनम्.

नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं–ए राग.

वर्धमान जिनराज कृपाळु तारजो,
शरणागत वीतराग सेवकने उद्धारजो;
सत्ताए छुं समान अनादि काळथी,
व्यक्तिथी नहि शुद्ध बहिरातम चालथी. वर्धमान. ॥ १ ॥
शुद्ध रमणता ध्यानथी सिद्ध प्रभु थयो,
परपुद्गलना रागथी सेवक भव रह्यो;
क्षायिकभाव निश्चय मंगल तें वर्युं,
भावमंगल पद जाण्युं में न अनुसर्युं. वर्धमान. ॥ २ ॥
आविर्भावे ऋद्धि थइ तुज शाश्वती,
केवलज्ञाने सत्यवचननी भगवती,
वीर्यशक्ति उपयोग चरणमां लीनता,
तुज सेवनथी गुणगणनी होय पीनता. वर्धमान. ॥ ३ ॥
अनुभव दर्शन स्पर्शन जो दील थाय छे,
त्यारे वीरपणुं झट मन परखाय छे,
अंतर्यामी देव सेव छे ध्यानमां,
परमातमनी सेव धरी छे ज्ञानमां. वर्धमान. ॥ ४ ॥
आतमनो उपयोग शुद्ध मुज जागशे,
मिथ्यापरिणति दुष्ट तदा दूर भागशे,
उपशमादिक भाव वीरता आवशे,
बुद्धिसागर जीतनगारां वागशे. वर्धमान. ॥ ५ ॥

सुधारो.

धीराना पदनो राग

सुधारानी वातोरे, नरनारी प्रेमे करे,
कहेणी जेवी रहेणीरे, जगत्मांहि कोइ वरे,
सुधाराना नामे जगमां, वगडेला छे बहु,
देश वेषनी वात न जाणे, तेनी वात शी कहुं
वाळलग्नहोळीरे, वळीने तेमां बाळ मरे. सुधारा. ॥ १ ॥
देशी जाडां टकाउ वस्त्रो, छोडयां दीसे आज,
बहुमूलां झीणां परदेशी, वस्त्रे नाठी लाज,
शरीरबळे हार्यारे, भारतवासी आज खरे. सुधारा ॥ २ ॥
मीयां पडया पण टंगडी उंची, राखे फोगट मान,
बोली बणगां फूंके भारे, रहेणीमां नहि तान,
गाजंता मेघ जेवारे, भाषणनी भवाइ करे सुधारा. ॥ ३ ॥
पदवी पुच्छे पशुओ थावा, मनमां बहु ललचाय,
धनीक विद्वानो एवाथी, देशोदय शुं थाय,
रोफ वध्यो भारेरे, खर्च नकामां अरे. सुधारा. ॥ ४ ॥
बी. ए भण्या के आखो नबळी, केळवणीमां भेद.
एम. ए. नी आंखे अंधारां, शरीर नबळां खेद;
शरीरनो कुधारोरे, कारज केम एम सरे. सुधारा. ॥ ५ ॥
उडाउ खर्चो खूब वधारे, छेड धार्मिक पाठ,
सुधरेलानो फांको राखे, ठाली राखे ठाठ,
सुधरेल एवारे, सुधर्या न तेह खरे सुधारा. ॥ ६ ॥
स्त्री वर्गमा निरखी जोशो, पतिव्रता दुकाळ,
पतिआज्ञाने लोपे ललना, सामुने देवे गाळ,
टापटीप भारेरे, सदगुण कोइ धरे. सुधारा. ॥ ७ ॥

धर्म कर्ममां रागज प्रगटे, नीतिनुं बहु मान,
ब्रह्मचर्यथी शरीरपुष्टि, सुधारो ए जाण;
देवगुरु श्रद्धारे, सुधारो ए भव्य वरे. सुधारा. ॥ ८ ॥
दारु मांसथी दूरे रहेवुं, चोरी जारी त्याग,
अभक्ष्य वस्तु कदी न खावी, धर्मे धरवो राग,
सुधारो ए साचोरे, पापथकी प्राणी डरे. सुधारा. ॥ ९ ॥
मात पितानी सेवा भक्ति, गरीब जनने दान,
धार्मिक ग्रन्थोद्धार कार्यमां, करवुं धननुं दान;
मुनिवर सेवारे, करी जीव ठाम ठरे. सुधारा. ॥ १० ॥
उच्च जीवन आतमनुं करवुं, सुधारो छे खास,
सद्गुरु सुधर्या मुनिवर सन्तो, प्रभुभजन विश्वास;
बुद्धिसागर भक्तोरे, सुधरीने शांति वरे. सुधारा. ॥ ११ ॥

मनुष्यकार्य.

धीराना पदनो राग.

मनुष्यभव पामीने, चेतन धर हुशियारी;
ब्रह्मसुख लेवाने, कर हवे तैयारी. मनुष्य० टेक.
बाह्यप्रवृत्तिनी जंझाळे, जकडातां छे दुःख,
उपाधि सागरमां गोथां, खातां थाय न सुख;
पुद्‌गल स्कंध प्रेमेरे, भवोभव दुःखकारी. मनुष्य० ॥ १ ॥
अनेक भाषा प्रोफेसर थइ, करशो कोटी उपाय,
उच्च थवाने उंधी आशा, अंते सुख न थाय;
आतमना अज्ञाने रे, उमर सहु जाय हारी. मनुष्य० ॥ २ ॥
बी. ए. एम. ए, आदि डीग्री, आत्मज्ञान वण फोक,
परमातम परख्या वण पामर, समजे शुं मूरख लोक;

मिथ्या अभिमाने रे, संसारमांहि दुःख भारी. मनुष्य० ॥३॥
आत्मोन्नति उपायो साचा, जिनवाणी गुरुराय,
आत्मज्ञान वण विद्वत्ता शुं, समज्याथी सुख थाय;
बुद्धिसागर वाणी रे, समजशो नरनारी. मनुष्य० ॥ ४ ॥

नृपति कृत्य.

अली साहेली जगम तीरथ जोवा उभी रहेने-पराग.

शुभ लक्षणथी उत्तम राजा परखो नर ने नारी,
रैयत रंजे धर्म कर्मने धारी सहु सुखकारी,
शुभ नवाब राजा ने राणा, ठाकोरो राज्य करे शाणा,
शुभ राज्य सुधारे छे दाना शुभ. ॥ १ ॥
विद्या केळवणीमां प्रीति, खर्चे छे लक्ष्मी शुभरीति,
परधनमां दुष्ट न आसक्ति शुभ. ॥ २ ॥
रैयतने प्रेमथकी पाळे, नृपति कूळवटने अजवाळे;
चोरी जारी दोपो खाळे. शुभ. ॥ ३ ॥
नीतिथी न्याय खरो आपे, प्राणांते चित्त न दे पापे;
नीतिनां वेण न उथ्थापे शुभ. ॥ ४ ॥
रैयतनी आंतरडी ठारे, देशोदय सेवा चित्त धारे;
शुभ कृत्यथकी रैयत तारे. शुभ. ॥ ५ ॥
औषधशाळा कन्याशाळा, अन्नाश्रम छे मंगलमाला;
एवा राजा जन मन व्हाला. शुभ. ॥ ६ ॥
जे परदारा वेश्या त्यागी, कदी लाच लीए नहि गुणरागी,
शुभमति जेना दिलमां जागी. शुभ. ॥ ७ ॥
जे पापथकी निशदिन डरता, कदी मांसनु भक्षण नहिं करता;
कदी मुखमां मदिरा नहि धरता. शुभ. ॥ ८ ॥

जे नाच नचावे नहि खोटा, वाळे नहि अन्याये गोटा;
अक्ल न्यायी नृपति तोटा. शुभ. ॥ ९ ॥
निर्धनने स्हाय करे सारी, व्यापारे स्हाय करे भारी;
करुणार्थी दीलडुं सुखकारी. शुभ. ॥ १० ॥
जे कानतणा नहि छे काचा, बोले मधुरी साची वाचा;
देशोदयमां जे मन माच्या. शुभ. ॥ ११ ॥
विद्वानोने राखे पासे, तेथी तो कुमति दूर नासे;
वळी मनडुं स्फटिक सम भासे. शुभ. ॥ १२ ॥
जे दया धर्मने चित्त धरे, पशु पंखीनुं पण दुःख हरे;
जगमां जय मंगल कीर्ति वरे. शुभ. ॥ १३ ॥
साधुसेवानी मन प्रीति, खुब व्यसनोथी राखे भीतिः
पाळे छे उत्तमजन रीति. शुभ. ॥ १४ ॥
जे जिनवरने भजता भावे, विवेके शाश्वतसुख पावे;
ऋद्धि सिद्धि मंगल थावे. शुभ. ॥ १५ ॥
विवेकी शूरा वडभागी, विद्याना पूरा अनुरागी;
परनारी सहोदर सौभागी. शुभ. ॥ १६ ॥
न्याये चलवे छे राज्यधुरा, जगमां जीवंता तेज खरा;
बुद्धिसागर जग शर्मकरा. शुभ. ॥ १७ ॥

अक्कल.

अक्कल अक्कल अक्कल तारी, वात अक्कल न्यारीरे,
अक्कलथी तो सक्कल शोभे, अक्कलथी हुशियारीरे. अक्कल.
अक्कलथी हुन्नर सहु सुजे, अक्कल सहुने प्यारीरे,
अक्कलथी जंगलमां मंगल, अक्कलथी उद्यम भारीरे. अक्कल. १
अक्कल बडी के भेंस बडी, अक्कलथी जाय न हारीरे,

अक्कलथी पूजाता माणस, अक्कलनी बलिहारीरे. अक्कल. ॥ २ ॥
अक्कलथी सुजे छे सारु, समजो नर ने नारीरे,
वेचाती पण मळती अक्कल, अक्कल वीन खुवारीरे अक्कल. ३
अक्कलथी तो मीलो सुझी, फोनोग्राफ विचारीरे;
अग्नि गाडी अग्नि नौका, अक्कल हुन्नरक्यारीरे. अक्कल. ४
टोरपीडो पण अक्कलयोगे, अक्कल वात हजारीरे,
अक्कलना दुष्मनथी जगमां, थाय खुवारी भारीरे. अक्कल. ५
दुःखनी क्यारी दुनियादारी, अक्कल वण अवधारीरे,
अक्कलथी समजाव्युं समजे, अक्कल धर्म सारीरे. अक्कल. ६
अक्कलथी संकटथी छूटे, मतिज्ञान श्रुत धारीरे,
बुद्धिसागर केवलज्ञाने, सिद्ध बुद्ध अवतारीरे. अक्कल. ॥ ७ ॥

नीति.

नीति नीति नीति जगमां, नीति छे सुखकारी रे,
नीतिनी रीतिमां प्रीति, राखो नर ने नारी रे नीति०
नीतिनी केळवणी मोटी, शांतिनी करनारी रे,
नीतिथी मानवनी कीर्ति, नीति दुःख हरनारी रे. नीति० ॥१॥
राज्यपाट नीतिथी स्थायी, व्यापारे जयकारी रे;
नोकरीमां पण नीति उची, नीतिनी बलिहारी रे. नीति० ॥२॥
हिंसा चोरी जारी छडो, बोलो वेण विचारी रे,
जननी सम देखो परनारी, नीति साची धारी रे नीति० ॥ ३ ॥
नीतिथी संपीली दुनिया, नीति वण खुवारी रे;
यम नियम नीति छे साची, नीतिनी करवी यारी रे नीति० ॥४॥
नीतिथी राजा ने रैयत, पामे सुखनी क्यारी रे,
अनीतिनी लक्ष्मी जल्दी, पाणी पूर जनारी रे. नीति० ॥ ५ ॥

खोटा दस्तावेजो करवा, रुश्वत टेव नठारी रे;
थापण परनी ओळववाथी, जाशो जीवन हारी रे. नीति० ॥६॥
अनीतिना पगले चाली, कौरव भूल्या भारी रे;
परनारी हरवाथी रावण, हार्यो संपत् सारी रे. नीति० ॥ ७ ॥
नीतिनी रीति छे न्यारी, सन्तजनोने प्यारी रे;
बुद्धिसागर नीति सारी, मुक्तिपुरनी बारी रे. नीति० ॥ ८ ॥

हिंमत.

हिंमतनी किंमत न जगमां, हिंमत काम करावेरे,
हिंमत धारी कार्य करंतां, जय लक्ष्मी झट पावेरे. हिंमत.
हिंमतथी भय सघळा नासे, हिंमत शत्रु हठावेरे,
हिंमतथी मंत्रोने साधे, देवो वशमां थावेरे. हिंमत. ॥ १ ॥
हिंमतथी व्यापारे लक्ष्मी, हिंमत भाग्य जणावेरे,
हिंमतथी युद्धे जय लक्ष्मी, हिंमत शूर चढावेरे. हिंमत. ॥ २ ॥
हिंमतथी कंपे छे पर्वत, हिंमत दान अपावेरे,
हिंमतथी संकट तो नासे, हिंमत कीर्ति वधावेरे. हिंमत. ॥ ३ ॥
हिंमत देवी सेवा साची, जय वाजां वगडावेरे,
हिंमतथी तो दीक्षा देवी, कीर्तिध्वज फरकावेरे, हिंमत. ॥ ४ ॥
पाप कर्ममां हिंमत भूंडी, धर्मे हिंमत सारीरे,
धर्म कर्ममां हिंमत धारे, तेनी छे बलिहारीरे. हिंमत. ॥ ५ ॥
हिंमत धारी, दुःखो वेठी, आत्मध्यानने ध्यावेरे.
बुद्धिसागर हिंमत धरतां, जग जय मंगल थावेरे. हिंमत. ॥६॥

अभिमान छाजतो नथी.

छप्पयछन्द

छाज्यो नहि अभिमान कोइनो आ दुनियामां,
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो मोज मझामां,
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो उमर आखी,
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो सत्ता राखी,
छाज्यो नहि कदी छाजशे नहि अभिमान महा नीच छे,
बुद्धिसागर समजशो जन निरभिमाने उच्च छे. ॥ १ ॥

राज्य मळ्याथी छाके जे अभिमाने भारी,
रावण जेवा नृपति पण चाल्या सहु हारी,
देह सुकोमल कदली जेवी झट करमाशे,
फूले शुं नृप फोक मळ्युं सहु चाल्युं जाशे,
चक्रवर्ति पण चालिया तो तारो शो जग भार छे,
बुद्धिसागर समज रे नृप धर्म कर्म एक सार छे. ॥ २ ॥

शेठो थइ जे दान न आपे शाना शेठो,
कंजुस थइ पैसाने माटे करता वेठो,
गाडी वाडी ललना धनने देखी म्हाले;
गरीब जन मागे पण तेने काइ न आले,
धर्म कर्म शुभ सार छे एक समजशो जग शेठिया,
धर्म करणी दान विना तो शेठिया पण वेठीया. ॥ ३ ॥

सत्ता धारी थइने जे जन गरीब दडे,
अभिमानना तोरे फूली नीति छंडे,
गरीब जननुं शुरु ताके ते नहीं सारा,
सत्ताधिकारी एवा तो जग जाण नठारा,
अभिमान करशे जगतमा तेज दुःखी जाणजो,
बुद्धिसागर समजीने शिख सत्य मनमां आणजो ॥ ४ ॥

काम अने ब्रह्मचर्यनो संवाद.

काम काम काम कहेतो हुं तो जगमां मोटोरे,
त्रण भुवनमां मोटो सहुथी, मारो छे नहि जोटोरे. काम. ॥१॥
पशु पंखीमां मारो वासो, देव देवीमां वसतोरे,
मनुष्यने में लीधा तावे, वार्यो जरा न खसतोरे. काम. ॥ २ ॥
योगी यति संन्यासी पंडित, ते पण मुजने पूजेरे,
मारा वेगे राजा राणा, लइ तरवारो झुझेरे. काम. ॥ ३ ॥
तप तपिया मुनिवर वैरागी, तेने पण हुं पाडुंरे,
रावणने पण में भरमाव्यो, मारुं मोटुं धाडुंरे. काम. ॥ ४ ॥
तपसी लपसी जावे क्षणमां, काम वेगथी मोटारे,
नागा बावा जगमां चावा, ललचाता लंगोटारे. काम. ॥ ५ ॥
मारा पीड्या पछडाता जन, मारो खूब झपाटोरे,
मारा वशमां आवे तेनो, काढी, नांखु आटोरे, काम. ॥ ६ ॥
कामिजन दाणाने पीसु, विषय घंटीमां नांखी रे;
भूक्का काढी नांख्या सहुना, कोइ रह्या नहि बाकीरे. काम. ७
बळवंताने निर्बळ करतो, धनीकने भीखारीरे,
मंत्र सिद्धने पामर करतो, गति हमारी न्यारीरे. काम. ॥ ८ ॥
परगट पूजा छानी पूजा, केइक दीलमां करतारे,
मारा बाणे विंधाया जन, जोशो जगमां मरतारे. काम. ॥ ९ ॥
जुवान पर सत्ता छे मारी; जननी मुजपर प्रीतिरे;
तीर्थंकर भोगावली कर्मे, राखे एवी रीतिरे. काम. ॥ १० ॥
भोगावली कर्म करी मारु, लेणुं कदी न छोडुंरे;
भोगावलिथी उपरांठानुं, वेगे माथुं फोडुंरे. काम. ॥ ११ ॥
भोगावलीनुं लेणुं आपे, जगमां नरने नारीरे;
नंदिषेणजी कर्मे नडिया, कीधी वेश्या यारीरे. काम. ॥ १२ ॥

रहनेमि मुनिवर वैरागी, तेने पण भरमाव्यारे,
पडिया पंडित मुनिवर मोटा, आपणमां जे डाह्यारे. काम. ॥१३॥
जुओ कबुतर चकली जोडां, विषय वासना भोगीरे;
मारा वेगे अंधा सर्वे, बाळा वुड्डा योगीरे. काम. ॥ १४ ॥
नाच नचावुं दुनियाने हुं, विविध करावुं चाळारे;
इन्द्र चंद्रने नागेन्द्रादिक, भूल्या सहु धाराळारे. काम. ॥ १५ ॥
माराथी दुनिया सहु चाले, वीरला केइक छुट्यारे,
मारी निंदा करता जनने, दाव पेचथी कूट्यारे काम. ॥१६॥
ब्रह्मचारिनुं नाम धरावी, जे जन मनमां फुलेरे;
ते पण दीलमा मुजने राखे, चारगतिमां झूलेरे. काम. ॥१७॥
डाह्या डमरा पडित साधु, तेना दीलमां पेसुरे;
भूत तणी पेठे भरमावु, लाग जोइने वेसुरे. काम. ॥१८॥
लाख चोराशी जीवायोनि, तेमां मारो वासो रे,
भला भलाने पीसी नाखुं, मारो ओर तमासोरे काम. ॥१९॥
कालीने भैरवथी मोटो, सहुने हुं धुणावुं रे,
काळी भैरवने धुणावुं, नाम जगत्मा चावुरे. काम ॥२०॥
मुजथी चोरा कोइ न जगमा, काळ अनादि सगीरे;
मारा जोरे कोइ न वचिया, मोह पिपासा रंगीरे. काम. ॥२१॥
मारी पूजा करवा माटे, घरमा लावे लाडीरे,
गाडी वाडीमां मस्ताना, केइक पीवे ताडीरे काम.॥२२॥
त्रेवीस विषयो मारा पुत्रो, ते पण मारा जेवा रे,
जगमा ज्या त्यां तेनी पूजा, जगमा जेवा देवारे काम ॥२३॥
जटाधारी लिंगनी पूजा, करता नरने नारीरे;
मारा माटे तेनी पूजा, वात भली शणगारीरे. काम ॥२४॥
ब्रह्मा विष्णुने सपडाव्या, वळी जोशी महादेवारे;

सूर्य बुधने जोइ लेशो, भरमाव्या छे एवारे. काम. ॥२५॥
व्यास रुषि पण वशमां लीधा, केइक रुषि पंजेव्यारे;
ललनानी लालचमां लोको, लाज तजी थया घहेलारे. काम. २६
केइक स्त्रीओने पीडयाथी, रात्री नदी तरंतीरे;
पंच बाणथी विंध्याथी केइ, अग्नि वण बळंतीरे. काम. २७॥
राधावेधी महारथीओए, पृथ्वी वशमां कीधी रे;
तेवानी पण धोळे दहाडे, लाज स्हेजमां लीधीरे. काम. ॥२८॥
फुंकेथी पर्वत उडाडे, पादे मही धुजावेरे;
तेवा पण मारा छे चाकर, परवशताने पावेरे. काम. ॥२९॥
आषाढाभूति आचार्य, जेनी मोटी सत्तारे;
भोगावलिथी वशमां कीधा, खवराव्या में खत्तारे. काम. ॥३०॥
पुनर्लग्नमां मारी सत्ता, मारा माटे परणेरे;
मारा सामा उठया तेने, कीधा मारा शरणेरे. काम. ॥३१॥
बाळलग्ननी होळी मोटी, ते पण में सळगावीरे;
नाना बाळकने होमीने, मुज सत्ता वर्तावीरे. काम. ॥३२॥
दांत पडयाने आंखे ओछा, देखे घरडा डाह्यारे;
माथे पळीयां आवेलाने, वृद्ध विवाहे छाया रे. काम. ॥३३॥
एक छतां पण बीजी परणे, त्रीजी परणे नारीरे;
तेमां पण मारी छे सत्ता, जीवो जाता हारीरे. काम. ॥३४॥
ब्रह्मचारी संन्यासी योगी, जेनी कीर्ति मोटीरे;
स्वप्नामां पण धात जवाथी, बगडे छे लंगोटीरे. काम. ॥३५॥
मारा वणतो पुत्रो क्यांथी, मारा वण नहि बापारे;
मारा वण दुनिया नहि चाले, मारा ज्यां त्यां छापारे. काम. ३६
गोर करे छे बाळीकाओ, तेपण मारा माटे रे;
मारा माटे नोकर रहेवुं, वेसे रुडा हाटे रे. काम. ॥ ३७ ॥

तप तपता जन मारा माटे, करवत लेवे-काशी रे,
हीमाळो गळता जन कोड, मारा माटे फांसी रे. काम. ॥ ३८ ॥
दोडे छे केइ मारा माटे, केइकने दोडावुं रे;
मारा वशमां लावी जनने, ललना पाय पडावु रे. काम. ॥३९॥
मारा उपर जेवी प्रीति, तेवी क्यांय न दीठी रे,
मारी वातो जोशो जगमां, सहुने लागे मीठी रे काम ॥४०॥
पाटण धणीनु राज्य पडाव्युं, परनारीना प्रेमे रे;
करण राजा घेहेलो जगमां, तेपण मारा नेमे रे. काम. ॥ ४१ ॥
हिंदु राज्यतणी जे दीछी, तेपण जुओ पडावी रे,
मुसलमानमां फाटंफुटा, तेपण में गगडावी रे काम. ॥ ४२ ॥
क्षत्रियोनुं राज्य पडाव्युं, मुसलमानने मार्या रे,
मराठाने नवाब राजा, राजपाट सहु हार्या रे काम. ॥ ४३ ॥
कोटी धननो नाश करीने, नचावता केइ वेश्या रे,
मारा वेगे तपिया केइक, मोकलता संदेशा रे. काम ॥ ४४ ॥
प्यारी प्यारी हुं बोलावुं, प्राणपति बोलावुं रे;
मारा महिमानी ख्यातिमा, नाटकने विरचावुंरे. काम ॥४५॥
काव्य करीने केइक कवियो, मारा गाणा गावे रे;
शृंगार रसमा लदबद थइने, केइक खत्ता खावे रे. काम ॥ ४६ ॥
तोपोथी रणशूरो केटक, मारे अग्नि गोळा रे;
तेपण मारा वशमां आव्या, देखी ललना डोळा रे. काम ॥४७॥
चार वेदना ज्ञाता पंडित, वाद विवादे फरता रे;
तेने पण में वशमां लीधा, ललनाने करगरता रे काम. ॥४८॥
केइक चलवी डाकडमाळो, गुफामा जइ बेठो रे,
तुर्तवारमां लाग ताकीने, तेना दीलमा पेठो रे. काम. ॥ ४९ ॥
क्षय रोगी में केइक कीधा, केइ बनाव्या गाडा रे,

केइक लज्जा विहीन करीया, केइक करीया वांडा रे. काम. ॥५०॥
वानरीयोना टोळामां तो, एकज वानर रहेवे रे;
बीजो वानर उत्पन्न थातां, जल्दी मारी देवे रे. काम. ॥ ५१ ॥
राधीकाने कृष्ण मनावे, तेमां महिमा मारो रे;
निरागीने राग ज शानो, जगमां हुं धूतारो रे. काम. ॥ ५२ ॥
केइक देवो अबळा राखे, खास प्रयोजन मारु रे;
भाषाना प्रोफेसर मनमां, हुं करतो अंधारु रे. काम. ॥ ५३ ॥
ललनानी साथे जे हांसी, तेमां मारी फांसी रे;
हांसीमांथी खांसी लावुं, खांसीमांथी ठांसी रे. काम. ॥ ५४ ॥
वाडी लाडी घरने घोडा, मारी सेवा माटे रे;
पाताले पेसे छे केइक, केइक चाले वाटे रे. काम. ॥ ५५ ॥
माथे तेल फुलेल लगावे, सुवे पुष्प पथारी रे;
स्वप्नामां नारीने सेवे, मारी सेवा भारी रे. काम. ॥ ५६ ॥
केइक भडवाने भीखारी, करता स्त्रीनी यारी रे;
नारी करती नरनी सेवा, कामावस्था धारी रे. काम. ॥ ५७ ॥
मृत्यु स्वर्ग अने पाताळे, मारी सत्ता चाले रे;
वनस्पतिमां छानो वसियो, सहु मुजने पंपाळे रे. काम. ॥५८॥
नवमा गुणस्थानक सुधी तो, राज्य हमारुं भारे रे;
ब्रह्म ध्यानथी भूली योगी, मुजने झट संभारे रे. काम. ॥५९॥
केइ कायाथी ब्रह्मचारी, वचन थकी ब्रह्मचारी रे;
व्यभिचारी ते पूरा मनथी, अकळकळा मुज न्यारी रे. काम. ॥६०॥
मन बगड्याथी पापज मोटुं, मनना जे व्यभिचारी रे;
काया करतां मनना दोषो, शास्त्रे सुणिया भारी रे. काम. ॥६१॥
मनना परिणामे हुं पेसी, करतो जन खुवारी रे;
मनना व्यभिचारी छे मोटा, काया जाण बीचारी रे. काम. ॥६२॥

मन परिणामे वाचा काया, उपर सत्ता भारी रे;
स्वप्नामां धातु जावाथी, काया होय नठारी रे काम. ॥ ६३ ॥
माराथी दोषी छे मनमां, जगमां नरने नारीरे;
मनथी सृष्टि मनथी मुक्ति, मन दोषे संसारीरे काम. ॥६४॥
रुषभादिक चोवीश तीर्थंकर, जीत्या मुजने देवारे;
ते माटे ते जिन कहेवाया, पाम्या मुक्ति मेवारे. काम. ॥६५॥
तेना भक्तो सुरिवर वाचक, साधु मंडळ मोटुंरे;
युक्तिथी ते जीते मुजने, वेंण कहुं नहि खोटुंरे. काम. ॥६६॥
चौदभुवनमां मारी सत्ता, ज्यां त्यां मारी वातोरे;
रावण जेवा महीपतिने, हुं मारु छुं लातोरे काम. ॥६७॥
मारा जेवो वळी नहि को, शत्रुने संहारुरे,
काळ अनादि राज्य अमारुं, नहि कोने गणकारुंरे काम. ६८
मुजने जीत्या कोइ न योद्धा, दुश्मनने झट मारुरे,
प्रचंडयोद्धो हुं दुनियामां, कोइ थकी नही हारुरे काम. ६९
शीयल योद्धो वात सुणीने, करी गर्जना बोलेरे,
मारा आगळ काम करे शुं, नहि कोइ मारा तोलेरे शीयल ७०
तारां मारां लक्षण जुदां, तुं छे दु खनो दातारे,
तारा वशमां भलुं न कोनुं, प्राणी दुःखडा पातारे. शीयल ७१
भूंडु करवामां दुर्जनता, तारी नजरे दीठीरे,
दुर्जननी शक्ति छे भूंडी, जेवी फांसी चीटीरे. शीयल. ॥७२॥
पशु पंखीमा तारो वासो, तेमां शु छे सारुरे,
तारा सगे खत्ता खावे, मनडुं होय नठारुरे. शीयल. ॥ ७३ ॥
मारी संगत सुखकर मोटी, शाश्वत सुखडा आपुरे,
मारा भक्तोने हुं क्षणमा, मुक्तिपुरीमा थापुंरे. शीयल ॥ ७४ ॥
योगी यति सन्यासी त्यागी, तुज संगतथी दुःखीरे,

मारी संगत करता निशदिन, होवे जगमां सुखीरे. शीयल. ७५
तारी संगतथी सहु अंधा, जगमां नरने नारीरे.
तेमां भूंडाइ जग तारी, दुःखडांनी देनारीरे. शीयल. ॥ ७६ ॥
रावण जेवा पण तुज संगे, नरक गतिमां पडियारे,
रौरव दुःखडां भोगवता त्यां, तुज संगे लडथडियारे. शीयल ७७
तपसी पण लपसी जावे त्यां, तारी संगत खोटीरे,
तारी संगतथीरे भूंडा, मळे न सुखथी रोटीरे. शीयल. ॥ ७८ ॥
मारा संगे तपथी सुखथी, साधे सहेजे मुक्तिरे,
मुज संगतथी सारी बुद्धि, प्रगटे सारी युक्तिरे. शीयल ॥ ७९ ॥
नंदिषेण आषाढाचार्य, तुज संगतथी पडियारे,
मारी संगत थातां तेतो, सिद्ध स्थानमां चडियारे. शीयल. ८०
स्वप्नामां लंगोटी बगडे, संन्यासीनी देखोरे,
शरीर विकारो आदि कारण, तेमां तुं नहि एकोरे. शीयल. ८१
गुणस्थानक नवमा सुधी तें, तारी शक्ति भाखीरे;
क्षपक श्रेणिए चढतां मुनिए, शक्ति तोडी नाखीरे. शीयल. ८२
जीवोनुं भूंडुं करवामां, तें नहि राख्युं वाकीरे;
भुंडा पापी समज दीलमां, बोले शुं तुं छाकीरे. शीयल. ८३
भूंडानी शी भवाइ करवी, कोइ न तुजने वखाणेरे;
अज्ञानीनी आगळ फावे, अज्ञानीने ताणेरे. शीयल. ८४
शीयलना प्रतापे सुखियां, जगमां नरने नारीरे;
ब्रह्मचर्यथी शक्ति प्रगटे, ब्रह्मचर्य बलिहारीरे. शीयल. ८५
मारी पूजा मुनिवर करता, तीर्थंकर पण भारीरे;
मारी पूजा करता मोटा, जगमां जन सुखकारीरे. शीयल. ८६
सतीओए मारी पूजाथी, चमत्कार बतलाव्यारे;
सीता अग्निमांहि पडीके, शीतल जलनी छायारे. शीयल. ८७

पतिव्रता द्रौपती शाणीनां, ससद्‌मां चीर ताण्यांरे,
मारा तेजे देवोए तो, पूर्या वस्त्र मजानांरे, शीयल. ८८
सुभद्राए ब्रह्मचर्यथी, जाती कीर्ति राखीरे,
दमयंतीए पतिव्रताथी, उमर काढी आखीरे शीयल. ८९
शीयलना प्रतापे सतीओ, शाश्वत सुखमां म्हालेरे,
मारा संगे वचनसिद्धियो, कर्म दोपने खाळेरे. शीयल. ९०
मोटा ज्ञानी साधु त्यागी, शीयल तेजे दीपेरे,
तारा तेवीस पुत्रोने तो, क्षणमां ध्याने जीपेरे. शीयल. ९१
कामीने निष्कामी बनावी, शिवपुरमां पहोंचाडुंरे,
तारु त्यां तो काइ न चाले, दूर रहे तुज धाडुंरे. शीयल. ९२
तुज संगतथी दुःखी जीवो, मारा शरणे आवेरे,
द्रव्यभावथी मुज संगतथी, सहेजे शिवपुर जावेरे. शीयल ९३
त्यागी साधु हृदये पेसी, करतो तुंतो चोरीरे,
मारी नजरे पडतां तारी, काइ न चाले जोरीरे, शीयल. ९४
जटाधारिने लिंगनी पूजा, ते पण मुज वियोगेरे,
मारी संगत थातां जीवो, कामवेगने रोकेरे. शीयल. ९५
ब्रह्मा विष्णुने सपडाव्या, मारा संग अभावेरे,
मारी नजरे पडता पामर, वळी भस्म झट थावेरे. शीयल. ९६
सूर्य चंद्र ने व्यास रुपि पण, तुज संगतथी पडियारे,
मारा शरणे आव्या तेतो, तुर्त वारमां चडियारे. शीयल ९७
मुज संगतविहीन रुपिने, पापी तुं पजेळेरे,
मुजने वोलाव्याथी पामर, पाछुं पगलुं मेलेरे. शीयल. ९८
निर्बळ जन पण मुज सगतथी, बळीया जगमा गाजेरे,
फुंकेथी पर्वत उडाडे, ते पण मारा राजेरे शीयल. ९९
तारा सगे नबळो थावे, नबळाइ त्यां तारीरे,

नबळानी संगतथी नबळा, जगमां नरने नारीरे. शीयल. १००
काळ अनादि निर्बळ जीवो, तेने सबळा करवारे;
मोटाइ तेमां छे मारी, जीवना संकट हरवारे. शीयल. १०१
भोगावलीथी लेणुं तारु, लेतो त्यां न वडाइरे;
तीर्थंकरोए बाळ्यो तुजने, जोने तुज नबळाइरे. शीयल. १०२
काळी ने भैरवथी मोटा, एवा तुजने बाळुंरे;
स्थूलिभद्रनी आगळ तारुं, वदन थयुं छे काळुंरे. शीयल. १०३
स्थूलिभद्रजीए खूब पीटयो, नाठो बूमो पाडीरे;
जुओ सुदर्शन शेठे कूटयो, विजय शेठ शेठाणीरे. शीयल. १०४
मोहीनी आगळ तुं फावे, मारा आगे नासेरे;
अंधारानी पेठे क्षणमां, नासे रवि प्रकाशेरे. शीयल. १०५
पुनर्लग्नने बाळलग्नमां, तारुं जोर जणावेरे;
मारो महिमा सांभळवाथी, तारुं जोर न फावेरे. शीयल. १०६
तारा दोषो जे जन देखे, तेतो तुजथी भागेरे;
मारा शरणे आवे त्यारे, जयडंको झट वागेरे. शीयल. १०७
तुज संगतथी मुक्ति न मळती, तुज संगतथी दुःखोरे;
तुज संगतथी जन्म जरा छे, तुज संगतथी भूखोरे. शीयल. १०८
काम काम काम तारी, संगतथी दुःख भारीरे;
चौदभुवनमां दुःख देनारो, तारी बुरी यारीरे. शीयल. १०९
हीमाळो गळवाने माटे, मनुष्यने ललचावेरे;
अनंतगुणनो छे तुं घातक, भवभवमां भटकावेरे. शीयल. ११०
पाटण दील्ली राज्य पडाव्यां, बूरी तारी शक्तिरे;
मूर्ख मनुष्यो समज्या वण तो, करता तारी भक्तिरे. शीयल. १११
प्यारी प्राणपति बोलावे, ए पण तारी मायारे;
भ्रांतिथी भूल्या जीवोने, फोगट तें ललचाव्यारे. शीयल. ११२

मारामां शक्ति छे मोटी, मारो ओर झपाटोरे;
मारी नजरे पडतां तारो, काढी नाखुं आटोरे शीयल. ११३
दात्र पेचमां आव्याथी तो, क्षणमां पीसी नाखुरे;
तुजने जीत्या सिद्ध अनंता, वशमां करीने राखुरे. शीयल. ११४
मारो महिमा जगमां मोटो, मुजथी जगमां शातिरे;
मुजने सेव्याथी माणसनी, वधती शरीरकातिरे. शीयल. ११५
मारा संगे कीर्ति कमळा, मारा सगे पुष्टिरे,
मारा संगे सवळा जीवो, अखूट लक्ष्मी तुष्टिरे शीयल ११६
मारी संगतथी तो जाणो, रंक जनो पण राजारे;
मारी संगत करवामा तो, नेम जनोना झाझारे शीयल. ११७
अष्टसिद्धि नवनिधि प्रगटे, सकट वेळा टळतीरे,
ब्रह्मचारिना आशीर्वादे, भाग्य वेळा झट वळतीरे. शीयल ११८
शरीरसंपत्तिमां पहेलो, केळवणीमां पहेलोरे;
नीति केळवणीमां पहेलो, मुक्तिपुरीमां वहेलोरे शीयल ११९
मुजसंगतथी नरनारीनी, कीर्ति प्रसरे सारीरे,
सन्तजनोमा मारी पूजा, जोशो दील विचारीरे शीयल. १२०
ब्रह्मचर्यना नाम थकी जग, ज्या त्या मुजने गावेरे;
चोसठ इन्द्रो मुजने वदे, ज्ञानीजन मन ध्यावेरे. शीयल. १२१
तुज सेव्याथी कदी न तृप्ति, उलटा दु खो थावेरे,
काष्ठोथी अग्निनी पेठे, शाति कदी न आवेरे. शीयल १२२
काव्य करीने पामर कवियो, तारा गाणा गावेरे,
गटी कायामा शुं सारु, समजु मनमा आवेरे शीयल १२३
चार वेदना ज्ञाता पडित, पण माया मस्तानीरे,
तारा फदामा सपडाता, पण भूले नहि ज्ञानीरे. शीयल. १२४
केइक देवो अवळा राखे, ते पण भूल्या भारीरे,

मारी संगत थातां नक्की, सुधर्या नर ने नारीरे. शीयल. १२५
स्वप्नामां नारीनी संगत, काळ अनादि टेवेरे;
अनुक्रमे अभ्यास करंतां, मुज संगत सुख देवेरे. शीयल. १२६
औषधथी ज्वर तो जेम जावे, तेम तुं मुजथी नासेरे;
मारा आवे तुं संताती, नजरे जोतां भासेरे. शीयल. १२७
मन वाणी कायाथी जगमां, ब्रह्मचारी छे बळीयारे;
तेना सामुं तुं शुं देखे, मोहविकारो टळीयारे. शीयल. १२८
ब्रह्मचारीना तेजथकी तो, भूत प्रेत सहु भागेरे;
देवनी कोडी करने जोडी, प्रेमे पाये लागेरे. शीयल. १२९
चौदभुवनमां मारा जोरे, वर्ते सारी शांतिरे;
मारी संगत थातां जननी, तुर्त टळे छे भ्रांतिरे. शीयल. १३०
तोपो चालंती अटकावुं, अग्निने थंभावुंरे;
समुद्रनी मर्यादा राखुं, वायुने हंफावुंरे. शीयल. १३१
जंगलमां मंगल हुं करतो, संकट वृन्द समावुंरे;
मारा तेजे सुरवर व्हीता, महिमा सत्य रचावुंरे. शीयल. १३२
मारा तेजे सिंहो थंभे, मरकीरोग शमावुंरे;
मोह सैन्यने सख्त वेगथी, जोतां वार हरावुंरे. शीयल. १३३
मंत्रसिद्धियो मारा तेजे, धार्युं काम करावुंरे;
देव देवीने पाय पडावुं, अनंत शक्ति धरावुंरे. शीयल. १३४
वगडेलाने हुं सुधारु, तुर्तवारमां तारुरे;
मन परिणामे झट सुधारु, विषयवेग संहारुरे. शीयल. १३५
चौदभुवनमां मारा तेजे, नारदजी छे चावारे;
मृत्युने पण मारी नाखुं, देख झपाटा आवारे. शीयल. १३६
देशोदयमां हुं छुं पहेलो, मारुं भाषण पहेलुंरे;
मारी स्तुति ज्यां त्यां थावे, वचन मान आ वहेलुंरे. शीयल. १३७

वाळलग्नने दूर करुंछुं, तारु जोर हठावीरे,
ब्रह्मचारीने सुखी करतो, स्वर्गे तुर्त चढावीरे. शीयल.१३८
त्रण भुवनमां मारी पूजा, प्राणी भावे करतारे,
ध्याने गुफामां वेसीने, योगी जग जय वरतारे. शीयल.१३९
मननी स्थिरता मुजथी थावे, मुजथी ध्यान सुहावेरे,
मुजथी वैरागी छे साचो, मुजथी सिद्धि थावेरे. शीयल.१४०
मारा संगी निर्धन जीवो, इन्द्र चंद्रथी मोटारे,
मारा पण जगमा अधारु, धूमाडाना गोटारे. शीयल.१४१
मारी आगळ रत्न नकामां, मारी आगळ देवारे,
हरिहर ब्रह्मा मुजने पूजे, करता भावे सेवारे. शीयल १४२
चोसठ इन्द्रोथी पूजितश्री, तीर्थंकर मुज सेवेरे;
मारा वण मुक्ति नहि क्यार, समजु समजी लेवेरे शीयल १४३
पडताने पण दया करीने, शिवसुख सत्य चखाडुरे,
परोपकारी स्वार्थ विना हु, काइ न लेतो भाडुरे शीयल.१४४
द्रव्यभावथी हु छुं चावो, अकळ कळा छे मारीरे,
मेरु पर्वतने डोलावुं, जगमा हुं जयकारीरे. शीयल.१४५
तेतर उपर वाज परे हुं, तारी पाछळ भमतोरे,
लाग ताकीने तुर्त वारमा, तुजने स्हेजे दमतोरे. शीयल १४६
मारा संगे सुख सदा छे, युद्धामां हुशियारीरे,
मारा संगे शरीर सारु, शिवपुरनी तैयारीरे. शीयल १४७
चिंतामणि सम मारो महिमा, विष्टा जेवो तारोरे,
मारा तारामां खूब अंतर, तुं छे दुःखनो भारोरे शीयल.१४८
वेउ जण एम वाद करता, जिनवर पासे आवेरे,
सर्व हकीकत ज्ञात मगजथी, जिनवरने सुणावेरे वेउ. १४९
वेमाथी सारोने मोटो कोण कहो ते ज्ञानेरे,

तीर्थंकरनी वाणी साची, त्रण भुवन तो मानेरे. वेउ. १५०
केवल ज्ञाने जिनवर देवा, वाणी सत्य प्रकाशेरे,
सत्य तत्त्वने ज्ञाने कहेवे, ज्ञाने सत्य तो भासेरे. केवल. १५१
पापी काम जगत्मां भारे, जन्म मरण दुःखदातारे,
सर्व गुणोमां शीयल मोटो, आपे सुख ने शातारे. केवल. १५२
तीर्थंकर शीयल आराधे, क्षायिक गुणने साधेरे,
द्रव्यभावथी शीयल साचुं, पाळे गुणगण वाधेरे. केवल. १५३
शीयल साचुं शुद्ध रमणता, द्रव्य ते भाव निमित्तरे,
भाव शील शुद्धातम साधे, प्राणी होय पवित्ररे. केवल. १५४
निश्चयथी ब्रह्मचर्य धर्योथी, क्षणमां होवे मुक्तिरे,
निश्चयथी निजगुणमां रमवुं, ब्रह्मचर्यनी युक्तिरे. केवल. १५५
तप जप दान थकी पण शीयळ, जाण जगत्मां मोटुंरे,
द्रव्य शीयल पण भाव शीयलनी, आगळ जाणो छोटुंरे. केवल.
केवली कोटी जीव्हाथी पण, ब्रह्मचर्यने गावेरे,
तोपण महिमा पार न आवे, वस्तु सत्य जणावेरे. केवळ. १५१
सर्व गुणोमां ब्रह्मचर्यनो, महिमा जगमां भारेरे,
द्रव्यभाव शीयल छे मोटुं, भवजल पार उतारेरे. केवल. १५८
ब्रह्मचर्यनी त्रण भुवनमां, कीर्ति रही छे गाजीरे,
सद्गुणदृष्टि दीलमां धारी, रहेशो मनमां राजीरे. केवल. १५९
जय जय बोलो ब्रह्मचर्यनी, होवे मंगलमालारे,
ब्रह्मचर्यथी मुक्ति वधु झट, अर्पे कंठे माळारे. केवल. १६०
धरजो मनमां सत्य वातने, अनुभव सुखना प्यासीरे,
शिवसुंदरी पण ब्रह्मचर्यनी, जाणो जगमां दासीरे. केवल. १६१
गाम माणसा सुंदर शोभे, मास कल्प करी भावेरे,
बुद्धिसागर गुरुभक्तिथी, मनमां आव्युं गावेरे. गाम. १६२

श्रीसंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, मंगल माला करशेरे,
भणनारा सुणनारा भक्तो, परम प्रभुता वरशेरे. श्री. ॥ १६३॥

आत्मज्योति.

धीरानो राग

जागी झळहळ ज्योतिरे, शोधी लीधुं सत्य मोति,
खलकमां अलखनेरे, काढ्यो मेंतो झट गोती. जागी.
अनंतज्ञानी असंख्यप्रदेशी, चिदानंद घनराय,
अनुभव नयणे नीरखी नेहे, बीजाने न कहाय,
कुमति तो नाठीरे, आघे जइ बहु रोती. जागी. ॥ १ ॥
प्रेम करीने प्रेमी परख्यो, परख्यो आपोआप,
पंचभूतथी न्यारो नक्की, शमिया सहु संताप,
भ्रमणानी खोटीरे, उतरी छे पनोती. जागी ॥ २ ॥
बीजके झबूके मोति, परोइ ले हुशियार,
शुद्ध चेतना क्षयोपशमनी, बीजली चमके सार;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, लोकालोक विप्णोति. जागी. ॥ ३ ॥

" संकटमां समता "

धीराना पदनो राग.

संकट पडे समतारे, राख जीव धैर्य धरी;
सुख दुःख कारणरे, कर्म एक दील धरी. टेक.
सुख दुःख वादळछाया पेठे, क्षणमां आवे जाय,
निमित्त कारण अन्यजनो त्या, क्रोध कहो केम थाय
धर्मीनी कसोटीरे संकट क्षण भव्य खरी, संकट. ॥ १ ॥
ताप पड्याथी मेघज वरसे, संकट समये धीर,

संकटनी शाळामां भणतां, थावे प्राणी वीर;
श्रद्धानी कसोटीरे, संकट पडे वीरे वरी. संकट. ॥ २ ॥
संकट वेळा उत्सव सरखी, गणता उत्तम जन;
मेरु डगे पण दील डगे नही, श्रद्धा राखे मन,
सुख दुःख वेळारे क्षणे क्षणे आवे फरी. संकट. ॥ ३ ॥
प्राण पडे पण तजो न समता, अंते भलुं थनार,
उच्चाशयथी उच्च थशो सहु, समजो नर ने नार;
बुद्धिसागर समतारे, जग जय विजय करी. संकट. ॥ ४ ॥

देहमां दीवो.

ॐ नमः

राग धीरानापदनो.

देहमां छे दीवोरे, झळहळ ज्योत करनारो,
अनादि प्रकाशीरे, अज्ञान तम हरनारो. टेक.
असंख्यप्रदेशी नित्य स्वरुपी, अनंत गुण आधार,
सहजानंदी शत्रुंजय छे, देह पिंड करनार;
जोगीनो पण ते जोगीरे, तारे ने पोते तरनारो. देह. ॥ १ ॥
अनंत नाम धरीने ध्यावे, दुनियां जेने खास;
सर्वविषे ने सहुथी अळगो, लोकालोक प्रकाश,
एवो इश पोतेरे क्षायिकभाव वरनारो. देहमां. ॥ २ ॥
पिंडमां पिंडमां अनंत व्यक्ति, चिद्घन चेतन राय;
क्षीर नीरनी पेठे व्याप्यो, योगीश्वर दिल ध्याय,
प्रेमीनो पण ते प्रेमीरे, अनेक दुःख हरनारो. देहमां. ॥ ३ ॥
दिलमां ध्यावो देहे वसीयो, ज्ञाता ज्ञेयस्वरुप;
बुद्धिसागर चिद्घन चेतन, वर्ते रुपारुप,
अनादिनो योगीरे, प्रगटपणे योगी खरो. देहमां. ॥ ४ ॥

सर्वनुं सारु थाओ.

राग धीराना पदनो

सारुं सहुनुं थाशोरे, सर्वने लागो सत्य प्यारुं,
उच्च सर्वे थाशोरे, दुनियां कुटुंब मारुं,
शान्तिमय दुनिया सहु थाओ, सुखिया थाओ सर्व,
निन्दक जननी निंदा टळशो, नासो जनना गर्व
परोपकारे पगलुंरे, भरो सहु अणधार्युं सारुं. ॥ १ ॥
दयागगमा जगजन झीलो, टळजो सर्वे पाप,
शत्रु मित्रपर समान बुद्धिनी, जन मन वर्तो छाप;
कलेश सहुटळशोरे, धर्मकृत्य करो सारुं. सारुं. ॥ २ ॥
अनंत सुखडां पामो जगजन, थाशो जन कल्याण;
धर्ममेघनी वृष्टि थाशो, ऊगो सत्यनो भाण .
क्षमामय पृथ्वी थाशोरे, टळशो सर्वे नठारुं. सारुं. ॥ ३ ॥
अशुद्ध आचारो विचारो, टळशो वेगे खास,
दुनिया धर्ममयी सहु थाशो, थाशो मिथ्यात्वनो नाश;
सन्तजनोनीं सेवारे, थाजो शुभ मन धार्युं सारुं. ॥ ४ ॥
धर्म भेदनो खेद टळो सहु, आत्मिक श्रद्धा थाओ,
अनंतशक्ति जीवनी प्रगटो, मगळपद सहु पाओ.
बुद्धिसागर भावेरे थाओ दील अजवाळुं सारुं. ॥ ५ ॥

मोह उंघ.

" राग धीराना पदनो "

मोह ऊंघ मोटीरे, जीवलडा तुं जो जागी,
मोहे दुःख मोटां रे, विचार जीव वैरागी. टेक
शो पैसामां प्रेमज करवो, शो रामामां राग,

नात जातमां कांइ न तारुं, धर दिलमां वैराग्य;
विवेकथी विचारीरे थातुं मनमांही त्यागी. मोह. ॥ १ ॥
शाने माटे पाप करेछे, फोगट भूले भव्य;
आतम ते परमातम साचो, करवुं ते कर्तव्य,
चेतन चित्त चेतोरे, समजले सोभागी. मोह. ॥ २ ॥
चोरी जारी चुगली निंदा, हिंसानो कर त्याग,
दगा प्रपंचो सर्वे छंडी, धरशो धर्मनो राग;
बुद्धिसागर प्रेमेरे, लय प्रभु गुण लागी. मोह. ॥ ३ ॥

चेतजीव.

" धीराना पदनो राग "

जीवलडा चेती लेजेरे, वखत वह्यो जाय छे;
मोहमां शुं मुंझयोरे, भूलण शुं भूलाय छे. जी० टेक.
आधि व्याधि उपाधिथी, जनमां वर्ते दुःख,
लाख चोराशीमां बहु दुःखो, क्यांय न वर्ते सुख;
भूलथी भूलेलारे भव भटकाय छे. जीव० ॥ १ ॥
पर वस्तुथी कदी न शान्ति, निश्चय मनमां धार;
परने पोतानु मान्याथी, थाशे न सुख लगार,
लाकडनो लाडु खातां तो पामर पस्ताय छे. जी० ॥ २ ॥
मृगनी नाभीमां कस्तुरी, पण शोधे छे बहार,
अंतरमांहि सुख घणुं छे, भूले जीव गमार;
भटके छे भारीरे, खत्ता घणा खाय छे. जीव० ॥ ३ ॥
धूमाडाना बाचक भरतां, कांइ न आवे हाथ;
मृगजल तृष्णामां लोभातां, कांइ न आवे साथ,
ज्ञानीयोए गायुंरे, समजुने समजाय छे. जीव० ॥ ४ ॥

भवजंजाळे सुखनी भ्रांति, राखे नाहक लोक,
स्वप्नानी सुखलडी जेवी, दुनीयांबाजी फोक;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे परमपद पाय छे. जीव० ॥ ५ ॥

प्रभुस्वरूप.

धीराना पदनो राग.

प्रभुनुं रुप पेखीरे, सात धात रंगाणी,
प्रभुनुं रुप न्यारुं रे, जाणे प्रेम मस्तानी. टेक.
असंख्यप्रदेशी निर्भय देशी, रुपारुप सुहाय,
साकार साचो निराकार पण, अनुभवथी ए जणाय;
प्रभुनी शक्ति साचीरे, लीधी ध्यान थकी ताणी. प्र० ॥ १ ॥
काल अनादि देह सृष्टिनो, कर्त्ता पर प्रयोग,
अनंत निजगुण सृष्टि कर्त्ता, चेतन शुद्ध प्रयोग,
बुद्धिसागर प्रेमेरे, प्रभुनी वात परखाणी प्र० ॥ २ ॥

उपाधिमां दुःख.

राग धीराना पदनो.

उपाधि दुःखदायीरे, उपाधिथी छे गोटा;
उपाधिमां भ्रांतिरे, थाय नहि कोइ मोटा. उपाधि०
उपाधि छे मोटी व्याधि, मन चंचल करनार,
उपाधिथी अनेक वाका, शांति सुख हरनार,
उपाधिथी मोटारे, जुओ जगमां छोटा. उ० ॥ १ ॥
दुःख दावानळ छे उपाधि, भूलावे निज भान,
दुनियांदारीमा लपटावे, उपाधि दुःखखाण,
उपाधि अंधारुंरे, उपाधिना नहि जोटा उ० ॥ २ ॥

उपाधिना योगे चिंता, कदी न सुखनी आश,
राजा राणा धनीक भोगी, बनीया उपाधि दास;
बुद्धिसागर त्यागीरे, योगी मुनिवर मोटा. उ० ॥ ३ ॥

झळहळ ज्योतिः

राग धीराना : पदनो.

झळहळ ज्योत जागीरे, गगन गढ ठेराणी;
अलवेलाने परख्योरे, ज्योतिमां ज्योति समाणि. झ० टेक.
केवळ कुंभक प्राणायामे, करी शक्ति उत्थान,
अवघटवाटे अवळीवाटे, कीधुं अमृत पान;
पश्चिमद्वार खोल्युं रे, रही न वात कांइ छानी. झ० ॥ १ ॥
त्रीपुटीथी ब्रह्मरंध्रनो, कीधो मारग शुद्ध,
सुरता साधी त्राटक योगे, बनीयो चेतन बुद्ध;
अनहद नादेरे, खेल खेले मस्तानी. झळहळ० ॥ २ ॥
गुरुकृपाथी युक्ति पामे, ते भेदे षड्चक्र,
आपमतिथी खत्ता खावे, बनतो चेतन वक्र;
गुरुगम ज्ञानेरे, शिवपद ल्यो ताणी. झळहळ० ॥ ३ ॥
पोताने पोते देखे ते, योगी सत्य गणाय,
हलको नहि भारे मन समजो, अजरामर कहेवाय;
अनंत शक्ति स्वामीरे, भेट्यो अनंत ज्ञानी. झळहळ० ॥ ४ ॥
पोथां थोथां वांचो लाखो, कांइ न आवे हाथ,
तर्क विचारे केइक भूल्या, पाम्या न त्रिभुवननाथ;
दीवाथी दीवो थाशेरे, सत्य वात समजाणी. झळहळ० ॥५॥
मनुष्यभवमां थाशो नक्की, इश्वर आपोआप,
बुद्धिसागर घटमां शोधो, जपतो अजपाजाप;

कोइक जीव समजेरे, श्रद्धाथी गुरुवाणी.
झळहळ ज्योत जागीरे, गगन गढ ठेराणी,
अलबेलाने परख्योरे, ज्योतिमां ज्योति समाणी. झळ० ॥६॥

सदाचार.

राग धीराना पदनो.

सदाचार सेवेरे, मंगल पद पावे,
दोषवृन्द नासेरे, परम पद सुख थावे, सदा टेक.
टीला टपकां छाप लगावो, घालो कंठे माळ,
नीतिना सद्गुण धर्या विण, कदी न थाय कल्याण;
मननी सारी चालेरे, जीव शिवपुर जावे सदा. ॥ १ ॥
मननी शुद्धि आपे रुद्धि, मननी शुद्धि सत्य;
मननी शुद्धि मुक्ति आपे, मन शुद्धि शुभ कृत्य.
शुद्ध चित्त धारेरे, संवर पद झट आवे सदा. ॥ २ ॥
मन सुधर्याथी सर्व सुधरे, मन मरवाथी मुक्ति;
आपोआप स्वरुपे खेले, ए अतरनी युक्ति,
खराखरीनी वातोरे, ज्ञानीयोना मन भावे सदा.॥ ३ ॥
शुद्ध चित्तथी निर्मळ भक्ति, शुद्ध चित्तथी ध्यान;
बाहिर दृष्टि बाहिर शोधे, जेने नहि निज भान
खांड वेराणी धूळमारे, कीडी गण वींणी खावे. सदा ॥ ४ ॥
बाहिर आशा परिहरिने, करवुं निर्मळ चित्त,
अतरनो अलबेलो सेवी, थावुं शुद्ध पवित्र,
बुद्धिसागर प्रेमेरे. वस्तु स्वरुप गावे सदा. ॥ ५ ॥

करोड लाखोपति.

" धीराना पदनो राग "

करोड लाखो पतिरे, पैसादारो पाप करे;
स्वारथमां लपटायारे, कहो केम करी तरे. करोड० टेक.
हिंसा जूठुं बोली भारे, चूसे परना प्राण;
लक्ष्मीथी मोटाइ माने, थाशे नहि कल्याण,
लक्ष्मीथी मोटा खोटारे, मोहे नहीं ठाम ठरे. करोड. ॥ १ ॥
पत्थर पर पंकज नवी उगे, दिनकरथी अंधकार,
लक्ष्मीना लोभे जेम जाणो, धर्म न होय लगार;
धनवंतना धर्तींगेरे कदी नहि कार्य सरे. करोड. ॥ २ ॥
लक्ष्मीदारोनी हाजीमां, पामर जीव तणाय,
आशा तृष्णाथी वाह्या जन, धनीकना गुण गाय;
उपाधिमां शान्तिरे, कदी नहि कोइ वरे. करोड. ॥ ३ ॥
लक्ष्मीदारो आगेवानो, कर्म पन्थमां होय,
धर्म पंथमां मुनिवर मोटा, आगेवानो जोय;
केइक मोही साधुरे, धनीकने करगरे. करोड. ॥ ४ ॥
लक्ष्मीदारोनी स्हेमां जे, भूले चेतन भान,
लक्ष्मीवंत कहेवे ते साचुं, माने जन अज्ञान;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, कोइक जीव सत्य वरे. करोड. ॥ ५ ॥

दृष्टिराग.

धीराना पदनो राग.

दृष्टि रागे मुंझयारे, जगत् जन देखाता,
पोतानो मत ताणेरे, मनमांहि बहु माता;
दृष्टि रागे भूल्या भारे, खरे दिवस अंधार,

अंधारे अथडाता ज्यां त्यां, लाख चोराशी मझार.
मोहथी हठीलारे, झट दुरगति जाता दृष्टि॰॥ १ ॥
अंधाधुंधी दृष्टिरागे, मगर टेकनी चाल,
पकड्युं पोते ते छे साचुं, बाकी मिथ्या झाळ,
माने एम जूठुंरे, वळी मन हरखाता दृष्टि॰॥ २ ॥
काम रागने स्नेह रागनो, होवे जल्दी नाश,
दृष्टि राग तजवो दुष्कर जग, तेना अवळा पास,
जाणे पण नहि मानेरे, मिथ्या मदमांहि माता दृष्टि. ॥ ३ ॥
दृष्टि रागथी सत्य न जडशे, भूलाशे निज धर्म,
दृष्टि रागमां घेराएला, बांधे उलटां कर्म,
वस्तुना स्वभावेरे, धर्म तेने नहि पाता. दृष्टि. ॥ ४ ॥
दृष्टि रागथी जे मूकाया, धन्य तेनो अवतार,
सत्य विवेके साचु परखे, सतो पामे सार,
बुद्धिसागर भावेरे, ज्ञानी जन परखाता. दृष्टि॰ ॥ ५ ॥

“ गाडरीयो प्रवाह ”

“ धीराना पदनो राग ”

गाडरीया प्रवाहेरे, लोक अरे चाले छे;
पोतानी मति ताणीरे, मनमांहि म्हाले छे,
सार असार न जाणे काइक, करे न तत्त्वविचार;
अंधाने दोर्यो अधे जेम, चाले जगमां गमार,
धामधूमे मोद्यारे, धर्म पन्थ खाळे छे. गाडरी. ॥ १ ॥
भापा ज्ञाने भरमाता केइ, राखे पडित डोळ,
गंभीर जिन वचनो नहि जाणे, चलवे मोटी पोल,
सामासामी निंदेरे, द्वेषे दिल बाळे छे. गाडरी. ॥ २ ॥

अनुभव वण अंधानुं टोळुं, चलवे छे पाखंड,
मूर्खजनोनी आगळ फावे, राखे जूठ घमंड;
द्दष्टिरागे खूंचीरे, पामर सुख हारे छे. गाडरी. ॥ ३ ॥
कपटी पाखंड चलवे भारे, अज्ञजनो सपडाय,
कलियुगमां कपटीनी पूजा, ज्यां त्यां नजरे जणाय;
संतोपर भाव ओछोरे, कोइक तो विचारे छे. गाडरी. ॥ ४ ॥
संतसमागम करशे जे जन, ते लेहेशे सुख सार,
बुद्धिसागर चित्तमां चेती, पोताने तुं तार;
अनुभव ज्ञानेरे, सत्य पन्थ भाळे छे. गाडरी. ॥ ५ ॥

ॐकार स्तुतिः

छप्पय छंद.

ॐ नमः मंगल सुखकारी जग जयकारी,
ॐ नमः मंगलपदनी जगमां बलिहारी;
ॐ नमः अजरामर अनंत शक्ति विलासी,
ॐ नमः परमेश्वर शक्ति सत्य प्रकाशी.
ॐकार ध्याने आत्म शक्ति प्रगटती जगमां खरी,
बुद्धिसागर प्रणव मंगल ध्यानथी सिद्धि वरी. ॥ १ ॥

अगम निगमनो सार प्रणव ॐकार विचारो,
परब्रह्मनी शक्ति खीलववा मनमां धारो;
चित्त दोषनो नाश करे छे जाप कर्याथी,
सात्विक शक्ति प्रगटावे छे ध्यान धर्याथी.
अलख अगोचर रूप वरवा प्रणव साचो मंत्र छे,
बुद्धिसागर सत्य निर्भय देश वरवा यंत्र छे ॥ २ ॥

सम्यग् लही वाच्यार्थ हृदयमां रटना धारो,
अनंत कर्म कटाय प्रणवथी चित्त विचारो,
सालंबन छे ध्यान प्रणवनुं शास्त्रे भाख्युं,
धरी प्रणवनुं ध्यान योगियोए सुख चाख्युं.
ॐकार मंगळ आद्य छे जग श्वासोश्वासे ध्याइए,
बुद्धिसागर शिव सनातन सिद्ध लीला पाइए ॥ ३ ॥
हृदयकमलमां प्रणव स्थापना प्रेमे करीये,
कोटी भवनां पाप घडीमां क्षणमां हरीए,
प्रगटे लब्धि चित्र वचननी सिद्धि थावे,
अन्तर त्राटक सिद्ध करे ते स्थिरता पावे.
आत्मशक्ति खीलववाने, ॐकार अर्थ विवेक छे,
बुद्धिसागर प्रणव मंगळ ध्यान साची टेक छे. ॥ ४ ॥
आनंद अपरंपार हृदयमां झळके ज्योति,
असंख्यप्रदेशी चिद्घन चेतन परखे मोती;
नासे माया दूर हृदयमां ब्रह्म प्रकाशे,
परम भावनी ध्यान दशामां हंस विकासे;
प्रेमप्रझाला दीलप्याला ब्रह्मअमृत पीजीए,
बुद्धिसागर ब्रह्मलीला पामी निशदिन रीझीए. ॥ ५ ॥
प्रणवमंत्रथी निंदा विकथा दोष टळे छे,
प्रणवमंत्रथी अष्ट सिद्धिओ तुर्त मळे छे,
प्रणवमंत्रथी संयम शक्ति प्रगटे सारी,
प्रणवमंत्रथी झळहळ ज्योति जगजयकारी,
प्रणवमंत्र ॐकारमां दिलमां ध्यातां सुख भासतुं;
बुद्धिसागर प्रणवमंत्र सत्य तत्त्व प्रकाशतुं. ॥ ६ ॥
नाभिकमलमां प्रणव मंत्रने प्रेमे स्थापो,
स्थिरता अंतर्मुहूर्त्त थवाथी टळे यळापो;

अखंड ज्योति झळके झळहळ सुरता साधे,
वरसे समता नूर आतमनी शक्ति वाधे;
अखंड स्थिर उपयोगमांहि चैतन्य शक्ति दिनमणि,
बुद्धिसागर अनुभवे त्यां देह स्वामी जगधणी. ॥ ७ ॥

नाभिकमलमां असंख्यप्रदेशी चेतन ध्यावो,
चिदानंद भगवान इशने भावे भावो;
रुचक प्रदेशो अष्ट सिद्ध सम निर्मल सारा,
अष्ट सिद्धि दातार धरो मनमां सुखकारा.
आत्मसिद्धि प्राप्त करवा ओंकार मनमां ध्याइए,
बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे सिद्धलीला पाइए. ॥ ८ ॥

अगम्य शब्दातीत प्रणवथी सहेजे मळशे,
रजस् तमो गुण दोष प्रणवथी सहेजे टळशे;
सात्विक गुणनी वृद्धि परंपर शाश्वत लीला,
निर्भय शुद्ध स्वरुप रंगमां भव्य रसीला.
देव दानव भूत कोडी प्रणवथी पाये पडे,
बुद्धिसागर अकल निर्भय तत्त्व मौक्तिक कर चडे ॥ ९ ॥

प्रणवमंत्रना अर्थथकी चेतनने ध्यावो,
पामी नरभव दुर्लभ लेशो आत्मिक ल्हावो;
परम इश भगवान् खरेखर चेतन परखो,
प्रणवमंत्रथी चेतन ध्याने मनमां हरखो,
परम इश्वर प्राप्त करवा प्रणव साचो ध्याइए;
बुद्धिसागर ध्यान लीला प्रणवमंत्रे पाइए. ॥ १० ॥

हृदय कमलमां प्रणवमंत्रने प्रेमे स्थापो,
निजगुण शक्ति खीलवी निजने सहेजे आपो;
विषय विकारो त्याग करी अंतर गुण धारो,

निर्विकल्प उपयोग धरी चेतनने तारो;
आत्मजीवन उच्च करवा प्रणव सत्योपाय छे,
बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे सहज लीला थाय छे. ॥ ११ ॥
प्रणवमंत्रथी चित्ततणा सहु दोष टळे छे,
प्रणवमंत्रथी सात्त्विक गुणमां चित्त मळे छे,
प्रणवमंत्रथी संयमनी प्रगटे छे सिद्धि,
प्रणवमंत्रथी आत्यंतिक सुखनी छे वृद्धि,
प्रणवमंत्रे स्वप्न निर्मल देव दर्शन थाय छे,
मोहग्रंथी भेद थातां शक्ति अट परखाय छे ॥ १२ ॥
हृदयकमळमा स्थिरोपयोगे ध्यान खुमारी,
हृदयकमळमां स्थिरोपयोगे शिव तैयारी;
हृदयकमळमां स्थिरता साधी शिवपद लीजे,
प्रणवमंत्रने हृदयकमळमा नित्य वहीजे,
असंख्यप्रदेशी आत्मदर्शन कीजीए प्रेमे सदा,
बुद्धिसागर आत्मदर्शन स्थिरोपयोगे छे मुदा. ॥ १३ ॥
पश्यंति प्रगटेछे त्राटक योगे साची,
हृदय कमळमां ध्यान धरीने रहेशो राची,
शुद्ध विचारो परातणा पण प्रगटे साचा,
पश्यंति प्रगट्याथी निर्मल साची वाचा.
असंख्यप्रदेशी ध्याववाथी पश्यंति विकसे खरी,
बुद्धिसागर परा पश्यंति युक्ति अट दिलमां धरी ॥१४॥
परा पश्यंतिमां तो प्रभुनुं रुप जणातुं,
अनुभवथी योगीश्वर वचने सत्य ग्रहातुं,
शुद्ध स्वभावे आत्मिक दर्शन तुर्त पमातुं,
आत्मिकभावे अनंत सुख तो दिलमां थातुं.

सहज चेतन ध्यान करवा प्रणव प्रथमोपाय छे,
बुद्धिसागर सहज रुद्धि प्रणवमंत्रे थाय छे. ॥ १५ ॥

परमेष्ठि आद्याक्षरथी ओंकार भण्यो छे,
सर्व मंत्रमां आद्यमंत्र ओंकार गण्यो छे;
सर्व मंत्रमां प्रणवमंत्र छे शिव सुखकारी,
आपेक्षिक जिन वचनो समजो नर ने नारी.
प्रणवमंत्रे सत्वशक्तिज प्रगटती दिलमां खरी,
बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे शांतता मनमां वरी. ॥ १६ ॥

प्रणवमंत्रमां सर्व मंत्रनो सार समातो,
प्रणवमंत्रनो महिमा जगमां बहु वखणातो;
प्रणवमंत्रने जगमां मुनिवर प्रेमे साधे,
प्रणवमंत्रथी सूर्यसमो महिमा जग वाधे.
कंठचक्रमां प्रणवमंत्रेज वचनसिद्धि थाय छे,
टळे पिपासा प्रणवमंत्रे कंठसंयम थाय छे. ॥ १७ ॥

त्रिपुटीमां प्रणवमंत्रनुं ध्यानज साचुं,
तंद्रावस्था जयकारी ओंकारे राचुं;
प्रणवमंत्रे दर्शन आपे अनेक देवो,
सालंबन ओंकार मंत्रने प्रेमे सेवो.
सालंबन ओंकारमंत्रे देवदर्शन थाय छे.
बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे सत्यशांति पमाय छे. ॥ १८ ॥

दर्शन आच्छादन टळतुं ओंकार प्रभावे,
त्रिपुटीमां प्रणवमंत्रथी ज्ञानी गावे;
त्रिपुटीमां सालंबन संयमनी रीति,
मन वश करवा माटे सालंबननी नीति.
त्रिपुटीमां प्रणवमंत्रथी दोष सघळा झट टळे,

बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे इच्छीए ते झट मळे. ॥ १९ ॥
ब्रह्मरंध्रमां प्रणवमंत्रने प्रेमे स्थापो,
ब्रह्मरंध्रमां प्रणव मंत्रना करीए जापो;
ब्रह्मरंध्रमां परम समाधि मंगलकारी,
उपादान निमित्त हेतुना पुष्ट थनारी.
प्रणवमंत्रना ध्यान योगेज लब्धि ऋद्धि प्रगटती,
बुद्धिसागर गुरुकृपाथी प्रणवमंत्रे छे गति ॥ २० ॥
गुरुकृपाथी प्रणवमंत्रनी सिद्धि थावे,
गुरुकृपाथी सर्व सिद्धियो प्राणी पावे,
सुगुरा जनने प्रणवमंत्र तो तुर्त फळे छे,
सुगुरा जनने प्रणवमंत्रनुं सार मळे छे,
प्रणवमंत्रनो सत्य महिमा माणमां आवी रच्यो,
सुखाब्धि गुरुना प्रतापे बुद्धिसागर मन पच्यो. ॥ २१ ॥

दुनिया बगीचो.

गझल

जगत्नों बागने देखुं, विवेके सत्वने पेखुं;
भ्रमर थइ बागमां रमतो, गमे त्यां चित्तथी भमतो. ॥ १ ॥
जगत्ना बागनां पुष्पो, खीलेला ते पडे छे तुर्त,
खीलीने कोइ खरेछेरे, इतरने कोइ हरेछेरे ॥ २ ॥
जगत्नो बाग स्वप्नासम, नहि ते नित्य रहेनारो,
भ्रमर तु भूल नहि मिथ्या. जगत्थी सुख नहि क्यारे. ॥३॥
जगत्ना बागमां कूवा, पड्या ते भ्रांतिथी मुआ,
जगत्ना बागमां दुःखो, मळे नहि मोहथी सुखो ॥ ४ ॥
भ्रमर तुं भूल नहि भोळा, तगे छे मृत्युना डोळा,
जगत्ना बागमां भ्रांति, मळे नहि सत्य के शांति. ॥ ५ ॥

भ्रमर तुं भूल नहि शाणा, ग्रही ले ज्ञान ने दांना;
वखत आ वेगथी वहेतो, भ्रमरजी चित्तमां चेतो. ॥ ६ ॥
अलखना देशमां चालो, स्वरुपानंदमां म्हालो;
बुद्ध्यब्धि धर्मनी वाडी, भ्रमर तुं थाव गुलतानी. ॥ ७ ॥

॥ मनमानेलुं मीठुं. ॥

पैसा पैसा पैसा तारी–ए राग.

सहुथी मीठुं मन मानेलुं, मन मानेलुं प्यारुंरे;
साकर मीठी द्राक्षा मीठी, दूध ज लागे सारुंरे. स० ॥ १ ॥
नारी सारी यारी सारी, प्यारो घेवर घारीरे;
सहुथी मन मानेली वस्तु, सारी जगमां धारीरे. स० ॥ २ ॥
भणतर सारु गणतर सारु, सारु परहितकारीरे;
सहुथी सारु मन मानेलुं, समजो नर ने नारी. स० ॥ ३ ॥
साकर जगमां सहुने मीठी, रासभने छे अनीठीरे;
लींबोळी मीठी वायसने, नजरे जगमां दीठीरे. स० ॥ ४ ॥
बाळकनेतो रम्मत व्हाली, वाममार्गीने काळीरे;
व्यभिचारीने वेश्या व्हाली, मनहर बहु लटकाळीरे. स० ॥ ५ ॥
पपैयाने वर्षा प्यारी, पय व्हालुं मंजारीरे;
पंडितने तो विद्या व्हाली, मुनि मन समता सारीरे. स० ॥ ६ ॥
दगा प्रपंचो प्यारा दुर्जन, सज्जन गुण जयकारारे;
पतिव्रतामन स्वामी व्हालो, शिवने सर्पना भारारे. स० ॥ ७ ॥
सन्तोना मन व्हाला ज्ञानी, योगिना मन ध्यानीरे;
मुसलमानने पातर व्हाली, जातर कणबी मानीरे. स० ॥ ८ ॥
घुअडने मन रात्री व्हाली, दीवस जनने प्यारोरे;
जमाइ काजळ स्त्रीने प्यारु, पंखीना मन माळोरे. स० ॥ ९ ॥

तर्कवादीने चर्चा व्हाली, ब्राह्मण मोदक प्यारोरे,
उघणने मन शय्या व्हाली, पशुओने मन चारोरे. स० ॥१०॥
जेवी मननी वृत्ति तेवुं, मीठु सहुने लागेरे,
वृत्ति फर्याथी प्यार फरे छे, वृत्ति मनथी जागेरे. स० ॥११॥
पुद्गलमां जो इष्टबुद्धि तो, पुद्गल लागे प्यारुरे;
चेतनमां जो इष्टबुद्धि तो, चैतन्य सदा छे सारुरे स० ॥१२॥
आत्मज्ञान विना तो जगमा, प्यारु नहि परखातुंरे,
पुद्गल वस्तु प्यारी माने, विविध दुःख पमातुंरे. स० ॥१३॥
मन मानेलु शुभ न अंते, मन भटकावे भारीरे;
राजन साजन महाजननी पण, थावे खूब खुमारीरे. स० ॥१४॥
अज्ञाने मन मान्युं खोटुं, भव्यो जुवो विचारीरे;
जुओ धवळशा दुःख बहु पाम्यो, उमर आखी हारीरे. स० ॥१५॥
अज्ञाने लोभीए मनमा, धनने मान्युं प्यारुरे,
राग द्वेषमा बहु लपटातो, करनो खूब नठारुरे. स० ॥१६॥
अज्ञानी दारुथी दुःखी, मांसाहारी पापीरे,
अज्ञाने खोटाने सारु, मानी आण उथापीरे. स० ॥१७॥
पापकर्ममां इष्टबुद्धिथी, केडक नरके पडियारे,
दुर्मतिने सारी मानी, पापकर्मथी नडियारे स० ॥१८॥
हिंसामा पण धर्मनी बुद्धि, दुर्मतिथी प्रगटेरे,
कुतर्कोथी पापने पोषे, धर्म कर्म सहु विघटेरे. स० ॥१९॥
जिनवचनामृत पान कर्या वण, सत्यमति नहि सुझेरे,
आपमतिथी अवळो चाले, ते प्राणी नहि बुझेरे. स० ॥२०॥
पुद्गलथी न्यारो छे चेतन, अजरामर अविनाशीरे,
रत्नत्रयीनो स्वामी पोते, सत्यानंद विलासीरे स० ॥२१॥
परब्रह्मस्वरुपी पोते, निजगुण कर्ता भोक्तारे,

उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक, भावे निजगुण योक्तारे. स० ॥२२॥
इष्टबुद्धि चेतनमां साची, सर्वज्ञे एम भाख्युंरे,
चेतनमा आनंद भर्यो छे, सत्य वचन ए दाख्युंरे. स० ॥२३॥
मन माने ते करशे जे जन, ते जन खत्ता खाशेरे,
सुज्ञाने साचुं ते प्यारुं, माने ते सुख पाशेरे. स० ॥२४॥
सद्गुरु सुखसागर पदपंकज, भ्रमरसमो सुखवासीरे,
बुद्धिसागर प्रभुगुण गातां, बनीयो विश्वविलासीरे. स० ॥२५॥

॥ आत्मसत्तागान ॥

ॐ नमः

निशानी कहा बतावुंरे-ए राग.

चिदानंद शुद्ध स्वरुपीरे, असंख्य प्रदेशाधार. चिदानंद.
रुपारुपी तुं प्रभुरे, नित्यानित्य विचार;
अस्ति नास्तिमय तुं प्रभुरे, एक अनेकाधार. चिदानंद. १
सच्चिदानंद तुं सदारे, अजरामर सुखकार;
सिद्ध सनातन शोभतारे, शुद्ध पर्यायाधार. चिदानंद. २
काळ अनादि अशुद्धतारे, तेनो तुं हरनार;
आत्मज्ञान ध्याने प्रभुरे, आपोआप तरनार. चिदानंद. ३
अकळ अचळ निर्मल प्रभुरे, चेतन तुं भगवान्;
निरुपाधि पद पामवारे, करतुं निर्मल ध्यान. चिदानंद. ४
आत्मिक परिणति ध्यावतारे, आत्मिकगुण प्रगटाय;
उपशमादि धर्मनोरे, व्यक्तिभाव झट थाय. चिदानंद. ५
निर्भय नित्य स्वरुपमांरे, आनंद अपरंपार;
बुद्धिसागर ध्यानथीरे, मंगल शर्म थनार. चिदानंद. ६

नवधाक्रिया भक्ति स्वाध्याय.

दुहा.

वर्धमान जिनवर नमुं, चोवीसमा सुखकार,
शासन यति तति पति नमुं, क्षायिक गुण धरनार ॥१॥
सद्गुरु पदपंकज नमी, गाशुं भक्ति स्वरुप,
नवधा भक्ति इशनी, करतां विघटे धूप. ॥२॥
नवधा भक्ति जे करे, एक चित्तथी नित्य,
परम महोदय पद वरी, होवे शुद्ध पवित्र ॥३॥

अथ प्रथम श्रवणक्रिया.

अनंत गुण पर्यायमय, चेतनद्रव्य सदाय;
श्रवण करे बहु मानथी, प्रथम क्रिया सुखदाय. ॥ १ ॥

राग केदारो अथवा आशाउरी

श्रवण करो सम्यक् चेतनतु, जिनभाषित जीव द्रव्यरे,
त्रैकालिक स्थित चेतन अस्ति, नित्य द्रव्यार्थिक भव्यरे श्र. १
काल अनादि परपरिणामे, कर्त्ता भोक्ता कथायरे,
भेदज्ञानथी कर्त्ता भोक्ता, निजपरिणामनो थायरे श्रवण. २
निज परिणामे परिणमवाथी, पर परिणमता नाशरे,
आविर्भावे मोक्ष कहावे, सिद्धबुद्ध शिववासरे, श्रवण ३
मोक्ष उपायो छे जगमांहि, ज्ञानादिक त्रण रत्नरे,
षट् स्थानकना श्रवणथी समकित, औपशमादि प्रयत्नरे श्र. ४
समकितदेश ने सर्व विरतिनु, कारण श्रवण छे सत्यरे,
आत्मानुभव अमृत हेतु, प्रथमक्रिया शुभकृत्यरे. श्रवण. ५
जेम जांगुली मंत्र श्रवणथी, सर्पादिक विष नाशरे,
तेम जीवद्रव्य श्रवण महिमाथी, मोहादिविष प्रणाशरे. श्रवण. ६

आत्माऽसंख्य प्रदेशमयी छे, अक्रिय रूपारूपरे,
प्रतिप्रदेशे अनंतगुणो छे, पर्यायानंत चिद्रुपरे. श्रवण. ७
संग्रहनयथी सिद्धसमाना, चारगतिना जीवरे,
भेदज्ञानथी व्यक्तिप्रकाशे, होवे जीव ते शीवरे. श्रवण. ८
एकतानता श्रवण प्रतापे, प्रगटे अनुभव तानरे,
कर्मवर्गणा त्वरित क्षरंती, निर्मल हंस ज्युं भानुरे. श्रवण. ९.
श्रवण करी शुद्धातम द्रव्यनुं, पाम्या मोक्ष अनंतरे,
श्रवण क्रिया छे चेतन पूजा, राची रह्या त्यां संतरे. श्रवण १०
चिदानन्द चेतन देह वसियो, तेनुं श्रवण सुखकाररे,
बुद्धिसागर श्रवणक्रियाथी, धन्य धन्य अवताररे. श्रवण. ११

अथ द्वितीय कीर्तन क्रिया.

दुहा.

कथन करे जीव द्रव्यनुं, गुण पर्यायाधार,
द्रव्य अने पर्यायथी, नित्यानित्य विचार. ॥ १ ॥

व्हाला वीर जिनेश्वर ए-राग.

जीवना कीर्तनथी शिव शाश्वतसुख पमायछेरे,
बीजी कीर्तन क्रिया करवाथी दुःख जायछेरे;
कीर्तन करतां दुःख टळेछे, कामादिकनो वेग गळेछे,
चेतन कीर्तन करतां समकित निर्मल थायछेरे. जीवना. १
अनुभवसुखनी लहेरी प्रगटे, मोह मायादिक वेगे विघटे,
चेतन कीर्तन योगे क्षायिक सुख पमायछेरे. जीवना. २
वचन क्रियाना दोषो नाशे, चेतन सूर्यसमान प्रकाशे,
चेतन कीर्तनथी परने उपकार करायछेरे, जीवना. ३
परा पश्यंतीथी प्रभु गावो, करशो निर्मल प्रभु वधावो,

परा पश्यंतीथी कांइक परखायछेरे. जीवना. ४
मध्यमा वैखरी कीर्तन कीजे, अवळे पन्थे चित्त न दीजे,
आत्मिक गुणनुं कीर्तन सत्य सदा निरखायछेरे. जीवना. ५
जीव कीर्तनथी कर्म न लागे, चेतन आपस्वभावे जागे,
भवसागरना काठे झट उतरायछेरे जीवना. ६
वचन वर्गणाथी जिन बोधे, कर्ममेलने वेगे रोधे,
ज्ञानि वचनथकी तो सत्यासत्य जणायछेरे जीवना. ७
झळहळ ज्योति झट प्रगटावे, मिथ्यातमने दूर हठावे,
चेतन कीर्तन योगे अर्पितधर्म ग्रहायछे रे. जीवना. ॥८॥
ब्रह्मस्तवनमां स्थिरोपयोगी, परपुद्गल ग्रहतो नहि योगी;
निर्भय अलखध्वनमां परमानन्द पमाय छे रे. जीवना. ॥९॥
प्रगटे सत्यानन्दखुमारी, निजपरने कीर्तन उपकारी,
कीधां अनत भवनां पातिक क्षणमां जाय छे रे. जीवना. ॥१०॥
पुनः पुनः गावो चेतनने, स्थिर करी निजगुणमा मनने,
सद्गुरु बुद्धिसागर कीर्तन भक्ति पमाय छे रे. जीवना ॥११॥

अथ तृतीय सेवनक्रिया.

दुहा.

अर्हन्तादिक सेवना, निज सेवा संकेत,
परमेश्वर पण जीव छे, निजसेवा गुण हेत. ॥ १ ॥
जीवद्रव्यनी सेवना, निज उपयोगे थाय,
शुद्ध रमणता आतमा, सेवा शुद्ध कथाय. ॥ २ ॥

पुल्जल वइ विजये जयोरे ए राग.

सेवा सुखकर आतमनीरे, आतमस्वभावे थाय,
परपुद्गल दूरे टळेरे, सेवा शुद्ध कहायरे भविका;

सेवो चेतन द्रव्य, साचु एह कर्त्तव्यरे. भ० ॥ १ ॥
पंच परमेष्ठिनी सेवनारे, तेना अनेक छे भेद;
जिन आणाथी सेवनारे, करतां नासे खेदरे. भ० ॥ २ ॥
देव गुरु ने धर्मनीरे, निश्चय ने व्यवहार;
सेवा करतां प्राणियारे, भवजलधि तरनाररे. भ० ॥ ३ ॥
उपादान निमित्त छेरे, सेवन सुख भरपूर;
सात नयोथी सेवतां रे, वाजे मंगल तूररे. भ० ॥ ४ ॥
उपादेय चेतन प्रभुरे, सत्य सेवन परमार्थ;
निज सेवन वण जाणजोरे, बाकी सहु बाह्यार्थरे. भ० ॥ ५ ॥
वार अनंति सेवीयां रे, पुद्गल द्रव्य अनंत;
तृप्ति न पाम्यो जीवडोरे, आव्यो नहि भवअंतरे. भ० ॥ ६ ॥
जड पुद्गल धन देहनीरे, सेवा दुःख देनार;
निज जाति शुद्ध द्रव्यनीरे, सेवा सुख करनाररे. भ० ॥ ७ ॥
अनंतगुण पर्यायथीरे, जीव द्रव्य जयकार;
षट्कारक शुद्ध जीवमां रे, निजगुण कर्ता धाररे. भ० ॥ ८ ॥
अवली परिणति परिणम्यां रे, षट्कारक जीवमांहि;
काल अनादिथी जाणीने रे, कीजे उद्यम उत्साहरे. भ० ॥ ९ ॥
भेदज्ञानथी भावीयेरे, स्थिर चित्ते करो सेव;
जीव सेवे सहु सेवीयुंरे, आनंद अनुभव मेवरे. भ० ॥ १० ॥
शुद्ध परिणति शक्तिथीरे, सेवो आपो आप;
बुद्धिसागर सेवनारे, मुक्तिपुरीनी छापरे. भ० ॥ ११ ॥

अथ चतुर्थी वचनक्रिया स्वाध्याय.

दुहा.

आत्मप्रेर मनमां धरी, वचन भक्तिकर जीव;
वचन भक्ति महिमा वडो, थावे जीवनो शिव. ॥ १ ॥

राग केदारो.

वचन थकी गावो चेतनने, शाणा नरने नारीरे;
वचन भक्ति बहु पाप हरे छे, शिव मन्दिरनी बारीरे. वचन. ॥१॥
वचन भक्ति शक्ति प्रगटावे, अतिशय आनन्द थावेरे;
शुद्ध प्रेमथी गावो चेतन, परम प्रभु परखावेरे वचन. ॥ २ ॥
शुद्ध स्वरूपने क्षण क्षण गावो, वचन थकी ए वधावोरे,
वचन भक्तिथी मननी स्थिरता, युक्ति ए चित्त ठरावोरे. वचन. ॥३॥
वचन थकी गातां चेतनने, पर परिणमता नासेरे,
परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी, भाषा शक्ति प्रकाशेरे. वचन. ॥ ४ ॥
नाद योगमां वचन भक्तिथी, सहेजे प्रवेश सुहावेरे,
अनहद तुर बजावे योगी, सूक्ष्म वचनना भावेरे वचन. ॥ ५ ॥
चेतन गातां स्थिरता होवे, मोहमायादि विघटेरे;
देह तंबुरो वचनना स्वरथी, अनहद तानज प्रकटेरे. वचन ॥ ६ ॥
वचन योगी होवे मन योगी, अंते थाय अयोगीरे,
बुद्धिसागर वचन भक्तिथी, परम प्रभुता भोगीरे. वचन. ॥ ७ ॥

अथ पंचमी वन्दनक्रिया.

दुहा

शुद्ध चैतन्य स्वभावने, वन्दो वारवार,
ज्ञानादिक आधारथी, चेतन पूज्य विचार. ॥ १ ॥
निज सरखा सहु जीवने, जाणी हर्षित होय,
जाणी सिद्धसम जीवने, वन्दे भात्र जोय ॥ २ ॥

सिद्ध जगत् शिर शोभता-ए राग

वन्दु चेतन द्रव्यने, पुद्गल द्रव्यथी भिन्न,
आनंदघन प्रभुप्रेममा, स्थिरोपयोगे हुं लीन. वंदु. ॥ १ ॥
अर्हन्तादिक पंच जे, वंदन शुभ व्यवहार,
अर्हन्तादिक रूप छे, जीव ने निश्चय धार. वंदु. ॥ २ ॥

ज्ञानरविथी प्रकाशतो, दर्शन चन्द्र समान;
चेतन द्रव्यने वन्दना, करतां नासे छे मान. वंदु. ॥ ३ ॥
चेतन त्रण्य प्रकार छे, बाहिर् अन्तर जाण;
परमेश्वर अवबोधथी, निश्चय समकित स्थान. वंदु. ॥ ४ ॥
स्वपर प्रकाशक जीवने, वंदन करतां कल्याण;
संग्रहनय कृत दृष्टिथी, वंदन सर्व प्रमाण. वंदु. ॥ ५ ॥
चेतन लक्षण चेतना, सातनयोथी विचार;
चेतननी शुद्धव्यक्तिथी, वन्दन वार हजार. वंदु. ॥ ६ ॥
निश्चय ने व्यवहारथी, चउनिक्षेप प्रमाण;
द्रव्यने भावथी वंदना, चेतन गुणगण खाण. वंदु. ॥ ७ ॥
अन्तर्यामीने वंदना, करतां मंगलमाल;
बुद्धिसागर वंदना, चेतन शुद्ध विशाल. वंदु. ॥ ८ ॥

अथ षष्ठी ध्यानक्रिया.

दुहा.

आर्त रौद्र बे त्यागीने, धरीए धर्मनुं ध्यान;
शुकलध्यानने ध्यावतां, चिदानंद भगवान्. ॥ १ ॥

सांभळजो मुनि संयमरागे—एराग.

चेतन धर तुं ध्यान स्वरूपनुं, परपरिणति दूरवारीरे;
ध्याने कर्म खरे छे सघळां, शुद्ध परिणति धारीरे. चेतन. १
पदस्थ पिंडस्थ रूपस्थ रूपातीत, चार ध्यान चित्त धरीएरे;
धर्मध्यान ने शुक्ल ध्यानथी, शाश्वत सुख झट वरीएरे. चे० २
सालंबन ध्याने चित्त ठारी, अशुभ विचारो हरीएरे;
निरालंबन ध्यान धरीने, भवसागर झट तरीएरे. चे० ४
विक्षिप्त यातायात सुश्लिष्ट, सुलीनता मनभेदरे;
अनुक्रमे अभ्यास करीने, टाळो सघळा खेदरे. चेतन. ॥ ५ ॥

चेतनध्याने निर्मलशक्ति, भवभय दु ख निवारेरे,
आत्मिक रुद्धि प्रगट करीने, कर्मकलंक विदारेरे. चेतन. ॥ ६ ॥
अंतरना उपयोगे रहीए, अनुभवसुखडा लीजेरे;
आपोआप स्वरूपे रमता, अनुभवामृत पीजेरे चेतन. ॥ ७ ॥
सहजस्वरूपी अन्तर्यामी, ध्याने चेतन परखोरे;
अनंतगुणपर्याय विलासी, निरखी मनमां हरखोरे. चे० ॥ ८ ॥
परममहोदय शिवसुख स्वामी, घटमां शोधो ध्यानीरे;
बुद्धिसागर ध्यान दिवाकर, प्रगटे वात न छानीरे. चेतन.॥ ९ ॥

अथ सातमी लघुताक्रिया.

दुहा

लघुता प्रभुता आपती, करे अहंता नाश,
राग द्वेष दूरे टळे, मुक्तिपुरीमां वास;

॥ राग केदारो ॥

लघुतामा प्रभुता सुखकारी, लघुता गुण करनारीरे,
चेतननी शक्ति केळववा, साची छे जयकारीरे लघुता. १
पुद्गल भारे चेतन हल्को, उर्ध्व सात राज जावेरे,
कादवथी न्यारी जेम तुवडी, जल उपर जेम आवेरे. ल २
पुद्गल ममता दीनभावथी, लघुता भवदु खकारीरे,
तेवी लघुता आत्मिकशक्ति, प्रगटपणे हरनारीरे. ल. ३
चेतनरूद्धि अनंती प्रगटे, तोपण गर्व न थायरे,
पूर्णोदकभृत कुंभनी पेठे, जरा नहीं छलकायरे ल ४
जे देखे ते चेतन नहि तु, नहि देखे ते तुजरे,
आपस्वभावे खेले हंसा, पडशे अन्तरनी गुझरे. ल. ५
ताळी लागी अनुभवयोगे, प्रभुना घटमा पेशीरे,
कर्मवर्गणा खरनी जे अंशे, लघुता ते अंशे प्रवेशीरे. ल. ६

क्षायिकभावे स्नातकचरणमां, लघुता पूर्ण प्रकाशेरे,
निर्मलता लघुता चेतनमां, सहजोपयोगे विकाशेरे. ल. ७
उच्च जीवन लघुता करनारी, दोष मानादिक विघटेरे,
बुद्धिसागर अनुभवभानु, झळहळ ज्योति प्रकटेरे. ल. ८

अथ अष्टमी एकताक्रिया.

दुहा.

एकीले संसारमां, भटक्यो वार अनंत,
कोइ न साथे आवतुं, चेत चेत जीव संत. ॥ १ ॥
परभव जातां जीवनी, कोइ न आवे साथ,
माया ममता त्यागीने, सेवो त्रिभुवननाथ. ॥ २ ॥

नेमिजिन अरजी आ उरमां स्वीकारो-ए राग.

चेतनजी कोइ न दुनियामां तारु, माने छे फोक मारु. मारु चे०
सगां संबंधी कोइ न तारु, परभव जाय तुं एकीलो,
कायानी माया साथ न आवे, चतुर चित्तमां चेती लो. चे० १
एकीलो पुण्य पाप ज्यां त्यां भोगवतो, एकीलो पुण्य पाप कर्त्ता,
एकीलो आवतो ने एकीलो जावतो, एकीलो पुण्यपाप हर्ता. चे.
शुद्ध चेतन तुं पुद्गलथी न्यारो, चेतन एक तुंहि सारो,
द्रव्यपणे तुं एकज नित्य छे, गुणपर्याय आधारो. चे. ३
पुद्गलभाव सहु भिन्न विचारी, विनति आ उरमां उतारी;
एकत्व भावना भावो हृदयमां, पामशो भवजलपारी. चेतन. ४
एकत्व भावनाथी जीव अनंता, पाम्या छे शिवपद साचुं;
पामे छे पामशे जीव अनंता, एकत्व भावमांहि राचुं. चेतन. ५
शुद्ध स्वरूप करनारी छे एकता, अंतरमां थाय उजियारी;
बुद्धिसागर शुद्ध एकत्व भावना, मंगलपद करनारी. चेतन. ६

अथ नवमी समता क्रिया.

दुहा.

समता शिवसुख वेलडी, समता सुखनुं मूळ;
समता संयम फल कह्युं, समता वण सहु धूळ. ॥ १ ॥
समताथी शिवसुख मळे, समता आनंदपूर;
परम महोदय प्राप्तिमां, समता मंगलतूर. ॥ २ ॥

राग केदारो

समता शाश्वत सुख करनारी, निजपरने उपकारीरे,
समान वृत्ति शत्रु मित्रपर, भावदया जयकारीरे. समता ॥ १ ॥
वस्तु स्वभावे चेतन स्थिति, वर्तन समता धारोरे,
चेतनमां उपयोग रमणता, समता शुद्ध विचारोरे. समता ॥२॥
केवलज्ञान ने केवल दर्शन, समताथी झट थावेरे,
क्षपकश्रेणिए ध्याने चढंता, समता सुख परखावेरे. समता. ॥३॥
सर्वयोग शिरोमणि समता, समता छे त्यां मुक्तिरे,
अनुभवानंद लहेरा प्रगटे, क्षायिक गुणगण युक्तिरे. समता. ॥४॥
षड्दर्शनमां समता भावित, चेतन मुक्ति वरशेरे,
धर्मक्षमा समता गुण मोटो, जे पामे ते तरशेरे. समता. ॥५॥
समता सरोवर मुनिवर हंसा, अनुभव जलमा झीलेरे,
अनंत चेतननी शक्तियो, समतायोगे खीलेरे. समता. ॥६॥
समता स्पर्शमणिथी मोटी, समता सुरतनी क्यारीरे,
समता धारक संतजनोनी, हुं जाउ बलीहारीरे. समता. ॥७॥
समता अनुभव योगे खुमारी, संतजनोने प्यारीरे;
बुद्धिसागर समतासंगी संघ सकळ जयकारीरे. समता ॥८॥

कळश–राग धन्याश्री

नवधा भक्ति रसाळ, करीए नवधा भक्तिरसाळ,
निजपर आलंबन जयकारी, किरिया मंगलमाल. करीए. ॥१॥

शुकलपक्षीयाजीवनेरे, नवधा किरिया भव्य;
किरिया भक्ति एकतारे, आत्मोन्नति कर्तव्यरे. करीए. ॥ २ ॥
जिन पूजा ते निजभणीरे, चेतन भक्ति उदार;
चेतन शक्ति जगाववारे, निमित्त छे व्यवहाररे. करीए. ॥ ३ ॥
नवधा किरिया आतमनीरे, क्षायिक सुख देनार;
निशदिन कीजे भावथीरे, शाश्वतपद करनाररे. करीए. ॥ ४ ॥
नवधा किरिया भक्तिथीरे, नरनारी तरनार;
किरिया साची सुख करीरे, कर्माष्टक हरनाररे. करीए. ॥ ५ ॥
रागद्वेष किरिया त्यजीरे, वारी मनना दोष
नवधा किरिया जे करेरे, ते पामे सुख पोषरे. करीए. ॥ ६ ॥
ओगणीश चोसठ सालमांरे, अषाडपंचमीदीन;
शुकल पक्षमां शुक्र जीवनी, किरिया गुणगणपीनरे. करीए. ७
माणसा ग्रामे भावथीरे, रचना कीधी वेश;
सुखसागर गुरुभक्तिथीरे, आनंद होय हमेशरे. करीए. ॥ ८ ॥
अनेकान्तमत सेवनारे, नवधा भक्ति उदार;
बुद्धिसागर भक्तिथीरे, जिनशासन जयकाररे. करीए. ॥ ९ ॥

अथ चेतन स्वाध्याय.

राग केदारो.

चेतना लक्षण चेतन परखो, परमानन्द स्वरूपी;
जडथी न्यारो निजगुण भोगी, निर्भय रूपारूपीरे. चेतना. ॥१॥
बाह्य विभाव दशाथकी न्यारो, जूठी जगत् जड बाजीरे;
उदयागत भावे जड संगी, रहीए शुं तेमां राजीरे. चेतना. ॥२॥
देह देवलमां त्रिभुवन स्वामी, औदयिक योगे फसियोरे;

मिथ्या परिणति भिन्न विचारी, बाह्यदशाथी खसियोरे. चेतना. ॥३॥
जाग जाग झट चेतन प्यारा, वीर्योल्लास वधारीरे,
पर परिणमता दूर निवारी, ध्यानदशा अवधारीरे चेतना ॥४॥
हुं जडनो जड मारु ए भूली, तत्त्व रमण लय लावीरे;
अनुभव आनंद भोगवजे जीव, कुमति दूर हठावीरे चेतना ॥५॥
अनुभव प्याला पी तुं व्हाला, त्यागी पुद्गल चाळारे;
बुद्धिसागर ध्यान खुमारी, योगे मंगल मालारे. चेतना. ॥६॥

सहजानंद स्वाध्याय.

राग केदारो

चिद्घन चेतन निर्भय देशी, व्यक्ति असंख्य प्रदेशीरे;
जाति वचनने लिंगथी न्यारो, रागी नहि ने द्वेषीरे चिद्. ॥१॥
आतमस्वभावे सदा जे प्रकाशी, सत्यानंद विलासीरे;
प्रतिप्रदेशे सुख अनंतु, शुद्ध रमणता वासी रे चिद् ॥२॥
जडता भावे चेतन मुझ्यो, परम ब्रह्म नहि बुज्योरे;
तेथी बाह्यरमणता खुंच्यो, परमभाव नहि सुज्योरे चिद् ॥३॥
केवल ज्ञानने केवल दर्शन, क्षायिक सुख गुण भरियोरे;
आविर्भावे गुणगण दरियो, जाणे ते जीव तरियोरे. चिद्. ॥४॥
सत्ताए तुं सिद्ध समोवड, प्रगटपणे हवे था तुरे,
बुद्धिसागर ब्रह्मदशामां, कांइ न था तु न जा तुंरे. चिद्. ॥५॥

परमबोध स्वाध्याय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा-ए राग.

शक्ति अनंति जीवमां, सत्ताए ज धारो,
व्यक्तिभाव तेनो करो, पामो भवपारो. शक्ति. ॥ १ ॥

पुद्गल शक्तिथी भिन्न छे, शुद्ध चेतन शक्ति;
आपस्वभावे रमणता, करतां होय व्यक्ति. शक्ति. ॥ २ ॥
दीनभाव दूरे करी, परमातम भावो;
आपोआप प्रकाशतो, नहि कोइनो दावो. शक्ति. ॥ ३ ॥
आप आपमां परिणमे, उच्च जीवन वृद्धि;
समजु शुद्धस्वभावथी, लहे आनंद रूद्धि. शक्ति. ॥ ४ ॥
पर परिणामे बंध छे, शुद्ध उपयोगे मुक्ति;
आप बंधातो छूटतो, सत्य गुरुगम युक्ति. शक्ति. ॥ ५ ॥
लागी ताळी ध्याननी, ज्योति अन्तर जागी;
बुद्धिसागर ब्रह्ममां, लय लीनता लागी. शक्ति. ॥ ६ ॥

आत्मरूद्धि स्वाध्याय,

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा.

जे जोइए ते आत्ममां, बाकी बाह्यमां भ्रान्ति;
बाह्य दशामां दोडतां, कदी होय न शान्ति. जे. ॥ १ ॥
जे जाग्या निज भावमां, पाम्या क्षायिक देवा;
औपशमादिक भावथी, साची प्रभु सेवा. जे. ॥ २ ॥
अष्ट सिद्धि नवरूद्धियो, निज घटमांहि छाजे;
प्रगटपणे शुद्ध चेतना, शुद्ध चेतन गाजे. जे. ॥ ३ ॥
मंगलनो मंगल प्रभु, शुद्ध चेतन दीवो;
सहज स्वरूपी चेतना, ध्यानामृत पीवो. जे. ॥ ४ ॥
लवणनी पूतळी जलधिमां, त्याग लेतां समाणी;
परमानंद शुं वर्णवे, तेम वैखरी वाणी. जे. ॥ ५ ॥
उग्यो दिनमणि झळहळे, रहे नहि जगछानो;
बुद्धिसागर अनुभवे, परमात्मा मजानो. जे. ॥ ६ ॥

जीवजागृति स्वाध्याय.

जाग जाग अरे जीवडा, मोहमाया त्यागी,
साचा चेतन धर्मनो, थाजे चित्तरागी जाग. ॥ १ ॥
काल अनादि मोहथी, भवमा भटकायो,
परमानन्द न पारख्यो, ज्यां त्यां खूब धायो. जाग ॥ २ ॥
परमानंद स्वभाव छे, शुद्ध चेतन धर्म;
रत्नत्रयी निज धर्म छे, सिद्ध शाश्वत शर्म. जाग. ॥ ३ ॥
शुद्ध रमणता योगथी, शाश्वत सुख भोगी;
बुद्धिसागर जागतो, समतागुण योगी. जाग. ॥ ४ ॥

मोहत्याग सझाय.

घाट घडो शुद्धात्मनो, बाह्यमां नहि दोडो,
माणि मूकीने पत्थरे, केम मस्तक फोडो घाट. ॥ १ ॥
देह देवळमा जोगीडो, चेतन सुख भोगी;
शक्ति अनंति शाश्वती, साधतो गुण योगी. घाट ॥ २ ॥
खेले निजगुण जीवडो, मेले मोहमाया,
परमप्रभुमा लीनता, शाश्वत सुखपाया. घाट. ॥ ३ ॥
द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, ध्यात्रो प्रभु शक्ति,
बुद्धिसागर सत्य छे, शुद्ध चेतन शक्ति घाट. ॥ ४ ॥

अमदावादमां पांचमी जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स वखते गवायेलां गायनो.

शार्दूल विक्रिडित छन्द

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ नमिये मांगल्य कार्ये सदा,
श्री तीर्थंकर सिद्ध सूरि सुखदा कापो सदा आपदा,

तुर्या वाचक संज्ञका मुनिवरा प्रेमे नमो क्षेमदा,
श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स विजये आपो सदा संपदा ॥ १ ॥

जागो जोगी अलख स्वरूपी—ए राग.

जिनवर मन्दिरथी शोभितुं, राजनगर जयकारी,
तत्र मळी पंचम श्वेतांबर कोन्फरन्स बहु भारी;
आजे आनन्द रे मंगलमाला वरती,
प्रगटी सुखसागर भरती. आजे. ॥ १ ॥
श्री जिनशासन जग जयकारी, जैन धर्म बलीहारी;
जैनोनी उन्नति अर्थे, सहु कीधी तैयारी, आजे. ॥ २ ॥
धीर वीर विवेकी विचक्षण, श्रावक गुण अधिकारी;
रायबहादूर सीताबचन्द्रजी, प्रमुख पदवी धारी. आजे. ॥३॥
धार्मिक व्यवहारिक केळवणी, शिक्षण भाषण थाशे.
देश काल अनुसरता ठरावो, प्रमुखना वंचाशे. आजे. ॥४॥
कजीया क्लेश ने कुलग्नोने देशवटो देवाशे;
धर्म शुरातन एक संपता, धर्म स्नेह सचवाशे. आजे. ॥५॥
भेदभाव सहु दूर निवारी, सत्य टेक निरधारी;
विजयपताका जग वर्तावो, शाणा नर ने नारी. आजे. ॥६॥
जापानीझनी पेठे आर्यो, सत्य सुधारा करवा;
बुद्धिसागर वीरना भक्तो, पाछा पग नहीं धरवा. आजे. ७

मनमायाना करनारारे—ए राग.

शुभ धर्मना पन्थ सुधारीरे, करो सत्य सुधारा विचारी, ए टेक.
संघ चतुर्विध उन्नति अर्थे, ज्ञानना ग्रन्थ वधारी;
जीर्ण पुस्तक उद्धार करावी, सजो केळवणी शिख सारीरे.
करो० ॥ १ ॥

बोर्डिंगस्कुलो स्थापीने ठेर ठेर, मानवभव ल्यो ल्हावो;
नक्की उदय भाइ तेथी थनारो. खरी रीतिने दिलमां ठरावोरे.
करो० ॥ २ ॥
जैनशाळाओ पढावो बाळाओ, बाळक बाहोश करवा,
बाळलग्नने देशवटो द्यो, जैनाभ्युदयमा सचरवारे. करो. ॥३ ॥
कन्याविक्रय ने वृद्धविवाहथी, देखीती थाय खुवारी;
कुबुद्धि त्यागी सद्गुणरागी, पडी टेव ते त्यागो नठारीरे.
करो० ॥ ४ ॥
पुण्यक्षेत्र शुभ सप्त सुधारो, धर्मीनो करो वधारो,
साधर्मी भाइने साहाय्य आपो खुब, इष्ट उदय तेथी थनारोरे.
करो० ॥ ५ ॥
लाखो रुपैया केळवणी अर्थे, खरचो सज्जन नरनारी,
तन मन धनने अर्पण करीने, धरो धर्मसेवा. सुखकारीरे.
करो० ॥ ६ ॥
महावीर शासन विजय रंगमां, करो न किंचित खामी;
धर्मि विवेकि सज्जन बन्धुओ, करो उद्यम अवसर पामीरे.
करो० ॥ ७ ॥
जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्सथी, शीघ्र उन्नति हि मानी,
बुद्धिसागर श्री वीरना भक्तो, करो कदीय न पाछी पानीरे.
करो० ॥ ८ ॥

राग आशावरी

श्वेताम्बर कोन्फरन्स बीराजी, कीर्ति दशोदिश गाजी श्वे० टेक.
धरणेन्द्र पद्मावती सेवित. पार्श्वनाथ जयकारी;
विघ्न विदारण मगल कारण, सहाय्य करो सुखकारी श्वे० १
अत्यानद महोदय कारण, रचना वेश बनाइ;
मंगल वाजींत्रो वागीने, देता विजय वधाइ. श्वेताम्बर० ॥ २ ॥

धन्य दीवस ने धन्य घडी आ, बंधु सधर्मी मळीया;
सत्य सुधारा करवा माटे, मनना मनोरथ फळीया; श्वे० ॥३॥
बे करजोडी स्मरण करी जिन, प्रथम मंगल उच्चरीए;
धर्म टेक ने एक सम्पथी, विजयपताका वरीए. श्वे० ॥ ४ ॥
विनय विवेकी सज्जन शुरा, कहेणी रहेणी करशो;
बुद्धिसागर जैन श्वेताम्बर, श्रावक मंगल वरशो. श्वे० ॥ ५ ॥

॥ अथ पंचमी परभावपरिहारक्रिया ॥

दुहा.

रागद्वेष परभावथी, चेतन पामे दुःख;
रागद्वेष परिहारथी, चेतन पामे सुख. ॥ १ ॥
रागद्वेष संसार छे, रागादिक परिहार;
कीजे आतमस्वभावथी, जगमां जयजयकार. ॥ २ ॥

चारित्रपद शुभ चित्तवस्तु–पराग.

चेतन निजगुण राचीए, दूर त्यागीएहो रागादिक भाव;
चेतनवीर्य उल्लासथी, परपरिणतिनो थावे अटकाव. चेतन. ॥१॥
काल अनादिथी जाणीए, परपरिणतिहो चेतन दुःखकार;
रागादिक परभावथी, चारगतिमांहो नाना अवतार. चेतन.॥२॥
कर्माष्टकनी वर्गणा, ग्रहे चेतन हो अज्ञाने सदाय;
परपुद्गलमां परिणम्यो, भव्य जाणो हो क्षीरनीरनो न्याय.चे.३
भेद ज्ञान महिमाथकी, परपुद्गलनी मूको सहु आश;
परपरिणमता त्यागीने, झट करशो हो चेतन पदवास. चेतन. ४
रागादिक वैरी हणी, पाम्या मुक्ति हो जग जीव अनंत;
आत्मज्ञान जगदिनमणि, झटपामी हो शिवमांविलसंत. चेतन. ५
कर्मकटक संहारीने, ध्रुव लेवुं हो शाश्वतपद राज;
बुद्धिसागर बोधथी, उपयोगी हो राखे निज लाज. चेतन. ६

श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, जग जय मंगळकारी,
धरणेंद्र पद्मावती देवी, स्हाय करो सुखकारी;
आजे आनंदरे धन्य घडी जयकारी, कोन्फरन्स बलिहारी, आजे १
जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्सनी, छट्ठी बेठक आजे;
गुर्जर सोरठ बंग मरुधर, दक्षिणना जन राजे. आजे. २
सोरठ देशे भावनगर शुभ, जैनपुरी अलबेली;
जैन श्वेताम्बरकोन्फरन्से, बेठक लीधी पेहेली आजे ३
जैनोनी उन्नति करवा, थाशे सरस सुधारा,
व्यवहारिक धार्मिक केळवणी, तेना नियम थनारा. आजे ४
श्रद्धावंत विवेकी गंभीर, राजनगर अवतारी,
मनसुखभाइ भगुभाइ सुश्रावक, प्रमुख पद्वी धारी. आजे ५
तनमनधनथी जैनोन्नतिमां, प्रमुख पगलुं भरशे,
कोन्फरन्सनु काम बजावी, जय लक्ष्मी झट वरशे. आजे. ६
जैनोन्नतिनुं भाषण सारुं, प्रमुखनुं वचाशे;
कहेणी जेवी रेहेणी रेहेवा, सत्य ठरावो थाशे. आजे. ७
वीर जिनेश्वर भक्तो थइने, पाछा पग नहि भरशो,
बुद्धिसागर शूरा सज्जन, मंगळमाळा वरशो. आजे. ८

जैन कोन्फरन्स आज गाजी रही, गाजी रही जन,
गजावी रही जैन.

साखी

देश देशना श्रावको, आव्या धरी उल्लास,
जैनधर्म दीपाववा, करता विविध प्रयास
धर्म झनुन दील धारीने गाजता, सुमति सहाय,
चित्त शोभी रही. जैन० १

मंडप रचना बहु बनी, जाणे स्वर्गविमान;
विजयवावटा फरकता, फररर करता गान.
सुखसागर भव्य ल्हेरो रे उछळे, शोभा संसदूनी न
जाय कही. जैन० २

दश दिक कीर्ति विस्तरी, कोन्फरन्सनी आज;
शासन देवनी स्हायथी, सुधरशे शुभ काज.
सत्य विचार संघ मनमांहि आवशे, पुण्य उदय आज
प्रेमे लही. जैन० ३

ऋद्धि सिद्धि सुख मळो, पामो धार्मिक ज्ञान;
बुद्धिसागर संपथी, थाशे सहु कल्याण.
जय जय बोलो जिन शासन देवनी, शांति कल्याणमयी
थावो मही. जैन० ४

व्हाला वीर जीनेश्वर जन्म जरा नीवारजोरे—ए राग.

जैनो सुखकर स्त्री केळवणी झट फेलावशोरे,
जैनोन्नतिनुं कारण पहेलुं मनमां लावशोरे.
नास्तिक विद्यानी फेरवणी, धार्मिक विद्यानी मेळवणी,
साची विज्ञप्ति आ निश्चय चित्त ठरावशोरे. जैनो० ॥ १॥
स्त्री केळवणी सहु दुःख हरणी, अंधकार नाशक जेम तरणि,
घर सुधारो स्त्री सुधर्याथी पावशोरे. जैनो० ॥ २ ॥
बच्चांनी सुधारक पहेली, केळवणी आपोने वहेली;
विकथा व्हेमो सर्व दूर हठावशोरे. जैनो० ॥ ३ ॥
देशोन्नतिनुं कारण पहेलुं, स्त्री केळवणी जाणो सहेलुं;
विनति साची दिलमां भव्य वधावशोरे. जैनो० ॥ ४ ॥
धर्म झनुनने अंगे धारी, देशोन्नतिनुं मूळ विचारी;
स्त्री केळवणी सरस नियम सुधरावशोरे. जैनो० ॥ ५ ॥

मुनिवर गुरुगम ज्ञान लहीने, सत्य नीतिमा चुस्त रहीनें,
बुद्धिसागर रचना श्रेष्ठ रचावशोरे. जैनो० ॥ ६ ॥

विमळाचळवासी म्हारा व्हाला सेवकने विसारो नहीं
विसारो नहीं-ए राग

करो सत्य सुधारा विचारी भला, सुखकारी सदा, (२)
जशे संपे कुसंप दुःख नावे कदा, चित्त धारो मुदा. चित्त.
जिन शासननी भक्ति करतां, तीर्थंकर पद पाय,
जैन धर्म फेलावो करतां, अनंत सुख सदाय सदा सुखकारी. १
व्यवहारिक ने धार्मिक विद्या, सर्वोन्नति आधार,
बोर्डिंग स्कुलो स्थापन करता, थाशे जग जयकार. सदा सु० २
जुनां पुस्तक फेर लखावो; शुद्ध छपावो वेश,
स्हाय करो साधुने भणता; करशे सदा उपदेश. सदा सु० ३
बाळकशाळा कन्याशाळा, जैनतत्त्व विस्तार;
साधर्मी बंधुनी भक्ति, करता सफळ अवतार सदा सु० ४
कुमारपाळने संमति नृपति, वस्तुपाळ तेजपाळ;
धर्मी शूरा पूर्वे जैन थया, हाल बन्या बेहाल. सदा सु० ५
बोलो तेवु पाळो भव्यो, थाशो जग जाहेर;
बुद्धिसागर जय जय बोलो, कोन्फरन्स सुख ल्हेर. सदा सु० ६

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

समाप्त.